॥ श्रीः ॥

DOCIRICHIKITSARNAVA.

डाक्टरीचिकित्सार्णव ।

जिसको

विसाऊ (राजपूताना) निवासी पं०-
श्रीवैजनाथजी द्वारकाप्रसाद मिश्रके
शिष्य पं०-माधवराय वैद्यजीसे
निर्माण किया,

खेमराज-श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

❋ बम्बई. ❋

संवत २००६. शाके १८७१.



मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.



भूमिका।

प्रत्येक वैद्य और डाक्टरोंको उचित है कि रोगीके प्रति दया निर्लोभतापूर्वक रोगीकी चिकित्सा करनेमें साहसी बने क्योंकि वैद्योंहीके अधीन रोगीका जीवन है और रोगीने भी अपने जीवनको विश्वासपूर्वक इनहीके अर्पण किया है इस वास्ते उचित है कि जबतक रोगीका ठीक ठीक निर्णय न करले तबतक औषध देना निष्फल होगा, यही कारण है कि आज कलके वैद्य लोग प्रायः चिकित्सा करनेमें रोगीको निरोग नहीं कर सकते और लज्जित हो बैठते हैं वही दवा डाक्टरोंके पास है वही वैद्योंके परंतु केवल रोग निर्णयकी पूर्ण सामर्थ्य न होनेके कारणही लज्जित होना पडता है इसवास्ते प्रथम रोगका निश्चय करके यत्न करनेवाला वैद्यही प्रशंसा योग्य होता है और कहीं कहीं भाग्यवानोंके यहां ऐसा अवसर आपडता है कि वैद्य हकीम और डाक्टर तीनोंही इकट्ठे होजाते हैं उस वक्त वैद्य लोगोंको डाक्टरकी बातोंको बिलकुल न समझनेके कारण मुख देखना पडता है और कुछभी उत्तर नहीं देसकते इसवास्ते वैद्योंको भी कुछ थोडा बहुत डाक्टरी विद्यामें अभ्यास करना अवश्यही चाहिये क्योंकि इस वक्त डाक्टरी विद्याकाही विशेष प्रचार होरहा है और डाक्टरी दवायेंभी शीघ्र फलकी दिखानेवाली होती हैं परंतु ऐसे पुस्तकका हिंदीभाषामें अभाव होनेके कारण वैद्यनजको ऐसे अमूल्य रत्न डाक्टरी चिकित्सासे विमुखही रहना पडता है इस अभावको दूर करनेके वास्ते पंडित माधोराय वैद्यने इस " डॉक्टरी चिकित्सार्णव " को संग्रह किया है। यदि वैद्य लोग इसको देखेंगे तो डाक्टरीके बहुतसे कामोंको समझसकेंगे, इस ग्रंथमें डाक्टरी मान तौल डाक्टरी मतानुसार नाडीपरीक्षा, डाक्टरी मतसे मूत्रके अंश और थर्मामेटर द्वारा गर्मी शर्दी जाननेकी रीति तथा डाक्टरी दवाओंका निघंटु जिसमें डाक्टरी दवाओंके नाम और गुण तथा मात्रा विस्तारपूर्वक कही गई हैं और डाक्टरी निदान तथा होमियोपेथिक और एलोपेथिक

मतानुसार चिकित्साभी विस्तारपूर्वक लिखी गई है, साथ साथमें हिंदीके नामभी दिये गये हैं जिसमें वैद्यलोगोंको समझनेमें सुगमता पडे और यह तो आपलोग जानते ही होंगे कि एक पुस्तकके पढनेसे कोईभी पूरा वैद्य हकीम या डॉक्टर नहीं बन सकता इसवास्ते इसको अभ्यासार्थ समझना चाहिये तथा डाक्टरी दवाइयोंका कम्पौंड करना अर्थात् बनाना मिलाना विना सीखे नहीं आसक्ता इसवास्ते किसी सुज्ञ डाक्टरसेही सीखना चाहिये बाकी वैद्योंको इस डाक्टरीचिकित्सार्णवसे बहुतही सहायता मिलेगी डाक्टरी दवा जो विषैली हैं उनकी मात्रा बहुतही कम होती है इस वास्ते विना ठीक ठीक समझे उन दवाइयोंको खर्च करना किसी तरह उचित नहीं होसकता और होमियोपेथिककी जितनी दवायें होती हैं उनकी मात्रा १ या २ बूंदसे अधिक नहीं होती ।

आपका कृपाकांक्षी–

पंडित–माधवराय वैद्य,

(मुल्क राजपूताना) मु० बिसाऊ.



॥ श्रीः ॥

अथ डॉक्टरी चिकित्सार्णवकी विषयानुक्रमणिका ।

इस्प्रिट एक प्रकारकी शराब ।

जूस या अक्वुस अर्थात् स्वरस ।

इन्फ्यूजन तथा डिकोकशन अर्थात् काथ।

वाटर अर्थात् पानी ।

इनहैलीशन अर्थात् धूनी ।

सोल्यूशन अर्थात पानी मिली पतली दवा ।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ।



श्रीः ।

डॉक्टरी चिकित्सार्णव ।

प्रथम खण्ड, निघंटु ।

अंगेरजी तौलका उन्मान ।	दशी तौल ।
१—ग्रेन	॥ आधी रत्ती
१५—ग्रेन	१—एक माशा
६०—ग्रेनका एक ड्राम	४—चार माशा
७॥ ड्रामका एक औंस	२॥ अढाई तोला
१६—औंसका एक पौंड	८—आठ छटाँक
१०—पौन्डका एक गेलन	५—पांच सेर

जहां वाइन ग्लास कहा जावे वहां २ औंस जानना, जहां चाहका प्याला कहाजावे वहां ४ औंस जानना, जहां छोटा चमचा कहा हो वहां एक ड्राम समझना चाहिये ।

डॉक्टरी मतानुसार नाडीपरीक्षा

डॉक्टरी मतसे जब मनुष्य पैदा होता है तो एक मिनटमें अनुमान १४० बार नब्ज चलती है और एक वर्षतक १२० बार, पांच वर्षतक १०० बार, १४ वर्षतक ८६ बार, २० वर्षतक ८० बार, पीछे ५० वर्षकी अवस्थातक ७५ तथा ७० बार, ८० वर्ष ताईं ६० बारके अनुमानसे नब्ज चलती है । यदि इस अनुमानसे तेज चाल हो तो गरमीकी अधिकता, अगर मंद हो तो शरदीकी अधिकता जाननी और श्वासका उन्मान यह है कि जितनी देरमें नब्ज ४ बेर चलती है उतनी देरमें श्वास १ बार आता है ।

डाक्टरी मतसे मूत्रके अंश ।

स्वस्थ अर्थात (तंदुरुस्त) आदमीके मूत्रमें अनुमान १००० भागमेंसे ९६० भाग पानी, २५ भाग यूरमा, १ भाग यूकर एसिड, १४ भाग नमक, १० भाग कई प्रकारके आरगानक होताहै इससे अत्यंत न्यूनाधिक्य हो तो रोग समझना चाहिये ।

अब डॉक्टरी शब्द लिखे जाते हैं जो डॉक्टरी दवा और निदान चिकित्साके समझनेके समयमें सदैवही काम आते हैं, इन शब्दोंको याद किये विना समझमें आना कठिन है ।

नं० डॉक्टरीशब्द.	वैद्यक शब्द.	अर्थ.
१ अबसारवेंट	शोषक	सुखानेवाली वस्तु
२ अरहाइन	क्षवथुजनक	छींक लानेवाली
३ अफ्रोडीजक	वाजीकरण	मैथुनशक्ति वर्धक
४ अंहीलेशन	धूमपान	दवाका धूम पान करना
५ आइंटमेंट	रोपनी मरहम	घावको भरनेवाला मरहम
६ आई वाटर	नेत्रमें डालनेका अर्क अर्थात पानी	
७ आई वाशू	एवम्	एवम्
८ ओयल	तैल	तेल
९ इन्जकशन	बस्ति	औषधकी पिचकारी देना
१० इसक्काटिक	दाहजनक	जो त्वचाको जलादे
११ ईटीटेन्ट	छेदन	खरास पैदा करनेवाली
१२ इनीमा	बस्तिकर्म	गुदामें पिचकारी लगाना.
१३ इक्साइटिंग	काजनिमित्त कारण	जो पीछे हो या पहलेको भडकादे.
१४ इस्टीम	तरडे देना	गर्म जल या क्वाथका शरीर पर डालना

नं० डॉक्टरी शब्द.	वैद्यक शब्द.	अर्थ.
१५ इस्मीलोग	सूंघना	औषधिकी गंध लेना
१६ इस्निफ	नस्य	नास लेना
१७ इनफ्यूजन	हिम फान्ट	भीगी औषधिका जल
१८ इंब्रीकेशन	स्नेह मर्दन	तैलादिक लगाना
१९ एस्ट्रेंजेन्ट	ग्राही	काबिज
२० एक्सपिक्टोरेन्ट	कफहर	जो कफको दूर करे
२१ एमेटिक	वामक	जिससे वमन हो
२२ एमनागाग	आर्तवजनक	जो स्त्रीधर्म पैदा करे
२३ एपीरीएन्ट	मृदु रेचन	हलका जुलाब
२४ एसिड	तीक्ष्ण क्षार	तेजाब
२५ एरोमेटिक	सर मुहर्रिक	रसादिमें तेजी करै
२६ ऐंथलमेन्टिक	कृमिहर	कृमिनाशकर्त्ता
२७ एटीड्ट	विषनाशक	जो विषका प्रभाव हरै
२८ ऐंटसिप्टिक	दुर्गंधिहर	जो बदबूको दूर करै
२९ ऐंसथेटिक	शून्यताकारक	जिससे त्वचा शून्य हो
३० ऐन्यूडाइन	शूलहर	जो दर्दको शांत करै
३१ एक्सट्राक्ट	सत्व द्रव सार वा यूष	पतला सत्व
३२ एलकचरी	अवलेह	चासनीकी तरह पकाई हुई दवा
३३ ऐक्यूट	नवीन	नई थोडे दिनकी
३४ कारडीयल	दिलकी हरकत	अर्थात् चाल कम हो
३५ कारमेनेटिव	कफनाशक	जो कफको दूर करै
३६ कास्टिक	दाहक	जो त्वचादिको जलादे

नं० डॉक्टरी शब्द.	वैद्यक शब्द.	अर्थ.
३७ केथारटिक	विरेचन	जुलाब जिससे आंतोंका मल गिरे
३८ कोजिव	क्षतकारक	जो घाव कर दे
३९ कोलैगागपरगेटिव	पित्तरेचन	जिससे पित्तके दस्त हों
४० क्लुस्टर	बस्ति	गुदामें पिचकारी लगाना
४१ क्रानिक	जीर्ण	पुरानी बहुत दिनकी
४२ कन्फेक्सन	कंद	एवम्
४३ कम्पौण्ड	मिश्रित दवा	जहां अंगरेजीमें कम्पौण्ड शब्द आता है वहां संस्कृत-में आदि शब्द लगाते हैं।
४४ काज	कारण	सबब
४५ क्यूमीगेशन	धूपन	बफारा
४६ गागर	कुरला	एवम्
४७ टानिक	बृंहण	बल बढानेवाली
४८ टेन्टेटस्	वर्ती	बत्ती
४९ टिंकचर	द्रव अरिष्ट	इस्प्रिटसे घुली हुई दवा
५० टुथपाउडर	मंजन	दांतोंमें मलनेकी दवा
५१ डाइफारेटिक	स्वेदन	पसीना निकालना
५२ डाईलोएंट	द्रवकर	पतली करनेवाली
५३ डायरेटिक	मूत्रल	जो अति मूत्र लावे
५० डशबयूशीऐंट	शोथहर	जो वर्म अर्थात् शोथको दूर करे

न० डॉक्टरी शब्द.	वैद्यक शब्द.	अर्थ.
५५ डमलसेंट	स्निग्ध हुआ - बदार	जो खरास दूर करे
५६ ड्रापस	बिंदु	बूंद
५७ ड्राफट	घूंट	एक घूंट पीना
५८ ड्राइडवीयर	धूम	धूनी
५९ डिक्रोकशन	क्वाथ फांट	औटाई या औंटे जलमें भेई दवा
६० डाईल्यूटेड	जल मिश्रित करी हुई दवा	पानी मिली दवा
६१ थनपाइन्ट	मर्दन	तिला आदि मलना
६२ थिकपाइन्ट	लेप	पतली दवा लेप करना
६३ नारीकोटिक	विकाशी और विवाई (विष)	पहले गरमी पीछे नशा और सुस्ती करे
६४ नाशीएंट	हल्लासजनक	जिससे जी मचलावे
६५ न्योटरीरोंट	तृप्तिकारक	एवम्
६६ पारगेटिव	विरेचन	दस्तावर दवा
६७ पिल्स	गुटी	छोटीगोली
६८ पाउडर	चूर्ण	कपडा छानहुई
६९ प्लास्टर	मरहम	कागजपर लगाकर चिपकाना
७० पुलटिस	कवलिका	लहेई लपरी
७१ परीडिस येजिकाज	प्राकृत कारण	जो पहलेसे हो
७२ पोटास	क्षार	नमक

नं०	डॉक्टरी शब्द.	वैद्यक शब्द.	अर्थ.
७३	फिटवाथ	पादस्वेद	औटाई दवाका पानी पिंडलीतक डालकर नीचेको मलना.
७४	फोमिंटेशन	तापन	सेंकना
७५	फ्रूट	मेवा	एवम्
७६	वटरयानिक	कडी काष्ठादि दवा	एवम्
७७	वर्जीकेंट	विस्फोट कर्ता	जिससे फफोला हों.
७८	वाथ	स्नान	न्हाना
७९	विलष्टर	स्फोटजनक	फफोला डालना
८०	वोलस	वटक	बडी गोली
८१	वाटर	आसव	अर्क खिचाहुवा या पानी
८२	वारमवाथ	९६से९८ दरजतक	गर्म जलसे न्हाना
८३	वाश	लोशनकोही कहते हैं	दवामिला पानी
८४	वाइन	मदिरा	जिसमें दवा गले
८५	वेटारवाथ	उष्णाम्बुस्वेद	गर्म जलका बफारा
८६	म्यूसलिज	लुवाबदार वस्तु	एवम्
८७	मिकचर	पीने योग्य पतली दवा	एवम्
८८	रेफ्रीजीरेंट	संतर्पण	हृद्यरुचिकारक । जो हृदयकोआनंद दे गरमी और प्यासको दूर करे. रुचिको बढावे.

नं०	डॉक्टरी शब्द.	वैद्यक शब्द.	अर्थ.
८९	लिकजेटिव	अनुलोमन	जिससे आंत और मल नर्म हो
९०	लाजिंज	टिकिया	दवाकी टिकिया बनाई हुई
९१	लेक्टस	लेह्य	चटनी
९२	लोशन	बाहर लगानेकी दवा	पतली दवाको बाहर लगाना
९३	लिनीमेन्ट	मलने लायक	जो बाहर मलीजावै ।
९३	लीकर	अर्क	एवम्
९४	साइलोगाग	लाला जनक	जिससे थूक अधिक हो
९५	सप्यूरेंट	पिडिकोत्पादक	जिससे फुनसी पैदा हो
९६	सिडेटिभ	शांतिकारक	जो दिलकी हरकत कम करै ।
९७	सजू	स्वरस यूस	हरी दवाका पानी ।
९८	सपोजीटोरी	स्नेहवर्ती	गुदामें रखनेकी चिकनी बत्ती ।
९९	सिक्कर	यूस	एवम्
१००	सोल्यूशन	द्रव	घुली मिली पतली दवा ।
१०१	सीरप	शर्करोदक	शर्बत पका हुआ ।
१०२	सल्फेट	सत्व	एवम्
१०३	साइनस	लक्षण	चिह्न अलामत
१०४	हम्यूसटेटिक	रक्तशोधक	जो रक्तको बन्द करै
१०५	हैयोनाटिक	निद्राजनक	जिससे नींद आवै ।
१०६	हडागागपरगेटिव	तीक्ष्णरेचन	करडा जुलाब
१०७	हाट बाथ	११० दर्जेतक गर्मजलसे स्नान करना	
१०८	हीयर कलर	केशकल्प	खिजाब

अब अंग्रेजी दवाओंके हिंदीमें नाम प्रकाशित होते हैं ।

नं० डॉक्टरी नाम.	हिन्दी नाम	नं० डॉक्टरी नाम	हिन्दी नाम.
१ टेमेरिंडिंग	इमली	१८ एन्टिमनी	रसौत
२ सलफर	गंधक	१९ जिंक	जस्त
३ काष्ट्रोयल	अंडीका तेल	२० कापर	तूतिया
४ जलप	जुलाफा	२१ केप्सिकम्	लाल मिर्च
५ रूबर्व	रेवतचीनी	२२ माष्टिक	रूमीमस्तंगी
६ सेनाविलस	सोनामखीके पत्ते	२३ एमोनिया	नौसादर
		२४ मारक	कस्तूरी
७ वेल	वेल	२५ एसाफटिडा	हींग
८ एलोज	एलवा	२६ कोफी	काफी
९ टार्पिनटाइन	तार्पिनका तेल	२७ केम्फर	कपूर
		२८ उपियम	अफीम
१० फारवाइटस	कालादाना	२९ मारफिया	अफीमका सत्त वा वीर्य
११ टारपिथी- इरेडिक्स	लेवडी	३० पापीज	पोस्त
१२ माईरोबालान	बडी हड	३१ एपिकेम्प्यूल	पोस्तकी डण्डी
१३ ऐम्बोलिका	आमला	३२ इष्टोमोनियम	धतूरा
१४ कालोमिन्थ	इन्द्रायण	३३ इंडियनहैम्प्स	गांजा
१५ क्रोटन	जमालगोटा	३४ नक्सवोमिका	कुचिला
१६ हेलेबोरेरूट	कुटकी	३५ इष्टिकिनिया	कुचलेका प्रधान वीर्य
१७ मास्टर्ड	राई, सिरसूं	३६ ब्रुसिया	कुचलेका दूसरा वीर्य

नं०	डॉक्टरी नाम.	हिन्दी नाम.
३७	नाईट्रेट औफपोटास	जवाखार
३८	नाईट्रिक एसिड	जंभीराम्ल
३९	लिमन	नींबू
४०	एसेटिकएसिड	सिर्का
४१	बिटरआमंडस	कडुआ-बादाम
४२	मर्क्यूरी	पारा
४३	परफ्लोराइड औफमरक्यूरी	रसकपूर
४४	हेमिडिस ममरूर	अनंत मूल
४५	ग्लास	माजूफल
४६	बेंगलकाइनो	ढाकका गूंद
४७	पेलकेटिकय	पीला कत्था
४८	रेडसंदलउड	लालचंदन
४९	रोझ	गुलाब
५०	एलम	फिटकडी
५१	लेड	शीशा
५२	सुगर औफ लेड	सीसा शर्करा
५३	कार्बोनेट औफ लेड	सफेदा
५४	काडलिभर ओयल	काडमच्छी का तेल

नं०	डॉक्टरी नाम.	हिन्दी नाम.
५५	कारिएल	कलरमेघ
५६	चिराटा	चिरायता
५७	इंडिय बार्बेरी	दारुहल्दी
५८	गुलचा	गिलोय
५९	निंबाक	नीम छाल
६०	बडकसिडस	कंजा
६१	केहनवर्क	मंजीठ
६२	सलफेटे औफ कापर	तूतिया
६३	सलफेट औफ जिंक	सफेद तूतिया
६४	आयरन	लोहा
६५	सल्फेट औफ आयरन	हीराकस
६६	औरंजपील	नारंगीकी छाल
६७	लेमनपील	नींबूकी छाल
६८	सिनेमनवार्क	दालचीनी
६९	क्लोवशप्लोव्ज	लौंग
७०	नाटमेग	जायफल
७१	ब्लाकपीपर	कालीमिर्च
७२	क्यूबेष	सीतल मिर्च
७३	कार्डिमम	छोटी इलायची

न०	डॉक्टरी नाम.	हिन्दी ना.	नं०	डॉक्टरी नाम.	हिन्दी नाम.
७४	कारवफ्रूट	विलायती जीरा	९३	रिफाइसूगर	साफ खांड
७५	कोरियाएंडर	धनिया	९४	मिल्क	दूध
७६	एनीसिड	महुरी	९५	एग	अण्डा
७७	आयोये	अजवायन	९६	सिकरिस रूट	मुलेठी
७८	स्पियारमिन्ट	पोदीना	९७	इंडियन लिकारिस	गोंगचीकी जड
७९	जिंजर	सूंठ	९८	पार्लबार्लि	छिले जौ
८०	ग्रास	खस	९९	राइस	चावल
८१	ज्याफ्रन	कुंकुम	१००	रेंजिस	किसमिस
८२	वेनजोइन	लोहबान	१०१	हिबिसकर फ्रूट	ठडस
८३	टार	अलकतरा	१०२	प्रिपेयर्डसूट	मेंढेके चरबी
८४	प्यूरिफायेड अवस वाईल	ऋषभक	१०३	प्रिपेयर्ड लार्ड	सूअरकी चरबी
८५	बोराकल	सुहागा	१०४	कोटन	रुई
८६	सहनि	सहेत	१०५	लाइम	चूना
८७	गमेकेशिया	गोंद	१०६	चाक	खडिया मिट्टी
८८	लिनसिड	अलसी	१०७	सोप	साबुन
८९	ओलिभ	जैतून	१०८	चारकोला	कोयला.
९०	कुइन्ससिड	बिहीदाना			
९१	इस्वागुलसिड	इसबगोल			
९२	स्वीटआमंडस	मीठा बादाम			

डॉक्टरी चिकित्सार्णव ।

॥ श्रीऋद्धिसिद्धीश्वराय नमः ॥



अब डॉक्टरी दवाओंका निघंटु लिखा जाता है उसके साथ साथमें हिन्दी नाम और मात्रा तथा गुण सम्पूर्ण ही लिखा जावेगा ।

प्रथम एसिड अर्थात् तेजाब कहे जाते हैं ।

१ एसिडम् कंथारीडिस (सिरका तेलनी मक्खीका)

पुराने छातीके दर्दमें देते हैं । इससे उपाड करनेसे छाले पडकर दर्द जाता रहता है और सुस्तीकी बीमारीमें इसके द्वारा उपाड करनेसे रगोंका पानी निकलकर आदमी मर्द होजाता है, तीन बार उपाड करना चाहिये ।

२ एसिडम् सिले (जगली प्याजका सिरका)

इसको जलन्धर और श्वास अथात् दमा, जुखाम, पुरानी खांसीमें देना चाहिये । मात्रा १५ से ४० बूंदतक ।

३ एसिडम् एसीटीकम् गिलशीयल (सिर्का अंगूरी)

इसमें पानी मिलाकर बुखारवाले मरीजका शरीर पोंछा जावे तो बुखार उतर जाता है और प्यास जाती रहती है । इसकी भाफ गलेकी बीमारीको फायदा करती है । इसका नित्य खाना मेदेको खराब करता है, दीमागकी सूजन और खूनजारीमें इसका भीगा कपडा शिरपर रखनेसे आराम होता है, गंज और दाद चकत्ते मसा उँगलियोंके गांठोंपर, मसूढोंके सडजानेमें और घावोंपर लगानेसे

रुधिर बंद होजाता है । गलेके घावोंमें पानी मिलाकर कुरला करते हैं । पानी मिलेकी मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

४ एसिडम् कारबोलिकम् (कष्टिक सडननाश खानेमें सिडेटिभ विष है)

इसके लगानेसे घावोंका सडाना बंद हो जाताहै, वदहजमी, खांसी क्षयी, जहरबात, चेचक और पेटके केंचुवे दूर होजाते हैं । दस्तोंको बन्द करता है, वमनको रोकता है, पुरानी खांसीके कफको रोकता है, फेफडेके सडे हिस्सेको बहुत ही फायदा करता है, एक ड्राममें एक पाइन्ड् पानी मिलाकर कुरला करानेसे गिराहुवा काग उठजाताहै । एक औंसको एक बोतल पानीमें मिलाकर जब जखमपर लगाते हैं तो तुरतही आराम होता है, ताजे जखम इसके लगानेसे सडने नहीं पाते, जिल्दकी बीमारियोंको उत्तम है, बच्चेदानीके जखमोंके वास्ते बडा उत्तम है, ताकि जखम सडे नहीं और अच्छा होजावे, जो उपदंशसे कंठ और नाकपर घाव हो जाता है तो एक ड्राममें ४० ड्राम अलसीका तेल मिलाकर लगानेसे आराम होता है और १ ड्राममें १० ड्राम तेल मिलाकर जखमोंपर लगाते हैं । दो दो ग्रेनको एक औंस पानीमें मिलाकर उपदंशसे हुये कंठके घावोंपर लगाते हैं, और सुंघानेके लिये १ में १८ गिरीनमें २० औंस पानीमें हल करें, उपदंशी घाव, सडा फोडा, गीली खुजली कोढके वास्ते १८ गिरीनमें १ औंस पानी मिलाना चाहिये, यदि मरहम बनावे जब १ ड्राममें १ औंस वेसलीन मिलाना चाहिये, जलेहुये पर जब इसका अर्क लगाया जाता है तो आराम होजाता है । खानेकी खुराक १ ग्रेनसे ३ तक म्यूसलिज शर्बतके साथ देना चाहिये ।

५ ऐसिडम् सलफ्यूरिकम् (तेजाब गंधक)

बलदायक, रुचिकारक, काबिज इसमें बारा हिस्से पानी मिलाकर दवाईमें दिया जाता है । तिल्लीके वास्ते मुफीद है, पित्ती

इसके पीनेसे नहीं उछलती,बुखारमें देनेसे वह उतर जाता है,प्यास जाती रहती है,कंठ और जिह्वाका सूखना दूर हो जाता है,जाडेका बुखार और बदहजमी, क्षयी, हिचकी, हैजा, दस्त, नकसीर, मुखके छाले और खूनके थूकनेको बन्द करता है। पानी मिले हुयेकी मात्रा ५ से २० बून्द या १० से ३० बून्दतक शर्बतके साथ।

६ एसिडम् सैट्रिकम् (नींबूका जौहर)

रुचिकारक, अगर बुखारकी हालतमें दिया जावे तो हरारत खुश्की, प्यासको कम करता है, गठिया, वाय और मसूढोंकी बीमारीको दूर करता है। गुरदेकी बीमारीमें ३० ग्रेन पोटासीबाई कारबका अर्क और १७ ग्रेन इसको मिलाकर १० से ३० ग्रेन देना चाहिये। मात्रा १० से ३० ग्रेन पानीके साथ।

७ एसिडम् बेन्जायनू (लोहबानका जौहर)

पुरानी खांसी और जब पेशाब सोतेमें आपसे निकल जाता हो तो या जादा खारी हो तो इसको देना उत्तम है। मात्रा ५ ग्रेनसे १५ तक।

८ एसिडम् गयालिकम् (माजूका जौहर)

हरएक रास्ते रुधिरके बंद करता है, जब खांसीमें खून आता हो या योनिसे रुधिरस्राव होता हो जो किसी तरह बंद नहीं होता हो तो यह बन्द कर देता है। खूनी बवासीर, अतिसार, दाद, स्त्रीका प्रमेह, सोजाक, पेशाबमें खून मूतना यह सब इससे आराम हो जाता है। ग्राही और काबिज है। मात्रा २ से १० ग्रेन तक।

९ एसिडम् टैनिकम् (माजूका दूसरा जौहर)

काबिज, ग्राही, यह एसिड गालिकसे तेज काबिज ज्यादा होता है, तमाम जगहके जारी खूनको और दस्तोंको बंद कर देता है, जलेहुये पर तेलमें मिलाकर लगाते हैं। मात्रा २से २० ग्रेनतक गोली या पानीके साथ।

१० एसिडम् हैड्रोकिलोरिकम् (नमकका तेजाब)

इस खालिस तेजाबमें ३ हिस्से पानी मिलाकर दवामें देते हैं। जहर, बात, टाईफसफीवर अर्थात् संधिगसन्निपातके भेदको तथा उपदंश, आंतोंके कीडे, कोढ, बदहज्मी, मुखका आना, जिगरकी बीमारी, पेशाबका खारा होना इन सबको दूर करता है। मात्रा पानी मिलेहुयेकी १० से ३० बून्द तक ।

११ एसिडम् हैडिरोसियानिकम डाइलूटम

(कडवे बादामका तेजाब पानी मिला)

दस्तोंको बंद करना, वमनको रोकना, खांसी, श्वास, क्षयी, मेदेको दर्द, गठियावायु, पट्ठोंका दर्द, डबा, जिल्दी बीमारीकी खारिशको रोकता है, अजीर्ण और हैजेमें मुफीद है। मात्रा २ से ८ बून्दतक ।

१२ एसिडम् नेट्रिकम् (शोरेका तेजाब ।)

त्वचाको जलादेनेवाला काष्टिक, इससे उपदंशके ताजे जखमोंको जो २ या ४ रोजका हों जलादेनेसे फायदा होता है। सांप और बावले कुत्तेके काटेहुयेको फौरनही जलादेनेसे जहर नहीं चढता, मैले और गंदे बदबूदार जखमोंको जलाते हैं, बद और निकाले पर लगानेसे बडी जल्दी फायदा होता है, यह तेजाब चांदीको पानीके माफिक गलादेता है। मस्सोंको जलाते हैं और इसमें ९॥ हिस्से पानी मिलानेसे बीमारियोंमें देनेके काम आता है, पित्ती नहीं उछलने देता, मुखके छाले और जखमोंको आराम करता है और पारेके खानेसे जो मुँह आजाता हैं, बदहजमी, दर्द कलेजा, दम, खांसी, उपदंश जाडेका बुखार, खुजली आदि रोगों को मुफीद हैं, मात्रा पानी मिलेहुयेकी १० से ३० बून्दतक। जलानेके वास्ते निखालिसाको शीशेकी नलीसे बाहर लगाते हैं।

१३ एसिडम् नैटिहैडिरोकिलोरिकम्
(तेजाब शोरा व नमक दोनों मिलेहुये)

यह तेजाब सोनेको पानी बना देता है, तेजाब शोरा १ हिस्से तेजाब नमक २ हिस्से मिलाकर बनता है तो उसको हकवा रिजा-या बोलते हैं और तेजाबशोरा ३ हिस्से तेजाब नमक ४ हिस्से पानी २५ हिस्से मिलाकर जो बनता है उसको डाइलूटके नामसे बोलते हैं। यह दवाइयोंके काम आता है। इससे उपदंश जिगर-की बीमारी और कभी कभी मुखके रोगोंमें कुरली करते हैं। मात्रा पानी मिलेकी ५ से २० बून्दतक ।

१४ एसिडम् ओकजालिकम् ।

थोडीमात्रासे सोजिस, रतूवती परदेको मुफीद है, पीतलकी चीज इससे चमकदार होजाती है। मात्रा १ से १ ग्रेनतक ।

१५ एसिडम् फासफोरीकम् डाईल्यूटम् (आगया वैतालका तेजाब पानी मिलाहुवा)

इश्क जीयावतूसकी बीमारी, पेशाबकी पथरी, रंत इत्यादि रोगोंमें देनेसे फायदा होता है। रातको जो पेशाब बहुत आता है उसको रोकता है। भूख और प्यासके रोकनेको तो अकसीर रही है, हड्डी जो पेशाबमें किरकिर कर आने लगती है उसको बंद कर देता है, तपेदिकमें जो रातको पसीना आता है उसको बंद करता है। मात्रा १० से २० बून्दतक ।

१६ एसिडम् हैडिरोबिरो मिकम् डाईल्यूटम् ।

इसको कुनैनके पानी करने और उसके गुणको स्थिर रखनेके वास्ते इसकी ८ बून्दयें ५ ग्रेन कुनैन हल हो जाती हैं। खुखार, मृगी, वायगोला और कानोंमें जो भिन भिनकी आवाज आती

हो उसको दूर करता है, पट्ठोंकी शोजिश, गर्भवतीकी वमनको रोकता है, बच्चोंके श्वासको मुफीद है । मात्रा १५से५०बून्दतक ।

१७ एसिडम् सेलीसीलकिम् ।

इसको जलंधर जो दिलसे पैदा हुआ हो, पुरानी गांठिया वायुका दर्द और बच्चोंके श्वासको मुफीद है । इसका अर्क मसे गांठियाकी सोजनपर लगाते हैं, सुर्खबादह व माताके बुखारको, दाद, फोडा, फुनसीपर लगाते हैं, खून बंद करता है । इसमें कुनैनकाभी गुण है । इसवास्ते गांठियाके बुखारको मुफीद है । थोडी मात्रासे शिरदर्दको आराम करता है और प्रसूता स्त्रीको जो सवा महीनेके भीतर नीचेकी अंगोंमें दर्द और शोथ हो तो आराम करता है । मात्रा ५ से ३० ग्रेनतक ।

१८ एसिड टारट्रिक (इमलीका जौहर)

रुचिकारक, इससे चमडेका रंग साफ किया करते हैं । खट्टे चने इसके द्वारा उम्दा बनते हैं । इसके २० ग्रेनमें ३० ग्रेन सोडा मिलानेसे सोडावाटर बनता है । मसूढेके रोग, बुखार, बदहजमी, मितली, वमन, खुशकी, कंठ और जिह्वाका सूखना इन्होंको दूर करता है । मात्रा १० ग्रेनसे ३० तक ।

१९ एसिड लेकटीम् ।

इसको पित्तकी बीमारीमें देनेसे हाजमा करता है, भूंखको बढाता है, बारम्बार पेशाबका ज्यादा आना, पथरी वगैरहमें देतेहैं । यह ईखके रससे बनाया जाता है । मात्रा १ ड्रामसे ३ तक ।

२० एसिड क्रिसोफेनिकम ।

इसको वैनजोल या गिलसरीनमें घोटकर वा वैसलीनसे मरहम बनाकर दाद गीली खुजलीपर लगाते हैं ।

२१ एसिड अम्बर ।

यह एक किस्मका पीला रालकी तरहपर होता है, आगपर डालनेसे सुगंधि देता है। इसका तिला इन्द्रिय पर लगानेसे सुस्तीको दूर करता है। इसको अम्बरगिरीशभी कहते हैं। लकवा, फालिज, गांठियाके दर्दोंपर लगाते हैं, बच्चोंके श्वासमें छातीके ऊपर मला जाता है, इससे नकली कस्तूरी बनाई जाती है।

२२ आरसनिक एसिड (शंखियेका तेजाब)

तीक्ष्ण विष है, खुश्की करता है, बारीके रोगोंमें देते हैं, १ ग्रेनके आठवें हिस्सेकी मात्रासे गोली या शोलूशनमें देना चाहिये।

२३ ओलियम् एसिड ।

इस एसिडमें अफीमका जौहर, मारफीया, मकोयका जौहर अटरोपीया, मीठे तेलियेका जौहर एकोनेटिया हल हो जाता है और इक्साइड औफ लिड मरक्यूरी जिकसे प्रसीपीटेट हो जाता है और यह एसिड आलकोहल और ईथरमें हल हो जाता है।

अब ओलियम् अर्थात् तेल कहे जाते हैं।

२४ ओलियम् औफ फासफर्स (फासफर्सका तेल)

पुट्ठोंको बल देनेवाला है। दीमागकी बीमारी और बुढापेके सबसे जो कमजोर होजाता है अथवा ज्यादा स्त्रीप्रसंग करनेसे या मठोले मारनेसे जो सुस्त होजाता है उसको यह तेल खाना चाहिये। मात्रा ५ से १० बून्दतक मिक्श्चर।

२५ ओयल गामिगडाला (रोगन बादाम)

इसको कामशक्ति बढानेके वास्ते शिरपर मलते हैं, कबजी दूर करनेके वास्ते पीते हैं। बारंबार मूत्रके आनेको रोकता है, नजला, खांसी, जुखामको मुफैद है। पेचिश और पेशाबकी पथरीको रोकता है। मात्रा २ ड्रामसे ४ तक।

२६ ओयल एनीथी वा ओयल औफ लड (सोयेका तेल)

दर्दनाशक, पाचन, पेचिश, जुलाब, हिचकी, पथरी, जाडेका बुखार, बवासीर, बेकली, स्त्रियोंकी योनिके मसे, जिगर, तिल्ली, कमरके दर्दको मुफीद है। मात्रा १ बून्दसे ४ तक।

२७ ओयलऐनीसी (रोगन अनीसो किस्म सौंफका होता है)

इसको मिश्रीके साथ नित्यही एक सालभर खावे तो कभी बीमार नहीं होता। बवासीरको मुफीद है। स्त्रियोंका दूध बढताहै। पुराने दस्त और बुखारको खोताहै। मात्रा १ बून्दसे ४ तक।

२८ ओयल एन्थीमिडिस या आयल औफ कैमोमाईल (बबूनेका तेल)

पेटकी ऐंठन, अजीर्ण, वायगोला, जाडेके बुखारको दूर करता है। पाचक और वायुनाशक है, दूधको बढाताहै। दीमाग, पट्ठे और कामशक्तिको बल देता है। सर्व दर्दोंको इसका तेल लगाते हैं। मात्रा १ से ५ बून्दतक शक्करके साथ।

२९ ओयल केजुयूटी (कायाबूंटीका तेल)

जलंधर, पुरानी गांठिया, वायु, वायगोला, कास, श्वास, तपेदिक और हैजेमें काम आताहै। मात्रा ५ बून्दसे १० तक।

३० ओयल औफ केरवे (रोगन जीरा)

छर्दी, योनिरोग, सोजाक, मूत्रकृच्छ्र, अजीर्णको फायदा करता है। मात्रा २ बून्दसे ६ तक।

३१ ओलियम् केरीयोफीलाप या आयल औफ क्लौंज (लौंगका तेल)

दर्दनाशक, बाहर मर्दन करनेसे गर्म नसोंको तेज करनेवाला, वायगोला, कास, श्वास, जलंधर शीतज्वर, दंतकृमिको अच्छा करता है और सुस्तीकी बीमारीमें इन्द्रियपर इसका तिला लगानेसे नामर्द मर्द हो जाता है। मात्रा १ बून्दसे ४ तक।

३२ ओयलम् सीनेमोमई या आयल औफ सिनामन (दालचीनीका तेल)

दर्दनाशक, बाहर मर्दन करनेसे गर्म नशोंको तेज करनेवाला, दस्तोंको बंद करनेके वास्ते और कामशक्ति बढानेके वास्ते नामर्दको खिलाते हैं, स्त्रीसंगमें आनन्द प्राप्त होनेके वास्ते इन्द्रियपर लगाते हैं तो बडा मजा आता है। मात्रा १ बूंदसे ५ तक शक्करके साथ।

३३ ओलियम् कोपैबा (रोगन बलसां)

कुरा, सोजाक, मूत्रकृच्छ्र गांठिया, स्त्रियोंका रक्तप्रदर, स्त्रियोंका प्रमेह इन सबोंको दूर करता है। मात्रा २० बूंदसे ३० शर्बतके साथ।

३४ ओलियम् किरोटन (जमालगोटेका तेल)

तेज रेचन, बन्ध बढजाना, वायगोला, जलंधर, सत्ता, बावलापन, जाडी बंद होना, गांठियावाय, जाबडेका दर्द, पित्तज्वरमें देनेसे फायदा होता है, और इन्द्रियपर इसका तिला मलनेसे नामर्द मर्द होजाता है। मात्रा १ बूंदसे ४ तक शक्करके साथ।

३५ ओलियम् क्यूवेव (शीतलमिर्चका तेल)

इसको स्त्रियोंके प्रमेह, सोजाक, मसानेकी सोजिश, बवासीर और खांसीमें देनेसे बडा फायदा होताहै। मात्रा ५ बूंदसे २० तक मिक्श्चर।

३६ ओलियम् सिलास्टरस न्यूटेन्स (मालकांगनीका तेल)

बुद्धि, स्मृतिको बढाता है। जलंधरका नाश करता है। मात्रा १ बूंदसे ५ तक।

३७ ओलियम् यूकेलिपटस (वीलू गमट्री)

फायदेमें कौनेनके बराबर है, जाडेका बुखार, सोजन, तिल्लीको दूर करता है। खांसी, तपेदिक, मसानेका शोथ और सोजाकमें

पांच पांच बूंद देनेसे आराम होता है, जखमको भरता है। मात्रा ५ से १० बूंदतक।

३८ ओलियम् जूनीपर (रोगन अर)

जलंधर, प्रमेह, मसानेकी सूजन, सूजाक, वायगोला, गीली खुजलीको मुफीद है। मात्रा २ बून्दसे ३ तक शक्करके साथ।

३९ ओलियम् टेरविंथ या आयल औफ टरपनटाइन (तारपीनका तेल)

पेशाब लानेवाला, पसीना लानेवाला; जुलाब करनेवाला. पेटके केंचवे मारनेवाला, इसको काष्ट्रॉयलके साथ रेचनके वासते देते हैं। मूत्रकी जलन, मूत्रका कम होना, गुरदेकी बीमारी, प्रसूतके आदिमें और पेटके अफरेको मुफीद है। जलंधरमें पेशाब अधिक लगानेके वास्ते, दर्दपट्ठा, मृगी और भीतरका रुधिर रोकनेके वास्ते दिया जाता है। सोजाककी मवादको बन्द करता है। प्रमेहको मुफीद है। दर्दके ऊपर बाहर मला जाता है । मात्रा १० बून्दसे ३० तक। रेचनके वास्ते २ ड्रामसे ६ तक और फलालैनको गर्मपानीके साथ निचोडकर इसमें तर करै और सोजिश या दर्दकी जगहपर धरै तो आराम हो जाताहै। कफको भी दूर करता है। खांसी, जलंधर जो जिगरकी खराबीसे रुधिरकी वमनमें इसकी भाफ इस तरह लगाते हैं कि चीनीकी रकाबीमें गर्म पानी भरकर थोडा थोडा तारपीन डालनेसे इसकी भाफ बीमारके शरीरमें लगती है।

४० ओलियम् लायमोनिस् या आयल औफ लिमन (नींबूका तेल)

बडा सुगंधित, पाचन, सुस्वाद है। वायु, रीह, वमनको रोकनेवाला है। दिलको कूवत देता है और दवाइयोंको स्वादिष्ट करनेवाला है। मात्रा १ बून्दसे ५ बून्दतक।

४१ ओलियम् लाईनाई ।

जब कोई अंग जलजावे तो उसपर लगानेसे आराम हो जाता है । परीक्षा किया हुवा है ।

४२ ओलियम् मिंथीपाईपेटी या आयल औफ पेपरमेन्ट (पीपरमेन्टका तेल)

रीहको दफै करता है । पेटका अफरा, पेटका दर्द, उलटीको रोकता है, हाजिम है, विषूचिकाको दूर करता है । मात्रा १ से ५ बून्दतक शक्कर या पानीके साथ ।

४३ ओलियम् मार्रुई ।

इसको तोला भर नित्य खानेसे आदमीके शरीरमें मांस बढताहै, त्वचा बढतीहै, स्त्रीधर्म खुलकर आता है, कंठमाला, गांठिया वायुके वास्ते अत्यंत परीक्षा किया हुवा है । शिरसें पुरुषार्थ बढाने और तपेदिकके वास्ते भी अनुभव करा है । लालशर्बत हाईपोफास्फेट औफ लायमके साथ पीना चाहिये, छः माशे भोजन करनेके उपरांत पीवे और मात्रा इसकी बढाता जावे । तिल्ली और कवलवायु तथा वमनके वास्तेभी उत्तम है । मात्रा ५ से १५ बून्दतक ।

४४ आयल पाईमेन्टी या पिमडिव ।

इसको जुलाबकी दवाके साथ पीतेहैं और कीडेसे खाई हुई डाढके दर्दको बन्द करनेके वास्ते लगाते हैं । मात्रा १ से ५ बून्दतक ।

४५ आयल ओलीवी या आयल औफ औल्यो (जैतूनका तेल)

प्लाष्टर आदिमें लगाना या मर्दन, तर करनेवाला, दस्तावर, मालिश करनेसे कामशक्तिको बढानेवाला है, मरहमोंमें डालते हैं । मात्रा १ से ८ ड्रामतक ।

४६ ओलियम् माईरिसटीके या आयल औफ न्स्टियास
(जायफलका तेल)

पाचन, सुगंधित है, वायु, खांसी, श्वास, तिल्ली, जलंधर, लकवा, जिगरके शोथको खोता है। मेदेको बलवान् करता है। वीर्यको स्तभन करता है। मात्रा २ से ५ बून्दतक ।

४७ ओलियम् मेसिस वा मेसीडिस (जावित्रीका तेल)

कफको दूर करता है, वीर्यको बढाता है, मेदेको बलवान् करता है, पाचनशक्तिका रखनेवाला, मूत्रकृच्छ्र, सोतेहुयेका मूत्र निकल जाना, रक्तातिसार, आधासीसी, मृगी और स्त्रियोंके दर्द कमरको मुफीद है। मात्रा २ से ५ बून्दतक ।

४८ ओलियम् मेटिको ।

भीतरसे रुधिरके आनेको रोकता है। रक्तप्रमेह, रक्तकी वमन, मेदेके किसी रगका मुख खुलजानेके कारण जो कफमें रुधिर आता हो, नकसीर और जोंकके काटनेसे जो रुधिर आता हो इन सबको बन्द करता हैं। डाढ उखाडनेके पीछे जो रुधिर जारी होता है उसकोभी रोकता है, निर्बलताके दस्तोंको रोकता है सोजाक और स्त्रियोंके प्रमेहको बन्द कर देता है । मात्रा ५ से १० बुन्दतक ।

४९. ओलियम् मुर वा बोल ।

विना समयके स्त्रीधर्म होना, या स्त्रीधर्म नहीं होना, मुखसे खट्टे पानीका जाना, खांसी, सिल, बूढेका श्वास, दांतोंका दर्द और गलेके जखमोंको अच्छा करता है, मूत्रदोषको दूर करता है। मात्रा १ से ५ बून्दतक ।

५० ओलियम् आरीमेनी वा मारजोरम (मरवेका तेल)

इसको आँवके दस्तोंमें देते हैं। यह पुरुषार्थ करनेवाला, पसीना लानेवाला, स्त्रीधर्म जारी करनेवाला है। मात्रा५से१० बून्दतक ।

५१ ओलयम् पिटोसीलीनी वा पारसिले वा अजमोद इसको पीपलभी कहते हैं (अजमोदका तेल)

इसको शीतज्वर, तार्तीयिक चातुर्थिक ज्वरादिमें देते हैं और आधाशीशी तपेदिकमें जो रातको पसीना आता है उसको रोकनेके वास्ते, स्त्रीधर्म न होना या विना समयके स्त्रीधर्म होना, इन सबोंका फायदा होताहै । मात्रा ८ से १९ बूंदतक शर्बतके साथ ।

५२ ओलियम् पीसिस ।

बवासीर, कुष्ठ, त्वचारोग, मूत्ररोगमें देनेसे फायदा होता है । खांसी और तपेदिकको मुफीद है । गांठियाके दर्दोंपर लगाते हैं । मात्रा २० से ३० बूंदतक ।

५३ ओलियम् पाईपिस (कालीमिर्चका तेल)

इसको सोजाक, तृतीयज्वर, चातुर्थिकज्वर, महादद्रुमें लगानेसे फायदा होताहै और भीतरी बवासीरको आराम कर देता है । मात्रा २ से १० बूंदतक ।

५४ ओलयम् पाईमेन्टो (आलका तेल)

इसको पुराने दस्तोंमें देनेसे फायदा होता है।मात्रा १ बूंदसे५तक ।

५५ ओलियम् पाईनीसाइलवेसट्रिस (चपायनलीफका तेल अर्थात् अनन्नासके पत्तोंका तेल)

इसको किरानीलाकरनजाईटिस और कन्जजशाचन औफ दी लारिंक्समें देते हैं और बुखारोंमें सुँघाते हैं ।

५६ ओलियम् रूटे ।

इसको वायगोला, बच्चोंकी मृगी, स्त्रीधर्मके न होनेमें देतेहैं । मात्रा २ से ५ बूंदतक ।

५७ ओलियम् रीसीनी वा काष्ट्रोयल (अरंडीका तेल)

इसको अजीर्ण, कुलंज, वायगोला, मेदेका जखम, सूखा पेटका दर्द, तपेदिकके दस्त, बदहजमीके दस्त, नित्याजीर्ण, कब्जी,

चारपाईके लगनेसे कमरके जख्म, खराब गरमीका बुखार, आंतोंकी जलन, मरोडा, आंवके दस्त बंद करनेको इसका जुलाब निःसंदेह देना चाहिये । मात्रा ३ से १ औंसतक ।

५८ ओलियम् रोजमेरी ।

इसको वायगोला, दर्दपट्टा, उन्माद, बालोंका गिरना, जोफमेदा और विना समयके स्त्रीधर्म होनेमें देते हैं । मात्रा २ से ५बून्दतक ।

५९ ओलियम् सेवन वा सेवाईना ।

जब स्त्रीधर्म होना बंद होजावे या विना समयके हुवा करे तो इसको देनेसे स्त्रीधर्म होने लगता है । यह मानिन्द इर्गोटके बच्चेदानीको हिलाता है । इसवास्ते गर्भवती स्त्रीको नहीं देना चाहिये, क्योंकि इससे गर्भ गिर जाता है । जमालगोटेके माफिक इसके देनेसे दस्त और वमन होने लगती है । मात्रा २ से ६ बूंदतक ।

६० ओलियम् सेनटीली या सैंटिल आयल (सफेद चन्दनका तेल)

इसको सोजाकमें ३० से ४० बून्दतक दिनमें ३ मर्तबे जिसमें ३ हिस्से इसप्रिट मिलाहो और दालचीनीका तेल भी मिलाहो देना चाहिये और कोपेबाके साथ मिलाकर पुराने कुरहको बहुत मुफीद है । मात्रा १५ से ३० बूंदतक ।

६१ ओलियम् सासाफिरासं ।

बल बढानेवाला, रुधिरको साफ करनेवाला, पसीना लानेवाला है, इसवास्ते जो उपदंशके कारण शरीरपर फोड़े फुनसी होवें तो देतेहैं । मुखरोग,त्वचारोग, पुरानी गांठियामें इसको अनंतमूल अर्थात् उसबेके साथ देते हैं । मात्रा २ से ५ बूंदतक ।

६२ ओलियम् सिनेपिस या आयल औफ मास्टर्ड (राईका तेल)

बाहर लगानेसे उपाड करनेवाला, तेज, बडा हाजिम अर्थात् पाचक, पेट और सिरके दर्दको फायदा करता है । खांसी, पेट-

रेका दर्द छातीका दर्द इसके लगानेसे जाता रहता है, राशा, मृगी, सक्तेमेंभी काम आता है ।

६३ औलियम् सक्सीनी (अम्बरका तेल)

इसको पुरानी गांठियांमें जोडोंपर और बच्चोंके श्वासमें छाती-पर मलते हैं ।

६४ ओलियम् स्मब्यूक्स ।

जलंधर जो जिगरके कारणसे होवै तो इसको बतौर जुलाबके देते हैं । मात्रा २ से ५ बून्दतक ।

६५ औलियम् लम्बीकोरम् अर्थात् बारम आयल (केंचवेका तेल)

इसको सुस्ती और नामर्दीमें इन्द्रियके ऊपर मलते हैं ।

६६ ओलियम् पाईरीथ्री (अकलकरेका तेल)

सुस्ती और नामर्दीके वास्ते इसको इन्द्रियपर मलना परीक्षा किया हुआ है ।

६७ ओलियम् बर्गेमोट या ओलियम् लीमोनस ।

इसको मरहमों और मालिशके तेलोंमें डाला करते हैं ।

६८ ओलियम् लीमोनग्रास ।

अफरा, हैजा, वमनको अच्छा करता है । गांठिया और पट्ठेके दर्दोंमें इसको बाहर मलते हैं । कुचले हुये और मोचपर भी मला जाता है ।

६९ ओलियम् कोरिआन्डर (धनियेका तेल)

पाचन और सुस्वादु है । इसको सोजाकमें देनेसे पेशाबकी जलन फौरन आराम होजाती है । रीह और पेचिशके बंद करनेको भी देते हैं । मात्रा १ से ५ बूंदतक ।

७० ओलियम् केलेडोर (इतर केवडा)

इसको उन्माद और दर्दसरमें देनेसे बडा मुफीद है ।

७१ ओलियम् कार्डेम्– (छोटी इलायचीका तेल)

हैजेमें, मसानेकी पथरीमें पिया जाताहै । पित्तको दूर करताहै। मूत्ररोग, सुजाक इत्यादिकको दूर करता है । आंखके चारों तरफ लगानेसे नजलेका पानी निकलता है ।

७२ ओलियम् च्वालमोग्रा ।

मेदसमें होता है, कंठमाला, कोढ, गांठियां, उपदंश, तपेदिक, क्षयी, त्वचारोग इन्होंमें खिलाते और ऊपरभी मलते हैं । मात्रा ५ से १५ बूंदतक ।

७३ ओलयम् गर्जन (गर्जनका तेल)

इसको सोजाकमें मिस्ल कोपेबाके देते हैं, और चूनेके पानीमें मिलाकर कोढीके शरीरपर मलनेसे बडा फायदा होता है । सोजाकके वास्ते अत्यंत उत्तम दवा है । मात्रा २० ग्रेनसे १ ड्रामतक बताशा या दूधमें ।

७४ ओलियम् कोडीनम् (कोडीनेका तेल)

इसको घोडेके जखमोंपर, भेडोंकी खुजलीपर, आदमियोंके त्वचारोगमें लगाते हैं ।

७५ ओलियम् हार्टसहार्न (बारहसिंघेका तेल)

इसको पसीना लानेके वास्ते, आतोंके कीडे मारनेके वास्ते, स्त्रीधर्ममें, अकडवाईमें देते हैं और हरकिस्मके दर्दोंपर बाहर मलते हैं । मात्रा ५ से १० बूंदतक ।

७६ ओलयम् एली (ल्हसनका तेल)

इसको राशे और गांठियां दर्दपर बाहर मलते हैं । बहरै आदमीके कानोंमें डालते हैं ।

७७ ओलियम् केपसीसाय (लालमिर्चका तेल)

हैजेको और जिस जगहका पानी लगता हो उसको मुफीद है। मात्रा १ से ५ बूंदतक ।

७८ ओलियम् सीरीवेक्स (मोमका तेल)

इसको पेशाब लानेके वास्ते देते हैं। मात्रा २ से ४ बून्दतक।

७९ ओलियम् वक्सी।

इसको सोजाकमें देते हैं, दांतोंके दर्दको फायदा करता है। मात्रा ४ से ९ बून्दतक।

८० ओलियम् चार्टा (काजगका तेल)

जलेहुयेको, दंतके दर्दको, त्वचा रोगको, आंखके दुखनेको फायदा करता है।

८१ ओलियम् कालोसिन्थ (इन्द्रायणका तेल)

गांठिया और पट्ठेके दर्दोंपर मलते हैं।

८२ ओलियम् क्यूकरवीठा (रोगनकद्दू)

बवासीरको बडा फायदा करता है।

८३ ओलियम् द्वारगोटा।

खूनको बंद करनेके वास्ते २० से ५० बून्दतक और दस्तोंके बद करनेके वास्ते १० बून्द ३ घंटेमें देना चाहिये और गांठिया तथा दांतके दर्दपर बाहर लगाते हैं।

८४ ओलियम् फिलिस्मारिस।

इसको पेटके कीडे मारनेके वास्ते १० से ३० बूंदतक देते हैं।

८५ ओलियम् ट्रिटीसी (गेहूँका तेल)

इसको त्वचारोगमें लगाते हैं। यह बेवाइयोंको भी बंद करता है।

८६ ओलियम् सिल्ली कम्पौन्ड।

वास्ते नजले और खांसीके मुफीद है।

८७ ओलियम् केळीडोर (केवडेका तेल)

ठण्डा है, इसको उन्माद, बावलापना और सिरके दर्दमे देते हैं। लूहके मारे हुयेको फायदा करता है।

८८ ओलियम् सक्सीनी औक्साइडेटम् आर्टीफीशीयल मुश्क
(नकली मुश्क)

इसको फायदा दफै दर्द एन्डी इसपासमोडिक और नरघायन मात्रा ५से १० ग्रीन बच्चोंको ½ से १ ग्रीन।

अब एक्सट्राक्ट अर्थात् सत्व कहे जाते हैं।

८९ एक्सट्राक्ट अजू (अजवायनका जौहर सूखा)

इसको पेटके दर्दमें दस्त साफ लानेके वास्ते देते हैं, वायगोला, लकवा, राशा, कानका दर्द, छातीका दर्द भी दूर करता है। भोजनको पचाता है। कामशक्तिको बढाता है। मात्रा १ से २ ग्रेनतक।

९० एक्सट्राक्ट पीपरमैन्ट (पीपरमैन्ट पोदीनेका सत्त सूखा)

वायगोला, मितली, वमन, दर्दपेट, हैजा, प्यास, हुचकी, बच्चोंकी मृगीको दूर करता है। स्त्रीसंगके पहले स्त्रीको देनेसे गर्भ नहीं ठहरने देता। मात्रा १ से ५ ग्रेनतक।

९१ एक्सट्राक्ट औफ एकोनाइट (मीठेतेलियेका सत्व)

शून्य करता, कफनाशक विष है। दर्द, पट्ठा, खांसीको फायदा करता है। चढेहुये बुखारको उतारता है। दिलका परदा भारी होजानेमें, जलंधर, तपेदिक, सोजिशफेफडा, सोजिशझिल्ली और दर्द कमरको दूर करता है। मात्रा चौथाई ग्रेनसे२ग्रेनतक गोलीमें।

९२ एक्सट्राक्ट बारबेडोज एलोज (एलवेका सत्त्व)

रेचन दस्तावर, दस्त लानेके वास्ते बच्चोंके पेटपर लैप करते हैं। आदती कब्ज दूर करनेको बडी उत्तम दवा है, जिस स्त्रीके रजोधर्म कमती या बिलकुल नहीं होता होवे तो जब रजो धर्मके दिन पास आवे उस वक्त फौलादके साथ देनेसे स्त्रीधर्म ठीक ठीक होने लगता है। बच्चोंके चुन्मने मारनेके वास्ते गुदामें पिच-कारी देते हैं। इसका जुलाब मुफीद है। मात्रा ½ से ६ ग्रीष गोलीमें

देना चाहिये। इसी प्रकार सिल्वसकोत्तरीका एलवा दूसरा होता है उसकी मात्रा भी इसी प्रकार जाननी।

९३ एक्सट्राक्ट विलाडोना (मकोयका सत्व)

नारकोटिक अर्थात् सुस्त करनेवाला, स्त्रीका दूध बंद करता है। विष है। थूक और पसीनेकोभी रोकता है। पुतली आंखोंकी फैलाता है। मूत्र जारी करता है। सोंथको दूर करता है। अत्यंत कब्जीके दूर करनेको किसी दस्तावर दवाके साथ देना चाहिये। मसाना और गुरदेकी पथरी, गुरदेकी बीमारी, दमा, पट्ठोंका दर्द, कमरका दर्द, कोखका दर्द, खांसी, निद्रावस्थामें मूत्रका निकलजाना, मृगी, गांठिया, स्त्रीधर्म बंद होजाना, टायफाइसफीवरमें, ऐंठनमें, गर्भाशयमें, नित्यके अजीर्णमें, मूत्रकृच्छ्र, सुजाकमें, जुखाम, तिल्ली, इत्यादि रोगोंको फायदा करता है। मात्रा १/३ हिस्सेसे १ ग्रीनतक गोली।

९४ एक्सट्राक्ट केनेविस (चर्सका सत्व वा गांजेका सत्त्व)

यह कास, श्वास, अकडवायको फायदा करता है। बावले, कुत्तेके विषको नहीं चढने देता। गाठियां, शराबियोंका सन्निपात, सोजाक और कमलवायुमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा १/४ हिस्से से १ ग्रीनतक।

९५ एक्सट्राक्ट कन्थारीडिस (तेलनीमक्खीका पतला सत्त्व)

इसका तिला नामर्दीके दूर करनेको इन्द्रियपर मलाजाता है। छातीके दर्दमें बाहर मलाजाता है। जोडोंके दर्दमें और जो चोटके कारण रुधिर इकट्ठा होजाताहै तो उस परभी लगाते हैं। सोजाककी पीब बन्द करनेको देते हैं। दीमागकी बीमारियोंमें भी मुफीद है। बालोंको पैदा करता है और बढाताहै। इसका फोहा कनपटियोंपर रखना, आंख दुखती हुईको फायदा करता है और कानके

पीछे लगानेसे बहरेपनको, बहतेहुये कान वा दर्दको दूर करता है, नामर्दीको दूर करनेको इसकी पट्टीसे उपाड करते हैं। परदे और दिलकी सूजनपर मुफीद है। मात्रा ५ से १० बूंदतक। वीर्यप्रमेहके रोकनेको इस दवाकी परीक्षा करीगई है, वीर्यको पत्थरके माफिक करदेती है।

९६ एक्सट्राक्ट औफ बेल लिकोइड (बेलका पतला सत्व)

ग्राही, काबिज, दस्तों और आमातिसार मरोडेको फौरन बन्द करता है। मात्रा १ से २ ड्रामतक।

९७ एक्सट्राक्ट चिरायता (-चिरायतेका सत्त्व)

भूख लगाताहै, जाडेके बुखारको दूर करता है। मात्रा १ से २ ड्रामतक।

९८ एक्सट्राक्ट कोलची साय या कालचिकम् (सुरंजान मीठेका सत्त्व)

वायुहर्ता, खरास पैदा कर्ता, विष है। इसको पुरानी गांठियाके दर्द और सूजनके दूर करनेको अक्सीर है। सोजाकको भी मुफीद है। जलंधर, बवासीर और खांसीको फायदा करता है। जठराग्निको बढाता है। मल और मूत्रको जारी करता है। मात्रा ½ हिस्सेसे २ ग्रेनतक मिक्श्चर।

९९ एक्सट्राक्ट कालोसिन्थ (इन्द्रायनका सत्त्व)

रेचन करता, मूत्रल और आदती कब्जीको दूर करताहै, वावलापना, अत्यन्तशूल, जलंधर और उपदंशको अत्यन्त मुफीद है। मात्रा ३ से १० ग्रेनतक।

१०० एक्सट्राक्ट कोनायम् ।

इसका असर दिलपर होता है। खांसी, उन्माद, अकडवायु, बच्चोंकी मृगी, तपेदिक, गांठिया वायु, आतसक, घेघा, दर्द छातीको मुफीद है। मात्रा २ से ६ ग्रेनतक।

१०१ एक्सट्राक्ट डीजीरेलिस ।

यह मुकव्वी दिल है, पेशाब लाता है । जलंधर, खांसी, हौलदिली अथवा ज्यादा दिलके धडकनेमें मुफीद है । दिलके धडकनेको फौरन रोकता है । जो भीतर खून आता हो तो यह बंद कर देता है । मात्रा १/६० हिस्सस ३/१० ग्रेनके हिस्सेतक ।

१०२ एक्ट्राक्ट ल्यूपूलाय ।

मुकव्वी हाजिम, जब भूख बंद हो जाती है तब इसके इस्तेमाल करनेसे कब्जी दूर होकर भूख लगने लगती है । निद्रानाशमें निद्रा आनेके वास्ते देते हैं । स्त्रीधर्मको भी जारी करदेता है, तपेदिकमें भी देते हैं । मात्रा २ से ५ ग्रेनतक ।

१०३ एक्सट्राक्ट ईर्गट ।

नीचेके धडमें लकवा होजानेको फायदा करता है, इन्द्रियजुलाब है, सोजाकमें भी देते हैं, खूनके बहनेको रोकता है, दस्तोंके रोकनेको मुफीद है, कष्टित स्त्रीके खलास करनेको बडी उत्तम दवा है, सोमरोग अर्थात् योनिसे पानी बहनेको रोकता है, जवान स्त्रीका रजोधर्म बंद होगया हो तो खोलदेताहै, पेचिश और दस्तोंको रोकता है, नकसीरकोभी रोक देता है, पुराना सोजाक और उन्मादको भी दूर करता है । मात्रा १० से ३० बूंदतक ।

१०४ एक्सट्राक्ट जिनशियन (सत्त्व जंतयाना अर्थात् पाषाण भेद)

बृंहण, बलदायक, जब बडी बीमारीसे बीमार कमजोर होजाता है तब उसको ताकत बढानेके वास्ते देते हैं ओर नाताकती मेदेके सबबसे जब बदहजमी होजाती है उस बखत इस दवाको खिलाते हैं । पुरानी गांठिया और आंतोंके कीडे मारनेको मुफीद हैं । मात्रा २ से १० ग्रेनतक ।

१०५ एक्सट्राक्ट हायोसीयामी (खुरासानी अजवायनका सत्त्व)

मासानेकी जलन, दमा और जब पेशाब थोडा थोडा मसानेसे जलनके साथ आताहो तो इसके देनेसे पूरा फायदा होता है, सोजाक्को भी मुफीद है । बुखार और खांसीको बहुत उम्दा दवा है । जुंखाम और तपेदिकको मुफीद है । मात्रा २ से ६ ग्रेनतक ।

१०६ एक्सट्राक्ट नक्सवोमिका (कुचलेका सत्त्व)

इसको बदहजमी, कब्ज, लकवा और किसी बडी बीमारीके कारण जब बीमार बहुत कमजोर होजाता है तो ताकत लानेके वास्ते देते हैं । गांठियाका बुखार, वायगोला, दस्त और पेचिश, वायुका दर्द, गर्भवतीकी वमन, विषूचिका, चेहरेके आधे लकवेमें दमा और मृगीमें देते हैं और यह दवा कांच निकलनेकोभी बंद करदेतीहै, नामर्दीके दूर करनेको तो यह परमौषधि है । कामशक्तिको बढातीहै । मात्रा $\frac{१}{३०}$ हिस्सेसे $\frac{१}{१२}$ ग्रेनतक ।

१०७ एक्सट्राक्ट ओपियम् (अफ़ीमका सत्त्व)

ग्राही, काबिज, सिडेटिभ तथा नारकोटिक स्तंभन करता है । सिवाय त्वचा और स्तनोंके तमाम बदनकी रतूबतोंको रोकनेवाला है । इसको जाडेके बुखारोंमेंभी देते हैं । माताके निकलनेमें देते हैं । उन्माद, मृगी, अकडवायु, रिंगनवायु, पट्ठेका दर्द, छातीका दर्द, पसलीका दर्द, तपेदिक, श्वास, कास, जलंधर, उलटी, विषूचिका, वीर्यप्रमेह, अतीसार, पेचीश, सोजाक, पथरी और गुरदे वा मसानेको, रेतको दूर करता है । स्त्रीधर्मका तकलीफसे होना, गर्भपात होना, बवासीर अंदरूनी और भीतरसे रुधिर पडनेमें, कान, नाक और गलेके रोगोंमें उपदंश और अंडकोशके बढनेमें, पुरानी गठिया और सिरके दर्दमें दिया जाता है । मंदाग्निको दूर करता है । दूध और पसीनेको बढाता है । दर्दकमर

और जब सूखी खांसी बारबार उठती हो तो उसको रोकता है। दर्द गुदा और दर्दमसानाके वास्ते मुफीद है। मात्रा ३ हिस्सेसे १ ग्रेनतक। तथा एक्सट्राक्ट ओपियम् लिकोइड (अर्थात् अफीमका पतला सत्त्व) इसकी मात्रा १० से २० बूंदतक है और इसमें उपरोक्त सम्पूर्ण गुण जानना चाहिये। इससे मसाने और गुरदेकी पथरी बाहर निकल आती है।

१०८ एक्सट्राक्ट वायविडंग (वायविडंगका सत्त्व)

सूजनोंके बिठानेको, बच्चोंकी मृगी और मुखकी लार रोकनेको दिया करते हैं। जोडोंके दर्दपर मलनेसे फायदा होता है। प्रसूताको इसका पानी पकाया हुआ पिलानेसे फायदा होता है।

१०९ एक्सट्राक्ट बावची (बावचीका सत्त्व)

इसको कुष्ठ और सफेददागोंके होजानेमें देतेहैं, रुधिरको साफ करता है। केंचवोंको मारकर बाहर निकालदेता है। मात्रा २ से १५ ग्रेनतक।

११० एक्सट्राक्ट कुवाशिया।

जाडेका बुखार,मंदाग्नि, ज्वरके पीछेकी निर्बलता और मेदेकी कमजोरीमें देते हैं। मात्रा ३ से ५ ग्रेनतक।

१११ एक्सट्राक्ट रीयाई कम्पौंड या

एकसट्राक्ट रूवर्व (रेवंदचीनीका सत्त्व)

मृदु रेचन, अनुलोमन, इसको जुल्लाबके तौरपर बच्चोंको देनेसे बडा फायदा है, बदहजमी, कब्ज, वायगोला, अफरा, मुखरोग, जलंधर और बच्चोंके हैजेको उत्तम दवा है और पारेके कुश्ते अर्थात् भस्मीमें मिलाकर जब बच्चोंको देते हैं तो मेदेको ताकत देताहै और हाजमाभी दुरुस्त होजाता है। मात्रा ५ से १५ ग्रीनतक।

११२ एक्सट्राक्ट सेवाईना ।

इसको पुरानी गांठियामें देते हैं। पेटके कीडोंको मार डालता है। इसका अर्क खुजलीको मुफीद है। तैल मरहममें काम आता है। स्त्रीधर्मको जारी कर देता है। गर्भवती स्त्रीको इसका देना मनाहै, क्योंकि इससे फौरन गर्भ गिर जाता है। मात्रा २ से ९ ग्रेनतक।

११३ एक्सट्राक्ट सारसापरेलालिकोइड ।

(उसबा अर्थात अनन्तमूलका पतला सत्त्व)

रक्तशोधक, बलरूपदायक, उपदंश, त्वचाकी बीमारी, कण्ठमाला, सडे हुये जखम, उपदंशके चकत्ते, इन्होंको दूर करता है। उपदंशका जहर जब रुधिरमें प्रवेश करजाता है, तब इसी कारणसे उपदंशको आराम नहीं होने देता, जब मौसम वर्षात या जाडा आता है उस बखत तकलीफ देनेसे १०० वर्षतक पीछा नहीं छोडता। कभी तो इंद्रियपर जखम, कभी शरीरपर फोडे फुनसी वा खुजली होती है। उसको दूर करनेके वास्ते इससे बढ़कर दवा दुनियाँभरमें नहीं है। इसमें हायड्रोपाटास मिलानेसे अत्यन्त उत्तम बन जाता है, सिवाय उपदंशके इतने रोगोंको औरभी दूर करता है। गांठिया, कमजोरी, मंदाग्नि, बद, अर्श, गुदा और नासिकाके रोग, पुराना भगन्दर, फेफडेकी बीमारी, दद्रु, वन्ध्यापना, जलंधर, मसूढेके रोग, शीतज्वर, जिगरके रोग, गलेका घाव, मुख और नाकके जखम, जोडोंका शोथ, कानकी फुन्सी, नेत्रशोथ, फोडा, कास, श्वास, मृगी वगैरहको आराम करता है। बहरेको श्रवणशक्ति देता है। मात्रा ½ हिस्सेसे १ औंस तक।

११४ एक्सट्राक्ट औफ इस्ट्रीमोनियम् (धतूरेका सत्त्व)

बेहोशी करता, कफ श्वासनाशक और विष है। इसकी गोलियां दमेके मरजको बिलकुल खो देती हैं। अगर आदमी पथ्यसे रहै तौ फिर दमा नहीं होता। पट्ठेका दर्द, गांठिया, रींगन वायु, आंखका दर्द, जखम, बवासीर, मृगीको दूर करता है मात्रा ३ हिस्सेसे आधे ग्रेनतक गोलियां मिक्श्चरमें।

११५ एक्सट्राक्ट टेरेक्सीसारप।

असर इसका मानिन्द अनंतमूलके है। पित्तकी वृद्धिको कम करता है। जलंधर, उपदंश, त्वचाके रोगोंको दूर करता है, स्त्रीधर्मको खूब साफ लाता है। जिगरके रोगोंको तो अक्सीर है। जब हाथ, पैर, मुखपर शोथ या कवलवायु हो जावै उस वखत इस दवाके माफिक कोई दवा काम नहीं करती और यह मूत्रको भी साफ लानेवाली " मात्रा २ से ५ ग्रीनतक

११६ एक्सट्राक्ट सम्बुल।

इसको दमा, वायगोला, मृगी, बुखार, पेचिस, अतिसार, हैजा, खट्टी डकार, स्त्रीधर्मका कमती होना इत्यादि रोगोंमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा १० से २० बूंदतक।

११७ एक्सट्राक्ट यूकेलिपटिस।

इसको तेलको कोनैनके माफिक शीनज्वरमें देते हैं। दमा, खांसीको दूर करता है। दस्तोंको रोकता है। पेटके कीडोंको मारनेवाला है। मात्रा १ से ३० बूंदतक।

११८ एक्सट्राक्ट गुबाराना।

पट्ठोंका दर्द, अतिसार और पेचिशको दूर करता है। दिलके कायोंको बढाता है। मात्रा १० से ३० बूंदतक।

१३१ एक्सट्राक्ट हीमंटाक्सीसाय ।

आमरक्तातिसार पुराना, अजीर्ण, मैसिल, रुधिरका पडना और बच्चोंके हैजेमें देते हैं तो फायदा होताहै। मात्रा १० से ३० ग्रेनतक ।

१३२ एक्सट्राक्ट जवोरेन्डी ।

यह गुरदेकी बीमारी, कास, श्वास, बच्चेदानीके रोग, उपदंशको मुफीद है। जहरोंके असरको दूर करता है। बालोंको बढाता है। त्वचाके रोगोंको मुफीद है, इसकी पिचकारी दांतोंके दर्दको मुफीद है। मात्रा २ से १० ग्रेनतक ।

१३३ एक्सट्राक्ट किरामीरया ।

इसको मंजनमें डालते हैं,। गलेके आजानेमें इसकी कुरली करते हैं। कांच निकलने और सोजाकमें भी इसकी पिचकारी लगाई जाती है। मात्रा ५ से २० ग्रेनतक ।

१३४ एक्सट्राक्ट जलापी या जलप (जुलाफेका सत्व)

कब्ज वा सोजनकी बीमारीमें सुगंधित तेलोंके साथ दिया जाता है। जिसमें पेचिश और दर्द न होनेपावे । जलंधर पेटके केंचवे मारनेको क्रीम औफ टारटरपोटासायसरफ या कैलोमेलके साथ खिलाते हैं। मात्रा ५ से ३० ग्रेनतक गोली।

१३५ एक्सट्राक्ट लकरऐ ।

फायदा इसका अफीमके समान है । जब अफीम मुवाफिक नहीं आती है तब इसको देते हैं। मात्रा ५ से १५ ग्रेनतक ।

१३६ एक्सट्राक्ट केले बारबीन ।

जब आंखोंको रोशनी नहीं सहारसक्ती तब इसको आंखोंमें डालते हैं। अकडवायुके प्रारंभ होतेही देते हैं। कुचलेके जौहरके जहरको मुफीदहै। मात्रा १ से ४ ग्रेनतक ।

१३७ एक्सट्राक्ट कस्केरासिगरेडा।

भूख तेज करताहै। और मेदेको बलवान् करताहै। जिसको हमेशा कब्ज रहता होवै उसके वास्ते बडा फायदा होताहै। इसके देनेसे एकदफे दस्त साफ होजाता है। कितनेही दिनोंसे कब्ज क्यों न रहताहो परन्तु यह दवा उसको दूर करदेती है। मात्रा से १ ड्रामतक।

१३८ एक्सट्राक्ट टाईनासपोरा (गिलोयका सत्त्व)

इसको नित्यज्वर और शीतज्वर, अजीर्ण और निर्बलतामें मादनी तेजाबोंके साथ देनेसे फायदा होता है। मात्रा९से१०ग्रेनतक।

१३९ एक्सट्राक्ट सालममिसरी (सालममिश्रीका जौहर)

इसको ताकत लानेके वास्ते देते हैं, धातुको खूब पुष्ट करता है, परीक्षा कियाहुवा है। मात्रा २से आधासेर दूधमें पकाकर खिलावे।

१४० एक्सट्राक्ट इवीनिंगपिरायमरोज।

इसको निकास जिल्दी और दादमें बहुत इस्तेमाल करते हैं। दमा और खांसीमें भी मुफीद है।

१४१ एक्सट्राक्ट एवा या कव।

इसको सोजाकमें देनेसे तुर्त फायदा होता है।

१४२ एक्सट्राक्ट विलैकहा।

यह गर्भ गिरते हुयेको रोकता है। बच्चेको अपनी जगहपर कायम रखताहै। गर्भपात चाहे किसी कारणसे क्यों न हो, रोक देता है।

१४३ एक्सट्राक्ट वालसीमीना।

इसको जलंधरकी बीमारीमें देनेसे फायदा होता है।

१४४ एक्सट्राक्ट केलेनडयूला ।

इसको कंपवायु, कंठमाला, बवासीरमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा अर्ककी ४से ६ बूंदतक।

१४५ एक्सट्राक्ट चीनीपोडी ।

इसको उस स्त्रीके वास्ते जो अच्छी तरह खुलकर स्त्रीधर्मसे नहीं होती देनेसे ठीक होने लगती है। मात्रा ४ से १९ ग्रेनतक।

१४६ एक्सट्राक्ट मोनेसीर्यावार्क ।

इसको खून थूकने और आमरक्तातिसारमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा ४ से ८ ग्रेनतक।

१४७ एक्सट्राक्ट नारसीसी ।

इसको खांसीमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा½ से १ ग्रेनतक।

१४८ एक्सट्राक्ट वेराईटेरीया ।

इसको जलंधरमें देते हैं।

१४९ एक्सट्राक्ट डाक्सीकोडीनडिरान ।

इसको मृगीमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा १ से ८ ग्रेनतक।

१५० एक्सट्राक्ट इंडियनहैंप ।

नारकोटिक बावटे नाशक। चौथाई ग्रेन गोली।

१५१ एक्सट्राक्ट औफ इंडीलियम ।

अनुलोमन, मुलयैन, पित्तरेचन। ९से ३० ग्रेनतक गोली या मिक्श्चर।

१५२ एक्सट्राक्ट एसीटिफ ।

वायुहर्ता, खरास पैदा करता, विष। मात्रा १ ग्रेन।

१५३ एक्सट्राक्ट लिकरस (मुलेठीका सत्त्व)

अनुलोमन, कफहर्ता। ९ से ३० ग्रेन गोली।

१५४ एक्सट्राक्ट औफ हौप्स ।

बलकर्ता, नींद लानेवाला । ५ से १५ ग्रेनतक ।

अब इस्प्रिट लिखे जाते हैं ।

१५५ इस्प्रिट ईथर नैट्रौसाय ।

इसको जुकाम और बुखारमें पसीना लानेके वास्ते और जलंधरमें मूत्र लानेके वास्ते, बुख रोंमें शर्दी पहुँचानेको १ ड्राम, पेशाब लानेको २ से ३ ड्राम और हैजेमें प्यास बुझानेके वास्ते अंगूरी सिर्केके साथ देते हैं। इस्प्रिट और ईथर बावटे ऐंठनका नाश करनेवाला है। ६० बूंद मिक्श्चर ।

१५६ इस्प्रिट बायन गियालीसाय ।

इसमें आलकोहल अर्थात् नशेवाली चीज ५३ हिस्से होती हैं। मुकव्वी मेदा और ताकदवर है। ज्वरमुक्त रोगीकी निर्बलता, हैजा और दर्दको मुफीद है।

१५७ इस्प्रिट हालेन्डी ।

इसका नाम जिनभी है। इसमें नशेकी चीज ५७ हिस्से हैं।

१५८ इस्प्रिट जेमेकीनसिस ।

इसका नाम विस्की भी है। इसमें नशेवाली चीज ५४ हिस्से है। उपरोक्त चारों इस्प्रिटोंके पीनेसे रंग और पट्ठोंकी तहरीक होती है, दीन व दुनियाकी चिंता दूर होजाती है। खुशी पैदा होतीहै। मुकव्वी मेदा है। दर्द, अफरा, बदहजमी उलटीके वास्ते बडी जल्दी फायदा होता है। खराब किस्मके बुखारोंमेंभी देते हैं। इससे १ मिक्श्चर बनता है।

१५९ इस्प्रिट रेकटीफीकेटस ।

इसमें आलकोहोल नशेवाली चीज हमराह १६ दीपदीशानीके मिलाहुआ निहायत नशा करनेवाला है, इसको अत्यन्त निर्बल-

तामें देतेहैं । हैजेके वास्ते मुफीद है । छाले और जले हुयेपर परकी कलमसे लगाते हैं । स्तनोंको कठिन करनेके वास्ते भी लगाया जाता है, गलेके रोगोंमें कुरले किये जाते हैं । गर्भवती स्त्रीके पेटपर मलनेसे गर्भको गिरनेसे बचाता है । वस्ती स्थानपर लगानेसे बंद पेशाबको जारी करदेता है और शोथभी दूर हो जाता है । मात्रा १ से २ ड्रामतक पानी मिलाकर, पानी मिलिहुईको इस्प्रिटटेज्यूर या पिरुफ इस्प्रिट कहते हैं ।

१६० इस्प्रिट पाईरोक्सीनिकम् वा मीडीशनलनफ वा उड इस्पीट ।

कफको निकालनेवाला, तपेदिक, पुरानी खांसी, अकडवायु, गाठिया, अतिसार, पेचिश, बवाई, हैजेमें मुफीद है । इसको सिलकी बीमारी और जी मिचलानेमें देते हैं । मात्रा १० से ३० बून्दतक दिनमें ३ दफे देवे ।

१६१ इस्प्रिट एमोनिया ऐरोमेटिक ।

रसादिकोंमें तेजी करनेवाला, इसको खांसी और बडेभारी बुखारोंमें देते हैं । निहायत कमजोरीमें जब बीमार निढाल हो जाता है, तब इसके देनेसे होशमें हो जाता है । मात्रा २० से ३० बून्द तथा १ ड्रामतक मिक्श्चर ।

१६२ इस्प्रिट एमोनया फोइटडिस ।

इसको स्त्रियोंके वायशूल और वायगोलेमें देनेसे फायदा होता है, बूढे आदमीको जुखाम कास श्वास हो तो इसको देनेसे फौरन् आराम होताहै । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

१६३ इस्प्रिट केजुपुटाय ।

वायशूल, वायगोला, जलंधर, पुरानी गांठियोंमें देनेसे फायदा होता है मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

१६४ इस्प्रिट केम्फर ।

इसको हैजे और खांसीमें देनेसे आराम होता है। मात्रा ५ से ३० बून्दतक ।

१६५ इस्प्रिट क्लोरोफारम ।

क्लोरोफारमवत दमा, खांसी, दर्दपेट, दर्दगुर्दा औरभी बहुतसी बीमारियोंको मुफीद है। मात्रा १० से ६० बुन्दतक ।

१६६ इस्प्रिट जूनीपर ।

इसको जलंधरकी कमजोरी दूर करनेके वास्ते और पेशाब लानेके वास्ते देते हैं। मात्रा १ से ३ बून्दतक ।

१६७ इस्प्रिट औफ पेपरमैन्ट ।

शूलनाशक पाचक। मात्रा १ ड्रामतक मिक्श्चर.

वाइनभी रूहका नाम है, शोरासे बनती है और सात दिनमें तैयार होती है । वाइनम् अर्वासिथी वाइनम् एलोज, वाइनम् एन्टीमोनी, वाइनम् कोल्वीचीसाप, वाइनम् कालोसिंथ, वाइनम् डीजीटेलिस, वाइनमूर्फी, वाइनम् एपीकेक, वाइनम् ओपियम, वाइनम् पेपसीन, वाइनम् कोनैन, वाइनम् रियाय यह सब वाइनों-का गुण इन्हीं इन्हीं दवाओंके टिंचर या एक्सट्राक्टके बराबर हैं। वाइन औफ रूबर्ब मेदेको बलदायक अनुलोमन है। मात्रा १ से २ ड्रामतक ड्राफ्ट मिक्श्चर ।

अब टिंचर जो रूह वनस्पति और धातुओंका बनता है उसका स्वभाव गुण मात्राभी उसी औषधके समान जानना ।

१६८ टिंचर एकोनाइट ।

दर्दोंको मौकूफ करनेवाला, बुखार उतारनेवाला, दिलकी हरकत कम करनेवाला, बाकी फायदे सब एक्सट्राक्ट एकोनाइटके समान है। मात्रा ५ से १० बून्दतक ।

१६९ टिंचर पोडोफीलीनरीजीना ।

वनस्पतिका पारा उपदंश और जिगरकी बीमारियोंको दूर करता है। देखो पोडाकीलीनको उम्दा अमीराना जुलाब है। मात्रा १५ बून्दसे ½ डामतक ।

१७० टिंचर एकटोरसमोसा ।

दर्दोंको खोनेवाला, पट्ठोंको ताकत देनेवाला, दर्दकमर, गांठियाको मुफीद है। वहरअर्क इसका जोडोंकी सूजनपर लगाते हैं। मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

१७१ टिंचर एलोज ।

फायदा इसका मानिंद एक्सट्राक्ट औफ एलोजके है। दायमी, कब्ज और वायगोलेको तथा अफरा और अजीर्ण वगैरहको मुफीद है। तिल्ली और दर्दगुर्देको मुफीद है। मात्रा १ से २ ड्रामतक।

१७२ टिंचर एलोज एटमुर ।

जब स्त्रीधर्म बन्द या तकलीफसे आताहो तो इसका देना मुफीद है। बाहर रसोलियोंपर लगाते हैं। मात्रा ५ से ३० बूंदतक।

१७३ टिंचर एमोनिया ।

दर्दपट्ठा दर्दकमरको दूर करता है, खांसी और बदहजमीको मुफीद है मात्रा ५ से १० बूंदतक ।

१७४ टिंचर आरनीकामोनटीना ।

पेशाब, पसीना और स्त्रीधर्मको जारी करनेवाला । लकवा और शिरमें पानी जमा होकर बढगयाहो उसमें खराब बुखारोंमें मुफीद है बाहर इसको मोंच और चोटपर लगाते हैं । आतशाकके जखमोंपरभी लगाते हैं । सोजाकमें पिचकारी करते हैं। मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

१७५ टिंचर आसाफोटीडा ।

पुरानी खांसीको मुफीद है। पट्ठेकी बीमारी, वायगोला अफरेको दूर करनेको देते हैं। मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

१७६ टिंचर अरेन्शीयाय ।

इसको मेदेकी ताकत बढाने व भूँख लगानेको देते हैं। अफरेको दूर करता है। मात्रा १से २ ड्रामतक ।

१७७ टिंचर बेनजोईनीको ।

खांसी और फेफडेसे खून आनेको बंद कर देता है। मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

१७८ टिंचर बेलेडोना ।

दर्दपट्ठा, खांसी, लकवा और गांठियामें देते हैं। मात्रा १ से १० बून्दतक ।

१७९ टिंचर बोल्डो ।

मेदेको पुष्ट करनेवाला, निर्बलतानाशक और जिगरकी बीमारियोंको दूर करता है। अजीर्णमें भी देते हैं। मात्रा १० से २० बून्दतक ।

१८० टिंचर ब्यूक्य ।

पेशाब लानेवाला, पसीना निकालनेवाला और ताकतवर है। असर इसका मसाने और रतूवती परदेपर होता है। मूत्रकृच्छ्र,मूत्राघात, अजीर्ण, पुरानी गांठिया, जलंधर, जलन मसानेकी, सोजाक मसाने और गुरदेके रेतको बंद करता है। मात्रा १ से २ ड्रामतक.

१८१ टिंचर कोल्मबी ।

मेदा और दीमागको पुष्ट करनेवाला, क्षुधाको बढानेवाला इसको फौलादके साथ खिलाते हैं। उस कमजोरीमें जो बाद बुखार छूटजानेके होती है। या किसी बीमारीसे आराम होजानेके

बाद जो कमजोरी रहती है सो इसके देनेसे दूर होती है । कंठमाला और गांठियामें भी देते हैं । मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

१८२ टिंचर केम्फर कम्पौन्ड ।

दमा, खांसी और हैजेकी परीक्षा कीहुई दवा है । इसको बच्चोंके दस्त बंद करनेके वास्तेभी देते हैं । मात्रा ५ से २० बून्दतक ।

१८३ । टिंचर केनेविसको ।

इसको खानेसे नींद आतीहै और दर्द बंद होजाताहै । बहुत जोरकी खांसी और अकडवायु, बावले कुत्तेका विष, स्वरभंग,दमा और पट्ठेके दर्दको यह दवा मुफीद है । मात्रा ५ से २० बून्दतक ।

१८४ टिंचर केन्थारीडिस ।

इसको पुराने अर्द्धाङ्ग और फालिजमें तथा सोजाक, नामर्दीमें खिलाते हैं । यह बडी अनुभूत दवा है । इसको छाला उपाडनेके वास्ते छाती इत्यादिकोंपर लगाया करते हैं । ओर वीर्य प्रमेहको यह दवा रोकदेती है । धातुके पुष्ट करनेको बहुत मुफीद है मात्रा ५ से २० बूंदतक ।

१८५ टिंचर कोर्डसोम्मको ।

मेदेको पुष्ट करता है, वायुका नाश करता है, अफरेको उतारता है । कोनैन मिक्श्चरमें सुगंधी देने और कोनैनकी गरमी दूर करनेको मिलाते हैं । मात्रा १० से ३० बूंदतक ।

१८६ टिंचर केपसीसाय ।

इस दवाको कोनैनके साथ बुखारकी बारी रोकनेको देते हैं । हैजेकी बीमारीको मुफीद है । बदहजमीको रोकता है । दरिया या उसके किनारेपर रहनेसे जो बीमारी होती है उसको दूर करता है और गलेके जखमोंमें इसकी कुल्ली कराते हैं ।

१८७ टिंचर कस्करीला ।

बदहजमी, दस्त और पेचिशको दूर करता है और बुखार रोकनके वास्तेभी देतेहैं । मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

१८८ टिंचर केसटोरी ।

इसका गुण कस्तूरीके माफिक है । पट्ठेका दर्द,वायगोला और मृगीमें देनेसे फायदा होता है । मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

१८९ टिंचर केटीक्य ।

इसको दस्त और पेचिश रोकनेके वास्ते देते हैं । चाकमिक्श्च-रके साथ मिलेहुयेकी मात्रा १से २ ड्रामतक ।

१९० टिंचर चिरायता ।

बुखार और उपदंशरोगीको देतेहैं । मेदेको पुष्ट करता है । मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

१९१ टिंचर क्लोरोफार्म ।

दमा, अकडवायु और वायगोलेके वास्ते यह दवा अक्सीर है । वमन रोकनेके वास्ते अकसीरका काम कर दिखाती है । मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

१९२ टिंचर सिनेसोमाय ।

कामशक्तिको बढाताहै । हाजिम है । भूँख बढाता है । अफरा और रीहको दूर करता है, मात्रा ½ से २ ड्रामतक ।

१९३ टिंचर पिपरलागम ।

पाचकशक्तिका रखनेवाला और तिल्लीको दूर करनेवाला, धातुको पुष्ट करता और पेशाबको लानेवाला है । रात्र्यंध और चातुर्थिक ज्वरको दूर करता है । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

१९४ टिंचर सन्कोना ।

बल और भूँखको बढाता । बदहजमी, पुराना बुखार और

२०८ टिंचर हलीबोरनिगरा ।

खुजली, उन्माद, कांचका निकलना, जलंधर, मृगी, स्त्रीधर्मका कमती होना, कुष्ठ, गांठिया और बुखारको फायदा करता है। पतले दस्त लगाता है। पुराना नजला और आधासीसीको मुफीद है। मात्रा ५ से १० बूंदतक।

२०९ टिंचर हायरे सियामी।

पट्ठोंका दर्द, मसानेकी जलन, अत्यंत खांसी दूर करनेके वास्ते उम्दा चीज है। मात्रा ½ से १ ड्रामतक।

२१० टिंचर आयोडीन।

जिगरका सोथ, तिल्ली, उपदंशका सोथ और गिलटी दूर करनेके वास्ते बाहर लगाते हैं, और बहुत थोडी मात्रासे खिलाते हैं। मात्रा ५ से २० बूंदतक। रुधिरको साफ करनेवाला, जहरके असरको दूर करनेवाला जलंधर और रतूबतको रोकनेवाला, अंडकोश और कंठमालामें भी लगाते हैं। तथा गांठिया और रसौलियोंके बैठानेकोभी लगाया जाता है।

२११ टिंचर जलापा।

जलंधर, कब्ज और वायगोलेमें दस्त लानेके वास्ते देते हैं। मात्रा ½ से २ ड्रामतक।

२१२ टिंचर कमीला।

बच्चोंके पेटके कीडे और कद्दूदानोंके वास्ते मारनेके वास्ते बतौर जुलाबके देते हैं। मरहम इसका मुरदाशंखके साथ रतूबत बंद करनेके वास्ते बाहर लगाते हैं। मात्रा ½ से २ ड्रामतक।

२१३ टिंचर काइनो।

इसको दस्त बंद करनेके वास्ते देते हैं। मात्रा ½ से २ ड्रामतक.

२१४ टिंचर किरामिरया।

काबिज है, इसको दस्तोंके बंद करनेको देते हैं। मात्रा १ से २ ड्रामतक।

२१५ टिंचर लेवेनजुला।

इसको इन्द्रियके उठनेके वास्ते बाहर लगाते हैं। बालोंपर लगानेसे बाल मजबूत और स्याह होते हैं। पेटका अफरा, वायगोला और पट्ठोंके दर्दको आराम करता है। मात्रा १ से २ ड्रामतक।

२१६ टिंचर लीमोन्सपील।

जब मेदेमें खार ज्यादा होता है तो देते हैं। मेदेको पुष्ट करता और हाजिम है। मात्रा १ से २ ड्रामतक।

२१७ टिंचर लोबेल्याइंथर।

पुरानी खांसी और नजला तथा जुखाम और एंठनको मुफीद है। मात्रा १० से ३० बूंदतक।

२१८ टिंचर यूकेलिंपटस।

जाडेके बुखारोंकी मिस्ल कुनैनके बहुत मुफीद है। मात्रा १० से ३० बूंदतक।

२१९ टिंचर ल्यूपयूलाय।

यह अत्यन्त उत्तम हाजमा करनेवाला है, धातुको पुष्ट करता है। नींद लाता है। जब अफीम मुवाफिक नहीं आती तो इसको देते हैं। इसके तकियेपर शिर रखकर सोनेसे दर्द सर जाता रहता है। बेचैनी और कमजोरीमें देनेसे फायदा होता है।

२२० टिंचर जल्सीमी।

चेहरेका दर्द, पट्ठा, जाडेका बुखार, गांठिया और खाँसीको मुफीद है। मात्रा १ से १९ बून्दतक।

२२१ टिंचर गमरुवस्म ।

दस्त बन्द करनेको मुफीद है मात्रा २० से ४० बून्दतक ।

२२२ टिंचर हीमेमेलस ।

रक्तातिसार रक्तांश और रुधिरके बहनेको मुफीद है । मात्रा १० से ३० बून्दतक ।

२२३ टिंचर हाईडिसासटिस ।

यह दवा थूंक और लारको ज्यादा करती है, भूंख बढाती है, भोजनको हजम करती है, जिगरको फायदा देती है । सोजाकको बडी मुफीद है । अमरीकावाले इसको कोनैनके जगह खर्च करते हैं । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

२२४ टिंचर जेवोरेन्डी ।

थूक लार और दूधको बढाता है । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

२२५ टिंचर मेटीको ।

खूनी बवासीर, सोजाक, तपेदिक रोगीके दस्त, खून और रत्तुवतोंको बंद करनेके वास्ते देतेहैं । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

२२६ टिंचर लारीसिस ।

पुरानी खांसीमें देते हैं तो फायदा होता है । मात्रा २० से ३० बून्दतक ।

२२७ टिंचर मुशकस ।

धातुपुष्ट करनेको और जल्दी खलास हो जानेमें, चिंता और उन्मादमें, जोफदिल, लकवा, खांसी, शरदीमें देते हैं । पट्ठे और दीमागको पुष्ट करनेवाला और बच्चोंके श्वासका नाशक है । मृगी रोगमें इसकी परीक्षा की गई है । मात्रा १० से ३० बून्दतक ।

२२८ टिंचर मुर या बोरेक्स ।

इसको एडीकीलानसे बनाते हैं । जो स्त्रीधर्म नहीं होता हो अथवा तकलीफसे होता हो तथा जाबडेका रुधिर या दर्द या

दांतके उखडनेके पीछे रुधिरका जारी होना इससे बन्द हो जाता है । मात्रा १० से ३० बून्दतक ।

२२९ टिंचर नक्सवोमिका ।

इसको पट्ठोंकी बीमारीमें देते हैं। पट्ठोंको पुष्ट करता है, इस सबबसे नामर्दीकी दवा है और लकवेको फायदा करता है मात्रा १० से ३० बून्दतक ।

२३० टिंचर ओपियम् ।

दस्तोंके बंद करने और दर्दके हटानेके वास्ते देते हैं। खांसीको मुफीद है । वीर्यको रोकता है। मात्रा १० से ३० बून्दतक ।

२३१ टिंचर परेरा ।

गुरदा और मसानेका जखम और रेत तथा पथरीमें दिया जाता है । झिल्लीकी सूजनको दूर करता है । पेशाब लाता है । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

२३२ टिंचर पिसरोली ।

कोढको फायदा करता है । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

२३३ टिंचर पाईरींथी ।

इसको पिलटीरूटभी कहते हैं । सुस्तीकी बीमारीमें इसको इन्द्रियपर मलते हैं। कीड़ा खाई डाढको मुफीद है । गांठियाके दर्दपर लगाते हैं। खांसीको मुफीद है। लार और थूकको बढाता है इसकी कुरलीभी करते हैं। काग गिरे हुयेको उठा देता है । मात्रा २ बूंद रुईमें लगाकर दांतके दर्दमें लगावे ।

२३४ टिंचर कुवासीया ।

मेदेको पुष्ट करके भूंखको बढा देता है । कमजोरी और बुखारोंको दूर करता है । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

२३५ टिंचर कोनैन सल्फास ।

जाडेका बुखार इसके देनेसे दूर हो जाता है ।

२३६ टिंचर कोनैन अमोनीएटिड ।

खांसी, तपेदिक और फेफडेकी बीमारीको मुफीद है । मात्रा ½ से २ ड्रामतक ।

२३७ टिंचर फाईसेलिस ।

इसको महीन बुखार और पेशाब लानेके वास्ते देते हैं । मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

२३८ टिंचर रूबर्ब ।

दस्तावर है, कब्जको दूर करता है । मेदे और जिगरके रोगोंको मुफीद है । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

२३९ टिंचर सेवायना या सेवन ।

पेटके कीडे और गांठियाको दूर करता है, बंद हुए स्त्रीधर्मको जारी करता है । इससे दस्त और उलटी जारी होती है इसवास्ते गर्भवतीको नहीं देना चाहिये क्योंकि इससे गर्भ तुर्त गिर जाता है । मात्रा १५ से ३० बूंदतक ।

२४० टिंचर सिल्ली ।

करडे कफको पतला करता है और बाहर निकाल देता है । खांसीको मुफीद है । जलंधरको दूर करता है । मात्रा १५ से ३० बूंदतक ।

२४१ टिंचर सनेगा ।

पुरानी खांसी, बूढे आदमी और कमजोरको एमोनियाके साथ देते हैं । छातीके दर्द और कफके रोगमेंभी दिया जाता है । पेशाब और स्त्रीधर्मको जारी करता है । बुखार बदहजमी और पेटके आफरेमें देनेसे पतले दस्त होकर आराम हो जाता है और आंतोंको साफ कर देता है । इस्प्रिटएमोनिया ऐरोमेटके साथ देनेसे ज्यादा फायदा करता है । मात्रा १ से ४ ड्रामतक ।

२४२ टिंचर सर्पेन्टेरिया ।

चातुर्थिक ज्वरके रोकनेको एमोनियाके साथ देते हैं। बदहजमी और गांठियाको मुफीद है। मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

२४३ टिंचर संबुल ।

दस्त और पेचिश तथा हैजेके दस्तोंको मुफीद हैं। दमा, वायगोला, मृगी, बुखार और वबाई हैजेको मुफीद है। मात्रा १० से ३० बूंदतक ।

२४४ टिंचर टाक्सी कोडेन्डीरान ।

इसको लकवेमें देते हैं। फालिजकोभी मुफीद है, गांठियेकोभी दूर करता है। मात्रा ⅓ से १ ड्रामतक।

२४५ टिंचर टोलो ।

पुरानी खांसी, नजला और दमाकी बीमारी इससे रुक जाती है। गांठियाके वास्ते मुफीद है।

२४६ टिंचर वेलीरयाना ।

मृगी, वायगोला, खांसी, बदहजमी और छातीके दर्दको मुफीद है। मात्रा दूसरे मुरक्कब एमोनियाके साथ ½ से १ ड्रामतक।

२४७ टिंचर वेनेलो ।

धातुको पुष्ट करनेवाला, मृगीनाशक और वायगोलेके वास्ते मुफीद है। मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

२४८ टिंचर हेलीवोरवेरीडी ।

थोडी मात्राहीके देनेसे दिलको कमजोर करता है। ज्यादा देनेसे वमन लाता है। फेफडेका शोथ दर्द और गांठियेमेंभी दिया जाता है। मात्रा ५ से २० बूंदतक।

२४९ टिंचर जिन्जर ।

आफरा, पेटका दर्द और रीहको नाश करता है। मेदेको पुष्ट

करता और दस्तावर है । दर्दोंको दूर करनेवाला और पाचक है । १० से ३० बूंदतक जिन्जारीनाकी १ से २ ग्रेनतक ।

२५० टिंचर वर्वर्जी या फीवर डिरापस ।

जाडेके बुखारोंके वास्ते परीक्षा किया हुवा है । स्वाद इसका अत्यंत कडुवा है परंतु दूसरा मीठाभी है, दोनों चौथिया, तिजारी और नित्य ज्वर जाडेके बुखारको दूर कर देता है । मात्रा १० से ३० बून्दतक ।

२५१ टिंचर एनटीआर्थीरीटीका ।

यह पुरानी गांठिया और नकरसकी बीमारीको मुफीद है । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

२५२ टिंचर डल्फीनाई ।

यह दवा दमेके वास्ते परीक्षा की हुई है । मात्रा १० से ३० बून्दतक ।

२५३ टिंचर जगलेन्डस ।

काडलिवर आयलका जायका छिपानेके वास्ते उत्तम है । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

२५४ टिंचर लूओडेन्डी ।

इसको पुष्टाई और पसीना लानेके वास्ते देते हैं । मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

२५५ टिंचर पोडोफीलीनरीजीना ।

यह नवाताती पारेसे बनता है । अमीरोंके वास्ते उम्दा जुलाब क्योंकि वैसेही दस्त आते हैं जैसे पारेके कुश्तेसे आते हैं । और इसका जुलाब मानिन्द जलायेके है । इसको टिंचर बेलेडोनेके साथ या हायोसीयामी या एलोज अथवा कालीसिंथके देते हैं । आतशक और मवाद सौदावीको मुफीद है । मात्रा ⅙ से १ ग्रीनतक ।

२५६ टिंचर फ्रीएसीटेटिस ।

इसको सोजाक और धातु पुष्ट करनेके वास्ते देते हैं ।

२५७ टिंचर फ्रीएमोनियाकिलोराइड ।

यह काबिज और पुष्ट है, स्त्रीधर्म लाता है, मेदेमें ताकत लानेके वास्ते देते हैं । कमजोरी और वायगोलेको मुफीद है । छातीके रोगोंको दूर करता ह । मात्रा १/६ से १ ड्रामतक ।

२५८ टिंचर ऑफ औरंजपील ।

सुगन्धित सुस्वादु कर्ता । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

अब पिलविस याने पाउन्डर या सफूफ अर्थात् चूर्ण लिखे जाते हैं ।

२५९ पिलविस आरोमेटिका ।

यह रीहके दर्दको मौकूफ करता है । मात्रा ३० से ६० ग्रेनतक ।

२६० पिलविस केटीकिव ।

यह दस्तोंको बन्द करता है । मात्रा १५ से ३० ग्रेनतक ।

२६१ पिलविस सॉनेमोन ।

यह पाचक है, इसको हस्त बन्द करनेको देते हैं । मात्रा ५ से १० ग्रेनतक ।

२६२ पिलविस चाक अर्थात् चाकपौन्डर ।

इसको दस्तोंके बन्द करनेको देते हैं । मात्रा ३० से ६० ग्रेनतक ।

२६३ पिलविस अलाटेरियम् ।

जब बन्द पड जावे तो १ से २ ग्रेनतक देनेसे खुल जाता है ।

२६४ पिलविस एपीके कम्पौन्ड ।

यह नींद लानेको और पुराने दस्तोंको रोकनेके वास्ते बडा उत्तम हैं । खांसीको मुफीद है । मात्रा ५ से १० ग्रेनतक ।

२६५ पिलविस जलप कम्पौन्ड ।

जुलाब बिला पेचिश है। मात्रा २० से ६० ग्रेनतक ।

२६६ पिलविस काइनोको ।

यह दस्त बंद करनेको मुफीद है, मात्रा ५ से २० ग्रेनतक ।

२६७ पिलविस ऐन्टीएगी ।

इसके देनेसे बुखार तेइया, चौथेइया नित्यज्वर, तुर्तही जाता रहता है। और तिल्लीभी दूर होकर भूँख लगने लगती है, इसने लाखों आदमियोंका बुखार खोदिया है। मात्रा ५ ग्रेनतक ।

२६८ पिलविस ओपियम् ।

इसको दस्त और पेचिश बंद करनेके वास्ते देते हैं। मात्रा २ से ५ ग्रेनतक ।

२६९ पिलविस रियाईको ।

हाजिम और मुलैयन दस्तावर है पीछेसे आपही दस्त बन्द हो जाते हैं। नित्यके कब्जमें मुफीद है, ऐसा मुजर्रब है कि जिसका ठिकाना नहीं ।

२७० पिलविस कमोनिया ।

निहायत उम्दा दस्तावर है। मात्रा ३ से १० ग्रेनतक ।

२७१ पिल्वसोडा ।

इसको सिटलिस पौन्डरभी कहते हैं। इसके साथ एसिडकीभी पुडिया होती है। चित्तको ठीक करनेवाला और दस्तावर है, प्यासको दूर करनेवाला, बदहज्मीको खोनेवाला और चढे बुखारको उतारता है। हाजिम और ठंढा है। मात्रा १ ड्रामतक ।

२७२ पिल्व ट्रेगेकेन्थको ।

इसको दस्त और पेचिशमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा १० से ६० ग्रेनतक ।

२७३ पिल्व एलोमिन्स ओपीएटस।

खून जारीको बंद करता है, दस्तोंके खूनको भी बंद करता है। मात्रा १० ग्रेन देनेसे फायदा होता है।

२७४ पल्व एन्टीईपीलेपटीकस।

थोडी मात्रासे बच्चोंकी मृगीको और ज्यादा मात्रासे बडेकी मृगीको खोता है।

२७५ पल्व आर्टीमिस्या।

इसको राशे और मृगीमें देनेसे फायदा होता है।

२७६ पल्व यरूपीयनआसरम।

इसको छींक लानेके वास्ते देते हैं। बडे भारी शिरके दर्दको और पुरानी आंखोंके, दर्दको, दिमागकी बीमारी और लकवामें, मुख जीभ और दांतोंके दर्दको मुफीद है।

२७७ पल्व आरी।

रुधिरको साफ करनेवाला होनेके कारण उपदंशको दूर करता है और बलको बढाता है।

२७८ पल्व आरीकमफेरो।

उपदंशको मुफीद है, रस कपूरके जहरको मारता है।

२७९ पल्व वेलाडोना कम्पौन्ड।

इसको बुखार और खांसीमें देते हैं।

२८० पल्व हाईपोफासफेटसेकेचेरस।

इसको निर्बलता, खांसी, तपेदिक और जुखाममें देनेसे फायदा होता है। उसी वक्त गुण दिखाता है। मात्रा ५ से १० ग्रेनतक।

२८१ पल्व केलोमीलस कमू आर्सनी कोलस।

इसको तिल्ली और शीतज्वरमें देते हैं। जिगरकी बीमारियोंमें देनेसे फायदा होता है और त्वचाके रोगभी दूर होते हैं।

२८२ पल्व केम्फर ।

यह बुखार, हैजा, खांसीको मुफीद है ।

२८३ पल्व प्यूसीनोरम ।

इससे दीमागके कीडे झडते हैं ।

२८४ पल्व प्रवीऐनवार्क ।

यह तिजारी, चौथैया, रोजाना ज्वर और तिल्लीको खोता है ।

२८५ पल्वक्यूवेव ।

इसको सोजाकमें देनेसे बडा भारी फायदा होता है ।

२८६ पल्व गुवाईसायओपीएटस ।

यह चूर्ण गांठियाको खोता है ।

२८७ पल्व सोडासेलीसीलास

यह चूर्णभी गांठियाको अक्सीर है ।

२८८ पल्व जेसटिस्या ।

इसको डिसपेपशया और अजीर्णमें देनेसे फायदा होता है ।

२८९ पल्व नक्सचोमिका ।

इसको धातु पुष्ट होने और मुकव्वी मेदेके वास्ते देते हैं ।

२९० पल्व क्यूनियाइरोटिस ।

इसको शीतज्वरमें बारीके भीतर देते हैं । चढे हुए बुखार उतारनेके वास्ते मानिन्द फीवरमिक्श्चर व एन्टीपाईरीनके मुफीद है ।

२९१ पल्व कोनैन ।

इसको शीतज्वर आनेसे २ घंटे पहले देनेसे शीतज्वर और तिजारी चौथिया तथा शिरका दर्द और आधासीसी जाती रहती है ।

२९२ पल्व इस्केमोनीकम् फूलजाइन ।

यह १ फासनएबिल प्रगेटयूवा उम्दा जुलाब है ।

२९३ पल्व सल्फर ।

यह डाईसेनट्री यानी पेचिस बवासीर और खुजलीको मुफीद है ।

२९४ पौन्डर ऑफ ल्लवर्व कम्पौन्ड ।

अनुलोमन लघुरेचन २० से ६० ग्रेनतक ।

२९५ पौन्डर ऑफ एन्टीमूनी ।

पसीना लानेवाला, स्थिर करता । ३ से १० ग्रेनतक ।

अब पिल अर्थात् गोली लिखीजाती हैं ।

२९६ पिल एनडी कालरा ।

इसको हैजेके मर्जमें देनेसे फायदा होता है, परीक्षा किया हुवाहै ।

२९७ पिल आरसनि कम्पौन्ड ।

इसको हैजा, शीतज्वर, तिजारी, चौथिया, तापतिल्ली और त्वचाके रोगोंमें देनेसे फायदा होता है ।

२९८ पिल बिलाडोना ।

वायगोलेमें देनेसे फायदा होता है ।

२९९ पिल कैम्फर कम्पौन्ड ।

जब रातको सोतेमें इन्द्रिय खडी होती है जिसके सबबसे बीमारको अत्यंत तकलीफ होती है । ऐसे वक्तमें इन गोलियोंसे फायदा होता है ।

३०० पिल डीजीटेलस इटसिल्ली ।

यह जलंधरको मुफीद है ।

३०१ पिल अगेट कम्पौन्ड ।

इसको स्त्रीधर्म कमती होनेवाली स्त्रीको देनेसे स्त्रीधर्मसे खूब होती है ।

३०२ पिल आयडोफार्म ।

इसको कंठमाला व सिल तथा तपेदिकमें देनेसे फायदा होता है ।

३०३ पिलमार्फिया कम्पौन्ड ।

दर्द, गुर्दा, खांसी और वीर्य स्तंभन करनेके वास्ते खाते हैं।

३०४ पिल पीसिसनिशा ।

इसको बवासीरमें देनेसे फायदा होता है ।

३०५ पिल पिलम्वायकम् ओपियो ।

यह दस्तोंके बन्द करनेको आजमाई हुई है ।

३०६ पिल रीयाई कम्पौन्ड ।

नित्य कब्जमें दस्त लाकर बंद करनेको उत्तम है, बच्चोंके दस्त बन्द करनेवाला तथा आफरेको खोलनेवाला है ।

३०७ पिल सपोनसकम्पौन्ड ।

इसकोभी नित्यके कब्जमें देते हैं ।

३०८ पिल पिल कम्पौन्ड ।

इसको कफकी खांसीमें देनेसे कफ पतला करके निकालनेके वास्ते परिक्षा की हुई है ।

३०९ पिल कैलोमेल कम्पौन्ड ।

दर्द गुर्दा और चढे हुये बुखारोंमें देते हैं । दस्तावर है, दीमागी मेहनत तथा बुढापेके कारण जब कामशक्ति घट जाती है अथवा विशेष स्त्रीप्रसंग या मठोले मारनेसे जब इन्द्रियके पट्ठे सुस्त हो जाते हैं जिससे इन्द्रिय चैतन्य नहीं होती या वीर्य अत्यन्त पतला हो जाता है, स्त्री और पुरुष दोनोंको संग करनेका मन नहीं होता उस वखत यह गोलियां अकसीरका काम दिखाती हैं, परीक्षा की हुई हैं, इन गोलियोंसे होशहवास और अकल बढती है । खून सुर्ख और तेजीसे दौरा करता है, । भोग करनेकी इच्छा ज्यादा होती है, क्षुधाबढती है शरीरका बोझभी बढ जाता है और बहुत दिनों-के खानेसे हड्डियोंका गूदा पुर व ठोस हो जाता है। त्वचाके रोग सम्पूर्ण

दूर होते हैं । हाथका जखम, नाकका जखम, हाथ पावोंका चलना उन्माद, मृगी, वायुगोला, लकवा, राशाको मुफीद है । तपेदिकके दस्तोंको रोकता है । फेफडेके रोग, कवला वायु, और ज्यादती चरबी दिलकी हटाता है । नर्म हो जाने या हिलजाने मेंदे दीमाग वा रीढकी हड्डीको मुफीद है । दर्द गुर्देकोभी मुफीद है । नजला, खांसी, तपेदिक, सिल, नासूर और भगंदरकोभी मुफीद है, परीक्षा की हुई है ।

३१० पिल फास्फोरस व सत्त्व कुचला वा इसट्रिकिनिया ।

यह गोलियां मुकव्वी और परवरिश कुनिन्दा हैं, पट्ठेकी बीमारीको दूर करती हैं, भूँख बढाती हैं, हाजिम हैं, आदती कब्ज और अजीर्णको मुफीद हैं, ऊपरकी गोलियोंसे ज्यादा मुफीद हैं ।

३११ पिल फास्फोरस व कोनैन ।

दायमी बुखार और जाडेके बुखारोंको दूर करती हैं, कमजोरीको खोती है, कण्ठमाला, उपदंश, खांसी, तपेदिकमें जो रातको पसीना ज्यादा आता हो तो उसको रोकती है ।

३१२ पिल फास्फोरस ।

कोनैन और सत्त्व कुचला,ऊपर लिखी हुई गोलियोंसे उम्दा है ।

३१३ पिल फास्फोरस कम् चिगाय ।

पुष्ट करनेवाली, पट्ठोंको साफ करनेवाली, रुधिर और सिलकी बीमारी, कण्ठमाला, कमी खून, रींगनवायु, जो खट्टा पानी मुँहसे आता हो तथा उपरोक्त गोलियोंके संपूर्ण गुणभी इसमें हैं ।

३१४ पिल फास्फोरस फौलाद कोनैन व इसटिकनिया ।

फोडा, फुन्सी, उपदंश, सिल, तपेदिक और सब रोगोंको मुफीद है । साल्टके साथ मिली हुई बडी उम्दा होती है ।

३१५ पिल फास्फोरस व मारफिया ।

यह गोलियाँ तपेदिक और तकलीफ देनेवाली खांसीको दूर करती हैं । नींद लाती हैं ।

३१६ पिल फास्फोरस व गांझा ।

तपेदिकमें नींद लानेके वास्ते मुफीद है । कामशक्तिको बढाती है और नामर्दीको दूर करती है ।

३१७ पिल फास्फोरस व एकोनाइट ।

तपेदिककी बीमारीको रोकती है ।

३१८ पिल फास्फोरस जिन्क वा बालछड ।

इसको योनिके रोगोंमें देतेहैं । प्रसूत, प्रमेह, वायगोला, स्त्रीधर्मका कमती होना, उन्माद, प्रमेह, राशा और मृगीमें मुफीद है।

३१९ पिल फास्फोरस कोनैन इसटिकिनिया एलवा ।

पट्ठोंकी कमजोरी, स्त्रीधर्म कमती होना, फालिज, नित्यकी कब्जी, अजीर्ण, वायगोला, बुखार और शीतज्वरको मुफीद है ।

३२० पिल एलोज एटफीराई ।

यह गोली स्त्रीधर्मको खुलकर लाती है, तिल्लीको आराम करती है । जब स्त्रीधर्म होनेके १० रोज रह जावे तब खिलाना प्रारंभ करे ।

३२१ पिल एलोज एटमुर ।

यह गोली स्त्रीधर्म लानेको बहुत उम्दा है। इनसे स्त्रीधर्म खूब खुलकर आता है । दस्तावरभी हैं । परीक्षा की हुई हैं ।

३२२ पिल एसाफोटीडा कम्पौन्ड ।

वायगोला, पेटका आफरा और पुरानी खांसीको मुफीद हैं ।

३२३ पिल कम्बोजकम्पौन्ड ।

इलको कठिन बंद पड जानेमें और जलंधरमें बतौर जुलाबके देते हैं ।

३२४ पिल कालोसिन्थ कम्पौन्ड ।

रुधिरको साफ करनेवाला जुलाब है ।

३२५ पिल कोयान कम्पौन्ड ।

कलेजेका शोथ, पुरानी गांठिया और पट्ठोंके दर्दको मुफीद है ।

३२६ पिल फिराईवार्क ।

स्त्रीधर्म कम होनेवाली स्त्रीको देते हैं तो खुलकर आता है, मेदेको पुष्ट करती है । रुधिर बढाती है और खांसीको दूर करती है ।

३२७ पिल फिराई आयोडाइड ।

उपदंशसे जब रोगी बहुत कमजोर हो जावै और आराम होनेमें न आसकै तो इससे आराम होता है, कंठमालामें भी देते हैं ।

३२८ पिल हैडरार्जीराय कम्पौन्ड ।

उपदंशवाले रोगीको इतनी गोलियां खिलानी चाहिये जब तक लार आने और मसूढे दर्द करने लगैं, ज्यादा नहीं खिलाना चाहिये ।

३२९ पिल हैड्राजीराय सबाकिलोरी व पराकिलोरीडाय ।

दुरुस्ती बदन और मर्ज आतशकको मुफीद है ।

३३० पिल सिल्लोको ।

यह गोली जमें हुए कफको पतला करके निकाल देती हैं । और जलंधरमें पेशाब लाती हैं ।

३३१ पिल सपोनिसको ।

दर्दको बंद करनेवाली और नींद लानेवाली है ।

३३२ पिल नक्सवोमिका ।

पाचक, धातु पुष्ट और कामशक्तिको बढानेवाली है ।

३३३ पिल मुश्क ।

धातुको पुष्ट करनेवाली, कामशक्तिको बढानेवाली और वीर्यको स्तंभन करती है ।

३३४ पिल एपीकाक ।

खांसी और पुराने दस्तोंको बंद करती हैं। पसीना लानेवाली हैं ।

३३५ पिल एलोजएट बोरेक्स ।

इसको तिल्लीके वास्ते देते हैं ।

३३६ पिल वाल्सीमीना ।

जलंधरके वास्ते मुफीद है ।

३३७ पिल केन्सी ।

यह भी जलंधरके वास्ते मुफीद है ।

३३८ पिल केनेविस इन्डीका ।

दर्द पट्ठा, खांसी, दमा और बावले कुत्तेके काटे हुएको मुफीद है ।

३३९ पिल जेकोबिया ।

इसको सोजाकमें देनेसे फायदा होता है ।

३४० पिल नारसीसी ।

यह गोली खांसीको मुफीद है ।

३४१ पिल पीरीटीरिया ।

यह गोली जलंधरको मुफीद हैं ।

३४२ पिल कोनैन ।

यह शीतज्वर, तिजारी, चौथैया, नित्यज्वर, आधासीसी, अजीर्ण, जुखाम और बहुतसी बीमारियोंको मुफीद है ।

३४३ पिल कोनैन इसटिनिया।

फौलाद, फास्फोरस, केन्थ्यारि डिस, जिन्साय, वलीरीयन इन गोलियोंका फायदा फास्फोरसके समान है। वीर्यको रोकती हैं। वीर्य प्रमेहको खोती हैं। कामशक्तिको पुष्ट करती हैं। शरीरको मोटा करती हैं। भोगकी इच्छा बढाती हैं, नामर्दको मर्द बनाती हैं। बडी फायदे मंद हैं।

३४४ पिल पेपसिन।

यह गोलियां बूढे कमजोर आदमीको भूख लगाती हैं। भोजनको पचाती हैं। मेदेको ताकत देती हैं, इनको डिनरपिल भी कहते हैं। भोजन करनेके पीछे खानी चाहिये।

३४५ पिल हैड्राजीराय आयोडाइड।

.......१/१६ ग्रेन की गोली पडती है कंठमाला, उपदंश और तिल्लीको मुफीद हैं।

३४६ पिल हैड्राजीराय बीरीडी।

इसको उपदंशमें देते हैं बडा हलका मुरक्कब पारेका है।

२४७ पिल हैड्राजीकराय कालोसिन्थ व हायो सीयामी।

यह अमीराना उम्दा जुलाब है।

३४८ पिल्स वायस व एसीगस।

इसको खून थूकने और खूनकी कै करने तथा खूनके जारी होनेमें, दस्त और आँव लहूकी पेचिशमें, खांसी और तपेदिकमें देते हैं। नकसीरको बंद करती है और हैजेमें दस्त बंद करनेके वास्ते या कांच निकलती हुई बंद करनेके वास्ते खिलाते हैं। और बाहर इसको सूजे हुए अंगोंपर तथा बहते हुए जखमोंपर लगाते हैं। और पिचकारी इसकी सोजाकमें देते हैं। अर्क और

मरहम इसका कब्ज करनेके वास्ते इस्तेमाल करते हैं । मात्रा १ से ४ ग्रेनतक ।

३४९ पिल्स वायकार्बोनास ।

पिसा हुआ जखमोंपर छिडकनेसे जलन व रक्तस्त्राव बंद होकर आराम होजाता है । इसको वाइटलीडस पैदा कहते हैं ।

३५० पिल्स वाय आयोडाइड ।

इसके मरहमको सूजी हुई गिलटी और तिल्ली तथा जोड और जिल्दी फोडे फुन्सियोंपर लगाते हैं । इसकी गोली दिनमें ३ दफे निगलनी चाहिये ।

३५१ पिल्स वाय ऐक्साइडम् ।

इसका मरहम उददंश और गंजके फोडे फुन्सियोंमें परीक्षा किया हुवा है । अगर १/४ ग्रेनकी गोली गुलकंदमें बनाकर दिनमें तीन दफे खिलाई जावै तो उपदंशका घाव फौरन् भर आता है ।

३५२ पिल्स वाय एक्साइडम्रुबरम् रेडलीड वा मीनीअम् ।

मरहमोंके काममें बहुत आता है ।

३५३ पिल औफ कार्बोंट आयरन ।

वृष्य बलदायक है मात्रा २ से ४ ग्रेनतक ।

३५४ पिल औफ मरक्यूरी ।

रेचन, रक्तशोधक है । मात्रा २ से ६ ग्रेनतक ।

३५५ पिले टोरीरूट ।

दांतोंके नीचे दबानेसे दर्द बंद होता है ।

अब पोटास अर्थात् क्षार लिखे जाते हैं ।

३५६ पोटासाय सल्फास ।

इसको गीली खुजली और त्वचाकी बीमारियोंमें हलका नमकीन जुलाब है । अजीर्ण बवासीरमें भी देते हैं । कब्जको दूर

करता है । इसके देनेसे दूध कम उतरता है । और दादके वास्ते मुफीद है । मात्रा ३ से ८ ग्रेनतक ।

३५७ पोटासाय एसीटास ।

यह हमलवाली स्त्रियोंके रोगोंमें देनेसे बडा फायदा होता है । जलंधर और गांठियेमें मुफीद है सोजाकमेंभी काम आता है । मात्रा १ से ६ ग्रेनतक । जुलाबके वास्ते २ से ३ ड्रामतक । पेशाब लानेके वास्ते २० ग्रेन देना चाहिये ।

३५८ पोटासाय वाईकार्बोनास ।

भोजन करनेसे पहले पीनेसे जठराग्नि दीप्त होती है । मसाना अर्थात् बस्तिस्थानका शोथ और सोजाक दूर होता है । खरास माता और गर्म बुखार, गांठिया, दर्द गुरदा, पुराना अजीर्ण और उपदंशमें इसके देनेसे फायदा होता है । मात्रा १० ग्रेनसे ४० ग्रेनतक ।

३५९ पोटासाय वाईकिरोमास ।

इसको उपदंश और उपदंशके कारणोंमें देते हैं । मात्रा ¼ से ग्रेनतक ।

३६० पोटासाय कार्बोनास ।

यह पोटास वाईकार्बोनासके समान है ।

३६१ पोटासाय किलोरास ।

मुखके आजाने तथा जल और सडजाने व पारा खाये हुएकी लार गिरनेमें, जियावतूसमें, तपेदिक व कंठमालामें और गरमीके बुखारोंमें देते हैं । यह पोटास गर्भकी रक्षा करनेवाला है । सूजे हुए मसूढोंको फायदा करती है । जब रोगी निढाल कमजोर हो जावे उस बखत उसकी ताकत कायम रखनेके वास्ते दिया जाता है । जोफको भी दूर करता है जैसा कि माताके निकलनेमें और खराब

क़िस्मके गर्म बुखार जो उतारनेमें न आते हों तथा बस्तिस्थानके शोथको मुफ़ीद है। मात्रा १० से २० ग्रेनतक।

३६२ पुटासी साईट्रासा ।

यह ठंढा पेशाब और पसीना लानेवाला गर्म रोगोंको मुफीद है। हलका जुलाब है। गुर्दे और मसानेके रोगोंको तथा कंकर रेतको बहानेवाला, गांठिया और मेदेका शोथ तथा वमनको रोकता है। मात्रा २० से ६० ग्रेनतक।

३६३ पोटासाय सलफक्कमू सल्फर ।

यह पोटास बवासीरके वास्ते परीक्षा की हुई है।

३६४ पोटासी नैट्रास ।

ठंढक और पसीना लानेवाला है तथा गर्म बीमारियोंके प्रारंभमें जैसे गांठिया और जलंधरमें देनेसे फायदा होता है। मसूढे और स्त्रीधर्मके रोगोंमें भी दिया जाता है। मूत्रकृच्छ्र और बुखारोंके उतारनेको, जलन और सोजाकको मुफीद है। इसका तर किया-हुवा कागज सुखाले पीछे जलाकर दमेवालेको सुँघाया जावै तो दमेकी बीमारी चली जाती है मेदा, मसाना, गुरदा और आंतोंके शोथमें देते हैं। मात्रा २० से ३० ग्रेनतक।

३६५ पोटासी परमेगेनास ।

यह खूनको साफ करनेवाला और सडनको दूर करनेवाला है। स्त्रीधर्मको बढाता है। और इसका अर्क या चूर्ण जखमोंपर लगाते हैं। इसकी कुरली मुखशोथको मुफीद है। जखमोंको आराम कर देती है। मात्रा १ से ४ ग्रेनतक।

३६६ पोटासाय टार्ट्रास ।

दस्त और पेशाब लानेवाला और खूनको साफ करनेवाला ठंढा है। इसको बुखार उतारने और कब्ज खोलनेके वास्ते देते हैं।

तथा मसानेका रेत निकालनेके वास्ते, अजीर्ण, कवलवायु और जलंधरमेंभी देते हैं। मात्रा १ से ४ ड्रामतक।

३६७ पोटासी बिरोमाईडम्।

यह खून साफ करनेवाला, नींद लानेवाला, दर्दोंको मौकूफ करनेवाला, पुराने शोथको उतारनेवाला, इस वास्ते तिल्लीको आराम करता है। घेघा व शोथ, कंठमाला व जिगरकी बीमारी, पट्ठोंके रोग और उपदंश तथा दीवानगी और वायगोला, खांसी, दमा, गले और हवाकी नालीकी बीमारियोंको दूर करता है। मृगी और दूसरे दर्जेके उपदंशकोभी अत्यन्त मुफीद है। सन्निपात, अकडवाय, शिरका दर्द, रक्तप्रदर, स्वप्नदोष, वीर्य प्रमेहमें तो बहुतही मुफीद है। जब रंज और फिकर तथा किसी बीमारीके कारण जब रातको नींद न आती हो तथा दीमागके रोग और कैको रोकता है। मात्रा ५ से ३० ग्रेनतक। नींद लानेको ३ ग्रेन और बीमारियोंको ५ से १० ग्रेनतक देना चाहिये।

३६८ पोटासी आयोडाइडम्।

पारा और शीशेके जहरको दूर करनेवाला, भोजनको पचानेवाला, शरीरको मोटा करके बोझका बढानेवाला, खांसीके सम्पूर्ण रोगोंका नाशक और फेफडेके रोगोंको मुफीद है। दिल और जिगरका शोथ तथा फेफडेके शोथको दूर करता है। भीतरके फोडे फुन्सियोंको दूर करनेमें एक है। उपदंश गांठियाके जहरको शरीरसे निकालकर बाहर कर देता है। जुखाम, दमा, दर्दशिर, पुराना घेघा, जलंधर, वमन, दाद और खाजको मुफीद है। मात्रा ५ से १० ग्रेनतक।

अब ट्रोचीसाय या कुर्स अर्थात् टिकिया कही जाती हैं ।

३६९ ट्रोचीसाय बेनजायन ।

जोफ गलेमें जब आवाज पड जाती है तब गानेवालोंको आवाज साफ करनेके वास्ते मुफीद है ।

३७० ट्रोचीसाय कार्बोलिक ।

जिन रोगोंमें कार्बोलिक एसिड खिलाते हैं। उन्हीं रोगोंमें दी जाती है ।

३७१ ट्रोचीसाय एसिड गालिक ।

इसका गुण गालिक एसिडवत जानो ।

३७२ ट्रोचीसाय आरम् ।

इसको उपदंशमें देते हैं ।

३७३ ट्रोचीसाय बिसमिथी ।

मेदेकी कमजोरीको दूर करता और पुराने अजीर्णको खोता है ।

३७४ ट्रोचीसाय कैलोमेल ।

पेट और कलेजेके दर्दको दूर करती है। आतशकके वास्ते मुफीद है और दस्तावर है ।

३७५ ट्रोचीसाय कफीना ।

इसके खानेसे सुस्ती दूर हो जाती है और निद्रा भी दूर हो जाती है। आलस पास नहीं आने पाता तथा आधासीसीको मुफीद है ।

३७६ ट्रोची साय इमीटीनापिकटोरल ।

नित्यज्वर और खांसीको मुफीद है ।

३७७ ट्रोचीसाय फिरी ।

धातुको पुष्ट करनेवाली, खांसीको रोकनेवाली, शरीरको तैयार याने मोटा बनानेवाली और दस्तोंको रोकनेवाली मुफीद है ।

३७८ टिरोचीसाय फिरीअमोनियासिट्रास ।

यह टिकिया पुराने अजीर्ण और बदहजमीको मुफीद है ।

३७९ ट्रोचीसाय फिआयोडाइड ।

रोगीकी निर्बलता, उपदंश, तिल्ली और कंठमालाको मुफीद है ।

३८० टिरोचीसाय फिलिकटेर व रिडिकटाय (फौलादकी टिकिया) ।

यह टिकिया वीर्य प्रमेहके वास्ते मुफीद है, शरीरको तैयार करती है ।

३८१ ट्रोचीसाय गवाईसाय इटएसिड वन्जायन ।

गांठिया, खांसी और उपदंशको मुफीद है ।

३८२ टिरोचीसाय एपीकेक वा नाइटकेम्फर ।

यह टिकिया खांसीको दूर करती है, पसीना लाती है, दस्तोंको बंद करती है ।

३८३ ट्रोचीसाय पिपरमिन्ट ।

हाजमा करनेवाली, कै और दस्तोंको रोकनेवाली, हैजा और बदहजमीको दूर करनेवाली है ।

३८४ ट्रोचीसाय मारफीया ।

यह नींद लानेवाली, हाजिम, कफको दूर करती और खांसीको खोनेवाली है ।

३८५ ट्रोचीसाय मारफीया व एपीकेक ।

यह खांसी और बुखारको दूर करती है ।

३८६ ट्रोचीसाय कोनैन ।

बुखारको खोनेवाली और हाजिम है ।

३८७ टिरोचीसाय सैन्टोनून ।

इससे पेटके कीडे मर जाते हैं ।

३८८ ट्रोचीसाय इस्केमोजी व केलोमेल ।

यह मेदेको पुष्ट करती है ।

३८९ ट्रोचीसाय सिल्ली ।

यह खांसी और जलंधरमें मुफीद है ।

३९० ट्रोचीसाय सोडावाईकार्बोनास ।

यह बदहजमीको मुफीद है, हैजेमेंभी देते हैं, बुखारको उतारती और प्यासको रोकती हैं ।

३९१ ट्रोचीसाय जिन्जर ।

यह वायुको दूर करती और दर्दोंको शांत करती हैं, अन्नको पचाती है ।

अब केपशूल अर्थात् बुन्द तथा सुराहीदार गोली लिखी जाती हैं ।

३९२ केपशूल मोरीवाल ।

यह गोलियां शरीरको तैयार और मोटा बनाती हैं तथा खांसी और सिलके वास्ते मुफीद हैं ।

३९३ केपशूल कोपेवा ।

प्रमेह और सोजाक तथा गांठियेको यह गोली मुफीद हैं ।

३९४ केपशूल मेलफरन ।

यह गोली पेटके केंचवोंको मारती हैं इसवास्ते बच्चोंको मुफीद है ।

३९५ केपशूल कोपेवा व क्यूबेब ।

यह गोली सोजाकके वास्ते मुफीद परीक्षा करी गई है ।

३९६ केपशूल मेटीको ।

यह गोली खून बहने और सोजाकके वास्ते मुफीद है ।

३९७ केपशूल सेन्टल ।

यह गोली सोजाक और कुरहके वास्ते मुफीद है ।

अब कन्फेकशीय अर्थात् गुलकन्द लिखे जाते हैं ।

३९८ कन्फेकशीय रोजे व आमोन्ड व ओपियम् वा पेबेरीरस वा। सकमोनिया वा सन वा सल्फर ।

यह सब गुलकन्द दस्तावर हैं और बवासीर इत्यादि रोगोंको मुफीद हैं ।

अब लीकर अर्थात् अर्क लिखे जाते हैं ।

३९९ लीकर एमोन्य फारशिन ।

यह बदहजमी और खांसीको खोता है । दिलकी हरकत चालको बढाता है । तमाखू, कुचला, सायानिकएसिडके जहरको दूर करता है। तथा सांप बिच्छू और ततैयाके काटे हुए डंकपर लगानेसे जहरका असर जाता रहता है। सन्निपात और बुखारोंको मुफीद है। जोडोंकी सख्ती और दर्दपर मालिश करनेसे दर्द और कठिनता दूर हो जाती है । इसको सुंघानेसे जुखाम, सिरका दर्द, दर्द पट्ठा, बेहोशी और घुमेर जाती रहती है । मात्रा ३ से ५ बूंदतक ।

४०० लीकर सन्कोना फेबरीक्यूज ।

जाडेके बुखारकी बोतल इसीसे बनती है जिससे तिजारी चौथीया फौरन् जाता है । आधा शीशी और दमेको खोता है । मात्रा १० से २० बूंदतक ।

४०१ लीकर एमोन्या एसीटास ।

गर्मीका बुखार, जुखाम, खांसी, विना समय स्त्रीधर्म होना, या

स्त्रीधर्म बन्द हो जानेमें, गांठिया, जलंधर, बदहजमी और आंखके दुखनेमें डालते हैं । मात्रा २ से ६ ड्रामतक । तथा लीकर एमोन्या सिट्रस दूसरा होता है वहभी इसके समान गुण करता है परन्तु यह पसीना लाकर बुखारको उतार देता है और दर्दोंको दूर करता है । मात्रा इसकीभी २ से ६ ड्रामतक होती है ।

४०२ लीकर अर्जनटी एमोन्या किलोराइड ।

यह मृगीके वास्ते परीक्षा की हुई दवा है। मात्रा १ से १० बूंदतक ।

४०३ लीकर आर्सेनिक ।

यह जाडेका बुखार और बहुतसी बीमारियोंमें मुफीद है । देखो एसिड आर्सेनिक यह रुधिरको साफ करता है । त्वचारोग, कोढ और भगंदरको खोता है । मात्रा २ से ८ ग्रेनतक ।

४०४ लीकर आर्सेनिक इटहैड्रार्जीराय आयोडीन डीटिसउनेविन सोल्यशन ।

इसको भोजन करनेके पिछे टिंचर जिंजरमें मिलाकर देनेसे बालोंका झडना, श्वेतकुष्ठ, उपदंश, खुजली और भगंदरको मुफीद है । मात्रा १० से १५ बूंदतक ।

४०५ लीकर एस्ट्रोपीया ।

इसको आंखोंमें डालनेसे नेत्रकी ज्योति बढ जाती है, देखो एट्रोपीयाको ।

४०६ लीकर विस्मिथ एमोन्या सिट्रास ।

यह पाचक है, बदहजमीको दूर करता है, पुष्ट है, इसको पुरानी बीमारियोंमें सोडाके साथ देते हैं, मंदाग्नि, पतला दस्त, बदहजमीको बंद कर देता है । मात्रा ½ से २ ड्रामतक ।

४०७ लीकर कालसिस ।

इसको दूधमें मिलाकर पीनेसे बदहजमी दूर होकर हजम होने-लगता है। अलसीके तेलमें मिलाकर लगानेसे जले हुएको आराम होता है, गर्जनके तेलमें मिलाकर लगानेसे कोढको आराम पहुँ-चाता है। पारेके कुश्तेमें मिलाकर लगानेसे उपदंशका जखम भर जाता है।

४०८ लीकर कार्न्यू सर्वीसक्सी नेटस ।

इसको लिनीमेंट कन्प्यारीडिसमें मिलाकर लगाना, पुराने दर्दोंको दूर करनेके वास्ते परीक्षा किया हुवा है। नामर्दको मर्द बनाता है।

४०९ लीकर फ्री अस्सी टेटिस ।

देखो इसका टिंचर, खून बंद करता और पुष्ट है।

४१० लीकर फ्रीकलोरोऔक्साइड ।

यह कब्ज करता, खूनको मंद करनेवाला मानिंद टिंचर इष्टीलके है।

४११ लीकर फ्री सिट्रास ।

इसको हड्डियोंको बढानेके वास्ते तथा विना समय स्त्रीधर्मके होनेमें और कमजोरीमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

४१२ लीकर फ्रीडाइली सिटि।

काबिज और खूनको बन्द करता है। रक्तार्शमें हैजलीनके बराबर फायदा करता है। मात्रा १० से ३० बून्दतक ।

४१३ लीकर फ्रीआयोडाइड ।

पुष्ट है, खूनको साफ करता है, उत्तम इलाज है, कंठमाला, सिल, उपदंश और खूनके नालियोंकी सूजनमें मुफीद है। मात्रा १ से १॥ ड्रामतक ।

४१४ लीकर फ्रीपरकिलर ।

इससे टिंचर इसटील बनता है,पुष्ट और खूनको बन्द करता है।

४१५ लीकर फ्रीहाइयो फास्फरास ।

इसको स्त्रीधर्म न होने या बेवखत होने तथा कमती होनेमें देते हैं। मूत्र प्रमेह और हड्डियोंके न बढनेमें, अजीर्ण और पठ्ठोंकी कमजोरीमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा २ से ५ ड्रामतक ।

४१६ लीकर फ्रोमेन्स वा ईली ।

इसको बालोंपर फेरनेसे काले हो जाते हैं, उत्तम खिजाब है, जिसमें बालोंको बांधना नहीं पडता ।

४१७ लीकर फ्रीपर नाईट्रेट ।

यह अत्यंत काबिज है, जब स्त्रीधर्म किसी तरह बन्द न होता हो तो यह दवा बन्द करदेती है । तथा सोमरोगको भी बन्द कर देती है ।

४१८ लीकर सलफाइड कार्बन ।

इसको दियासलाई और गिलट बनानेके काममें लाते हैं तथा फास्फोरसकी गोली बनानेमेंभी काम आता है और गांठियाके दर्दोंपर मलते हैं ।

४१९ लीकर हैड्रार्जीराय नाईट्रेटिस ।

यह खूनको साफ करता है, उपदंश, मस्त निकाला, वायु, फोडा, जखम, नौरंगजेब पर लगाते हैं और सोजाकमें इसकी पिचकारी करते हैं तो आराम हो जाता है, मुखके घावोंमें कुरली और नेत्र-रोगमें अंजन करते हैं ।

४२० लीकर हैडार्जीराय परकलर ।

यह श्वेतकुष्ठ, त्वचारोग, पुरानी गांठिया, उपदंश और पर-वालको खोताहै । कलेजेके शोथको मुफीद है । मात्रा ½ से २ ड्राम-तक ।

४२१ लीकर आयोडीन ।

कंठमाला, उपदंशको मुफीद है । मात्रा ५ से १० बूंदतक ।

४२२ लीकर हैड्रार्जीराय साईनाईडी पोटासियो आयोडाइडम् ।

इसको उपदंशमें दो दफे एक दिनमें देते हैं । मात्रा १ औंस देनेसे फायदा होता है ।

४२३ लीकर सेनटल पिलेवाको ।

सोजाक पुराना और कुरहको मुफीद है । मात्रा १० से ३० बूंदतक ।

४२४ लीकर कोपेवा ।

सोजाकके वास्ते इससे बढकर दूसरी दवा नहीं है ।

४२५ लीकर मार्फीय हैड्रोकिलरव एसीटास ।

यह नींद लानेवाला, दर्दोंको नाश करता, आंतोंके पतले पतले शोथको दूर करता है । खून थूकनेको मुफीद है । खांसी, हैजेकी खांसी और तपेदिकको मुफीद है ।

४२६ लीकर नैट्री कैम्फर ।

यह पेशाब और पसीना लाता है, बुखार उतारता है तथा सोजाकको फायदा करता है ।

४२७ लीकर पिल्मवाय सबएसीटास ।

इसको दर्द और जलन तथा शोथपर फायदेके वास्ते लगाते हैं । अंजन आंखमें डालते हैं, सोजाकमें इसकी पिचकारी लगाते हैं और बच्चेदानीसे रतूबत जारी हो तो या कुचले छिले और चोटोंपर तथा मोचपर इसका तर कपडा रखनेसे आराम होता है, सोजा नहीं होने देता और आराम हो जाता है । दुखती आंखमें अफीमके साथ डालते हैं ।

४२८ लीकर पोटास ।

यह तेजाबोंका असर खोनेवाला और खूनको साफ करता है। इसको गांठिया, बदहजमी, मेदेका दर्द, अफरा, तपेदिक, कंठमाला, उपदंश दूसरे दर्जेकी, त्वचारोग और दादको मुफीद है। तथा मोटा आदमी जिसमें चरबी बहुत हो उसको पतला और मर्द बनानेके वास्ते देते हैं। पेशाब लाता है, परदोंकी सोजिशको मुफीद है। मात्रा १० से ४० बूंदतक ।

४२९ लीकर पोटासी परमेगेनास व कान्डी लोशन ।

इसको नौरंगजेबके जखमपर लगाते हैं। मुखके शोथमें कुरली कराते हैं तो बदबूभी दूर हो जाती है। गलेके दर्दको मुफीद है।

४३० लीकर कोनैन एमार्फस ।

इसको हरतरहके बुखार और हजारों बीमारियोंमें तथा सब तरहके शिरदर्दोंमें देते हैं। थोडी मात्रासे जैसे अफीम खाते हैं उसके बदले इसको खावै तो बदनको तैयार करे। सम्पूर्ण ज्वर, तिजारी, चौथैया, आधासीसी, मंदाग्नि, निर्बलता, मृगीको दूर करता है। धातुको पुष्ट करता है। अजीर्णको दूर करता है। प्रसूतको खोता है। प्रसूत ज्वरको दूर करता है। खांसी, तपेदिक, फेफडेका शोथ, पसलीका दर्द, पट्ठोंका दर्द, गांठिया, तिल्ली, शीतपित्त, कंठमाला, सन्निपात, खूनका कमती पैदा होना, वायगोला, राशा, मुखरोग, मूर्च्छा, हैजा, पेटके कृमि, मेदेके दर्दमें दिया जाता है। अगर १ ड्रामतक मरहम रीढकी हड्डीपर मला जावे तो ज्वर और शीतज्वर नहीं आता। इसकी पिचकारी त्वचाके भीतर लगानेसेभी तिजारी चौथिया उसी वक्त बन्द हो जाताहै। मात्रा हावर्डकोनैन सल्फास १ से १० ग्रेनतक। कोनैन लकटास मात्रा २ से ९ ग्रेनतक। कोनैन सेलीसीलास २ से १० ग्रेनतक।

कोनैन टेन्निस १ से ६ ग्रेनतक । कोनैन वीलीरायन १ से ४ ग्रेनतक । क्यूनेटम हिंदुस्तानी कोनैन २ से ४ ग्रेनतक । कोनैन फेरोपरशीयस्त ३ से ६ ग्रेनतक । कोनैन प्रीआ- योडाइडम् और कोनैन हैड्रायोडिस आयोडयूरेटा मात्रा २ ग्रेन । कोनैन हैड्रोविरोमास और कोनैन फासफरस इत्यादिक ऊपरके सब मुरक्कब कीमती हैं ।

४३१ लीकर सार्सापरीला व चोबचीनी ।

यह उपदंशको दूर करता है ।

४३२ लीकर सेनटल फिली वा कम् कोपेवा व क्यूवेव इटव्यूक्यूमेटिको ।

यह सोजाक और धातु पतली पड जानेमें, कुरह सोजाकमें तथा जलन पेशाबमें इसके समान कोई दवा नहीं है ।

४३३ लीकर फी फास्फरस कम् क्यू नाइट इसटिकिनिया ।

इसमें चौगुना शर्बत मिलानेसे ईसटनसीरप बनता है । धातु पुष्ट और प्रमेहको तथा नामर्दीको दूर करता है व कमजोरी और दमेकी बीमारी किसीके रह गई होवे तो आराम कर देता है मात्रा १० से २० बूंदतक ।

४३४ लीकर इष्टीकिन्या ।

यह भूँख बढाता है, पट्ठोंको ताकत देता है, वीर्यको पुष्ट करता है, प्रमेहको दूर करता है, नामर्दको मर्द बनाता है । मात्रा ५ से १० बूंद । देखो कुचलेका जौहर इष्टिकिन्याको ।

४३५ लीकर टेरेक्सीसाय ।

जिगरको पुष्ट करता है, जिगरका शोथ और बढ़नेको दूर करता है । खून शुद्ध करनेवाला है ।

४३६ लीकर वोलेटिलिस ।

इसको दर्दोंपर मलते हैं ।

४३७ लीकर इपिसपास टीक्स ।

लीकरलीटी व वेसीकेटर व विलसट्रंग इसको पुराना दर्द शोथ जोडोंका दर्द और जिगरकी बीमारियोंमें लगाते हैं तो छाला पड़कर आराम हो जाता है । नामर्दीके वास्ते इसका तिला इन्द्रियपर लगानेसे आराम होता है ।

४३८ लीकर जिन्साय किलोरास ।

बडे खराब जखमोंपर तथा उपदंशके जखमोंपर और कंठमालाके जखमोंपर लगाते और छिडकते हैं ।

अब सोडा अर्थात् साल्ट या नमक लिखा जाता है ।

४३९ सोडा कासटीका ।

इससे विषैले जानवरोंके काटे हुए दांतोंके जखम या डकोंपर लगानेसे जहरका असर जाता रहता है ।

४४० सोडा टार्ट्रेण वा रोचल सालट ।

गर्मीके बुखारोंमें जब कब्ज होता है तो इसको देनेसे दस्त आकर बुखार उतर जाता है, मूत्रल है, शोथको उतारता है, पित्तको खारिज करताहै, इसका नाम सोडापोटास्योटार्ट्रेट भी है, शीतलामें इसको देते हैं । मात्रा १ से २ ड्रामतक ।

४४१ सोडा एसीडास ।

यह पेटको नर्म करता है और पेशाब लाता है । मात्रा १/२ से १ ड्रामतक ।

४४२ सोडा आर्सेनिक ।

यह सिवाय त्वचारोगोंके औरभी तिजारी चौथिया और जीर्ण ज्वरको दूर करनेमें काम आता है, इसको बहुतसी बीमारियोंके दूर करनेवाला समझो । मात्रा १/१६ से ८ ग्रेनतक ।

४४३ सोडा बेन्जायन ।

इसको जिगर और बारीके बुखारोंमें तथा बदहजमी और मुखके आ जानेमें देते हैं। मात्रा १५ से २० ग्रेनतक ।

४४४ सोडा बाईकार्ब व सोडा सस्कबीकार्ब ।

यह मेदेकी खटाईको दूर करनेवाला, उतारनेवाला, पाचकशक्तिको रखनेवाला, खूनको साफ करनेवाला, बदहजमीको तुर्तही दूर करनेवाला, पुराने अजीर्णको दूर करनेवाला, कण्ठमाला और गदूदोंको तहलील करनेवाला अर्थात् पचानेवाला, उपदंश, जलन्धर, तिल्ली, मसानेका रेत, गांठिया और बुखारोंकी गर्मी उतारनेके वास्ते तथा शोथको दूर करनेके वास्ते, वमनको रोकनेके वास्ते, दस्त हैजा और आंतोंका शोथ, फेफडेका दर्द और शोथको तथा खूनकी बीमारियोंको बहुत मुफीद है। मात्रा १० से ६० ग्रेनतक और सोडा कार्बोनास ५ से ३० ग्रेनतक ।

४४५ सोडा सेट्रोटार्ट्रसि इफरवेसंस वा सिट्रेट आफ मेगनैसिया ।

यह बुखारोंके उतारनेके वास्ते तथा गर्मी दूर करनेके वास्ते और दस्त पसीना लानेके वास्ते मुफीद है। मात्रा १० से ३० ग्रेनतक ।

४४६ सोडा सेलीसीलास ।

अगर मूत्रप्रमेह या मूत्रमें मीठापन हो तो देनेसे फायदा होता है और गांठिया तथा इसके साथ बीमारी हो उसके वास्ते परीक्षा किया गया है ।

४४७ सोडाहाईपो फारफारस ।

गर्मीका बुखार, शोथ, आंतोंका शोथ उतारनेको देते हैं। पुष्ट करता है। खून और पट्ठोंको दृढ करता है। इसको तपेदिक, सिल, खांसी, शीतल, बच्चोंका बुखार और गर्भवती स्त्रीके रोगोंमें

देनेसे फायदा करता है गांठियेमें भी देते हैं । मात्रा-सोडा हाईपो-फास्फरसकी ५ से १० ग्रेनतक व सोडाफास्फरस २ से ४ ड्रामतक । पथरी और रेत जो खटाईके कारण बना हो तो उसकोभी दूर करता है ।

४४८ सोडा सल्फास व बाईसल्फास व गिलीवरसालट ।

यह गार्मियोंमें शरीरकी गर्मी रफा करनेके वास्ते, तथा बुखार और बदहज्मी या भूँख लगानेके वास्ते, तथा दस्त साफ होनेके वास्ते इसका जुलाब देनेसे फायदा होता है । मात्रा४से८ ड्रामतक ।

४४९ सोडा किलोराइडम ।

इसको जरासा ज्यादह रोज खानेसे कण्ठमाला, तपेदिक, अजीर्ण और त्वचाके रोग दूर होते हैं । खून साफ होता है । मृगी और बारीके बुखारोंको रोकता है । इसको हैजेके प्रारंभ होतेही देते हैं । पेटके दर्दको मुफीद है । जहर खाये हुएको इससे कै कराते हैं । मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

४५० सोडा ब्रोमाईडम ।

गाडीकी हाल झोल और नावमें बैठनेसे घिरनी या चक्कर और कैको दूर करता है । मात्रा १० से ६० ग्रेनतक ।

४५१ सोडा आयोडाईडम् ।

इसका फायदा हैड्रोपोटासके समान जानो । मात्रा ५ से १६ ग्रेनतक ।

४५२ सोडा सल्फोकार्बोनास ।

भोजन करनेके पीछे अगर पेटमें आफरा हो जावे तो भोजन करनेके पहले देना चाहिये । अगर भोजन करनेके पहलेही आफरा आ जाया करता हो तो आधे घंटे बाद इसको पीना चाहिये, बीमारी रफे हो जावेगी । मात्रा १० से १५ ग्रेनतक ।

अब सिरप अर्थात् शर्बत कहे जाते हैं ।

शर्बत बनानेकी यह रीति है कि कंद सफेद आधसेर और दवाका खींचा हुआ अर्क पाव भरमें विना पकाये हुए कथाही घोल लेवे तो डाक्टरी रीत्यनुसार शर्बत तैयार हो जायगा ।

४५३ सिरप सिमपिलक्स ।

इसमें १९ हिस्से कंद और ८ हिस्से दवाका अर्क होता है ।

४५४ सिरप मार्फीया एसीटेट ।

इसको नींद आनेके वास्ते और दर्दोंके दूर करनेको देते हैं । पसीनाभी लाता है ।

४५५ सिरप अकाशाया ।

यह खांसी, पेचिश और दस्तोंको रोकता है ।

४५६ सिरप एसीटी ।

इसको गर्मीके बुखारोंमें देनेसे फायदा होता है ।

४५७ सिरप एसीटी रूवरी आइडो ।

ऊपरके शर्बतके समान है, ठंढा है ।

४५८ सिरप एसीडी सिट्रीसी ।

इसकाभी गुण ऊपरके समान है ।

४५९ सिरप एसीडी हैड्रोसीयानीको ।

यह खांसी दमा और हैजेको मुफीद है ।

४६० सिरप एसिड फास्फोरस ।

यह मूत्रके रोगमें मुफीद है ।

४६१ सिरप टार्ट्रीक ।

यह बुखारको उतारता है, ठंढा है, हाजिम है ।

४६२ सिरप एकोनेटिया ।

इसका फायदा टिंचरके समान है, पेटका दर्द और बुखार उतारनेके वास्ते देते हैं ।

४६३ सिरप ईथस ।

दमा, खांसी, बुखार और कमजोरीको मुफीद है। अत्यंत ठंढा है।

४६४ सिरप एली ।

यह गांठियेका दर्द दूर करता है।

४६५ सिरप एलथीइ ।

तर करनेवाला, दस्तावर और ठंढा है।

४६६ सिरप अमिगडाला ।

यह नजला और खांसीको मुफीद है।

४६७ सिरप एनीसी ।

यह हाजिम और बवासीरके कब्जको दूर करनेवाला तथा दस्तावर है।

४६८ सिरप एन्थीमीडस ।

यह दर्दको बंद करनेवाला और हाजिम है।

४६९ सिरप आर्मीएशा ।

दर्दोंको दूर करता और हाजिम है तथा गला पड जानेमें देते हैं तो फायदा होता है।

४७० सिरप आर्टीमिस्याको ।

यह बारीके रोगोंको खोता है और स्त्रीधर्मको लाता है।

४७१ सिरप एट्रोपीया ।

देखो एक्ट्राक्ट एसट्रोपीयामें।

४७२ सिरप आरेंशयाय ।

यह ठंढा और तबीयतको खुश करनेवाला है। गर्मियोंके बुखारोंमें देनेसे फायदा होता है।

४७३ सिरप आरी ।

इसको उपदंशमें देते है। तथा मसूढे और जीभपर मलते हैं।

४७४ सिरप वालसमपैरू।

यह खांसी और राशेको मुफीद है।

४७५ सिरप वालसमटालो।

यह भी ऊपरके बराबर है।

४७६ सिरप काफीन।

यह तबीयतको खुश करनेवाला सुस्ती और थकानको उतारनेवाला है।

४७७ सिरप कालसिस हाईयोफास्फास।

यह लाल शर्बत, खांसी, दमा और नजलेको मुफीद है। कमजोरीको खोता है।

४७८ सिरप केरीयो फीलाय।

यह बुखार और खांसीको मुफीद है।

४७९ सिरप केसटोरीको।

यह दमेके वास्ते मुफीद है।

४८० सिरप केटीक्य।

यह खांसी और दस्तोंको बन्द करता है।

४८१ सिरप क्लिोरल।

यह बुखारको खोता है। दर्दको मौकूफ करता है। नींद लाता है।

४८२ सिरप सन्कोना।

यह कमजोरीके बुखार, मृगी, आधासीसीमें फायदा करता है।

४८३ सिरप सिनेमोमाप।

यह धातुको पुष्ट करता और भूँखको बढाता है। मेदेको ताकत देता है।

४८४ सिरप कोक्सी।

यह रंगतके काममें आता है।

४८५ सिरप कोडया ।

यह खांसी और मूत्ररोगमें मुफीद है ।

४८६ सिरप कोपेवा ।

यह सोजाकके वास्ते परीक्षा किया हुवा है ।

४८७ सिरप किरोसो ।

यह खांसी, बुखार और कमजोरीमें मुफीद है ।

४८८ सिरप साईडोनी ।

तर करनेवाला, गर्मीको दूर करता और दस्तोंको बन्द करनेवाला है ।

४८९ सिरप डीजीटेलस ।

यह दिलकी बीमारी हौलदिली और दिलको ताकत देनेके वास्ते मुफीद है ।

४९० सिरप सारसापरेला व चोबचीनी ।

यह उपदंशके वास्ते अकसीर है ।

४९१ सिरप ईमीटायन ।

यह तुर्तही वमन लाता है इस वास्ते विषपीडित और दमेवालेको वमन करनेके वास्ते परीक्षा किया हुवा है ।

४९२ सिरप इर्गोटीन ।

इसके देनेसे बच्चा जनानेके वखत दाईकी जरूरत नहीं पडती ।

४९३ सिरप ईरीसीमीको ।

यह पुरानी खांसी और गला बैठ जानेके वास्ते मुफीद है ।

४९४ सिरप यूकेलिपटी ।

यह तंदुरस्त करनेवाला, बुखार, जाडा और दस्तोंको बन्द करता है ।

४९५ सिरप कीनीक्यूलाय ।

यह आफरेको दूर करता है ।

४९६ सिरप फीयरकलर ।

यह खांसीमें खून थूकने और सिलकी बीमारी तथा रक्तार्शमें मुफीद है ।

४९७ सिरप फी इटक्यू न्यासिट्रास ।

यह भूँखको लगानेवाला, कमजोरीको दूर करता है ।

४९८ सिरप फी एमोनिया सिट्रास ।

यह भी ऊपरके समान है ।

४९९ सिरप फी पोटास्यो सिट्रास ।

यह दर्द गुर्देको मुफीद है । ठण्डा है । पेशाब लाता है ।

५०० सिरप फाई आयोडाईड ।

यह उपदंशके कमजोर बीमारको मुफीद है और कंठमालाको आराम करता है ।

५०१ सिरप फी आयोडाइड ।

यह भी ऊपरके बराबर है ।

५०२ सिरप फी इटक्यून्या आयोडी ।

इसका भी ऊपरके मुवाफिक फायदा है ।

५०३ सिरप फी लेकटेटिस ।

यह भी ऊपरके बराबर है ।

५०४ सिरप फी पोटासास्योट्राटेंक ।

यह रुधिरको साफ करता और ताकत लाता है । यह कब्ज नहीं है । तिल्लीको दूर करता है ।

५०५ सिरप फी सल्फेटिस ।

यह ताकतवर और भूँख लगाता है ।

५०६ सिरप फी परसल्फ्युरीटी ।

इसको १ ड्राम दिनमें २ या ३ दफे देनेसे कंठमाला और

त्वचाके रोग जाते रहते है। शीशा ताँबा और पारेके जहरको दूर करता है ।

५०७ सिरप फ्री हाइपोफास्फेटिस ।

जोफ दीमाग और कमजोरी पट्ठोंकी दूर हो जाती है । नेत्रकी ज्योतिको मुफीद है ।

५०८ सिरप फ्री फास्फेटिस कमक्यून्याइट इसटिकिन्या ।

साथ सालटके मिला हुवा या सादा दोनों हीका नाम इसटन सिरप है। यह दीमाग और वीर्यको पुष्ट करता है । सारे शरीरको बलवान करता है । पट्ठों और मेदेको करडा बलवान् कर देता है।

५०९ सिरप जिन्शीयन ।

यह मेदेको पुष्ट करता है ।

५१० सिरप ग्लीसीराईजा ।

यह कफ खांसीको खोता है और दस्तावर है ।

५११ सिरप पोमग्रेनेट ।

यह ठंढा है । ताकत लाता है। बुखारोंको दूर करता है । प्यासको रोकता है ।

५१२ सिरप ग्वाईसाय ।

यह गांठियाके वास्ते परीक्षा किया है।

५१३ सिरप गमएमोन्यासाय ।

यह नजला खांसी और जुखामको मुफीद है ।

५१४ सिरप हीमीडीस्माय ।

यह उपदंशके वास्ते मुफीद है ।

५१५ सिरप हाइयोस्यामा ।

यह खांसीको मुफीद है ।

५१६ सिरप लेटयूस।

यह ठंढा है और गरमीके बुखारोंको दूर करता है।

५१७ सिरप एपीके कम्पौन्ड।

यह खांसीको मुफीद है।

५१८ सिरप हीसापस।

यह जलंधर, खांसी, छातीका शोथ, कूखका शोथ, लकवा और वायगोलेके वास्ते मुफीद है।

५१९ सिरप लोबेल्या।

यह श्वासरोगके वास्ते मुफीद है।

५२० सिरप ल्यूपयूलाय।

यह मेदेको ताकत देता है, तबियत खुश्क करता है।

५२१ सिरप मेना।

यह दस्तावर है और गर्मीके बुखारोंमें देते हैं।

५२२ सिरप मार्फीयाहैड्रीकिलर।

यह दर्दोंको मौकूफ करता है और पसीना लाता है।

५२३ सिरप पीपरमेन्ट।

यह पाचक है और उल्टीको रोकता है तथा दर्दोंको दूर करता है।

५२४ सिरप मोराय।

यह ठंढा है इसवास्ते गर्मीके बुखारोंमें देते हैं। प्यासको दूर करता है।

५२५ सिरप जेंकोराइस अस्ली।

यह शरीरको मोटा करता है, ताकत लाता है और खांसीको दूर करता है।

५२६ सिरप पेपेविरस।

यह खांसी, नजला, जुखामको खोता है।

५२७ सिरप पीसिस ।

यह तपेदिक और खांसीको मुफीद है ।

५२८ सिरप पोटासी आयोडाइट ।

यह उपदंशके वास्ते मुफीद है । सोजाकमेंभी देते हैं ।

५२९ सिरप कोनैन सिट्रास ।

यह बुखारको मुफीद है गर्मीके बुखारोंमें देते हैं ।

५३० सिरप कोनैन लिक्टेटिस ।

यह बच्चोंके शीतज्वरको दूर करता है ।

५३१ सिरप कोनैन व काफीन ।

यह शीतज्वरको मुफीद है ।

५३२ सिरप रेपी ।

यह खांसीको मुफीद है ।

५३३ सिरप रीपाय आरोमेट ।

आफरा, कब्ज, बदहजमी दूर करता है और मेदेको पुष्ट करनेवाला है ।

५३४ सिरप रीवीअम ।

यह अत्यंत ठंढा है । इसको गर्मीके बुखारोंमें देनेसे फायदा होता है ।

५३५ सिरप रूवी आईडी ।

ऊपरके समान है ।

५३६ सिरप रोजे ।

यह तबियतको खुश करनेवाला काबिज है ।

५३७ सिरप रूटे ।

यह वायगोलेको खोता है ।

५३८ सिरप सेलीसीन ।

यह तिजारी, चौथैया, शीतज्वरको दूर कर देता है ।

५३९ सिरप सेम्ब्यू शाय ।

यह कास, श्वास, खून थूकनेको रोकता है ।

५४० सिरप सेपोने रीया ।

यह उपदंशके वास्ते मुफीद है ।

५४१ सिरप सार्सापरेला ।

यह उपदंशको फायदा करता है ।

५४२ सिरप सार्सीफीरस ।

यहभी उपदंशको मुफीद है ।

५४३ सिरप सिल्ली ।

यह खांसी और जलंधरको मुफीद है ।

५४४ सिरप सनेगा ।

यह पुरानी खांसीको दूर करता है ।

५४५ सिरप सना ।

यह दस्तावर है । मात्रा १ ड्रामसे आधा औंस तक ।

५४६ सिरप सोडाहाईपोफासफेटिस ।

यह तपेदिक और सिल, पुरानी खांसी और राशेमें फायदा करता है ।

५४७ सिरप इस्ट्रमोनाय ।

यह दमा और खांसीको मुफीद है ।

५४८ सिरप इष्टिकिन्या ।

भूँख लगाता और ताकतवर है । पट्ठोंको पुष्ट करनेवाला कमरके दर्दको खोता है ।

५४९ सिरप वाईयोलेट ।

यह दस्तावर है ।

५५० सिरप जिन्जर (शर्बत सोंठ) ।

यह आफरेको खोता और भूँख लगाता है। सुगंधित पाचक और शूलको दूर करनेवाला है। मात्रा १ ड्रामतक ।

५६१ सिरप टेनिन ।

यह खून बंद करता है ।

५५२ सिरप फ्री बिरोमाईडम ।

यह खांसी और तिल्लीको मुफीद है ।

५५३ सिरप ऑफ हमीडसमस (शर्बत अनंतमूल) ।

रुचिकारक रक्तशोधक और पसीना लानेवाला है। मात्रा १ ड्राम।

५५४ सिरप मिलबरी (शर्बत सहतूत) ।

रुचिकारक अनुलोमन है। मात्रा १ ड्राम ।

५५५ सिरप लिमन् (शर्बत नींबू)

रुचिकारक है। मात्रा १ ड्राम ।

५५६ सिरप ऑफ रोज (शर्बत गुलाब) ।

पाचन सुगंधित है। मात्रा १ ड्राम ।

५५७ सिरप आफ इस्कोइल ।

मूत्रल, कफहर्ता है। मात्रा १ ड्रामतक ।

५५८ सिरप औरंज (शर्बत संतरा) ।

सुगंधित, सुस्वादु, बृंहण है। मात्रा १ ड्रामतक ।

५५९ सिरप आफ आयोडाइड आफ आयरन टानिक ।

बलकर्त्ता बृंहण है। मात्रा १ बूंद आधे ड्राम पानीके साथ ।

५६० सिरप रूवर्ब ।

मुलय्यन कुछ दस्तावर है। मात्रा १ ड्रामसे आधा औंस ।

५६१ सिरप ऑफ पापीज (पोस्तका शर्बत) ।

काबिज नींदका लानेवाला है। मात्रा १ ड्रामतक ।

५६२ सिरप औफ रिडपापी ।

थोडा नारकोटिक और दवाओंको सुगंधित करनेवाला है । मात्रा १ ड्रामतक ।

अब जूस या सक्कुस अर्थात स्वरस लिखा जाता है जिसमें सक्कुस निखालिस रसको कहते हैं ।

५६३ जूस औफ ब्रूम् ।

मल मूत्र रेचन करता है मात्रा १ से २ ड्रामतक ड्राफ्ट मिक्श्चर ।

५६४ जस औफ बिलाडोना ।

नींद लानेवाला, स्थिरताकारक है मात्रा ५ से १५ बुन्दतक ।

५६५ जूस औफ लिमन (नींबूका रस)

चित्तको प्रसन्न करनेवाला, रुचिकारक है । मात्रा १ ड्रामसे २ औंसतक ।

५६६ जूस मलबरी (सहतूतका रस)

यह रुचिकारक है । मात्रा १ ड्रामसे २ औंसतक ।

५६७ सक्कुसबिलाडोना, सक्कुस कोनायम, सक्कुस हायोसीयामी, सक्वुस पोमग्रेनेट, सक्वुसमोराय, सक्वुसलिमन, सक्वुस टस्कोपेराय, सक्वुस एकोनाइट, सक्वुसकोल्वी, सक्वुस डीजीटेलिस, सक्वुस गिलीसी राइजा इन सब सक्वुसोंका फायदा इन्होंके एक्सट्राक्ट अर्थात् सत्त्वमें देखो ।

अब इनफ्यूजन तथा डिकोकशन अर्थात काथ लिखे जाते हैं ।

५६८ इनफ्यूजन औफ चिरायता ।

बलकर्त्ता, रक्तशोधक और ज्वरको दूर करनेवाला है । मात्रा २ औंस ड्राफ्ट ।

५६९ इनफ्यूजन औफ जंबूरंडी ।

होपिंगकाफमें देते हैं । मात्रा १ से २ ड्रामतक मिक्श्चर ।

५७० इनफ्यूजन सना ।

मुलय्यन दस्तावर है । मात्रा १ से २ औंसतक ड्राफ्ट ।

५७१ इनफ्यूजन क्लोझ या प्लोव्ज (लौंगका क्वाथ) ।

मुहर्रिक, ऐरोमेटिक, सर है । मात्रा ४ औंसतक ड्राफ्ट ।

५७२ इनफ्यूजनयू कटीक्यू (कत्थेका क्वाथ)

ग्राही काबिज है । मात्रा २ औंसतक ।

५७३ डिकोशन औफ ओकवार्क ।

ग्राही काबिज है । यह पिचकारीके वास्ते काम आता है ।

५७४ डिकौकशन औफ पापीज (पोस्तका क्वाथ) ।

काबिज, शोथहर, बाहर सेकना या तरडे देना ।

५७५ डिकोकशन सारसापरेला (उसबेका क्वाथ)

बलदायक, रक्तशोधक, कुष्ठनाशक,उपदंशहर है । मात्रा २ से ४ औंसतक ड्राफ्ट मिक्श्चर ।

अथ वाटर अर्थात् पानी लिख जाते हैं.

५७६ वाटर औफ इस्पिरमेन्ट ।

हलका, पाचन, रीह और वायुहरता है । मात्रा १ से २ औंसतक मिक्श्चर ।

५७७ वाटर औफ पीपरमैन्ट ।

उपरोक्त गुणसहित प्यास और शूलको हरता है । मात्रा १ से २ औंसतक मिक्श्चर ।

५७८ वाटर औफ सिनामन ।

वातहर है । मात्रा १ से २ औंसतक ।

५७९ वाटर औफ फलल (सौंफ)

पाचन दीपन है। १ से २ औंसतक।

५८० वाटर कैम्फर (कपूर)

पाचन, शूलहर है। १ से २ औंसतक।

अब इनहैलीशन अर्थत धूनी लिखी जाती हैं।

५८१ इनहैलीशन औफ आयोडीन।

शोथहर धूनी है।

५८२ इनहैलीशन क्लोरियल।

दुर्गंधनाशक धूनी है।

सोल्यूशन अर्थात पानी मिली पतली दवा।

५८३ सोल्यूशन औफ आर्सनिक।

विष है बारीके रोगोंमें देते हैं। मात्रा २ से ८ बून्दतक मिक्श्चर।

५८४ सोलयशन परक्लोराइड औफ मर्क्यूरी।

उपदंश और सोजाकमें देना। मात्रा ३ से २ ड्रामतक मिक्श्चर।

५८५ सोल्यूशन आयोडाइड औफ आरसनी ऐन्ड मरक्यूरी।

जैसे त्वचाके कठिनरोग कुष्ठादि उपदंशमें देना। १ से ३० ग्रेनतक मिक्श्चर।

५८६ सोलयशन आफ साइट्रक औफ एमोनियम्।

यह ज्वरमें पसीना लानेवाला है। मात्रा २ से ६ ड्रामतक ड्राफ्ट मिक्श्चर।

अब कार्बोंट अर्थात् भस्म लिखी जाती हैं।

५८७ कारबोट औफ एमोनियम्।

पाचक, पसीना लानेवाला, अम्लतानाशक है। मात्रा २ से १० ग्रेनतक मिक्श्चर।

५८८ कार्बोट औफ बिसमिथ ।

ग्राही, काबिज, बल करता है । ५ से १० ग्रेन चूर्ण ।

५८९ कार्बोट औफ पोटासियम् ।

अम्लतानाशक मूत्रल है । मात्रा १५ ग्रेन पानीमें ।

५९० कार्बोट औफ आयरन (लोहभस्म) ।

बलदायक पांडुमें देना मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेन तक शक्करके साथ ।

अब पलास्टर अर्थात् चिपकानेवाला चौडा फोहा या पट्टी कहा जाता है ।

५९१ इम्पलाष्ट्रम् फिराई ।

सहारेके वास्ते कमजोर जोडोंपर लगाते हैं ।

५९२ इम्पलाष्ट्रम् बिलाडोना ।

जहां दर्द या बावटा और कँपकँपी होवे वहां लगानेसे आराम होता है ।

५९३ इम्पलाष्ट्रम् केन्थारीडिस ।

दर्द कान और बहरेपनके वास्ते कानके पीछे और आंखोंके दुखनेमें कनपटीपर और खांसीमें छातीपर तथा सुस्तीमें इन्द्रिय पर लगाकर रतूवत नसोंकी निकालते हैं । छाला पडकर फूटता है ।

५९४ इम्पलाष्ट्रम् ग्लाल्बेनाय ।

इसको पट्ठोंका दर्द, पुरानी रसौली और फोडेपर लगाते हैं ।

५९५ इम्पलाष्ट्रम् हैड्रार्जीराय ।

जिगरकी सूजन दूर करनेके वास्ते लगाते हैं ।

५९६ इम्पलाष्ट्रम् हैड्रार्जीरायकम् एमोन्याईकम् ।

इसको गिलटियोंके बढजाने और गिलटियोंपर लगाते हैं ।

५९७ इम्पलाष्ट्रम् ओपयाय ।

गाठियेके दर्दके वास्ते मुफीद है ।

५९८ इंपलाष्ट्रम् पाईसिस ।

कमर, पुरानी गांठिया और जोडोंका दर्द, पुरानी खांसी और छातीके रोगोंमें लगानेसे फायदा होता है ।

५९९ इम्पलाष्ट्रम् पिल्मवाय ।

दर्द और जोडोंकी सूजनको दबाता है। तथा छिले और कटे हुए जखमोंका मुँह दोनों तर्फ मिलाकर रखनेसे आराम होता है।

६०० इंपलाष्ट्रम् आयोडाइड ।

इसको बढीहुई तिल्ली और कलेजेपर लगानेसे आराम होताहै।

६०१ इम्पलाष्ट्रम् रीजीना ।

इसको इसटीकन्नका फोहाभी बोलते हैं। फोई फुन्सी और जखमोंको आराम करता है ।

६०२ इम्पलाष्ट्रम् सपोनिस ।

जखम और जुडे हुए जोडोंपर लगानेसे हाथ पैर खुल जाते हैं।

६०३ इम्पलाष्ट्रम् कोनायम् ।

इसको छातीका दर्द और पुरानी खांसीमें कफ पतला करनेके वास्ते छातीपर लगाते हैं। बडा फायदा होता है ।

६०४ इम्पलाष्ट्रम् इसट्रेमोनियम् ।

गांठियाके दर्दोंपर तथा दमा और पुरानी छातीकी बीमारीपर छातीके ऊपर लगाते हैं।

अब एनीमा या हुकना अर्थात् जुलाब इत्यादिकी पिचकारी गुदामें लगाना ।

६०५ एनीमा मेगनेसिया सल्फ ।

पिचकारी जुलाबके नमककी गुदामें लगानेसे पतला दस्त होकर आफरा उतर जाता है ।

६०६ एनीमा एलोज ।

हुकना एलवेका बच्चोंकी गुदामें लगानेसे चुनमुने मर जाते हैं।

६०७ एनीमा असफोटीडा ।

आफरा और पेटके दर्दको इसकी पिचकारी गुदामें करनेसे आफरा और दर्द दूर हो जाता है।

६०८ एनीमा टेरेबिन्थ ।

नित्यकी कब्जी और पेटके केचुवे मारनेके वास्ते तथा कँप-कँपी, मरोडा और ऐंठनके वास्ते इसकी पिचकारी गुदामें लगाना मुफीद है।

६०९ एनीमा कालोसिन्थीडिस ।

अत्यंत कब्ज और पेटके दर्दमें इसकी पिचकारी गुदामें लगानेसे फायदा होता है।

६१० एनीमा ऐलब्यमिनम ।

अलसीके क्वाथमें २ या ३ अंडेकी जर्दी मिलाकर पिचकारी करनेसे पुराने दस्त आने बंद हो जाते हैं।

६११ एनीमा सबडिला ।

इसके अर्कको पिचकारी बच्चोंकी गुदामें लगानेसे चुनमुने मर जाते हैं।

६१२ एनीमा क्रियोजट ।

पेचिश और आम रक्तातिसारमें इसकी पिचकारी मुफीद है।

६१३ एनीमा पिल्मबाई ।

इसकी पिचकारी अण्डकोशमें आंत उतर आनेके वास्ते तथा अण्डकोशमें पानी जमा हो जानेको फायदा करती है।

६१४ एनीमा एटान्या ।

इसकी पिचकारी गुदाके फट जानेको फायदा करती है।

अब इन्जकशन् अर्थात् त्वचाके भीतर पिचकारी लगाना लिखा जाता है।

६१५ इन्जकशन् सबक्यूटेनिस (मारफीया वा कोनैन) अर्क कोनैन और मार्फीयाहैडिरोक्लर।

बजरिये पिचकारीके चन्द बूंद नीचे त्वचाके पहुँचानेसे फौरन् शीतज्वर भागता है।

६१६ हाईपोडार्मिक इन्जकशन् आयोडिकएसिड।

इसकी पिचकारी घेघा और गलगंडके फूले हुए हिस्सेमें लगानेसे आराम होता है।

६१७ हाईपोडार्मिक इन्जकशन् पर्किलोराइड औफ मर्क्यूरी।

इस अर्ककी पिचकारी दर्जे दोयम आतशकमें बहुत मुफीद है।

६१८ हाईपोडार्मिक इन्जकशन् मार्फीया हैडिरोक्लर।

एट्रोपयासल्फ व जौहरकी अफीमके अर्ककी पिचकारी नीचे त्वचाके लगानेसे दर्द गुरदेको उसी वक्त बन्द करता है। मात्रा जिसकी १ से ६ बूंदतक है। आफटर पेनमें। मयूरी मिकन्वलशनको खून जारीमें, डिस्लोकेशनमें, डिसपेपशीयामें, दिलकी बीमारियोंमें, हुचकी और कमरके दर्दमें भी इसीकी पिचकारी करते हैं।

६१९ हाईपोडार्मिक इन्जकशन् इसर्गिकिनिया।

इस अर्ककी पिचकारी १ से ५ बूंदतककी त्वचाके नीचे करनेसे दर्द पट्ठा, दर्द हाथ और दर्द पैरका एक दो दफेके करनेहीसे जाता रहता है।

६२० हाईपोडार्मिक इन्जकशन् आपामारफीया।

जिस किसीने जहर खाया हो तो उसको उलटी करानेके वास्ते १ ग्रेन अर्क काफी है।

६२१ हाईपोडामिक इन्जकजन् कफीनी सोडा सेलीसीलास ।

जलंधरमें पेशाब लानेको इसके अर्ककी ५ से १५ बूंदतककी पिचकारी काफी है ।

६२२ हाईपोडार्मिक इन्जकशन् कोकीन व मारफीयाकी ।

अफीमकी आदत छुटानेको बद दुम्बल रसौलीके चीरनेको ३ ग्रेनकी पिचकरी की जाती है ।

६२३ हाईपोडार्मिक इन्जकशन् जीवोरानडी ।

इसके ½ ग्रेनके अर्ककी पिचकारी तपेदिकमें की जावे तो फायदा होता है । ½ ग्रेनकी पिचकारीसे बच्चा जानेका दर्द होना शुरू हो जाता है, हैड्रोफोवयाकी बीमारीकोभी फायदा होता है । दांतका दर्दभी इसकी पिचकारीसे जाता रहता है ।

६२४ हाइपोडार्मिक इन्जकशन् टार्ट्रिक औफ मारफीया ।

इसके अर्ककी पिचकारी १ वा २ बूंदकी काफी है ।

६२५ हाईपोडार्मिक इन्जकशन् ऐट्रोपिया ।

इसके अर्ककी पिचकारी दमेको मुफीद है, हैजेको आराम करती है, दर्द पठ्ठा और गांठियेके प्रारंभमें, रींगन वायुमें, जाबडेके दर्दमें इसकी पिचकारीसे फायदा होता है ।

अब आइटमेंट अर्थात् मरहम लिखे जाते हैं ।

६२६ आइंटमेंट आयोडीन (मरहम आयोडीन) ।

इसको तिल्ली और जिगरकी सूजनपर लगानेसे बडा फायदा होता है । गांठियाकी सूजन और चोटोंके दर्दको खोता है । सब तरहकी सूजन और उभारको तथा दर्दको दूर करता है । जखमोंपर लगानेसे जखम आराम हो जाता है ।

६२७ आइंटमेंट एसीडाईवोरीसाप ।

उपदंशके सडे हुए जख्म जिनसे बदबू और पीप आती हो

फौरन आराम करता है अगर नांकका बांस उपदंशसे बैठ गया हो तो इसके लगानेसे आराम होता है ।

६२८ आइंटमेंट एसीडाय कारबोलीसाय ।

यह मरहम हरकिस्मके जखमोंको आराम करता है और बहुत जल्दी जादूका काम दिखाता है ।

६२९ आइंटमेंट जाइनो कार्डिया ।

इसको कोढके जखमोंपर लगानेसे बडा फायदा होता है ।

६३० आइंटमेंट एसिड सेलीसीलेट ।

गांठियाकी सूजन और दर्द जोडोंपर लगानेसे आराम होता है ।

६३१ आइंटमेंट अकोनेटिया ।

गांठिया वगैरह सब तरहके दर्दोंपर लगाते हैं । दर्द जाबडा, दर्द कलेजा, और हाथ पावोंके दर्दपर मलनेसे फौरन् आराम होता है ।

६३२ आइंटमेंट टाट्राइमेटिक ।

छातीकी पुरानी सूजन और जलन तथा फेफडेका जब कोई हिस्सा सड जाता है जिससे सिल या दिलकी बीमारी होती है ऐसे रोगमें इसको १ ड्रामकी ताकतका मरहम बनाकर हँसलीकी हड्डीके नीचे लगानेसे आराम होता है ।

६३३ आइन्टमेन्ट ऐटरोपीया ।

नेत्रकी ज्योतिके कमती होनेमें तथा नेत्रोंके दुखनेमें तथा नेत्रके सोजेमें तथा जलस्रावमें इसको आंखोंके बाहर लेप करनेसे आराम होता है, दर्द पट्ठा, गांठियाके दर्द करनेवाले जोडोंपर और अंडकोशकी सूजनपर लगानेसे फायदा होता है ।

६३४ आइंटमेंट केन्थारीडिस ।

नामर्दीके दूर करनेके वास्ते इन्द्रियपर लगाते हैं और गांठियाके सुस्त जुडे हुए जोडोंके दर्द और सोजपर लगाते हैं तो आराम हो जाता है तथा गंजपर लगानेसे बाल निकलते और बढते हैं ।

६३५ आइंटमेंट क्रियोसोकेनिक वा गोबापाउंडर ।

दाद चकते खारिशको बडी जल्दी आराम बिना किसी तकलीफके दूर कर देता है । उम्दा मुजर्रब दवा है ।

६३६ आइंटमेंट क्रियोजट ।

बाहरके खून बंद करनेके वास्ते परीक्षा किया हुवा है और सूखी खुजलीमें तो इसके मलनेसे तुर्त खाज बन्द हो जाती है । गंज झांई और दादको मुजर्रब है ।

६३७ आइंटमेंट इलीमाय ।

इसको पुराने दुर्गंधित घावोंपर लगाते हैं । सीटन यानी वह फीता जो पागलोंकी गुद्दीमें डाला जाता है और उसमें मवाद जारी होती है उसके तर रखनेको लगाते हैं ।

६३८ आइंटमेंट यूकेलिपटाय ।

इसको लगाकर अगर मोमजामा बांध दिया जावे तो छाले पैदा हो जाते हैं । अगर इसका मरहम तेज रीढकी हड्डीपर मला जावे तो जाडेका बुखार रुक जाता है और छातीपर लगानेसे तपेदिकका कफ और बुखार कम होता है । खांसीको आराम होता है । बडा मुजर्रब है ।

६३९ आइंटमेंट गाले कम्पौन्ड ।

इसको बवासीरी मसोंपर लगानेसे खून और अकड बन्द होती है, दर्द मौकूफ होता है ।

६४० आइंटमेंट गिलसरीन।

वा ग्लूसरलेड इसकोभी बवासीरके मस्सोंपर खून बन्द होनेके वास्ते लगाते हैं।

६४१ आइंटमेंट हैड्राजीराय कम्पौन्ड।

तेज मरहम लगानेसे जिस्मके अन्दर इसका असर होता है। रसौली, कखलाइ और शोथपर लगानेसे आराम होता है। जब उपदंशमें मुख लाकर आराम करना मंजूर हो तो इसको बगलोंमें मलै फौरन आराम होता है और आतशकके जखमोंकोभी आराम पहुँचता है।

६४२ आइन्टमेंट हैड्राजीराय एमोनि एटा।

इसको खूनी खाज, गंज, दाद और घावके साफ करनेको लगाते हैं, जूंको मारता है।

६४३ आइन्टमेन्ट हैड्राजीराय रुबराय आयोडाय।

कंठमाला, घेघा, तिल्ली और जिगरके बढ जानेको मौकूफ करता है। इसको बहुत देरतक लगे रहनेसे छाले पड जाते हैं।

६४४ आइंन्टमेन्ट हैड्राजीराय सबक्लीरीडाय वा पराक्लीरीडाय।

इसको दाद गंज और आतशकके जखमोंपर लगाते हैं मिस्ल रस कपूरके हैं।

६४५ आइन्टमेन्ट हैड्राजीराय नाइट्रेटिस।

घावको साफ करनेवाला, झाईं जो गालोंपर काले धब्बे पड जाते हैं उसको दूर करनेवाला, आंखोंके दुखनेको आराम करने-वाला जब कि इसके फोहे कनपटियोंपर लगाये जावें तो आखोंका दर्द दूर हो जाता है। आतशकके जखमोंके वास्ते मुफीद है। शिरके गंजादिको आराम करता है।

६४६ आइन्टमेन्ट हैड्राजाराय एक्साईडाय रूवराय ।

पुराने सड़े और सुस्त जखमोंपर लगाया जाता है । आंखोंके दुखनेमें लगानेसे फायदा होता है ।

६४७ आइन्टमेन्ट आयडोफाम ।

इसको गंदे जखम और उपदंशके जखमोंपर लगानेसे फायदा होता है और जखम जल्दी ही भर आता है । दाद और गंजपर लगानेसे भी फायदा होता है ।

६४८ आइन्टमेन्ट रोजीना ।

इसको इसटीकनका फोहाभी कहते हैं । जखमोंपर लगानेसे आराम होता है ।

६४९ आइन्टमेन्ट सवाइना ।

छाले पलस्तर और सीटनके जखमोंसे मवाद जारी रखनेके वास्ते मरहम केन्थारीडिससे उम्दा है ।

६५० आइन्टमेंटवेसलीन.पाराफीलीन व सटोसीयाय अर्थात् सादा मरहम ।

यही और मरहमोंकी जड है और आपभी फोडे फुनसी और जखमोंको आराम करता है ।

६५१ आइन्टमेन्ट सल्फ्यूरस ।

इसको गीली खुजली और पुरानी गांठियापर लगाते हैं ।

६५२ आइन्टमेन्ट आयोडीन कम्पौन्ड ।

इसको बढी हुई रसौली और सूजी हुई जगहपर लगाते हैं । गज और सूखी खुजलीको मुफीद है । जिसके अंडकोश बढ गये हों या सूज गये हों इसमें पारे और आयोडीनका मरहम दोनों आधे आधे मिलाकर लगावे तो आराम होता है ।

६५३ आइन्टमेंट टीरीबिन्थ ।

मरज सोजशीमें इसकी मालिश करते हैं ।

६५४ आइन्टमेंट जिंसाये ऐक्साइड ।

गीली खुजली और फोडेको जिसमें जलन हो ऐसे घावोंको अग्नि दग्ध और फूटे हुए छालोंपर लगानेसे ठंढक और आराम होता है ।

६५५ आइन्टमेंट पीसिसलीकोइड ।

जिल्दकी पुरानी बीमारी और गंजपर लगानेसे फायदा होता है।

६५६ आइन्टमेन्ट पल्मवाय एसीटास ।

इसको सूजन सडे हुए और पीबदार घावोंपर लगानेसे आराम होता है ।

६५७ आइन्टमेन्ट पल्म्बाई कार्बोनास ।

ठंढक डालनेके वास्ते जखमोंपर लगाते हैं ।

६५८ आइन्टमेन्ट औफ कारबो औकलिड ।

सफेदका मरहम यह जखमोंको भर देता है ।

६५९ आइन्टमेन्ट औफ मरक्यूरी ।

त्वचाके रोगोंमें लगाना ।

६६० आइन्टमेन्ट औफ सल्फर ।

गंधकका मरहम पामा खारिशमें मालिश करना ।

६६१ आइन्टमेन्ट औफ आयोडाइड औफ सल्फर ।

गज भैंसादाद इपटाइक्कोमें मलना ।

६६२ मर्हम पिल्मवाय आयोडाइडम् ।

फोडा और जखम तथा बहुत दिनोंकी उठी हुई गांठ और तिल्ली व जिगरकी सूजनपर लगानेसे आराम होता है ।

६६३ आइन्टमेन्ट केडमी आयोडाइड ।

इसको जोडोंकी सूजनपर लगाते हैं ।

६६४ आइन्टमेन्ट आल्को होलीनम् ।

इसको कोढ और खाजपर लगाते हैं ।

६६५ आइन्टमेन्ट एलोइज कम्पौन्ड ।

लडकोंके पेटपर लगानेसे दर्द और आफरा तथा कीडे मर जाते हैं ।

६६६ आइन्टमेन्ट अर्जेनटाईट्रास ।

इसको सूजनोंपर लगाते और दुखती हुई आँखोंपर तथा सोजाकमें बत्ती लगाते हैं ।

६६७ आइन्टमेन्ट इसट्रानजनट ।

इसको अंडकोशके बढ जानेके काममें लाते हैं ।

६६८ आइन्टमेन्ट आरी ।

यह सोने धातुसे बनता है । इसके इस्तेमालसे गांठियेको फायदा होता है ।

६६९ आइन्टमेन्ट बालसमपेरु ।

इसको स्तनोंके जखमपर लगाते हैं ।

६७० आइन्टमेन्ट कालारसिओपीएटम् ।

इसको बवासीरपर लगाते हैं ।

६७१ आइन्टमेन्ट केलोमिसलेनस ।

इसको दूधके जलेपर लगानेसे फायदा होता है ।

६७२ आइन्टमेन्ट कालसिस किलोराइड ।

इसको पुरानी गदूदोंकी सूजनपर लगाते हैं ।

६७३ आइन्टमेन्ट कन्थारीडिसकम् हैड्राजींराय ।

इसको पुराने फोडेपर लगाते हैं ।

६७४ आइन्टमेन्ट केटीक्यूं कम्पौन्ड।

इसको उपदंशके जखम भरनेको लगाते हैं।

६७५ आइन्टमेन्ट गाले कम कुपराय।

यह खोपडीके दादको मुफीद है।

६७६ आइन्टमेन्ट हैड्राजीराय कम एमोनिया किलर।

इसको गढूहोंके बढनेमें लगाते हैं।

६७७ आइन्टमेन्ट हैड्राजीराय वाईकिलोराइड।

इसको दाद गंज और उपदंशके जखमोंपर लगाते हैं।

६७८ आइन्टमेन्ट एन्यूला।

इसको खुजलीपर लगानेसे फायदा होता है।

६७९ आइन्टमेन्ट जड्राफा।

इसको बवासीरके मस्सोंपर लगाते हैं।

६८० आइन्टमेन्ट लिकोपोडी।

इसको रगड और नामर्दीमें लगानेसे फायदा होता है।

६८१ आइन्टमेन्ट नकथालीमे।

इसको दादोंपर लगाते हैं।

६८२ आइन्टमेन्ट कोनैन।

इसको शीतज्वरवालेके कमरकी हड्डीपर मलते हैं।

६८३ आइन्टमेन्ट कालोसिंथ।

इसको वस्तिस्थान पर लगानेसे दस्त होते हैं।

६८४ आइन्टमेंट स्यूबीरीसअसटी।

इसको बवासीरके मस्सोंपर लगानेसे फायदा होता है।

अब लिनीमेन्ट अर्थात् दर्दोंपर मलनेकी दवा या तेल लिखे जाते हैं।

६८५ लिनीमेंट एकोनाइट।

जिस जगह अत्यंत दर्द हो जैसे गांठिया इत्यादिमें तो इसके मलनेसे फौरन् आराम होता है।

६८६ पेनकिलर ।

बाहर मलनेसे दर्दको आराम होता है और डंकका जहर मरताहै। खिलानेसे पेटका दर्द आराम होता है। मात्रा २० बूंदतक।

६८७ लिनीमेन्ट एमोनिया ।

त्वचाको लाल करनेवाला, इसको गले और गांठियेके दर्दमें मलते हैं।

६८८ लिनीमेन्ट बिलाडोना ।

इसको पट्ठों और गांठियोंके दर्दपर मलते हैं।

६८९ लिनीमेन्ट एमोनिया कम्पौंड ।

दर्दोंपर मलनेसे फायदा होता है। लिनीमेन्ट किरारीनेट्रसको खुजली तथा दादपर मलनेसे फायदा होता है ।

६९० लिनीमेन्ट बिलाडोना व किलोरोफार्माई ।

इसको रीढपर लगानेसे कमरका दर्द जाता है।

६९१ लिनीमेंट कालोसथ ।

इसको १ ड्राम सबेरे और रातको मलनेसे दस्त आता है और शोथ दूर होता है।

६९२ लिनीमेंट गलीसीरीन ।

गांठिया और पट्ठोंके दर्दपर मलनेसे फायदा होता है। मोच और कुचले हुये, जले तथा छिलेपर, फटे तथा गले हाथ पैरोंपर लगानेसे आराम होता है । स्तनोंके घाव और शोथके वास्ते बेखौफ दवा है।

६९३ लिनीमेंट जूनीपर ।

इसको गंजपर लगानेसे आराम होता है।

६९४ लिनीमेंट जकोराइस असली ।

कंठमाला और गलेके जखमोंको मुफीद है ।

६९५ लिनीमेंट सपोनिस कम्पौन्ड ।

खुजली और दर्दोंको आराम करता है ।

६९६ लिनीमेंट अम्बर मुश्क ।

सुस्तीवालेकी इन्द्रियके पट्ठोंपर लगानेसे आदमी कामका हो जाता है । अफीमके साथभी लगाते हैं ।

६९७ लिनीमेंट टेरेविन्थ ।

इसको दर्द और जले हुये पर लगानेसे आराम होता है ।

६९८ लिनीमेंट टेरेविन्थ एसोटीकम् ।

इसको तपेदिक और सिलकी बीमारीमें छातीपर मलनेसे फायदा होता है ।

६९९ लिनीमेंट कम्फर ।

इसको दर्दोंपर लगानेसे दर्दको दूर करता है । चोट और मोच तथा गांठियाके दर्दोंपर मुफीद है ।

७०० लिनीमेंट कैंथारिडिस ।

यह पुराने दर्द और चोटके दर्दको उखाडकरके खो देता है इसीसे सुस्तीमें इन्द्रिय पर उपाड करते हैं ।

७०१ लिनीमेंट किलोराफार्मायको ।

किसी अंगमें जब दर्दकी बडी तकलीफ हो तब इसको लगाते हैं ।

७०२ लिनीमेंट क्रोटोनिसको ।

यह तिला और मालिशका तेल है । दर्द और सुस्त पट्ठोंपर लगाते हैं । नामर्दीमें इन्द्रियपर मलते हैं । नामर्दीको बडा मुफीद परीक्षा किया गया है ।

७०३ लिनीमेंट हैड्रार्जीराय ।

इसको पुरानी रसौली और पट्ठोंपर मलनेसे फायदा होता है । जोडोंके दर्दको खोता है । पुराने घावोंपर इसका तर किया हुआ कपडा रखनेसे आराम होता है ।

७०४ लिनीमेंट आयोडीन केम्प ।

जोडोंका दर्द शोथ और वायगोले तथा फोडे और रसौली व घेघेपर लगानेसे आराम होता है ।

७०५ लिनीमेंट ओप्यार्इको ।

दर्दोंपर इसकी मालिश करनेसे फौरन आराम होता है ।

७०६ लिनीमेंट सपोनस ।

यह गांठिया और जोडोंके दर्दको फौरन् खोता है ।

७०७ लिनीमेंट औफ सोप ।

मोचमें मालिश करना ।

७०८ लिनीमेंट लाइमकेर आइल ।

जलनेमें मालिश करना ।

७०९ लिनीमेंट मरक्यूरी ।

कफहर फैलानेवाला मालिश है ।

अब मुत्फरकात दवाएँ अकारादि क्रमसे लिखी जाती हैं ।

७१० ओलिइट जिंक ।

इसको शिरके त्वचा रोगोंमें बुरससे लगाकर कपडा ढकना ।

७११ ओलिरीजन क्यूवीबसी ।

यह सुजाक और ज्यादह छींक आनेमें ५ से ३० बूंदतक सोल्यूशन ।

७१२ औक्साइड औफ बिसमिथ ।

ग्राही, काबिज, बृंहण, बलदायक ५ से १५ ग्रेन चूर्ण गोंदमें ।

७१३ अर्जन टाइ नैट्रास (चांदीका तेजाब) ।

इसको मृगी, राशा, छातीका दर्द, दर्द मेदा, रुधिर पडना, आंतोंका जखम, जोफ मेदा, और पुरानी संग्रहणीमें देनेसे फायदा होता है ।

सुस्ती और आतशकके घावोंपर बाहर लगाते हैं दुखती हुई आंखोंके वास्ते कनपटियोंपर लगानेसे आराम करता है। साँप और बावले कुत्तेके काटे हुए जखमको मुफीद है। सोजाक, प्रसूत और अतिसारमें इसकी पिचकारी करते हैं। मात्रा १/६ से १/३ ग्रेनतक।

७१४ अर्जन टाई ओक्साईडम् ।

पुराना अजीर्ण और मेदेके रोगोंमें खून थूकने या खूनके जारी होनेमें, पुराने दस्तोंमें इसको थोडी अफीमके साथ देते हैं। आतशकके जखम, कलेजेका दर्द, मृगीको दूर करता है। मात्रा १/४ से २ ग्रेनतक।

७१५ अर्जन टाईसाई नाईडम् ।

आतशकके मजोंमें देनेसे या बाहर लगानेसे आराम होता है। मात्रा १/१० से १/२ ग्रेनतक।

७१६ अर्जन टाईक्लिोईडराम् ।

मृगी, उपदंश, पुरानी पेचिश, बदहजमी और तपेदिकमें इसको देते हैं। मात्रा १ से ५ ग्रेनतक।

७१७ अर्जन टाईआयोडाईकम् ।

इसको राशा, मृगी, आतशक, पट्ठेका दर्द, मेदा और बदहजमीमें देते हैं। मात्रा १/१६ से १/४ ग्रेनतक।

७१८ आरम गोल्ड व सोना ।

इसका उपदंश, कंठमाला, कोढ, कभी हैजेमें देते हैं। जबना और मसूढोंपर बाहर मला करते हैं। मात्रा १ से १ ग्रेनतक।

७१९ आरम क्लिोराईडम् ।

यह उपदंशके दूसरे दर्जेमें बहुत मुफीद है। माफिक रस कपूरके। मात्रा १/२० से १/१ ग्रेनतक।

७२० आरम सोडोक्लो राईडम् ।

इसकोभी उपदंशमें देते हैं तो फायदा होता है । मात्रा १/२० से १/१० ग्रेनतक ।

७२१ आलमीन ।

यह खूनको साफ करनेवाला है ।

७२२ अलाटेरिन ।

यह पानीके माफिक दस्त लाती है। मात्रा से १/१० ग्रेनतक ।

७२३ आकाशया गमाय ।

लुआब इसका आँव लहूकी पेचिश बंद करनेको देते हैं । खांसीको दूर करता है । जले हुएपर इसका पलस्तर लगाते हैं । मसाने और इन्द्रियकी जलनमेंभी देते हैं ।

७२४ आरसनिक (शंखिया) ।

तीक्ष्ण विष है, खुश्की करता, वारीके रोगोंमें मात्रा १ ग्रेनका आठवां भाग गोली या सोल्यूशनमें ।

७२५ एसंस औफ पीपरमेन्ट ।

पाचक है । मात्रा १० बूंद मिक्श्चर ।

७२६ ओपियम् (अफीम) नारकोटिक ।

काबीज, विष १/२ से २ ग्रेन ।

७२७ ओड चारकोल ।

ऐंटीसिपटिक ६० ग्रेनतक चूर्ण ।

७२८ ओलीइड आफ मर्क्यूरी (पारेसे बनता है) ।

फिरंग सूजन या शूलपर लगानेको ।

७२९ औक्साइड औफ जिंक ।

मृगीमें २ से १० ग्रेनतक गोली ।

७३० आक्साइड औफ सिलवर ।

बलदायक, मृगीमें १/२ से २ ग्रेन गोली ।

७३१ औक्साइड औफ लिड ।

बाहर लगाना ग्राही काबिज खाया नहीं जाता ।

(आयो डाइड औफ सोडियम्)

मृगी, आतशक, गांठियामें ५ से १० ग्रेनतक चूर्ण ।

७३२ आलकोहोल एमाइलीक्म व अपसोल्यूट ।

इसका नाम फ्यूसेल आयल है, जरासी गरमीसे जल उठता है, सख्त जहर है ।

७३३ आमायल नैटिरास ।

नींद लाता है । दमेकी बीमारीको फौरन् रोकता है । कलेजेका कठिन दर्द और शिरके दर्दको रोकता है, आधाशीशीकोभी दूर करता है । जब दमके उठनेमें या दिलके काममें दर्द हो अथवा सांस न लिया जावे तो इसको लगानेसे फायदा होता है । हैजा और गाडीकी हाल झोल तथा चढे हुए बुखारमें नब्जपर मलनेसे बुखार उतर जाता है । इसटिकिनिया और कुचलेके चढे हुए जहरको उतारता है । इसको २ या ३ बूंद सुँघाते हैं ।

७३४ अमाईलम् पल्व (सतगेहूं)

सूजनको बिठानेवाला, इसको पिचकारीकी तरह गुदामें देनेसे गुदाका शोथ, जलना, आव, लहूकी पेचिश, अतिसार और बुखारोंमें फायदा करता है ।

७३५ आयोडीन ।

खूनको साफ करनेवाली, जहरका असर खोनेवाली, जलानेवाली, कीडे और फोडेका नाशक, उभारोंको दबानेवाली अक्सीर दवा है । पुरानी रतूबतको रोकती है । जलंधर, कण्ठमाला, उपदंश, जोडोंका दर्द और सूजनको दूर करती है । मोच और चोटके दर्दकोभी दूर करती है । कलेजेकी तिल्ली, दर्द जखम

जो उपदंशसे हुवा हो भाफ इसकी दूर कर देती है। बढे हुए अंड-कोशोंको और मृगीको खोती है, चूचियोंको छोटी और सख्त करती है। मात्रा ½ से २ ग्रेनतक।

७३६ आयडोफार्म ।

खांसी और तपेदिकवाले रोगीको जब किसी चीजसे फायदा नहीं होता तो इसको देनेसे हो जाता है। उपदंशके जख्मको तो तुर्त फुर्तमें भरता है। एक पैरका दर्द और नीचेके धडको तथा पट्ठोंके दर्दको, कंठमाला और आतशकको आराम करनेके वास्ते बाहर लगाते हैं। गंज, बवासीर, गुदा, अग्निदग्ध और गीली खुज-लीको मुफीद है। मात्रा ½ से ३ ग्रेनतक।

७३७ अरगोटीन ।

हमलके बच्चा जनानेको और सोजाकको अगर पसीना न रुकता हो तो इससे रुक जाता है। मात्रा १ से ५ ग्रेनतक।

७३८ अरगट ।

आर्तववाह रीहनाशक और अर्गोटीनकेभी सम्पूर्ण गुण इससे पाये जाते हैं। मात्रा २० ग्रेन खेशांदा।

७३९ इस्कोयल ।

संचालन, कफहर। मात्रा २ ग्रेन चूर्ण।

७४० इस्कमोनियम (सकमूनिया)।

रेचन दस्तावर १० ग्रेन चूर्ण।

७४१ ईन्थर (खालिस)।

दमा, मूर्च्छा, दर्द छाती, मेदेकी ऐंठन, वायगोला, हुचकी, पट्ठोंका धडकना, शिर दर्द, पित्तेकी पथरी, दीमागकी सोजिश, पसीना, मूत्राघात, जुकाम, खांसीको फायदेमंद है अगर जो आंत फोतेमें उतर गई हो या फँस गई हो तो उसपर वह दवा डालनेसे

आंत पेटमें चली जाती है । इसका नाम ईथरसल्फभी है इससे इस्प्रिटईथर सल्फ बनता है । इसीसे बर्फभी जमाते हैं । मात्रा ३० से ९० बूंदतक ।

७४२ ईथरएसीटिक ।

दमा नकसर अर्थात् गांठिया, वायगोला, हैजा, खांसी और गांठियेके जोडोंपर लगाते हैं इसके द्वारा छाला लानेवाला अर्क उम्दा बनता है । मात्रा २० से ६० बूंदतक ।

७४३ इन्डीगोनील ।

इसको मृगी, वायगोला और राशामें देते हैं । बवासीरके मस्सों- पर लगाते हैं । मात्रा २० से ६० ग्रेनतक ।

७४४ इस्को पेरायन ।

यह पेशाब लानेवाला है ।

७४५ इष्टिकिंनिया (कुचलेका जौहर) ।

यह बाहर अर्थात् कामशक्तिको पुष्ट करती है, बुखारको दूर करती है, पाचक है, पट्ठोंको ताकत देती है, मृगीमें भी देते हैं, दर्दोंको दूर करती है, वातव्याधिके वास्ते उत्तम दवा है । मात्रा ३० एक ग्रेनका तीसवां हिस्सा गोलीमें ।

७४६ ईरीडीन ।

खून साफ करनेवाला, थूक पैदा करनेवाला और पेटके केच- वोंको मारनेवाला है । मात्रा १ से ५ ग्रेनतक ।

७४७ इसटिल्लीनाजिन ।

इसको सब तरहकी खांसीमें देनेसे फायदा होता है । मात्रा १ बूंद लुआबके साथ ।

७४८ इलान्थस ।

इसको पेचिश, सोजाक, प्रमेह और धातुके पतली पड जानेमें देते हैं ।

७४९ ईपोसाईनिन ।

इसको जिगरकी ऐंठन और कब्जमें देते हैं। मात्रा १/२ से २ ग्रेनतक ।

७५० इमीटीना ।

इससे जहर खाये हुयेको उल्टी कराते हैं तथा कफके निकालनेकोभी वमन कराते हैं । खांसी, दमा, उपदंश, गांठिया और जलंधरमें खिलाते हैं ।

७५१ इरींडाइन ।

यह उल्टी, दस्त और मूत्र लाता है । दिलको पुष्ट करता है और आंतोंके कार्यको बढाता है । गुरदे और मसानेकी बीमारीको मुफीद है मात्रा १/८ से ग्रेनतक ।

७५२ एलोज (एलवा) ।

यह दो किस्मका होता है एक सोकोतरीन दूसरा बारबेडोज ज्यादा खर्चमें आता है । कब्ज, वायगोला, बदहज्मी तथा जवान स्त्रीका ऋतुनाश खुल जाता है । इससे पिचकारी बच्चोंकी गुदामें करनेसे चुनचुने मरजाते हैं और यह जुलाब है। मात्रा २ से २८ ग्रेनतक ।

७५३ एन्टीमोनीटार्टेरेटम् ।

इसको टार्ट्राइमीटिकभी कहते हैं । इससे बुखार उतर जाता है । फेफडेकी बीमारियोंको मुफीद है । भोजन और हवाकी नालकी शोथको उतारता है । बवासीर सख्त खांसीको खो देता है । हैजा, जुकाम सोजाक और गांठियामें देनेसे फायदा होता है । मात्रा १/३ से १/२ ग्रेनतक ।

७५४ एन्टीमोनी किलोराईडम् लीकर ।

यह जलानेवाली दवा है । इसको फोडे फुनसी और बदोंके बिठानेको बाहर लगाते हैं ।

७५५ एन्टीमोनी ओक्साईडम् ।

पसीना लानेवाला, त्वचारोग, गांठिया, बुखार और खांसीमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा १ से ३ ग्रेनतक ।

७५६ एन्टीमोनीपलविस ।

जेमिस पौन्डर वा जेकोवाई बेराई गर्मीके थोडे बुखारोंमें तथा शोथ फेफडे और आवाजकी नालीमें बतौर खून साफ करनेके वास्ते और दस्त लानेको देते हैं। जलंधर और पित्तकी बदहज्मीको दूर करता है। मात्रा १ से ६ ग्रेनतक ।

७५७ एन्टीमोनीसल्प ।

खूनको साफ करनेवाला, पसीना लानेवाला, वमन लानेवाला पुरानी गांठिया और दोयम दर्जे उपदंशमें गिलिटियोंके बढ जाने और कलेजेके पुराने रोगोंमें देते हैं। मात्रा १ से ९ ग्रेनतक ।

७५८ एकोनेटिया ।

इसका मरहम जोडोंके दर्दको मुफीद है। गांठियाके दर्दकोभी मुफीद है।

७५९ एलोइन ।

दस्तावर है। हैज लाता है। मात्रा ½ हिस्सेसे १ ग्रेनतक ।

७६० एट्रोपिया ।

इसको आंखोंमें डालनेसे ज्योतिको फायदा होता है।

७६१ एसकिलेपीडीन ।

कफको निकालनेवाला, पसीना लानेवाला और पुष्ट करनेवाला है। मात्रा १ से ९ ग्रेनतक दिनमें ३–६ दफे देना.

७६२ एसाफोटीडा ।

कफको निकालता है, कास, श्वास, वायगोला, पट्ठोंकी कमजोरी, हैजा और बदहजमीको मुफीद है। मात्रा ५ से २० ग्रेन ।

७६३ एपीकाक्काना ।

कफहर्ता वामक ग्राही । मात्रा ½ से २ ग्रेनतक कफहर्ता होता है । २० ग्रेनतक वामक चूर्ण ।

७६४ एमोनिया बेन्जाइटिस ।

इसको पसीना और पेशाब लानेके वास्ते देते हैं । पुरानी गांठिया, खांसी, नजूल, मसाना, जलंधरको मुफीद है । पेशाब लाता है । मात्रा १० से २० ग्रेनतक ।

७६५ एमोनिया कार्व ।

वायगोला, मृगी, मूर्च्छा, बूढेकी पुरानी खांसी और कफ या दमाको मुफीद है । जहरके असरको खोता है । मात्रा १० ग्रेनतक ।

७६६ एमोनिया फास्फरस ।

इसको गांठिया और पेशाबकी पथरीमें देते हैं । सूजनको उतारता है मात्रा ५ से २० ग्रेनतक ।

७६७ एमोनिया विरोमाइडम् ।

यह नींद लानेवाला, खूनको साफ करनेवाला और दर्दको दूर करनेवाला है । जब पट्ठोंकी बीमारीमें नींद नहीं आती हो तो इससे आजाती है । उन्माद और वायगोलेको मुफीद है । आधाशीशी और मृगीमेंभी देते हैं खांसीको दूर करती है । तिल्लीके वास्ते यह दवा परीक्षा की गई है । मात्रा ५ से २० ग्रेनतक ।

७६८ एमोनिया क्लिोराइड ।

अर्थात् क्लोराइड ऑफ एमोनियम् स्वेदधर्म लाता है, ठंढा है, पट्ठेका दर्द, कंठमाला और गर्मीकी बीमारीसे जो गदूद फूल जावे उसको बिठाता है । दर्द कलेजा, पेचिश, आँव, दस्त बुखार, कलेजेके रोग, अण्डकोशमें पानी उतर आना, रसौली और मसोंको मुफीद है । दर्द छातीको खोता है । तपेदिकमें फायदा करता है । मात्रा ५ से २० ग्रेनतक ।

७६९ एमोनिया आयोडाईडम् '

फायदा इसका मानिन्द आयोडाइड पोटास यानी हैडिरोपोटा ससे अच्छा है । जब उपदंशमें हैड्रोपोटास काम नहीं देता तो यह फायदा करता है । आतशककी बढी हुई रसौलीको अच्छा कर देता है । मात्रा १ से ५ ग्रेनतक ।

७७० एल्यो मेनेटिड कापर ।

यह काष्टिकवत् बाहर लगाया जाता है ।

७७१ एसीटंट औफ पोटासियम् ।

विरेचन तेज पाचन । मात्रा १० से ६० ग्रेनतक मिक्श्चर ।

७७२ इसीटेट औफ कापर (जंगार) ।

सडे जखम और उपदंशमें लगाया जाता है ।

७७३ एलम (फिटकडी) ।

काबिज वारीके रोगोंमें । मात्रा १० से २० ग्रेनतक चूर्ण ।

७७४ एमूनाइक (उस्क)

बलगमनाशक । मात्रा १० से २० ग्रेनतक ।

७७५ एनीमल चारकोल ।

(जातविक कोयल) यह मारफीया और एकोनाइटको विषनाशक और सडनको नाश करता है । मात्रा २ से ६० ग्रेन चूर्ण ।

७७६ केलसिस हैड्रास ।

इसको लेकर दूधमें मिलाकर पीनेसे दूध जिसको हजम न होता हो तो होने लगेगा । अगर अलसीके तेलमें मिलाकर झुलसे और जले हुए पर लगाया जावे तो तुरत आराम होगा और ठंढक पड जायगी और इसीसे त्रिलैकनाश बनता है, जो उपदंशके जखम और सोजेको फौरन उतारता है

७७७ केलसिस हाइपो फासफरस ।

इसको खांसी और तपेदिकमें तथा कमजोरीके वास्ते अक्सीर जानो ।

७७८ किरोटन फ्लोरल हैडरेट ।

दर्दको रोकता और दस्तावर है । तथा खांसीको भी दूर करता है । इसके देनेसे निद्रा खूब आती है । दर्द गुर्देको दूर करता है । दस्त पेचिश और हैजा तथा श्वास और जाबडेके दर्दमें देनेसे फायदा होता है । पित्तके दर्द सरकोभी मुफीद है ।

७७९ किलोराफार्म ।

यह दर्दोंको दूर करनेवाला है, पट्ठोंके दर्दमें इसको देते हैं, उलटीको रोकता है, खांसी और दमेके वास्ते मुफीद है तथा सूखी खाजका पक्का इलाज है, गुर्देकी कंकरियोंको बाहर निकाल देता है, अकड वायुको मुफीद है, दर्द मेदा और वायगोलेको खोता है । इसको जर्राहीकी चीर फाड वास्ते बेहोश करनेके लिये सुँघाते हैं । बावटे दूर करता है । गफलत और बेचैनीका रक्षक है । मात्रा २ से १० बून्दतक ।

७८० किलोरोडीन ।

खांसी, जुकाम, वायगोला, अतिसार, आँवकी पेचिश, बुखार गांठियां और हैजेमें देते हैं तो बडा फायदा होता है, उत्तम है तथा किलोरोडीन कालिस ब्रोनकी उत्तम होती है । उससे उतरकर रिचर्द फीमनकी होती है बाकी देसीभी बनती है जिसका नुसखा कम्पौन्ड दवाइयोंमें लिखा जायगा ।

७८१ कुपराय सल्या ।

यह पट्ठोंको पुष्ट करता है । वमन कराता है । विषपीडित और उपदंश रोगीको खिलाते हैं । नींबूके अर्कके साथ खूनको बंद करता है । इसको दस्त और मरोडोंमें भी देते हैं ।

मृगी और खांसीको खोता है। राशेको मुफीद है। गीली खुजली और दूखती हुई आंखोंमें मुफीद है। उपदंश और सोजाकके जखमोंको पिचकारी लगानेसे आराम करता है। मात्रा ¼ से २ ग्रेनतक।

७८२ कुपराय सब असीटास।

इसका मरहम लगाते हैं तथा सिर्क या शहतमें मिलाकर गांठ मसे और रसोलियों पर मलते हैं।

७८३ कुपराय एलोमेनस।

इसकी पिचकारी सोजाकमें मुफीद है। आंखोंकी सब बीमारीको दूर करती है। रतूवतोंको बन्द करती है।

७८४ कियोंजट।

इससे उपदंशके घावोंको फायदा होता है,डाढ और दांतके दर्दको दूर करता है। जारी खूनको बद करता है। गिरनी और कुरहको मुफीद है गांठिया, उन्माद, हैजा, सोजाक और कुरहको मुफीद है। वायगोला और गर्भवती स्त्रीकोभी मुफीद है जले व भुलसे और त्वचाके रोगोंपर इसका मरहम लगाते हैं। यह खांसीके बलगमको खोता है। छर्दि और सडन नाशक है। मात्रा २ बूंद ड्राफ्ट।

७८५ कोडिन या कोडीना या कोडिया जियावतूस।

पेशाबका ज्यादा आना और मीठा होनेमें देते हैं। थोडी नींद लाता है और क्षयी खांसीको दूर करता है तथा शर्करा प्रमेहको हरता है। मात्रा ½ ग्रनसे १ या २ ग्रेनतक।

७८६ कोनन या कीनीया।

कोनन भूख बढाती है, हाजिम है, कमजोरी और कमी खूनकी बीमारियोंमें तथा पट्ठेका दर्द और आधाशीशीमें, जाडेका दर्द या तिजारी चौथैयेमें या जाडेका बुखार और नित्य ज्वरमें दो २ घंटे

पहले २॥ रत्ती देनेसे बुखारका आना बंद हो जाता है। प्यास और भोजनके वास्ते उस दिन दूध देना चाहिये और बारीके दिन १ मात्रा २॥ रत्तीकी उस दिन सवेरेभी देनी चाहिये । बाकी मात्रा इस प्रकार जानना चाहिये। हावर्ड कोनैन १ से १० ग्रेनतक। कोनैन लकटास ३ से ९ ग्रेन । कोनैन सेलीसीलास २ से १० ग्रेन। कोनैनटोनिस २ से ५ ग्रेन । कोनैनविलीरयन १ से ३ ग्रेन। क्यूनेटम हिंदुस्तानी कुनैन ३ से ४ ग्रेन। कोनैन फेरोपरशीअस ३ से ५ ग्रेन। कोनैन फी आयोडाइडम और कोनैन हैड्रायोडिस आयोडयूरेटा २ ग्रेन। इकोनैन हैड्रो विरोमास, कोनैन फस्फास यह सब ऊपरके मुरक्कब कीमती हैं ।

७८७ केपसीनीन ।

जाडेका बुखार जैसे तिजारी चौथिया तथा हैजा और अतिसार तथा बदहजमीमें कोनैनके साथ देते हैं और राईके साथ दर्दों पर लेप करते हैं ।

७८८ कोनीया अर्थात कोनायमका जौहर ।

इसको खांसीमें देनेसे फायदा होता है, बडा मुफीद है ।

७८९ कोनीवा ।

यह खूनको साफ करनेमें उसबेके समान है ।

७९० कोटो ।

इसको दस्त, गांठियावाय, डाढ तथा गांठियेके दर्दमें देते हैं ।

७९१ कालोफाइलिन ।

पुष्ट है, खूनको साफ करनेवाला है। असर इसका बच्चेदानी पर होता है। मात्रा ¼ से १ ग्रेनतक ।

७९२ काफीन ।

तबियत चुस्त व चालाक करता है, नींद और सुस्तीको दूर करता है, दिलको पुष्ट करता है, जलंधर और खांसीको मुफीद है।

७९३ किराईसेरवीयन अर्थात् गोवापाउण्डर ।

चमल्ला दाद और जंगपर लगाना चाहिये ।

७९४ क्नी हैड्रोकिलोरस ।

यह कुनैनके बराबर है ।

७९५ कोनीन हैड्रोकिलोरस अर्थात् हैड्रो क्लोरेट औफ कोनैन ।

भोजन, हवाकी नाली, गर्भाशय और सब गुदाके जखमोंपर जब दवा लगाई जाती है तो दर्द जाता रहता है। अफीमकी आदत छुडाता और कमजोर पट्ठोंको ताकत देता है, अंगको शून्य करता, कारनिया और प्रेकस आदिकी स्पर्श शक्तिको घटाता है। इसका असर २ मिनटसे आधे घंटेतक रहता है। मात्रा ½ से १ ग्रेनतक ।

७९६ केटीक्य पिलीडम् ।

इसको दस्त रतूबत और रक्तातिसार तथा खांसीके बंद करनेको देते हैं, मरहममें डालते हैं। मात्रा १० से ३० ग्रेनतक है ।

७९७ क्रिमिस मिनरल वा एन्टी मोनीसल्फ ।

इसको फेफडेका शोथ और गांठिया वायमें देते हैं। मात्रा १ से ५ ग्रेनतक ।

७९८ कालो संयपल्व (इन्द्रायणका गूदा) ।

तेज रेचन करता । मात्रा ८ ग्रेन गोली ।

७९९ काडलिभर आयल (मच्छीका तेल)

बलदायक, क्षयी नाशक । १ ड्राम से १ औंसतक दूधके साथ।

८०० काइन ।

चीनियां गोंद काबिज ग्राही गर्भ धारण करता । मात्रा १० से ३० ग्रेनतक शक्करके साथ ।

८०१ क्लोराइड औफ एमोनियम (साफ नौसादर) ।

पाचन गुल्मशूल प्लीहा हर्ता । मात्रा ५ से १० ग्रेन मिक्श्चर या चूर्ण ।

८०२ कास्टर आयल ।

दस्तावर अनुलोमन । मात्रा १ से ४ ड्रामतक ड्राफ्ट दूधके साथ ।

८०३ गमएमोनिया एसाय ।

इसको कफ निकालने और पित्तकी कमी करनेको तथा निकालनेको देते हैं । पेशाब और स्त्रीधर्म लानेके वास्ते देते हैं । बाहर फोडा बठानेके वास्ते लगाते हैं । मात्रा १० से २० ग्रेनतक ।

८०४ गम वोज्या ।

इसका जुलाब जलंधरकी बीमारीमें देते हैं । मात्रा२से८ग्रेनतक ।

८०५ गम रूबरम् वा यूके लिपटिस ।

इसको दस्त और आंव बंद करनेके वास्ते देते हैं । तिजारी चौथियेमेंभी देते हैं । मात्रा १० से ३० ग्रेन ।

८०६ गम वाईकम् ।

यह उपदंश गांठियामें मुफीद है । मूत्र स्त्रीधर्म और पसीना लाता है खूनको साफ करता है । मात्रा १० से ३० ग्रेनतक उसबेके साथ ।

८०७ गम जूनीयर ।

पसीना और पेशाब लाता है । जलंधरको मुफीद है मात्रा १ से ३० ग्रेनतक ।

८०८ गम काइनो ।

रुधिरको बंद करनेवाला काबिज है । दस्त और पेचिशमेंभी देते हैं । शीतज्वरके वास्ते मुफीद है । सोजाकको फायदा करता है मात्रा १० से ३० ग्रेनतक ।

८०९ गम मेसटिस ।

इसको दस्त बंद करनेके वास्ते, देते हैं ।

८१० गममुर ।

इसको स्त्रीधर्म जारी करनेके वास्ते, पुरानी खांसी और खून बंद करनेके वास्ते देते हैं । अंडकोश और तिल्लीके बढ जानेको मुफीद है । मात्रा १० से ३० ग्रेनतक ।

८११ गमइस्केमोनी ।

जलंधरके वास्ते जुलाब है । बदहजमी आफरा और कब्जके वास्ते मुफीद है । मात्रा १० से १५ ग्रेनतक ।

८१२ गाल्ज (माजूफल) ।

काबिज ग्राही । मात्रा ५ से १५ ग्रेनतक ।

८१३ गिलसरीने ।

नर्म करनेवाला । १ से २ ड्रामतक मिक्श्चर ।

८१४ जिनसाय एसीटास ।

इसकी पिचकारी सोजाक और शतरकी रतूबतको बंद करती है । दुखती हुई आंखोमें डालनेसे आराम होता है । मुटाई शरीरके वास्ते मात्रा १से २ ग्रेनतक । विष खायेको उलटी करानेके वास्ते मात्रा १० से २० ग्रेनतक । इसको खानेके वास्ते कम देते हैं ।

८१५ जिन्साय ब्रोमाइडम् ।

राशा मृगीमें देते हैं । मात्रा १से २ ग्रेनतक ।

८१६ जिन्साय कार्वकिलेमायन ।

यह मरहमोंके काम आता है ।

८१७ जिन्सायलकटास ।

मृगी और राशेको मुफीद है । मात्रा २ से ५ ग्रेनतक ।

८१८ जेल्सभिन ।

इसको छाती और फेफडेके शोथमें तथा वायगोलेमें देते हैं । मात्रा १/४ से २ ग्रेनतक ।

८१९ जिरेनीन ।

यह खूनके बंद करनेको देते हैं, काबिज है । मात्रा १ से ५ ग्रेनतक

८२० जगलेन्डीन ।

यह कलेजेके पुराने रोगोंमें मुफीद है और कब्जको दूर करता है । मात्रा २ से ४ ग्रेनतक ।

८२१ जिसियनरूट ।

बलकर्ता । १० से २० ग्रेन चूर्ण ।

८२२ जूनीपर ।

मूत्रल बस्ती शूलहर । ४ ग्रेनसे २ ड्राम खेशांदा ।

८२३ जैलप ।

कैथारिटि विरेचन । ३ से १० ग्रेन चूर्ण ।

८२४ जिन्साय क्लोराइडम् ।

इसको उपदंशके जखमोंपर लगाते हैं । इसके पतले अर्ककी पिचकारी सोजाकमें करते और जखमोंको धोते हैं ।

८२५ जिन्साय साईनाईडम् व जिन्साय फोसाईनाईडम् ।

इसको राशे और मृगीमें देते हैं । मात्रा १/१६ से १/१२ व दूसरेकी १ से ४ ग्रेनतक ।

८२६ जिन्साय साईनाइडम् ।

खनाजीरी अर्थात् गलेके शोथमें आंतों तथा आंखोंके दुखने पर इसका अंजन डालते हैं । गदूदोंके बढ जानेमें मरहम इसका लगाते हैं । शर्बत इसका उपदंश कंठमालामें देते हैं । मात्रा १ से ५ ग्रेनतक ।

८२७ जिन्साय ओकसाईडम्।

इसका मरहम जखमोंपर लगानेसे आराम और ठण्ढक पड़जाती है। मात्रा २ से १० ग्रेनतक।

८२८ जिन्साय सल्प।

कमजोरी और खूनके जारी होनेमें, वायगोला, राशा, मृगी और जावडेके दर्दमें तथा कै करानेवालेको देते हैं। मुखके भीतरकी बीमारियोंको खोता है। सोजाकमें पिचकारी इसकी मुफीद है। मात्रा १ से २ ग्रेन, कै करानेको १० से २० ग्रेनतक।

८२९ जिन्साय वीलिर्यन।

इसको पुष्टाईके वास्ते नामर्दीमें, राशा, मृगी, वायगोला, दर्द पट्ठा, प्रमेहको फायदा करता है। उम्दा मुरक्कब है मात्रा १ से २ ग्रेनतक।

८३० ट्रैगेकेन्थ।

इसको खांसी और दस्त बन्द करनेके वास्ते देते हैं। कामशक्तिको कम करता है। मात्रा २० से ६० ग्रेनतक।

८३१ टयूया।

इसको उपदंशमें देते हैं और सोजाकमें इसकी पिचकारी करते हैं।

८३२ टीपीवोका।

हलका भोज्य। दूधके साथ पकाकर यथारुचि खाना।

८३३ डाइल्यूट वाईट्रक एसिड।

पाचन शूलहर उपदंशहर। मात्रा ५ से २ बूंद पानीमें या कटु क्वाथमें।

८३४ डाईल्यूट पारपोटिस एसिड।

बलदायक वाजीकरण। मात्रा ५ से २० बूंद पानीके साथ

८३५ डटूरायन ।

यह दमेके वास्ते बहुत मुफीद है ।

८३६ डीजिटेलीन ।

दिलको पुष्ट करता है, जलंधर और गुरदेके रोगोंको, छाती और पेटमें मीनी जलंधरका जमा हो जानेमें और कमी खूनमें देते हैं ।

८३७ ड्रेगिन्स विडल ।

भीतरसे खून आनेको बन्द करता है, जखमोंपर भरता है आम रक्तातिसारको बंद करता है, आंखोंको मुफीद है । मात्रा ½ से १ ड्रामतक ।

८३८ डाईल्यूट एसीटिक ऐसिड ।

रुचिकारक १ से २ ड्राम पानीके साथ ।

८३९ डाईल्यूट सल्फ्यूरिक एसिड ।

रुचिकारक बलकर्ता पाचन । ५ से २० बूंद शर्बतके साथ ।

८४० डिसकस औफ एट्रोपीन ।

इसको नेत्ररोगोंमें लगाते हैं । इसमें ० ग्रेनमें १/१००० ग्रेन सलफेट आफ एट्रोपीन होता है ।

८४१ डिसकस औफ कोकियन ।

शरीरका भाग शून्य करनेको बाहर लगाते हैं इसमें ६ ग्रेनमें १/१००० ग्रेन हैड्रोक्लोरेट आफ कोनैन होता है ।

८४२ थाईमाल ।

इसको बुखार, फेफडा और पसलियोंका शोथ या दर्दमें देते हैं । वस्तीस्थानके रोगोंको दूर करता है । हैजेमेंभी दिया जाता है । मात्रा १ से २ ग्रेनतक ।

८४३ नार्कोटीन।

बारीका बुखार जैसे तिजारी चौथिया आदिको रोकता है। मात्रा ५ ग्रेन।

८४४ नीकोटीना।

इसको नजलेमें नस्य लेनेसे छींक आ जाती है। दमा, उन्माद, जलंधर तथा कुचला और इष्टिकिनियाके जहरको उतारनेवाला है और पेशाब खूब लाता है।

८४५ नायट्रि औफ पोटासियम् (शोरा)।

मूत्रल तीक्ष्ण क्षार। मात्रा १० से २० ग्रेन मिक्श्चर।

८४६ नायट्रिक औफ पाइलोकारपियन।

यह बस्तीशूल और शर्करामें हमेशा हित है।

८४७ पाराफीली या वेसलीन।

यह मरहम बनानेके काममें आता है।

८४८ पेलोशिया।

पुरानी जलन मसाना और गुरदेको मुफीद है।

८४९ पाईप्रीन।

वातार्श, सोजाक और जाडेके बुखारको मुफीद है।

८५० पाईरीथीन।

इसको नामर्दीमें लिंगपर मालिश करते हैं।

८५१ पोपयूलीन।

ताकतवर और बारियोंको रोकनेवाला है। मात्रा ४ से ८ ग्रेनतक।

८५२ प्रुनिन।

पुष्ट है, कफको निकालता है। मात्रा १ से २ ग्रेनतक।

८५३ पाईलोकार्पीन।

यह दवा थूक और पसीना लानेवाली, दूध और रतूवतको बढानेवाली, अगर $\frac{1}{2}$ ग्रेनकी पिचकारी त्वचाके भीतर की जावे

तो पसीना दूध और रतूवत अन्दरकी टपकने लगती है। और इसका अर्क नेत्रकी ज्योति बढानेके वास्ते आंखोंमें डालते हैं। तथा कास, श्वास, गलेका रोग, कागका बैठ जाना, गर्भाशयके रोग और उपदंशको मुफीद है। दांतोंका दर्द दूर होता है। इसकी पिचकारी त्वचाके भीतर लगानेसे तपेदिकको आराम होता है। गर्भाशयमें इसकी पिचकारी १/२ ग्रेनकी लगानेसे बच्चा पेटसे बाहर हो जाता है।। मात्रा १/२० से १/२ ग्रेनतक।

८५४ पोडोफिलीनरीजीना।

यह वायगोलेके वास्ते परीक्षा किया हुवा है। मात्रा १/२ से १ ग्रेनतक।

८५५ पेनकिलर।

इसको बाहर मलनेसे दर्दको आराम होता है और डंकका जहर मारता है। इसको खिलानेसे पेटका दर्द आराम होता है। मात्रा २० बूंदतक।

८५६ पेपटैन्डीन।

यह जिगरकी बीमारी दस्त और पेचिशमें मुफीद है। बुखारोंमें भी देते हैं। मात्रा २ से ४ ग्रेनतक।

८५७ पेपसियन (माल्टे पिपासिन)।

मंदाग्नि, अजीर्ण, कृमिरोगमें देना चाहिये। २से६ ग्रेनतक चूर्ण।

८५८ परक्लोराइड औफ मरक्यूरी।

उपदंशहर रक्तशोधक। मात्रा १/३ ग्रेनसे ८ तक सोल्यूशन।

८५९ प्रीपियर्डचाक (खडिया मट्टी साफ की हुई)।

काबिज ग्राही अम्लतानाशक १० से ६० ग्रेनतक चूर्ण मिक्श्चर।

८६० प्लास्टरएमोनिया इकम ऐन्ड मरक्यूरी।

गिलटियोंकी सूजनपर लगाना।

८६१ पासफोरिस ।

पट्ठोंकी कमजोरीमें १/२० से १/१६ ग्रेनतक गोली ।

८६२ फ्रिरेड क्टाय ।

थोडी मात्राके खानेसे रंगत खूनकी लाल लाल हो जाती है । ताकत और भूँख बढती है । पट्ठे और जाबडेके दर्दको दूर करती है । वीर्य प्रमेहको दूर करके धातुको पुष्ट कर देती है । तिजारी चौथिया और बारीके सम्पूर्ण ज्वर तथा मृगी तिल्लीको दूर करती है । रुधिरको बंद करनेके वास्ते मानिन्द टिंचर फीके है । काबिज नहीं है सोजाकको मुफीद है । पारेके जहरको मारती है । तथा स्त्रीरोगोंके वास्ते मुफीद है । मात्रा १ से ५ ग्रेनतक ।

८६३ फ्रीएलवोमिन्स ।

इसको भूँख लगाने और भोजनको हजम करने तथा मृगी, बुखार, कमजोरीके दूर करनेको बाईकार्बोनेट ऑफ पोटास और सायट्रिकएसिडके साथ जोश खानेवाला गिलास मानिंद सोडावाटरके बनाते हैं । मात्रा १० से १५ ग्रेनतक ।

८६४ फ्रीआर्सेनिक ।

जो बीमारी त्वचाकी किसी दवासे आराम न होवे तो यह दूर कर देती है । भगंदरके वास्ते बहुत मुफीद है । उपदंश और चौथैया तिजारी तथा हाथ पाँवोंको मुफीद है । नाकके ऊपरके जखमोंको दूर करता है । मात्रा १/८ से १/२ ग्रेनतक ।

८६५ फ्रीआर्सेनिक ।

खूनको साफ करनेवाला पुष्ट और काबिज है । खूनको बंद करनेवाला, बच्चेदानीके रुधिरको बंद करता है । और शिरके दर्दको मुफीद है । कंठमालाको दूर करता है । मात्रा १ से ४ ग्रेनतक ।

८६६ फ्रीकार्बोनास सिकिचेरम ।

यह अत्यंत पुष्ट करनेवाला । यह कमी खून, कमी हैज, आम कमजोरी, बच्चोंका अतीसार और खांसीके बंद करनेको मुफीद है । इसको जिगरकी बीमारीमेंभी देते हैं । बवासीरकोभी आराम करता है । मात्रा ५ से २० ग्रेनतक ।

८६७ फ्रीकिलोरो औक्साईडीलीकर ।

यह काबिज और खूनको बंद करनेवाला है । मात्रा १० से ३० बूंदतक ।

८६८ फ्रीसेट्रास ।

यह आम कमजोरीके वास्ते मुफीद है । खांसी और जोफ मदको खोता है । मात्रा ३ से १५ ग्रेनतक ।

८६९ लीकर फ्री डायालासेटी ।

यह काबिज खूनको बंद करनेवाला है । मात्रा १० से ३० बूंदतक ।

८७० फ्री इटएमोनिया सिट्रास ।

यह खूनको बढानेवाला, पुष्ट कर्ता, मेदेको ताकत देनेवाला, तपेदिकको रोकनेवाला, आम कमजोरीको खोनेवाला, पट्ठोंका दर्द और शिरके दर्दको आराम करनेवाला है । मात्रा ५ से १० ग्रेनतक ।

८७१ फ्री इष्टिकिनियासिट्रास ।

पुष्ट करनेवाला और पुराने बुखारोंको दूर करता है । मात्रा १० से १५ ग्रेनतक ।

८७२ फ्री आयोडाइट ।

पुष्ट कर्ता, खून शुद्ध कर्ता, सिल और तपेदिकको खोनेवाला तथा पसलीके दर्दको दूर करनेवाला है । बदहजमी और वमनको

दूर करता है । उपदंश और कंठमालाको खोता है । मात्रा १ से ६ ड्रामतक ।

८७३ फ्री ओक्साइडम् मेगनीटीकम् ।

पुष्टि कर्ता, कमी खूनमें खून बढाता और सुर्ख करता है । जाबडा और पट्ठेके दर्दको मुफीद है । मात्रा १ से १० ग्रेनतक ।

८७४ फ्री परकलर लीकर ।

इससे टिंचर फौलाद बनता है । इसका अर्क खूनके बंद करनेको देते हैं और लगाते हैं । मात्रा इसकी टिंचरमें देखो ।

८७५ फ्री परनाईट्राईटेटिस लीकर ।

काबिज और पुष्ट कर्ता है । पुराने दस्तोंको रोकता है । पट्ठोंकी कमजोरीके वास्ते मुफीद है । स्त्रीधर्मकी अधिकताको रोकता है । रतूवतको भी रोकता है । मात्रा १० से ४० बूंदतक ।

८७६ फ्री ओक्साईडम् ह्यूमीडम् ।

यह संखियेके जहरको मारता है । मात्रा २ से ४ ड्रामतक ।

८७७ फ्री प्रओक्साईडम् हैड्रोटम् ।

इसको जाबडेका दर्द और कमजोरीके दस्तोंमें तथा बदहजमी और खून या रतूवतके जारी होनेमें देनेसे फायदा होता है । मात्रा ६ से ३० बूंदतक ।

८७८ फ्री फास्फरस ।

यह पट्ठोंको पुष्ट करता है । कमी खूनके कारण जो स्त्रीधर्म कमती होता हो उसके वास्ते मुफीद है । मूत्र प्रमेह शर्करा और बदहजमीमें फायदा करता है तथा भूखको बढाता है । मात्रा ६ से १० ग्रेनतक ।

८७९ फ्री सल्फास ।

काबिज और पुष्ट करनेवाला है । बारीके ज्वरोंको रोकनेवाला और तिल्लीको दूर करनेवाला है स्त्रीधर्म लानेवाला और तपेदि-

क्को दूर करनेवाला है। खूनके थूकनेको रोकता है। जाबडेके दर्दको खोता है। खूनी बवासीरको मुफीद है। पेटके कीडे मारता है। मात्रा ३ से ५ ग्रेनतक।

८८० फ्री सल्फेथेन्यलेटिड ।

यह फ्री सल्फसे ज्यादह साफ है। और फायदेमेंभी उससे उम्दा है। मात्रा ३ से ५ ग्रेनतक।

८८१ फ्री सल्फ इकजाकेटा अर्थात् डिराइडसल्फेट औफ आईरन ।

कमी खून और पट्ठोंके दर्द व तिल्लीको दूर करता है। तैयारी लाता है। सनकोनेके साथ मात्रा २ से ४ ग्रेनतक।

८८२ फ्री एमोनिया ट्राट्रास ।

तिल्लीको मुफीद दस्तावर है। मात्रा २ से ६ ग्रेनतक।

८८३ फ्री औक्सी फास्फरस ।

दीमाग और कामशक्तिको पुष्ट करनेवाला। मात्रा ५ से १० ग्रेनतक।

८८४ फ्री वाई फास्फरस ।

वास्ते कमजोरी पट्ठा नामर्दी और कमी खूनमें मुफीद है। मात्रा १ से २ ग्रेनतक दिनमें २ या ३ दफे देना चाहिये।

८८५ फ्री इटएल्य मिनसवाई सल्फ ।

खूनको रोकता है। सोजाक बवासीर खूनीको मुफीद है। योनिरोगमें इसकी पिचकारी मुफीद है। मात्रा ५ से १० ग्रेनतक।

८८६ फ्री टेन्निस ।

इसको मुखसे खट्टा पानी आनेमें देनेसे फायदा होता है। मात्रा २ से ३ ग्रेनतक।

८८७ फ्री वीलीयन ।

वायगोलेको मुफीद है। दमा और पट्ठोंका दर्द और खांसीको दूर करता है। मात्रा २ से ३ ग्रेनतक।

८८८ फ्री टार्ट्रेटम् ।

इसको बच्चोंकी सख्त बीमारीमें और कमी खूनमें तथा दुबले-पनमें साथ काडलिवर आयलके देते हैं । कंठमालाको दूर करता है । स्त्रीधर्म लाता है । मात्रा ५ से १० ग्रेन ।

८८९ फ्री एमोनिया सल्फर ।

यह ताकत लाने और हाजमा दुरुस्त करने तथा खून बन्द करनेको मुफीद है । मात्रा ५ से १० ग्रेनतक ।

८९० फ्री इटक्यनीसिट्रास ।

यह बारीका बुखार और रोगनिवृत्तिके पीछेवाली कमजोरीको मुफीद है । मात्रा ५ से १० ग्रेनतक ।

८९१ फ्री इटक्यूनीसिट्रास कमइसटिकिनिया ।

इसको कमजोरी और कामशक्तिको बढानेके वास्ते देनेसे फायदा होता है । ताकत लाता है । भूँख बढाता है । कमी खूनको दूर करता है । मात्रा २ से ५ ग्रेनतक ।

८९२ फ्री हाइयो फास्फरस ।

कामशक्तिको पुष्ट करनेवाला, दीमाग और नेत्रकी ज्योतिको खोलनेवाला, स्त्रीधर्म जारी करनेवाला, भूँखको बढानेके वास्ते मुफीद है । मात्रा ४ से १० ग्रेनतक ।

८९३ फ्री सेलीसीलास ।

गांठियेका बीमार जो बहुत कमजोर हो उसके वास्ते मुफीद है । मात्रा १ से ४ ग्रेनतक ।

८९४ फासफोरि ।

पट्ठोंकी कमजोरीमें । मात्रा $\frac{1}{30}$ से $\frac{1}{16}$ ग्रेनतक गोली ।

८९५ फास्फेट औफ आयरन ।

बलदायक । मात्रा ५ से १० ग्रेनतक चूर्ण गोली ।

८९६ फोस्फेट एमोनियम ।

शर्करा मेहमें मात्रा ५ से २० ग्रेन मिक्श्चर ।

८९७ फिरंग्लूलावार्क ।

बवासीर पुराना कब्जमें देना चाहिये । बलदायक है । मात्रा एक्सट्राक्टमें देखो ।

८९८ फनलफ्रट (साफ)

पाचन शूलहर । मात्रा १ ड्रामकी डिकोक्शन अर्थात् क्वाथ ।

८९९ बेजनोल वा फनायल ।

जिल्दपर लगाने और जखमोंके काममें आता है ।

९०० विसमिथ सबनैट्रास ।

दर्द मेदा और कलेजेको मुफीद है । बदहजमी और पुरानी वमनको रोकता है । मुखसे खट्टा पानी आनेकोभी रोकता है । जखममेदा और दस्त तपेदिकमें देते हैं । सोजाक और कुरहमें इसकी पिचकारी करते हैं । हैजेम भी देते हैं । मात्रा ५ से १५ ग्रेनतक ।

९०१ विसमिथ कार्बोनास ।

इसको बदहज्मी और अजीर्णमें देनेसे फायदा होता है । बच्चे- दानीके खून जारी होनेमें देनेसे बन्द होता है । मात्रा ५ से १० ग्रेनतक ।

९०२ वालसम पेरूवीनम् ।

जुखाम, दमा, गांठिया, प्रमेह, सोजाक और खुजलीको मुफीद है । बेवाई और स्तनोंके घावपर लगानेसे फायदा होता है । बदके बैठानेको मुफीद है । बालोंको बढाता है । मात्रा १० से १५ ग्रेनतक ।

९०३ बालसम टालो ।

इसको फास्फोरसकी गोलियोंमें डालते हैं मानिन्द ऊपरके मुरक्कब है । मात्रा १० से ३० ग्रेनतक ।

९०४ बालसम कोपेवा ।

लुवाब गोंदमें मिलाकर देते हैं । दालचीनीका तेलभी इसमें डालते हैं । इसको सोजाक, कुहर, बवासीर, खांसी, खुजली, सिल, तपेदिककी बीमारीमें देना चाहिये । मात्रा २० से ६० ग्रेनतक ।

९०५ बालसम इसटीरेक्स प्रिथार्डमिया सायला ।

इसको पुरानी खांसी, सोजाक, लिकोरियामें देनेसे फायदा होता है । मात्रा १० से ३० बूंदतक ।

९०६ ब्यटायल किलोरल हैड्रेट ।

यह नींद लानेवाला, बेचैनीको दूर करता है । उन्माद और सन्निपातमें उत्तम है । वायगोला, खांसी और शिरका दर्द दूर करनेके वास्ते कपूरके साथ मलते हैं ।

९०७ बीगटेरया ।

जाबडा और पट्ठेके दर्दमें तथा पुराना शोथ और जोडोंके शोथपर तथा कठिनतापर तथा जुँवोंके मारनेको और खाल फट गई हो उसपर लगाते हैं ।

९०८ बैपटिसटिन ।

बवासीरके मसोंपर लगानेसे आराम होता है । इसको जिगरकी बीमारीमें देते हैं । मात्रा १ से ३ ग्रेनतक देते हैं ।

९०९ बिरोबर ।

पेशाब लाता है और खूनको साफ करता है तथा ऐंठन बावटेको दूर करता है । मात्रा २ से ४ ग्रेनतक ।

९१० बेनजायन ।

यह कफको निकालता है । रुधिरको बन्द करता है । पुरानी

खांसी और आदती कब्जको खोता है । आवाजके मारे जानेमेंभी देते हैं । मात्रा १० से २० ग्रेनतक ।

९११ बारबेडोज एलोज ।

विरेचन आर्तवप्रवर्तक । मात्रा २ से ५ ग्रेन गोली ।

९१२ बोरेक्स (सुहागा) ।

मूत्रल, आर्तवप्रवर्तक, पाचक । मात्रा ६ से २० ग्रेन पानीके साथ ।

९१३ मार्फीया एसीटास व मारफीया हैड्रोलिकर ।

यह तबियतको खुश करता है, बेकरारीको दूर करता है, दर्दको मौकूफ करता है, पसीना लाता है। इसको दस्त खांसी और दर्दके रोकनेको देते हैं । नशा और स्त्रीधर्मको रोकता है, निद्रा लाता है, पागलोंके वास्ते मुफीद है । मात्रा ⅛ से ½ ग्रेनतक ।

९१४ मारफीया एपो अर्थात् एपोमारफीया ।

इसके देनेसे उसी वक्त उल्टी अर्थात् वमन हो जाता है । विषरोगीको इसीके द्वारा वमन कराते हैं । मात्रा मार्फीटार्ट्रेट २ बूंद गर्म पानीमें १ ग्रेन हल करके १ या २ बूंद देते है ।

९१५ मोईरीसीन ।

यह काँपने और कब्जको फायदा करता है । मात्रा १ से २ ग्रेनतक ।

९१६ मिक्श्चर आफ इस्केमोनी ।

अनुलोमन, बच्चोंका रेचन २ से आधा औंसतक ।

९१७ मिक्श्चर औफ आमंड ।

और दवाओंको हल्का करनेके वास्ते १ से २ औंसतक ।

९१८ मिक्श्चर औफ बरान्डी ।

मादक पाचन नींद लानेवाली । १ से २ औंसतक ।

९१९ मिक्श्चर औफ चाकर (चाकमिक्श्चर)।

काबिज अतिसारमें १ से २ औंसतक।

९२० म्यूसलिज आफ गम (लुआब समग अरबी दूसरी दवा)।

हलकी करनेके वास्ते जिस कदर जरूरत हो।

९२१ मरक्यूरी (साफ पारा)।

मालिशमें।

९२२ मरक्यूरी (ऐन्ड चाक (ग्रे पाउन्डर)।

अनुलोमन शोधक मात्रा ३ से ६ ग्रेनतक चूर्ण।

९२३ मास्टर्ड (राई)।

त्वचा लाल करनेवाली उपाड कर्ता, अतिपाचन।

९२४ मास्टर्ड पेपर (राई लगा कागज)

त्वचाके ऊपर लगाते हैं।

९२५ यूपेटोरायन।

यह पेशाब लाता है मात्रा २से ५ ग्रेनतक।

९२६ यूकोर्विन।

कै लाता है, दस्तावरभी है, कफ निकालता है। मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ ग्रेनतक।

९२७ यलीज समन (नैलसीमीम)

दर्दपर रीढाका मुँह खोलनेको लगानेसे पुतली फैलती है और खानेसे सुकडती है। एक्सट्राक्ट या टिंचर देना।

९२८ रुमिन।

मेदेको पुष्ट करता है, बदहजमीको दूर करता है। मानिंद रेवंदचीनीके है।

९२९ रिजीसिड आयरन।

बलदायक १ से ५ ग्रेन।

९३० रिजन आफ गोईकम् ।

पसीना लानेवाला गाँठियामें गर्म १० से ३० ग्रेनचूर्ण अवलेह।

९३१ रूबर्ब पाउन्डर (रेवतचीनी चूर्ण) ।

अनुलोमन दस्तावर बलदायक ५ से २० ग्रेनतक ।

९३२ लाइन्टमेगनेसिया ।

अम्लताहर अनुलोमन ३ से १० ग्रेन चूर्ण टिंचर ।

९३३ लोवीलिया ।

कफहर्ता १० से ३० ग्रेन चूर्ण टिंचर ।

९३४ लैकटिक एसिड डाईलूट ।

बदहज्मीमें १ से २ ड्रामतक सोलूशन ।

९३५ ल्यूपोलम ।

नींद न आनेमें मद्यके नशेमें दिया जाता है । २ से ५ ग्रेनतक।

९३६ लाईकोपीन ।

यह खूनके जारी होनेमें और मूत्र प्रमेहमें तथा पेचिशमें देनेसे फायदा होता है । मात्रा २ से ३ ग्रेनतक ।

९३७ लीनट ।

इसको लिनीमेन्टमें तर करके जखमों और दर्दोंपर रखनेसे आराम होता है ।

९३८ लाजिज औफ ओपियम ।

काबिज नारकोटिक १ से ६ संख्यातक टिकिया ।

९३९ सल्फो कारवोट औफ जिंक ।

सोजाक ल्यूकोटियामें पिचकारी २ या ३ ग्रेन १ औंस पानीमें मिलाकर ।

९४० सल्फेट औफ जिंक । (सफेद तूतिया) ।

वामक, काबिज, विष, बलदाई १ से २ ग्रेनतक, बलदाई काबिज १० से ३० ग्रेनतक ।

९४१ सल्फेट आफ कापर (सब्ज तूतिया) ।

वामक काबिज ¼ से २ ग्रेनतक ।

९४२ सल्फेट औफ मगनेसिया ।

कैथारटिक ४ ग्रेनसे आधा औंस पानीमें ।

९४३ सिनीमन बाक (दालचिनी)

सुगंधित बलदायक ५ से १० ग्रेन चूर्ण ।

९४४ सनकोना ।

बलदायक बारीके तापमें १० से ४० ग्रेनतक ।

९४५ साम पेलिया वा पेलोशीया ।

पुरानी जलन, मसाने और गुर्दैको मुफीद है ।

९४६ सनटोनिन अर्थात् सन्टयून या सांटोनीयम् ।

यह पेट्के केंचवे व चुनमुने मार्नेके वास्ते मुफीद है । मात्रा ५ से २० ग्रेनतक या २ से ६ ग्रेनतक । दूसरा सांटोनीकाभी होता है वहभी कीडोंको मारता है मात्रा २० से ४० ग्रेनतक होती है ।

९४७ सेबग्यूईनेरिन ।

पुष्ट करनेवाला और दिलको ताकत देनेवाला है । मात्रा ½ से १ ग्रेनतक ।

९४८ सिमासीफ्यजिन व मिक्कोटिन ।

पट्ठोंको पुष्ट करता है और रुधिरको साफ करता है । इसको जाडेका बुखार तिजारी और चौथैयेमें देते हैं । मात्रा १ से ६ ग्रेनतक ।

९४९ सीमीफ्यूचीरी या इजोम ।

दिलको पुष्ट करता है और गर्भाशयपर मानिंद अर्गटके खूब असर करता है कफको निकालता है । दर्द कमर, रींगन गाँठिया और जोडोंके दर्दको मुफीद है ।

९५० सियकोना ईडीन सल्फास ।

इसकी मात्रा ५ से १० ग्रेनतक है

९५१ श्यूगर आफ मिल्क (दूधका सत्त्व) ।

जिन लोगोंको दूध नहीं पचता या मुसाफिरीमें मिलना कठिन है वह लोग इस सत्त्वको बखूबी वर्षोंतक अपने पास रख सक्ते हैं और खा सकते हैं और जितनी औषधियोंके सत्त्व कडवे जहरके समान असर करते हैं उन दवाओंको इसमें मिलाकर देवे तो तक-लीफ कम होती है और जो बीमार दूध न पीवे उसको यही खिलाते हैं । मात्रा ½ से २ ड्रामतक ।

९५२ सायट्रेट ऑफ आयर्न ऐन्ड एमोनियम ।

बलदायक ५ से १० ग्रेनतक ।

९५३ सबक्लोराइड और मरक्यूरी ।

पित्तरेचन शोधक ½ से ५ ग्रेन ।

९५४ सल्फेट ऑफ आयर्न (हीराकसीस) ।

छेदन काबिज वामक १ से ५ ग्रेनतक ।

९५५ हैड्रार्जीराय परकलर ।

खूनको साफ करनेवाला है इस वास्ते उपदंश और कोढमें देते हैं बहुत थोडी मात्रासे मुफीद है क्योंकि बहुत कडी तेज दवा उप-दंशकी है । इसको जहर दूर करनेके वास्ते गायका कच्चा दूध और हैड्रोपोटास व क्लोरीड कण्ठाय व अण्डेकी सफेदी व जलेबी आर श्यूगर आफ लीड मारती है । इसको सालसापरेला और दूधके सतमें मिलाकर देते हैं । दाद और परवाल नेत्रके रोगोंको मुफीद है । त्वचाके रोगोंको खोता है । मात्रा ½ ग्रेन ।

९५६ हैड्रार्जीराय सबकलर ।

यह खून साफ करता, दस्तावर, शोथोंका नाश करता, उप-दंश, कंठमाला, पसलीका दर्द, जिगरका रोग, कमलवायु, बुखार

गर्मी, हैजा, बालरोग और बच्चोंको मोटा ताजा करनेके काम आता है, त्वचारोग, बदहजमी और दूध खराब होनेके कारण बच्चोंकी मौतको दूर करता मुफीद है। शोथके नाश करनेको २ ग्रेनमें अफीम ग्रेनके साथ दस्त लानेके वास्ते मात्रा १ से ४ ग्रेन-तक। खून साफ करनेकी मात्रा १/२ ग्रेन सत्तेकी बीमारीको तथा सन्निपातको कब्ज और पागलपनेको मुफीद है।

९५७ हैड्राजींराय एमोनिएटम् वा इटप्रीसीपोटेंट औफ मर्करी।

इसको त्वचाके रोगोंमें तथा खुजलीमें मरहम बनाकर लगाते हैं।

९५८ हैड्राजींराय कम् क्रीटा वा गिरेपाउन्डर।

यह पारेका हलका मुरक्कब बच्चोंके वास्ते मुफीद है। बच्चोंके दांतोंको जल्द निकालता है। बच्चोंको जितने त्वचाके रोग, अतिसार, बदहजमी और मसानेके रोग होते हैं उसमें मुश्क व इस-टीमिकपौन्डरके साथ देनेसे जाते रहते हैं। यह दवा महीनेभरके बच्चोंको देसकते हैं। मात्रा २ से ५ ग्रेनतक।

९५९ हैड्राजींराय साईनाईडम्।

यह जहर है परंतु उपदंशके जहरको यही मारता है। मात्रा से १/१६ ग्रेनतक।

९६० हैड्राजींराय आयोडाइडम रूवरम्।

इसका फायदा मिस्ल रस कपूरके है। उपदंशमें खिलाते हैं। बाहर तिल्ली, घेघा, मस्सा, उपदंशके घाव, नाकका घाव, नाकके शोथपर लगाते हैं और जुखामके बिगड जानेमें इसका सुरमा आँखमें डालते हैं मात्रा १/४ से १/८ ग्रेनतक।

९६१ हैड्राजींराय आयोडाईडम वीरीडी। ग्रीन आयोडाइड औफ मरक्यूरी (हरा कुश्ता पारेका)।

यह दूसरे व तीसरे दर्जेकी आतशकमें गोली बनाकर देते हैं।

ऊपरकी दवासे ताकतमें कम है । इस वास्ते बच्चोंकोभी उपदंशमें देते हैं । मात्रा १ से २ ग्रेनतक ।

२६२ हैड्रार्जीराय नाईट्रेटिसलीकर एसिडस एसिडशल्यूशन औफ मर्करी ।

यह जलानेके वास्ते जखमपर लगाते हैं । औरंगजेव और उप-दंशके जखमोंपरभी लगाया जाता है । सोजाकमें इसकी पिचकारी करते हैं । आंखोंकी बीमारी और छीपपर भी लगाते हैं ।

९६३ हैड्रार्जीराय ओल्यास ।

यह जोडोंकी सूजन और दादको मुफीद है ।

९६४ हैड्रार्जीराय ओक्साईडम फिलीवम ।

इसका मरहम बनाकर आँखोंके अंदरकी बीमारीमें डालते हैं । पीछे इस्पन्जसे धो डालते हैं ।

९६५ हैड्रार्जीराय ओक्साइडम् रूवरम् ।

इसका मरहम आंखोंकी बीमारीमें अंदर लगाते हैं । उपदंशके घाव फोडा और फुन्सीके ऊपर लगाते हैं जखमोंपर लगानेसे फौरन् आराम होता है । ४ से १ ग्रेनतक ।

९६६ हाईपोड्रमसीरन्ज ।

इसके लगानेसे एक हाथ या पैर तथा गुर्देके दर्दको मौकूफ करता है ।

९६७ हायोसीयामीव ।

इसका फायदा बिलाडोनाके समान है । जब बस्तीमें जलन और मूत्र कमती आता हो तो यह आराम करता है । खांसीके वास्ते मुफीद है ।

९६८ हीमेमेलन वा हैजलिना ।

यह रक्तार्शको मुफीद है । काबिज है । मात्रा १ से ९ ग्रेनतक ।

९६९ हैड्रासटीन ।

मेदेको पुष्ट करता है । मात्रा ३ से ६ ग्रेनतक । अमेरिकावाले इसको कोनैनकी जगह वर्तते हैं । यह राल थूकको बढाता है, भूखको तेज करनेवाला हाजमा है ।

९७० हैड्रार्जीराय ।

लार और पित्तको निकालनेवाला है,उम्दा जुलाब है । इसको उपदंश, जिगरके रोग, कब्जी, खूनका गुर्देमें जम जाना इन रोगोंमें देते हैं । आतोंका पानी निकालता है । पेशाब और पसीना बढाता है । रतूबतोंको चूसता है । नई और पुरानी सोजशी बुखारोंमें जुलाबके तरह कालीसिंथके साथ देते हैं । बाहर इसको जलंधर, शोथ, त्वचा रोगमें लगाते हैं और उपदंशके वास्ते धूनी इसकी देते हैं । मात्रा विलूपिल ३ से ६ ग्रेनतक । रसौली और कखलाईपर, शोथपर इसको मलनेसे फायदा होता है । उपदंशमें ६ ग्रेनमें अफीम ½ ग्रेन मिलाकर गोली खिलानेसे मुँह आकर आराम हो जाता है, जिगरका शोथ और कब्लवायु, बदहजमी, सीप, जलंधर, चेचक और गदूदोंके बढ जानेमें देते हैं ।

९७१ हैड्रार्जीराय बिरोमाइडम् इटवाई बिरोमाइडम् ।

हैडार्जीराय आयोडाइडके बराबर यह फायदा करता है । मात्रा १ ग्रेनतक व वाई बिरोमाइडकी १/१६ ग्रेनसे १ ग्रेनतक इसट्रॉंग शलुशन पोटासीयो आयोडाइडमें हल हो जाता है और श्यूगर आफ मिल्कमें गोली बनाते हैं ।

९७२ हैड्रार्जीराय एसीडास या हैड्रार्जीराय फासफरस या हैड्रार्जीराय सल्फ्यूरेहम या हैड्रार्जीराय सल्फास ।

यह चारों सब पारेके कुश्तोंको कोढ, उपदंश और त्वचाकी बीमारियोंमें तथा अण्डकोश बढजानेमें देनेसे फायदा होता है ।

९७३ हमलौकलीञ्ज ।

यह विष है, हैफ्नोनाटिक नींद लाता है। मात्रा २ से ६ ग्रेन तक चूर्ण ।

९७४ हैड्रोक्लोरेट औफ कोनैन ।

अंग शून्य करता, कारनियां और प्रेकस आदिकी स्पर्श-शक्तिको घटाता है। मात्रा ३ से १ ग्रेनतक। इसका असर ३ मिनटसे आधे घंटेतक होता है।

इति प्रथमखंड निघंटु समाप्त ।



॥ श्रीः ॥

डॉक्टरी चिकित्सार्णव।

२ द्वितीय निदान और चिकित्साखण्ड।

अथ सर्व ज्वर चिकित्सा।

प्रायः सबही चिकित्सकोंने सर्व रोगोंमें ज्वरको ही मुख्य समझा है, अत एव निदान ग्रन्थोंमें तथा चिकित्सा ग्रन्थोंमें पहले ज्वर हीके विषयमें लिखा गया है इसका कारण यही है कि इसकी उत्पत्ति अति सामान्य कारणोंसे होनेके कारण इसके दूर होनेका उपाय जानलेना भी बहुतही आवश्यक है, ज्वरके लक्षण और सब अवस्था जाननेके लिये थरमामेटरसे समझकर यहभी ध्यान रखना चाहिये कि ज्वर प्रायः कोष्ठ परिष्कार न होनेहीके कारण होता है इस लिये बुद्धिमान डाक्टर और वैद्यलोग रोगीको औषध देनेसे पहले कोठा साफ होनेकी दवा देते हैं, दवा देनेके विषयमें जो नियम और रीति इस पुस्तकके अन्तमें लिखी जायँगी उनको ध्यान पूर्वक समझकर पीछे दवा देनेका साहस करना चाहिये। विना उन नियमोंपर ध्यान दिये दवा देनेसे लाभके बदले हानि होनेकी सम्भावना है, जब देखो कि रोगीके अजीर्णके कारण ज्वर हुवा है और भूँख नहीं लगती दस्त नहीं साफ होता पेट भारी है तो नीचे लिखी रीतिपर इलाज करना चाहिये।

एलोपेथिकाचिकित्सा।

एक ड्रामसे ४ ड्रामतक सलफेट आफ मेगनेसिया या आधी छटांक काष्ट्रायल देवे। यह दवा बुखार न रहनेकी हालतमें देना चाहिये यदि पसीना आता हो तो नीचे लिखी दवा देना ठीक है। लाइकर एमोनिया एसिटेटिस १॥ ड्राम, नाइट्रिक ईथर ३० बूंद नाइ-

ट्रेट आफ पुटास ३० ग्रेन यह सब चीजें ३ औंस पानीमें मिलाकर दिनमें ४ दफे तीन २ घंटेके अन्तमें पिलानी चाहिये ।

यदि माथेमें दर्द हो तो ४-६ ग्रेनके हिसाबसे विविरन तीन चार दफे खिलानी चाहिये ।

जब ज्वर न रहे तब १२ से ३० ग्रेनतक एक एक २ घंटेके अन्तरसे दो तीन दफे कुनइन देनी चाहिये । जब तक रोगी अच्छी तरहसे बलवान् न हो तबतक दोसे ६ ग्रेनतक बराबर कुनइन खाता रहे इससे दुबारा लौटकर बुखार आनेका डर नहीं रहता है और शरीर बलवान् हो जाता है ।

खानेके लिये दूध और साबू दाना देना चाहिये ।

होमिया पेथिकसे कंप और शीत आनेसे पहले बुखारमें चाय न देना चाहिये, यदि जाडा मालूम पडही चुका हो तो गर्म चाह बनाकर पिलावे और गर्म कपडा पहरनेको दे, बोतलमें गर्म पानी भरकर बदन और पैरोंमें सेंक करना चाहिये ऐसा करनेसे पसीना आवेगा उसे पोंछकर दूसरे कपडे पहिराने चाहिये, ज्वरकी गरमी कम करनेको आध २ घंटेके अन्तरमें एकोनाइट और बहुत पसीना आता हो तो फास्फरिकएसिड और पेटमें घबराहट और कै बंद करनेके वास्ते इपिकाक देना चाहिये, २ घंटे बाद आर्स-निस देनेसे बुखारका आना बंद हो जायगा, पथ्य पहिलेके समान देना चाहिये ।

रेमिटेन्ट फीवर वात श्लेष्मज्वर या संततज्वर ।

एलोपेथिक लक्षण ।

यह बुखार बहुत कम समयके लिये छोडता है और छोड जानेके समयमें भी उसके लक्षण चले नहीं जाते ऐसा ज्वर आनेके पहले भूँखकी कमी, जी मचलाना, कमजोरी, जीभ सूखना, शरीर

गर्म, पेट भारी होना, मुखपर थोडी लाली, आंखोंमें पानी भरना और लाल होना, हाथ पैर कमर और माथेमें दर्द होकर ६ से १२ घंटेतक भारी बुखार रहता है। इस बुखारमें कभी खांसी कभी मूर्च्छा कभी पेशाब बहुत होना और पेट फूलना आदिभी होते हैं। होमियोपेथिकसे लक्षण। यह ज्वर जरा रोमांच होकर चढता है। अधिक गरमी वा सरदी नहीं लगती कई दिनतक बराबर बना रहता है। जीभ मैली होती है। कभी दस्त कभी वमनभी होने लगती है कभी बेहोशी होती है। कभी हाथ पांव शरीरभी अकड जाता है। कभी रोगी बडबडाने लगता है, इसमें मैलेरिया इंटरमेटिंटफीवरसेभी अधिक होता है और देरतक शरीरमें रहता है।

एलोपेथिक चिकित्सा।

कोष्ठबद्ध हो तो कालोसिन्थ ३ ग्रीन, कैलोमेल २ ग्रीन इस्के-मोनि ३ ग्रीन इन तीनोंकी गोली बनाले। डाक्टरी मतानुसार गोली २॥ ग्रीनसे अधिक नहीं होती।

बुखार हो तो पुटास नाइट्रास १० ग्रीन लाइकर एमोनिया एसिटस १ ड्राम। स्प्रिटईथर नाइट्रिक १५ बून्द। केम्फर वाटर १ औंस। २ या ३ घंटेके अन्तरसे एक एक मात्रा दे। माथेमें दर्द हो तो हजामत बनवाकर माथा ठंढा रखना चाहिये। यदि शरी-रमें जलन हो तो गर्म पानीमें कपडा भिगोकर सब शरीर पोंछ दे। कै और जी मचला हो तो छोटे छोटे बर्फके टुकडे खिलावै और पाकाशयके ऊपर राईका पलास्तर लगावे। कार्बोनेट औफ सोडा १० ग्रीन, टार्टरिक एसिड ५ ग्रीन, क्लोरोफार्म ३ बूंद मिलाकर पिलावै।

पेट फूल गया हो तो तारपीनके तेलकी मालिश करै और गर्म पानी बोतलमें भरकर पेटपर फेरै।

यदि हाथ पैर कांपते हों या रोगी बकता हो तो छातीपर राईका प्लाष्टर देना चाहिये।

शरीर दुर्बल हो तो दूध आदि पुष्ट करनेवाली चीजें देनी चाहिये जैसे कस्तूरी ५ से १० ग्रेनतक, एमोनिया ५ से १५ ग्रेनतक, नर्क १० से ६० ग्रीनतक भी खिलाया जा सक्ता है, अथवा स्प्रिटईथर क्लोरिक ३ ड्राम, लाइकर एमोनिया एसिटिस ६ ड्राम, ब्राण्डी आधा औंस, डिकोक्सन सिनकोना ५ औंस, इन सबकी ६ खुराक बनाकर दो दो घंटेके अन्तरमें देनेसे बहुत फायदा होता है जब देखे कि ज्वर आताही नहीं तब जिस समय ज्वर ठंढा पडजावे उस बखत कुनैन यथोचित मात्रासे देना चाहिये।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

ज्वरके पहिले जाडा लगे और प्यास हो तो ब्रायोनिया देना चाहिये।

यदि ज्वर अधिक बढ गया हो तो बेलाडोना देना चाहिये, सब शरीरमें बेकली और माथा दूखता हो, कंप, खांसी, छातीमें दर्द हो तोभी बिलाडोना देना उचित है।

अगर दिल धडकता हो तो कोफिया देना चाहिये । माथा घूमना और रोगी मन माना बकता हो तो ओपियम देना चाहिये।

यदि यकृत् हो तो मर्क्यूरियस देना चाहिये।

श्वास और खांसीका कष्ट हो तो फास्फरिस देना चाहिये, कमजोरी दूर करनेके लिये आर्सनिक, चायना और फास्फरिस दिया जाता है।

बिलियट रेमिटेन्ट फीवर—पित्तश्लेष्मज्वर ।

यह पित्तज्वर अनेक कारणोंसे उत्पन्न होता है । जीभके कोनोंमें और आगेके भागमें ललाई होना, दो चार दिनके पीछे

किसी २की आंख लाल और मूत्र पीला हो जाते हैं। होमियोपेथिकसे इसके लक्षण इस प्रकार होते हैं जैसे बहुत थोडा समय ऐसा होता है जिसमें यह ज्वर दब जाता है नहीं तो यह ज्वर सदैव ही बना रहता है। रोगीके पेटमें तकलीफ मालूम पडती है, जिस वक्त ज्वर कम होता है उसी समय पतला दस्त रोगीको आता है, कभी ऐसाभी होता है कि रोगीको दो एक दिन दस्त नहीं भी होते।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

पाकस्थालीका उत्तेजन हो तो सरसों या राईका प्लाष्टर देना चाहिये परंतु आजकलके बुद्धिमान् डाक्टरोंकी यही संमति है कि जब ज्वरको कम देख तो ऐसी हालतमें उचित रीतिपर कुनइन जरूर देनी चाहिये। पेटकी तकलीफ दूर करनेको बोतलमें गर्म पानी भरकर पेटपर फेरना चाहिये। यदि देखे कि रोगी दुर्बल हो गया है तो नीचे लिखी दवा देनी चाहिये।

डिकक्सन सिनकोना	५ औंस
वाइनम ब्रूम	१॥ औंस
स्प्रिट ईथर क्लोरिक	३ ड्राम
लाइकर एमोनिया एसिटिस	६ ड्राम

इसकी छः खुराक बनाकर ३ घंटेके अंतरसे १-१ खुराक देनी चाहिये।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

यदि पेटकी बीमारीसे बुखार मालूम पडै तो आर्सनिक ब्रायोनिया, डिजिटेलिस इनमेंसे कोई १ देनी चाहिये।

अगर पेटमें दर्द हो तो फास्फरिकएसिड, विरेट्राम, रसटक्स देना चाहिये।

यकृतमें चायना, नक्सवोमिका, या मर्क्यूरिस देना चाहिये।

माथा बहुत दूखता होतो रसटक्स, नेट्रमम्यूर स्पाईजिलिया देना चाहिये ।

सरदी और खांसी हो तो कोनायम, बेलाडोना, नक्सवोमिका, हियार देना चाहिये ।

अगर छातीमें दर्द और श्वास लेनेमें कष्ट हो तो सिपिया, ब्रायोनिया, चायना, आर्निका, आर्सनिक देना चाहिये । ज्वरके जाडेमें प्यास लगे तो ब्रायोनिया और केप्सिकम् । ज्वर आनेके पहले प्यास लगे तो सिंकोना और आरनिका देना चाहिये । जाडा और कंप आनेसे पहले प्यास हो तो थूजा, सेवाजिला देना चाहिये । घबराहट और प्यास दोनों एक साथही हों तो कलकेरिया और वेलेरियन देवे । गरमीकी घबराहटके बाद प्यास लगै तो ओपियम ओर रामनमूर देना चाहिये ।

टाइफस फीवर याने सन्निपात ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

एलोपेथिकके मतसे यह पीडा संक्रामक अर्थात् एकसे दूसरोंको होनेवाली है । साधारणतः जब अकाल पडता है और लोग भूखे मरते हैं और हवाका अच्छी तरह न चलना और अच्छी २ चीजें खानेको न मिलना थोडी जगहमें बहुतसे मनुष्योंका रहना शरीर और मनसे बहुत परिश्रम करना भूखे या अनुचित वस्तुओंके भोजन करनेवाले मनुष्योंके शरीरकी दुर्गंध अथवा मुर्देकी खराब हवा शरीरमें प्रवेश करनेसे टाइफसफीवर उत्पन्न होता है । इस ज्वरमें पहले जाडा मालूम पडता है माथेमें दर्द हाथ पैरोंका भडकना आलस्य किसी कामकी इच्छाका नाश नाडी बलहीन और शीघ्र चलनेवाली हो जाती है, भूख कम लगती है वमन होनेकी इच्छा बनी रहती है, दो चार दिन ऐसे लक्षण दीखकर पीछे

स्पष्टरूपसे ज्वर दिखाई देने लगता है। ज्वरके समयमें शरीर गर्म हो जाता है, प्यास बहुत लगती है, माथेमें दर्द होता है, मुख लाल पड जाता है इस ज्वरसे ४ दिनमें रोगी इतना दुबला हो जाता है कि खाटसे उठाभी नहीं जाता ऐसी हालतमें नींदका अच्छी तरहसे न आना, मनमाना बकना, स्वप्न बहुत देखना, थोडा पेशाब लालकाभी आना यह लक्षण दीखकर पांच सात दिनहीके बीचमें लाल लाल चकत्तेदि खलाई पडने लाते हैं जब रोगी सर्वदा व्याकुल रहकर बेजोड बातें बकने लगता है। रोगीके श्वाससे बदबू आने लगती है, नाडी कमजोर पड जाती है। रोगी धीरे धीरे बेहोश होकर बहरा हो जाता है मुख थोडा फट जाता है जिससे लोग नहीं पहँचान सके हाथ पांवका कांपना शय्याकी चीजोंका खींचना आदि लक्षण दिखाई पडते हैं यदि इस पीडामें औषध देनेसे आराम होता चला जाय तो समझना चाहिये कि, आराम हो जावेगा नहीं तो फुस फुसकी नलीसें रक्त बहकर चला जानेके कारणसे रोगी मर जाता है। बीमारी यदि थोडी अवस्था-वालेको हो तो जीनेकी आशा की जाती है बडी अवस्थावालेका बचना कठिन हो जाता है।

होमियोपेथिकसे लक्षण।

यह एकसे दूसरेको लगनेवाला एक तरहका स्थिर तप है जो १४ से २१ दिनतक बराबर रहता है, कभी धीरे धीरे बढता है कभी एक बारही घोर हो जाता है, कभी शरदी लगकर बढता है इसमें अरुचि, श्वास, उबकाई, कब्ज और जीभ मैली होती है। इसके दोष विशेष बढ जानेसे शिरम दर्द, बेहोशी, भ्रम, कंप, बायटे, शरीर और संधियोंमें पीडा, मलमूत्रकी अज्ञानता होती है इसका कारण निर्बलता, मैली हवा, अजीर्ण और एक प्रकारका जहर जो रोगीके श्वास या पसीने आदिसे दूसरोंको लगै इस प्रकार जानना।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

इस रोगमें रोगीको स्वस्थता करनेवाली चीजें खानेको देनी चाहिये जहां साफ हवा आती हो ऐसे मकानमें रखना चाहिये । सोने और पहरनेके कपडे हमेश साफ रखने चाहिये और नीचे लिखी दवाको देना चाहिये ।

पल्भरूवर्ब	२ औंस
लाइट मेगनेशिया	३ औंस
पिल्भ जिंजर	१ औंस

सब चीजें एक साथ मिलाकर२०से३० ग्रेनतक एक दफे रोगीको देनी चाहिये इसको ग्रेगरिजपाउन्डर वा रूवर्बपाउन्डर कहते हैं । इसके उपरांत यह दवा देनी चाहिये ।

हाइड्रोल्कोरिक एसिड डिल	२ ड्राम
मेलिमाडिफूरेटी	१ औंस
डिकोक्सन होर्डियाई	१ पाइंट

इस तरह दो तीन घंटेके अन्तरसे दिनमें दो तीन बार देवे और किसी कपडेको पानीमें भिगोकर शरीर साफ कर देना चाहिये । माथेपर ठण्ढा पानी समयानुसार काममें लाना चाहिये पथ्यमें दूध चाह काफी इत्यादि देना योग्य है ।

जब देखै कि रोगी कम जोर हो गया है चेहरेपर कमजोरीके लक्षण दीखते हैं तब नीचे लिखी चीजें देवे ।

हंस या मुरगीके अंडे	३ नग
पानी	८ औंस
बराण्डी शराब	८ औंस

पहले अंडोंको तोडकर उसमें पानी डाले उपरांत बरांडी मिलाकर पिलावे यदि पेशाब कम हो तो शराब कम देनी चाहिये

या न भी देना उचित है। बेकली और नींद न आती हो तो उसके लिये बीच बीचमें थोडी अफीम देनी मुनासिब है।

जब देखे कि रोगी स्वस्थ है तो नीचे लिखी दोनों दवाओंमेंसे किसी १ दवाको देना चाहिये।

सलफेट ऑफ कुनाइने	१२ ड्राम
सलफूरिकएसिड एरोमेटिक	३० बूंद
इनफ्यूजन कासिया	८ औंस
लाइकर इष्टिकिनिया	३० बूंद

इसकी छः मात्रा बनाकर दिनमें दो तीन दफे देनी चाहिये परंतु दवा खाली पेटमें देना उचित नहीं रोगीको कुछ खिलाकर देवे।

सलफ्यूरिक एसिड एरोमेटिक	३० बूंद
टिंचर सिन्कोना	९ ड्राम
सिरप ओरेन्सियाई	आधा औंस
इनफ्यूजन सिनकोना	६ औंस

पहिली औषधिके समान इसको भी देनी चाहिये।

होमियोपेथिक चिकित्सा।

जब जाडा लगे और कैकी इच्छा या कै होती हो तो एक २ घण्टेके अन्दरमें वेरेट्राम विराइट देवे अगर इससे पूरा फायदा न हो तो ब्रायोनिया और रस दो दो घण्टेके अन्तरसे देवे, बहुत बेहोशी न हो तो दो घण्टेके अन्तरसे बिलाडोना देवै अगर शरीर ठंढा पडगया हो तो एक एक घण्टेके अन्तरसे आर्सनिक देना चाहिये। शिरमें दर्द ज्यादा हो तो आर्निका या फास्फरिस या आर्सनिक, सिपिया, पलसेटिला, इष्ट्रसियाऔर चायना दिया जाता है।

शरदी और खांसी बहुत हो तो एकोनाइट, साबाडिला, लाकेसिस, सलफर, रसटक्स, कोनायन, काममें लावे।

यकृत् हो तो आर्सनिक, मर्क्यूरियस, चायना, नक्सओमिका देना चाहिये ।

पेटकी बीमारी हो तो आर्निका, केमोमिला, चायना, कालोसिन्थ, एपीकाक देना चाहिये ।

आंखें लाल या बेहोशी हो तो ओपियम, पलसेटिला एण्डिमर्टटर, हाइयो, सायमस दे सकते हैं ।

यदि छातीपर बोझसा मालूम हो और श्वास अच्छी तरह न आवे तो लाकेसिस, एण्टिमनि, फास्फरिस, ब्रायोनिया, सल्फर, पलसेटिला देना उचित है ।

यदि गरमीके समयमें प्यास बहुत हो तो सिकेली, सिनकोना, हियार, सल्फर, नेट्रमम्यूर, साइलिसिया और वेरेट्रम देना पड़ेगा ।

माथेमें खून बहुत होनेसे एकोनाइट, लाकेसिस, पलसेटिला, रसटक्स, ष्ट्रामोनिया देवे ।

कमजोरीमें-नक्सओमिका और एसिडफास्फरिक देना उचित है ।

शरीरमें वेदना हो तो चायना और इग्नेसिया, हेलिओरास और विरेट्रम देना उचित है

नाड़ी बहुत देरमें दीखे तो सिनकोना, लाकेसिस, नाइट्रिक एसिड और फास्फरिकएसिड देना उचित है ।

यदि नाडी लुप्त हो गई हो तो एकोनाइट, कोनायम, कुप्रम सिकेली, साइलिसिया और ष्ट्रामोनियम देना चाहिये ।

बदहजमी और कोष्ठ बद्ध हो तो आर्सनिक, लाईकोपोडियम, नेट्रमम्यूर, मेरेट्रम देना चाहिये और रोगीके रहनेका स्थान और वस्त्रादि सब स्वच्छ रहने चाहिये जिसमें रोगीको उत्तमवायु मिलनेके कारण कष्ट न हो । रोगीका मुँह और हाथ हमेशा गरम पानीसे धोकर साफ करना चाहिये । तथा प्रतिदिन कपडे बदलाने चाहिये ।

इंटरमेटिंट फीवर—विषमशीतज्वर ।

यह तप शरदी लगकर चढता है, शरदी उतरतेही गर्मी मालूम पडती है कभी पसीना आकर उतरता है, कभी बेपसीना आयेभी उतर जाता है इसमें शरदीकी अधिकता ५ मिनटसे लेकर ३ घंटेतक और गर्मीकी अधिकता १५ मिनटसे १ घंटेतक होती है। कभी शिरमें बहुत दर्द कभी जी मचलाता और कै होती है। इसका कारण प्रायःकरके मलेरिया याने वृक्षों आदिकी पत्तियोंके सडनेके कारण जो विष हवा या पानीमें मिलता है वह मनुष्योंको पीडा देता है। यह प्रायः करके वर्षाके अंतमें होता है। इसके ३ भेद हैं पहिला कोटीडेइन अर्थात नित्य शीतज्वर एकांतरा जो २४ घंटे पीछे चढै। दूसरा टरसनफीवर अर्थात् तिजारी जो ४८ घंटे पीछे चढै। तीसरा कारटनफीवर जो ७२ घंटे पीछे चढै। उसको चौथेया बोलते हैं। २४ घंटे पीछे चढनेवालेमें मैलेरिया अधिक होता है ४८ घंटे पीछे चढनेवालेमें उससेभी कम मैलेरिया होता है।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

सबसे श्रेष्ठ दवा इसकी वारी रोकनेके वास्ते कुनैन बताते हैं जो बुखार चढनेसे २ या १॥ घंटे पहले १ या २ रत्तीके अनमानसे देनी चाहिये। शरदी अधिक आती हो तो खाली कुनैनकी गोली १ चुल्लू पानीके साथ देनीं चाहिये अगर शरदी कमती हो तो अनुमानसे शर्वत बनफसा या मिश्रीका शर्बत देना चाहिये। अगर बुखारके चढनेका समय ठीक ठीक प्रतीत न हो तो प्रातः कालसे लेकर दो दो घंटेके अंतरसे कईबार देना चाहिये। जिस दिन वारी न हो उस दिनभी १ वार जरूर देनी चाहिये। अगर कुनइन न हो तो सिनकोना दे सके हो अथवा भुनी फिटकडी ४ या ५ रत्तीको देनेसे भी वारी रुक जाती है। माका और ताकत

हो तो हलकासा जुलाबभी दे सक्ते हो अगर काली मिरचोंको तुलसीपत्रके रसमें घोटकर गोली बना ले तो यहभी कुनइनसे कुछ कम नहीं है तुर्त बारीको रोक देती है ।

कंटीन्यूड फीवर—पित्तज्वर ।

इसके २ भेद हैं पहिला कंटीन्यूड फीवर और दूसरा आरडंड कंटीन्यूड फीवर । पहले कंटीन्यूड फीवरके लक्षण लिखे जाते हैं । इसमें शरीर गर्म, नब्ज तेज, जीभ खुश्क, कब्जी, मूत्र कम उतरना, पसीनेका अबरोध और विना शर्दी लगे चढता है ।

दूसरा आरडंट कंटीन्यूडके लक्षण—चेहरा लाल, शिर घूमना रोशनी और शब्द बुरा लगना, शरीर बहुत गर्म, नाडी बहुत तेज, हड फूटन, पित्तकी वमन, कभी कब्ज, कभी पित्तके दस्त आना, मूत्रका कम उतरना, मूत्रका रंग लाल या पीला होना, शिरमें दर्द, जीभ पीली या लाल किनारेकी या मैली नहीं रहना । कभी कभी भ्रम होना, इसमें पहलेकी अपेक्षा गरमी अधिक होती है, दोनों प्रकारका ज्वर ऋतुके बदलने या विशेष गरमी होनेसे या धूप, परिश्रम, शोक, अतिनशा, कब्ज या मलके रोकनेसे होता है ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

यदि कंटीन्यू फीवर हो तो हलका जुलाब देकर फीवरमिक्श्चर देना चाहिये अगर आरडंट कंटीन्यू फीवर हो तो रोगीके पास रोशनी नहीं रखनी चाहिये, न पुकारकर बोलना चाहिये और कैलोमेलसे करडा जुलाब देकर पीछे टारटार एमिटकका मिक्श्चर देना चाहिये और पानीमें सिरका मिलाकर कपडा भिगोवे और कपडेसे कभी शरीर पोंछे ।

डेंगू फीवर–कफपित्तोल्बण सान्निपात ।

यह ज्वर बहुधा हिंदुस्तानमें नहीं होता, इसमें बार बार रोमांच होना, शरीरमें दर्द, मुख लाल, आंसू जारी, जीभ काली या लाल, काले रंगकी वमन होना, हिचकी, नब्ज तेज और बेकायदे चलना, कभी कभी कुछ घंटों नित्य रहकर ३–४ दिनमें आराम हो जाता है । कभी बढताही जाता है । ३–४–११ दिन करडे होते हैं पीछे आराम होनेकी आशा हो जाती है कारण इसका गरमीकी अधिकता, शोक, कुपथ्य, मैलेरिया बताते हैं।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

एपीकाकाना देकर वमन करना चाहिये । सनाय, चिलप या कैलोमेलका जुलाब देना चाहिये । पीछे कोई साधारण दवा देना चाहिये ।

टाइफाइड फीवर–दुर्गंधजनितज्वर ।

यह तपभी आदिमें अकसर शरदी लगकर चढता है । चेहरा फीका और सुकडासा हो जाता है, । रातको गरमी, बेचैनी, और प्यास अधिक होती है, नब्जकी चाल ९ से १२ तक होती है । यकृत् और प्लीहा भी बढ जाता है । कभी कभी लाल धब्बे हो जाते हैं कभी बहकना कभी रुधिरके दस्तभी होते हैं । इसमें २० दिनसे ३० दिनतक डर रहता है । इसका कारण मरे पशु और पक्षियोंके सडनेसे दुर्गंधिका होना जिसके द्वारा एक प्रकारका जहर पैदा होकर नाक या श्वासकी राहसे हवाके साथ शरीरमें पहुँचनसे यह ज्वर पैदा होता है तथा गर्म खुश्क ऋतु और गर्म खुश्क भोजन करनेसे हो जाता है ।

एलोपेथिक चिंकित्सा ।

आदिमें कब्ज हो तो ४ ड्राम, कास्टैल देकर पीछे थोडा थोडा पारेका मुरक्कबात जैसे कैलोमेल इत्यादि देना चाहिये । जिसमें

दस्त अधिक होकर कोठा साफ हो जावे पीछे बंद करनेको अफीम या तारपीनका तेल १० से २० बूंदतक देना चाहिये ।

फीमन फीवर, गला सडा अन्न खानेसे उत्पन्न हुवा ज्वर । यह अचानक शरदी लगकर चढता है । शिरमें दर्द, अंगोंका टूटना, पीछे बहुत जोरसे बुखार चढना, शरीरकी गरमी १०५ से १०७ डिगरी तक होजाती है । पित्त या स्याहरंगकी वमन होने लगती है, कभी दस्त भी होते हैं, कभी जोडोंमें दर्द होता है इसका कारण गला सडा अन्न खाना या अकालमें भूखे मनुष्योंके शरीरसे जो जहर पैदा हो उसके कारण यह ज्वर पैदा होता है ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

यदि वमन हो तो खूब होनेदे और दस्त अधिक होते हों तो अफीम देकर रोकदे और फीवर पाउन्डर देवे ।

पाईएमिया—रक्तविकारज्वर ।

किसी अंगमें शोथ होकर पीब पड जाती है जिसके कारण रुधिर बिगडकर तप चढ जाता है । कभी सफेद धब्बे पड जाते हैं । कभी जोडोंमें दर्द भी होने लगता है । इसका कारण खून बिगडना, खूनमें पीबका पडजाना, अग्निसे बहुत तापना आदि ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

खूनसे पीब निकालना अथवा पीब आदि मल सुखाकर खूनको साफ करना जिसके वास्ते उसबा या चिरायतेका अर्क देना चाहिये ।

लेरिंजायटिस—वातपित्तज्वर ।

इसमें जाडा लगकर ज्वर चढता है, आवाज बैठ जाती है । सूखी खांसी तथा श्वास होता है, गला आ जाता है, इसका कारण गर्मीपर शरदी लगना, मेहमें भीगना, हवा लगना, इत्यादि होते हैं । यदि दस्त कब्ज और चेहरा नीला तथा श्वास हो तो असाध्य जानना ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

कलामल १ ग्रीन, टारटार एमेटिक पाव ग्रीन, अफीयून, आधी ग्रीन मिलाकर देना कहा है ।

केटारफीवर—वातकफज्वर

इसमें जाडा देकर ज्वर चढता है, शिरमें दर्द और बोझसा रहे, छाती जकडी हुई, नाकमें कफ, छींक आवें, नेत्र लाल और पानी पडता रहे, कारण इसका शरदी लगनी, बादीकी वस्तु खाना और कब्ज रहना इत्यादि होते हैं ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

रातको १० ग्रीन कैलोमेल खाकर गर्म पानीसे पांव धोना या चाय नमकीन पीकर मुख ढांककर सो रहे तो आराम हो जायगा ।

प्लोराटिस—पित्तकफाधिक्यसन्निपात ।

यह शरदीका तप । पहले छाती भारी, फेर स्तनोंके नीचे पसलीमें दर्द, सूखी खांसी, कफ आना, श्वास, मूत्र लाल और कमती उतरै और जीभ मैली रहे । इस रोगमें पहले प्लोरा अन्तडीमें सूजन होकर पीछे खून भरकर पानी भर जाता है । कारण वायु कफ निर्बलता दूसरे शरदी मेह चोट बोझ उठाना अतिश्रम करना इत्यादि होते हैं ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

कैलोमेल २ ग्रीन, अफीम १ ग्रीन ३–४ घण्टेके अन्तरसे देना चाहिये ।

टानसीलाइटस—जिह्वक सन्निपात ।

पहले शरदी लगती है, पीछे गरमी पीठ हाथ और पावोंमें दर्द, गलेमें गरमी और खुश्की, निगलनेमें तकलीफ, बोलनेमें कठिनता, कंठमें सुरखी, जीभ मैली और बुखारका जोर

होता है, श्वास बढता है, सुनाई कम देने लगता है, मुख खुला रहे जाता है, और बेहोशी पैदा होती है, कारण इसका फिरंग आतशक कमजोरी, शरदी और गरमीमें अति ठण्ढा पानी पीना, तीक्ष्ण वस्तु निगलना इत्यादि होते हैं।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

थोडा रोग हो तो जुखामका यत्न करना। दूध और पानी गर्म करके कुरले कराना, बफारा देना। तथा कार्बोट ऑफ आयरन देना चाहिये। तथा अफीम भी दे सक्ते हैं। तथा फीवर पाउन्डर देना बहुत अच्छा इलाज है।

हाइडरोथरैक्स—वातबलास ज्वर ।

इस रोगमें एक या दोनों तरफ प्लोराथेलीमें पानी भर जाता है। पाँवोंपर सूजन, कास, श्वास, पेट भारी और भूख कमती लगती है यदि इसमें वायुका भी मेल हो तो हलानेसे ढलढल करैगा इसके कारण भी वही होते हैं।

एलोपेथिक यत्न ।

इसका यत्न यह है जिसमें पानी सूखै जैसे अफीम कोनइन इत्यादि देना चाहिये।

हेकटिकफीवर—प्रलेपक ज्वर तपेदिक ।

यह बुखार एसियाके मुल्कमें विशेष होता है, इसमें थोडीसी शरदी लगकर तप चढता है। हथेली और तलवे अधिक गर्म रहते हैं। भूख कम लगती है, धीमा बुखार रहता है, जीभ मैली और कभी पसीना बहुत आया करता है कभी दस्त लगते हैं, विख्यात है कि जब किसी अंगम पीब पैदा हो जाता है पहिचान इसकी यह है कि जहां पीब पैदा होता है वहां कलमलाहट बीझनी मालूम पडती है। थकान और दर्द रहता है इसका कारण कमजोरी, क्षीणता, धातुकी क्षीणता, प्रमेह, मंदाग्नि अति मैथुन आदि होते हैं।

एलोपेथिक चिकित्सा।

दर्जे बदर्जे ताकत बढाना चाहिये और पुष्टकी दवा जैसे कौनेन और कारबोट औफ आयरन याने फौलादका अंग्रेजी कुश्ता १ या २ रत्ती प्रतिदिन देना चाहिये या नारकोटिन आदि भी देना योग्य है पथ्यमें दूध देना चाहिये।

निमोनिया—राजयक्ष्मा, उरःक्षत—सिल।

एलोपेथिकसे लक्षण।

इसके ५ भेद हैं १ निमोनिया २ लब्यूलर या बंकोनिमोनिया ३ पुराना इंटर ष्टिशियेल निमोनिया ४ फुफ्फुसकी गेंग्रीन ५ फुसफुसमें केन्सर, यह ५ भेद हैं। जिनमेंसे पहिले एमोनियाके लक्षण लिखे जाते हैं इसको निमोनिया वा फुसफुसका प्रदाह कहते हैं। फुसफुसमें बहुत दाह या फुसफुसके दाहिने और बायें बहुत दाह होती है और नीचेकी तरफ बहुत पीडा होती है। बीमारी प्रगट होनेसे पहिले ज्वर, कंप, खांसी कभी बहुत दिन पहिले भूँखकी कमी, निर्बलता, हाथ पैर और वक्षस्थलमें वेदना श्वासका जोरसे चलना नाडी द्रुतगामिनी, जिह्वा और होठ नीले हो जाते हैं धीरे धीरे इस रोगमें रोगीको चैतन्यता होकर मृत्यु हो जाती है। यह रोग साधारणतः ६ से १० दिनतक अत्यंत कष्ट देनेवाला होता है। खांसी बहुत आती है, श्वासमें कष्ट होता है। इस रोगके प्रारम्भसेही खांसी होती है। उठकर बैठनेसे या बडा श्वास लेनेसे खांसी होती है और धीरे धीरे उसके साथ कफ निकलता है और जब बीमारी ऐसी हो जाती है कि जिसमें रोगीके मरनेका डर हो तो ऊपर लिखे लक्षण कम या बिलकुल जाते रहते हैं इसमें कफ पहले तो शरदी लगनेके समान पतला पीछे दो एक दिनमें या कहीं कहीं दो एक घण्टेहीमें आटेके माफिक करडा

हो जाता है कुछ ललाई लिये होता है यद्यपि कफके साथ खूनका चिह्न नहीं रहता परन्तु रक्तका भाग कुछ अवश्य मिला रहता है और रोगीको बुखार बढता ही जाता है। पहले दिन १०२ से १०४ डिगरीतक तीसरे दिन १०७ से १०९ डिगरीतक देखागया परन्तु जब १०९ डिगरीतक बुखार हो जाता है तो रोगीका जीना कठिन है नाडीकी गति यद्यपि सब जगह समान नहीं होती परन्तु जबभी तीसरे और चौथे दिन १२० से १३० तक हो जाती हैं। माथेमें पीडा होती है, निद्राका नाश और बकलीभी हो जाती है। पेशा-बके साथ खून या खूनकी झलक लाली लिये हुए होती है उसके साथ धातुभी मिली रहती है इस रोगका दूसरा भेद लब्यूलर या बंकोनिमोनिया है इसके लक्षण निमोनियाकेसेही होते हैं केवल इतना विशेष होता है कि साधारण निमोनियामें जो कंप आदि लक्षण दीख पडते हैं वह इसमें नहीं होते। शरीरकी गरमी १०२ से १०६ डिगरीतक होती है। कभी ज्वर बंद और कभी बढ जाता है, नाडी अधिक चलती है। तीसरा पुराना अर्थात् इंटरष्टिशिये-लनिमोनियाका लक्षण। पहिले लिखा हुवा निमोनिया पुराना हो जानेसे पसलीके १ तरफ खिचाव, श्वासका कष्ट और खांसीकी प्रधानता होती है। कफ अति कष्टसे निकलता है और उसमें बहुत बदबू होती है यह लक्षण दीखते हैं चौथा फुफ्फुसकी गेंग्रीन याने पुराना निमोनिया होकर जंतुके विषसे या खूनके विषसे सिफलिस याने उपदंशसेभी यह पीडा हो जाती है, जिसके द्वारा फुफ्फुसमें कष्ट होता है। पांचवा फुफ्फुसमें केन्सर। यह बीमारी बहुत कम देखी जाती है इसे कोई संक्रामक और कोई कुजल बताते हैं इसमें खांसी, श्वास, वक्षस्थलमें तीर भेदनवत पीडा या वेदना, दबानेसे पीडाका बढना और खांसीके साथ कफ निकलता है। फुफ्फुससे खूनभी निकलता देखा गया है। ज्वर, रात्रिमें पसीना, बल क्षीण इत्यादि लक्षण होते हैं यह ५ भेदका है। अब

निमोनियाके सामान्य लक्षण लिखे जाते हैं इसमें पहले फेफडा अर्थात् फुफ्फुसमें सूजन होती है और करडा पड जाता है, पीछे गलने लग जाता है,इसके आदिमें जाडेका तप, छाती ज्यादा गर्म, मुख और आँख लाल,शिरमें दर्द, प्यास, जीभ मैली, क्षुधाका नाश छातीमें मीठा मीठा दर्द, सूखी खांसी या कभी कफ निकलता है। व्याधिके विशेष बढ जानेपर कफमें कुछ रुधिरभी पडने लगता है। श्वासमें तंगी, थूक लहेसदार दुर्गंध युक्त होता है। कारण इसका शरदी ऋतु बदलना, कई प्रकारके ज्वर, अतिश्रम, अति मैथुन, ज्वरमें शीत वस्तु खाना, कुपथ्य करना इत्यादि होते हैं। होमियोपेथिकसे निमोनियाके ४ भेद हैं जिसमें पहिले निमोनियाके लक्षण कहते हैं। ठंडी हवालगनेसे या और किसी कारण ठंढ लगनेसे यह पीडा उत्पन्न होती है। कंप, ज्वर, छातीमें खिंचाव, श्वास प्रश्वासमें कष्ट, खांसी,मैले रंगका कफ निकलना और बोलनेमें कष्ट विदित होता है। दूसरा प्लूसरीके लक्षण। इसमें ऊपर लिखे सब लक्षण होते हैं परंतु बाईं या दहिनी पसलीमें दर्द होता है। ज्वर, माथेमें दर्द होना इसका मुख्य लक्षण है।

तीसरा क्वीन्सीका लक्षण। जिस रोगीके कंठकी नलीमें घाव होकर उसका दर्द बढताही जावे उसे क्वीन्सी कहते हैं। उसकी जलन और बढवापर पीब निकलने तक बढतीही जाती है। चौथा केन्सर इस पीडाको संघातिक और भीतिजनक कहना चाहिये जब छातीमें दर्द हो तभीसे इसका इलाज करना प्रारंभ करे।

एलोपेथिक चिकित्सा।

इसमें चिरायतेका क्वाथ या टिंचरस्ट्रील देना चाहिये अथवा नीचे लिखी दवा देना बडा उत्तम होता है।

कारवोनेट औफ एमोनिया	३० ग्रेन
टिंचर एकोनसाइट	४० बूंद

टिंचर सिनकोना	४ ड्राम
पीपरमैन्ट वाटर	६ औंस

सबको मिलाकर १ औंस दिनमें २ दफे देना चाहिये तथा अनेक डाक्टर अपनी जुदी २ रीतिसे इसकी चिकित्सा करते हैं इसकी पहिली हालतमें रोगीका उदर परिष्कार करनेसे काष्टायल या किसी नमकका जुलाब देना चाहिये । रोगीके घरको साफ गर्म पानीकी भाफसे गर्म रखना चाहिये अगर बहुत बुखार हो तो नीचे लिखी दवा देवे।

लाइकर एमोनिया एसिटेटिस	१५ बूंद
वाइनम एपिकाक	५ बूंद
पानी	१ औंस

यह १ मात्रा दवा है इसको दिनमें ३ या ४ बार पिलानी चाहिये अथवा—

साइट्रेट आफ पुटास	१२० ग्रीन
लाइकर एमोनिया ऐरोमेटिक	४ ड्राम
स्प्रिट एमोनिया ऐरोमेटिक	२॥ ड्राम
टिंचर एकोनाइट	२० बूंद
पानी	१॥ औंस

इसकी छः खुराक बनाकर चार या ६ घंटेके अंतरसे देवे अथवा एमोनिया मिक्श्चर जो नीचे लिखा जाता है देना चाहिये।

कारबोट औफ एमोनिया	५ ग्रीन
स्प्रिट क्लोरोफार्म	१५ बूंद
लाइकर एमोनिया एसिटेटिस	॥ ड्राम
म्यूसिलेज एकेसिया	१ औंस

यह एक मात्रा एमोनिया मिक्श्चर हुवा रोगीको दुर्बलकी दशामें देना चाहिये अगर कफके साथ खून निकलता हो, खांसी और छातीमें दर्द हो या नाडी शीघ्र चलती होवे तो नीचे लिखी दवा देनी चाहिये ।

अर्गट	॥ ड्राम
पानी	७॥ ड्राम

यह १ मात्रा दो दो घंटेके अंतरसे पीनेको देवे । किसी २ डाक्टरोंकी सलाह है कि इस रोगमें बहुतसी दवा न देकर स्वाभाविक शक्तिसे रोगका शमन करै अगर रोगी मनमाना बकता हो, नाडी अति वेगसे चलै या दुर्बल हो, या किसी और रोगका उपसर्ग यह रोग हो या रोगी अत्यंत बलहीन हो गया हो तो विना गर्म दवा देनेके दूसरा इलाज नहीं है ऐसी दशामें नीचे लिखी दवा देवे ।

वाईनम गेलिसाई	१ ड्राम
कारवोनेट औफ एमोनिया	५ ग्रीन
क्लोरिक ईथर	१० बूंद
टिंचर केम्फर	१० बूंद
टिंचर मास्क	५ बूंदतक
साफ पानी	१ औंस

यह १ मात्रा है रोगीकी हालत देखकर देनी चाहिये । छातीके दर्द पर अलसीकी पुलटिस, पोस्तके डाढलोंका सेंक करना जरूरी है नींद न आती हो और दर्द हो तो ओपियम दी जा सकती है इसके देनेसे कफ निकलनेसे बंद होनेका डर हो तो हाइड्रेड आफ क्लोरेल देवे । इस रोगमें पुष्टिकारक औषधें और उसके साथ ब्रान्डी देनेसे ज्यादा फायदा होता है जब रोग अच्छा हो जावे

तब ५ बूंदके हिसाब से काडलीवर ओयम देता रहे इसी प्रकार पाँचों भेदोंकी चिकित्सा करनी योग्य है परंतु निमोनियाकी परमौषधि डाक्टरीमतानुसार काडलिवर ओयल है जिसकी १ ड्रामसे लेकर १ औंसतक दूधके साथ मात्रा दी जा सकती है ।

होमियोपेथिक चिकित्सा ।

कंपके बाद रोगीको बिछौनेपर सुलाकर फी १० मिनटमें एकोनाइट देवे, श्वासका कष्ट अधिक हो तो दो बार एकोनाइट देकर एक बार फास्फरिस देना चाहिये । ज्वर कम होनेके बाद अगर खांसी बढ जाय और कुछ पीला कफ निकले तो फी घंटे पर्याय-क्रमसे ब्रायोनिया देवे।

यदि मुख मलीन हो गया हो श्वास आने जानेमें बहुतही कष्ट प्रतीत हो और रोगी दुर्बल हो गया हो तो एंटिमरी और आर्स-निक पहले १५ मिनटके अंतरसे पीछे आध घण्टेके अंतरसे देना चाहिये ।

प्लोरिस हो तो पहिले एकोनाइट, पीछे ब्रायोनिया देवे । ज्वर दूर होनेके उपरान्त पसलीका दर्द दूर करनेके वास्ते मार्क्यूरियस देवे या फी दो घण्टेके अन्तरमें पर्याय क्रमसे विलाडोना और मर्क्यु-रिस देवे । गलेकी पीडामें एपिस और हियार देवे ।

केन्सरकी दशामें हाईडास्ट्रीस,आर्सनिक, कोनियम, बेलाडोना और गेलियम व्यवहार करे ।

इस्कार लेटीना अर्थात् पानीझरा ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

ज्वर और गर्मीकी अधिकता, मुखका आना छाती गला और शरीरपर नन्हें २ दाने दीखना । इसका कारण १ प्रकारका जहर जिसके द्वारा शीतला निकलती है उसी प्रकारका दूसरा गर्मीकी

अधिकता और खून या मलका उफान है । इसके ४ भेद हैं १समप-कसल, २ इनजाइनोजा ३ मेलिगना,४ लटट, इसके यह ४ भेद हैं । समपकसलके लक्षण । तप, मुख आना और हल्की सूजन होती है इसका परिणाम बहुत बुरा नहीं है । इनजाइनोजका लक्षण । बुखार, गलेका शोथ, कागका धसना, और नाक कानसे पीब बहना इसका परिणाम बुरा है। मेलिगनाका लक्षण। मुख और गलेमें घाव होता है। इसका परिणाम बहुत बुरा है । लेटिटका लक्षण । नाक कानोंमें घाव, हाथ पैरोंमें शोथ, जोडोंमें दर्द होता है यह भी बुरा है ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

१ बोतल पानीमें २ औंस अर्कसिलफोरस मिलाकर कुरले करावे ।

व्यौरेला—खसरा ।

इसमें भी जुखाम होकर बुखार चढ जाता है । छोटे छोटे दाने निकलते हैं । नेत्र दुःख, जुखाम, श्वासमें कष्ट, प्यासकी अधिकता, वमन और रोगी बहुत सुस्त हो जाता है इसमें जो भीतरका गुब्बार कम निकलता है इसके कारण दाने कम निकलते हैं दूसरे प्रकारका खसरा और होता है जिसको चिकनपाक्स बोलते हैं इसमेंभी पहले ज्वर होकर छोटे छोटे दाने पीठपर निकलते हैं और चौथे पाँचवें दिन आपही मुरझा जाते हैं दोनोंमें कारण १ प्रकारका जहर होता है जो चेचकमें होता है इसका इलाज सब इस्कारले-टीना याने पानी झरेके समान किया जाता है । यह साध्य रोग है ।

स्मालपाक्स याने शीतला ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

पहिले ज्वर चढकर सारे शरीरमें मसूरके बराबर फुंसी नि-कल आती हैं कभी छोटी कभी बडी भी निकलती हैं जिसमें

छोटी और छीदी सफेद फुनसी अच्छी होती है और गहरी, चपटी ऊदी काली या लाल अच्छी नहीं । इसका कारण १ प्रकारका जहर जो मादेमें होता है या शीतलावालेका संसर्ग है ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

डॉक्टरीमतानुसार इसका इलाज उत्तम टीका लगानाही है ।

प्यौरपेरलफीवर याने प्रसूतज्वर ।

यह बुखार ७ महीनेकी गर्भवती स्त्रीसे लेकर बालक उत्पन्न होनेके ४० दिन पीछे तक हो सकता है । कारण इसका गर्भाशयमें गंदे रुधिरका बाकी रह जाना या बिगडकर पीब आदि पडना और किसी प्रकार मैल रह जानेसे होता है ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

गंदे खून या मैलको सुखाना उचित है ।

ज्वरके असाध्य लक्षण ।

एलोपेथिकके मतसे जो ज्वर पित्तसे उत्पन्न होता है वह धीरे धीरे रोगीको आक्रमण करता है । सन्निपात ज्वरकी तरह अपने आक्रमण कालमें रोगीको दुःख नहीं देता । प्रारंभ होतेही पेटमें दर्द, भूख कम होना, माथेमें दर्द, सब शरीरमें दर्द या भडकन होना, कै होनेकी इच्छा, जीभ सफेद, जीभके कोनोंमें कुछ ललाई ये लक्षण प्रतिदिन बढतेही जाते हैं । चार पांच दिनके बीचहीमें रोगीको शय्यासे उठनेकी सामर्थ्य नहीं रहती, पेट फूल जाता है दाईं पसलीमें दर्द और निद्राकी अवस्थामें भी रोगी स्वस्थ नहीं रह सक्ता और मन माना बकता है । विद्वान् डाक्टरोंने निश्चय किया है कि इस ज्वरका भी विराम है । केवल उसी समयमें रोगी अपनेको स्वस्थ समझता है किन्तु यह विराम बहुतही न्यून समयका है । पेशाबका थोडा होना, होठोंका सूखना

और दस्त होते समय पसीना आ जाता है। यदि रोगीसे कोई बात पूछी जावे तो असम्बद्ध उत्तर देता है। रोगी किसी बातको साफ नहीं कहता अर्थात् अधूरी बात कहा करता है। इस ज्वरमें बहुत खांसी, दाह, थूकमें खून और दस्तोंका लगना इत्यादि उपद्रव बढकर रोगीकी मृत्यु हो जाती है। ऐसी हालतमें रोगीको अकेला छोडना या रात्रिमें शय्यासे उठकर बाहर जानेदेना उचित नहीं यहांतक कि दस्तके लिये भी घरसे बाहर रोगीको न जानेदे और पहले उदरामयको साफ करै जब देखै कि उदरामयमें लाभ नहीं होता तब ज्वर दूर करनेके लिये वेप्टिसिया दो दो घंटेके अंतरमें देना चाहिये। पेट फूल गया हो तो बिलाडोना और म्यूरटिकएसिड अदल बदल करके २-२ घंटेके अन्तरसे देना चाहिये। पथ्यादिक जैसे पहले कह गये हैं वैसेही कराने चाहिये बाकी ज्वरोंमें डाक्टरीमतसे कुनइनको सलफ्यूरिफएसिडमें खरल करके देनी चाहिये। सच तो यह है कि ऐसा रोगी बचता नहीं इस वास्ते परलोकके कृत्योंकी तरफ ध्यान देवे कि जिसमें परलोक सुधरै ऐसे रोगीका बचना असम्भव है।

इति ज्वरनिदान चिकित्सा समाप्त।

प्याइसिसपिलमोनेलस याने क्षयकास।

एलोपेथिकसे लक्षण।

पहले विना ज्वर और शरदीसे सूखी खांसी होकर श्लेष्माके साथ लाली लिये हुए साफ साफ खून निकलने लगता है, हथेली तलवे सदाही गर्म रहते हैं, गलेमें खरास, पसलीमें दर्दका अभाव या थोडा थोडा दर्दका होना और फुफ्फुसके ऊपर १ तरहका खराश शब्द होता है। माथेमें दर्द, अजीर्ण, भूखकी कमी, किसी

काममें चित्तका न लगना, कमजोरी, रातमें बेकली और रोगी अपनेको सदा बेचैन समझता है । केशपतन, अंगुलियोंका अग्र-भाग मोटा सवेरे और रातको खांसीकी अधिकता होती है और परिश्रम करनेसे खांसी बढ जाती है और श्रमके पीछे जल्दी २ श्वास आने लगता है । कभी कभी ज्वर भी हो जाता है । और जीभपर सफेद लेपसा दिखलाई पडने लगता है, यदि स्त्री हो तो उसके रजोधर्मका अभाव या अधिक होना या एकदम बन्द हो जाना इत्यादि लक्षण दिखाई पडते हैं इलाज करनेसे अच्छा हो जाय कुछ दिनों पीछे फिर प्रगट हो, पैर फूलना, ज्ञानकी शून्यता यह भी होजाता है, यह रोगी मृत्यु यन्त्रणामें अधीर होकर प्राण त्याग करता है । कारण इसका कमजोरी, अति मैथुन, श्रम या पुश्तैनी हो । जुखाम, शरदी लगना, तेज वस्तु सूंघना इत्यादि होते हैं ।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

भूख कम होना, पाचक शक्तिका अभाव, प्यास, उल्टी, उल्टी होनेकी इच्छा, थोडी खांसी, वक्षस्थलमें वेदना, कमजोरी, देहमें गरमी, हवा खातेही जाडा मालूम होना यह लक्षण दिखाइ पडते हैं । यह रोग प्रायः १२ से २२ वर्षकी अवस्थावालोंको अधिक होता है इसकी यह भी परीक्षा है कि नखोंका आग्रभाग नीचा हो जाता है ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

दूध, सोरवा, माखन, अंडा, रोटी इत्यादि पुष्टिकारक चीजें खानी चाहिये । खटाईकी चीजें बिलकुल नहीं देनी चाहिये । रहनेके स्थानकी आबहवा साफ रखनी चाहिये । गर्म कपडे पहरना और खारी पानीसे स्नान करके शरीर पोंछना चाहिये । और यह दवा देना योग्य है ।

कोनैन	१॥ मा.
जंतियाना	१॥ मा.
मारफीया	२ रत्ती.

इनकी २६ गोली बनाकर दोनों वखत १–१ देवे । अजीर्णके लक्षणोंकी प्रबलतामें नीचे लिखी दवा देनी चाहिये ।

एरोमेटिक स्प्रिट ओफ एमोनिया	१० बूंद
टिंचर अरेसाई	१० बूंद
टिंचर कार्डिममकम्पौन्ड	१५ बूंद
इनफ्यूजन कलंबा	१ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर दिनमें ३–४ दफे देवे, अगर खून पडे तो नीचे लिखी दवा देना चाहिये ।

गेलिक एसिड	१२ ग्रीन
पल्व इपिकाक कम् ओपियाई	५ ग्रीन

ऐसी १–१ मात्रा बनाकर आठ घंटेके अंतरसे देवे । खांसी हो तो नीचे लिखी दवा देना चाहिये ।

लाइकर मारफाया हाइड्रोक्लोरेटिस	४० बूंद
सीरप सिलि	५॥ ड्राम
हाइड्रोसेनिक एडिस डिल	२० बूंद
म्यूसिलेजिनिस एकेशिया	५॥ औंस

३–४ घंटेके अंतरसे चाय पीनेके बडे चमचेका १ चमचा भरकर पिलावे, रातमें बहुत पसीना आता हो तो नीचे लिखी दवा देनी चाहिये ।

ओक्साइड औफ जिङ्क	१२ ग्रीन
एक्सट्राक्ट कनियाई	आवश्यकतानुसार
वेलहाइउसायमि	१८ ग्रीन

इसकी ६ गोली बनाकर रातको सोते वक्त १–१ गोली खावे अगर पेटकी बीमारी हो तो नीचे लिखी दवा देनी चाहिये।

टिंचर क्लोमेरिया	११॥ औंस
सिरप प्यानेभरीस	६॥ ड्राम
इनफ्यूजन मेटिका	१॥ औंस

३ या ४ घंटेके अंतरमें चाहके बडे चमचेकी बराबर भरकर प्यावे दर्द हो तो सेकपुलटिस वा टिंचरआयोडीन लगावे। बुखार हो तो आगे लिखी दवा देनी चाहिये।

सल्फेट औफ कुनइन	५ ग्रीन
सलफ्यूरिकएसिडऐरोमेटिक	५ बूंद
इनफ्यूजन क्यासिया	१ औंस

इसकी १ मात्रा बनाकर ऐसीही दिनमें ३–४ मात्रा देवे कमजोरी दूर करनेके वास्ते नीचे लिखी दवा देवे।

काडलिभर आयल	१० बूंद
सरिफ औफ फास्फेट औफ आयरन	१० बूंद
हाइयोफास्फेट औफ लाइम	१० बूंद

यह १ मात्रा है दोनों वक्त दूधके साथ सेवन करावे।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

इस रोगकी चिकित्साके वास्ते किसी बडे चिकित्सककी आवश्यकता है क्योंकि इस रोगमें प्रकृति समान नहीं होती।

अजीर्ण दूर करनेके वास्ते नक्सवोमिका, पलसेटिला, कल्फेदिया, एन्टी मोनियम क्रूडम, कार्वे बेजिटे विलिस, केलवाई क्रोमिकम, लाईयो डियम देवे।

खांसी हो तो फास्फरिस, विलाडोना देवे।

रातकी सूखी खांसीके वास्ते हाइयोसापेमस देवे।

पसलीके दर्दमें ब्रायोनिया देवै ।
रातको पसीनेमें हेनास देवै ।
कै दूर करनेको क्रियासोडम देवै ।
और और उपद्रवोंमें फाईटेलका देवै ।

होपिंगकाफ याने शुष्क कास ।

यह दो वर्षकी बालकसे लेकर १६ वर्षकी उमरतक प्रायः करके होती है, कभी बडी अवस्थावालोंकोभी हो जाती है । देरमें खांसीका उठना, कै या थोडा लहेसदार पानी मुखसे आकर शांति हो जाती है । लंबीसी आवाज मुखसे खांसीके साथ निकलती है, मुख खुल जाता है, यह कभी वबाईसी होकर बहुतोंमें फैल जाती है कारण इसका ऋतु बदलना कभी जुखाम या बुरी हवा होती है।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

२–३ रत्ती हैडरेट औफ क्लोरलको सहतके साथ देना चाहिये और मुरक्कबात फौलाद टिंचर स्टील भी देना योग्य है तथा जैतूनका तेल १ भाग, रोगन बलसान आधा भाग, लौंगका तेल आधा भाग मिलाकर छातीपर मलना परंतु मालिश १० दिन पीछे करनी चाहिये ।

ब्रांकाइ याने सामान्य खांसी ।

एलोपेथिक लक्षण ।

वायुनलीके श्लैष्मिक झिल्लीके प्रदाहसे इस रोगकी उत्पत्ति होती है । इससे फुसफुसके दोनों अंश या एक अंश बिगड जाता है । इसमें थोडा २ शीत अनुभव होता है, पीछे धीरे २ शरीर गर्म होजाता है, जिसका परिणाम थर्मामेटरसे ९९ डिगरीसे लेकर १०६ डिगरी तक या १०२ डिगरीसे लेकर १०६ डिगरीतक होजाता है । कमजोरी, हाथ पैरोंमें दर्द, नाकसे पानी निकलना, गलेमें दर्द

इत्यादि खांसीके लक्षण दिखलाई पडते हैं। कभी २ खांसीमें कफके साथ खून निकलता है। कुछ दिन पीछे कफका परिणाम अधिक होकर लारके समान पतला और कुछ पिलाई लिये हुए हो जाता है, श्वास लेनेमें कष्ट प्रतीत होता है, जब नखोंका अग्रभाग नीला हो जावे उस वक्त समझना चाहिये कि रक्त संचालन क्रियामें कुछ व्यतिक्रम हो गया है यदि इसकी ठीक रीतिसे चिकित्सा न हो तो यही सब लक्षण बढकर रोगीकी मृत्युतक हो सकती है इसका दूसरा दर्जा पूलरीब्रांकाईटिस कहाता है जिसमें कैशिकनली सब घिरकर यह रोग उत्पन्न होता है इस दर्जेमें फी मिनटमें ६० बार अथवा इससे भी अधिक बार श्वासकी गति रहती है और उसके साथ सां सां शब्द होता है और ऐसा मालूम होता है मानो श्वास रुक गया अति कष्टसे कफ निकलने और बुखार १०३ डिगरीका या इससे भी अधिकका हो जाता है, और जब ब्रांकाईटिस पुराना पड जाता है तब बहुत दिनतक खांसी ठहरकर रोगीको अत्यंत कष्टदायक हो जाती है।

होमियोपेथिकसे ब्रांकाइ याने खांसीके लक्षण ।

कंठ और वक्षःस्थलके प्रदाहके कारण यह रोग होता है इसमें नित्यही अति कष्टदायिनी खांसी होती है इस रोगमें कंठकी परीक्षा अवश्य ही करनी चाहिये।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

जब रोगका प्रकाश हो,उसी बखत १ ग्रीन अफीम या चौथाई ग्रीन मार्फिया, ५ ग्रीन कार्बोनेट औफ एमोनिया या थोडीसी शराब पिला देनेसे फायदा हो सकता है।

यदि कोष्ठ बद्ध हो तो किसी साल्टका जुलाब देवे, इसके उपरांत इपिकाकस्कुलईल वा एसियाटेट और कार्बोनेट आफ पुटास काममें लावे, अथवा–

सिरप सिली	१ ड्राम
स्प्रिट ईथर नाइट्रिक	॥ ड्राम
टिंचर ह्वाइयो सामस	२० बूंद
एकोवारोग	१ औंस

यह १ मात्रा है सेवन करानी चाहिये। अथवा—

पुटास नाइट्रेस वा पुटास साइट्रेट	१० ग्रीन
वाईनम इपिकाक	१० बूंद
एकोवा केम्फर	१ औंस

जैसी १ मात्रा जरूरत होवे वैसीही काममें लावे। यदि रोगीकी कमजोरी बढगई हो तो स्पिरिटएमोनिया एरोमेटिक देवे। और छातीके दर्दको राईका पलास्तर या तार्पीनका तेल मालिश करना चाहिये। अथवा डिकक्सनसिनकोना और २ दवाइयोंके साथ देना चाहिये। केपूलरीब्रांकाईटिस हो तो पीठपर पुलटिस बांधनी चाहिये। रहनेके मकानमें गरमी ६० से ६८ डिगरीतक होनी चाहिये। खानेको दूध, अलालोट इत्यादि देना योग्य है। रोगीकी दशा और अवस्थाके अनुसार डाक्टरको सोचकर चिकित्सा करनी चाहिये। बहुतसी जगह एमोनिया, सेनिगा, इपिकाक, क्लोरोफार्म इत्यादि काममें लाया जाता है।

होमियोपेथिक चिकित्सा।

निरंतर नाक सूखी बंद रहै और बराबर पानी भरै और भारी जुखामके साथ खांसी हो तो २ छोटी गोली या एक बडी गोलीमें मर्क्यूरियस फी चार घंटे पर देना चाहिये।

माथेका अगला भाग याने कपाल भारी मालूम पडे, छाती दबीसी रहै तो जबतक बीमारी दूर न हो तबतक डालकामा देना चाहिये।

संध्याके समय सूखी खांसी हो या इसके साथ और भी उपद्रव दीख पडे तो इन सब खांसियोंमें वेलाडोना देना चाहिये ।

शर्दऋतुकी खांसीमें ब्रायोनिया देना चाहिये ।

बालकोंकी खांसीमें केमोमिला देना चाहिये ।

पुरानी खांसीमें फास्फरिस देना चाहिये ।

अस्मा या एजमा याने श्वास ।

एलोपेथिकमें लक्षण ।

बीच बीचमें श्वास लेनेमें कष्ट, उसीके साथ फुसफुसकी नलीमें आवाज, छातीमें खिंचाव, मनमें घबराहट, खांसते समय कष्ट यहां तक कि खांसते खांसते कैभी हो जाती है । पेट फूलना, अजीर्णके लक्षण दिखलाई पडना, माथे और नेत्रोंमें भारीपन, रातको या दो पहर पीछे दुःख देनेवाला दमा उठता है, बल्कि कभी कभी फुसफुस नलीमें वायुके न रहनेसे रोगी अत्यंत बेचैन हो जाता है, नाडी सूक्ष्म और कमजोर, मुखमण्डल उद्वेगयुक्त, आंखें फूली-हुई और लाल ठंढी पड जाती है । जब कुछ कफ निकल जाता है उस वक्त कुछ तकलीफ कम हो जाती है ।

होमियोपोथिकसे श्वासके लक्षण ।

कष्टसे श्वास आनाही इस रोगका मुख्य लक्षण है । श्वास लेते समय छातीमें खिंचाव, पेट फूलना, माथामें दर्द इत्यादि अनेक उपद्रव उपसर्गरूप दीखते हैं कारण माता पिताका वीर्यविकार, शरदी, निर्बलता, वृक्षका विष, कुचला, अफीम आदिकी अधिकता इत्यादि होते हैं ।

एलोपाथिक चिकित्सा ।

विद्वान् डाक्टर इसकी दो प्रकारसे चिकित्सा करते हैं एक तो जब रोग उठे, दूसरे जब कि रोग १ या दो दफे हो चुका हो ।

पहिली चिकित्सामें यदि पाकाशयमें मल दीखै तो दस्तावर दवा देनी चाहिये। यदि खाया हुवा अन्न अजीर्ण अवस्थामें हो तो वमनकारक दवा देवै. रोगीका स्थान साफ और हवादार रहना चाहिये, रोगीको किसी तरहभी बोलने न दे, यहांतक कि जो उसके जरूरतकी चीजें हों सब उसके पास धरदे जिसमें उसे कोई चीज मांगनी नपड़ै। और इस रोगमें डिप्रेसेन्ट याने कमजोर करनेवाली सिडेरिम अर्थात अवसादक, ष्टिम्यूलेन्ट याने उत्तेजक औषधें देनी चाहिये।

कमजोरी करनेवाली दवाइयोंमेंसे कै करानेके वास्ते इपिकाकुयानहा देनेसे १८ मिनटमें कै हो जाती है।

अवसाद दवाइयोंमें धतूरेके पत्ते चिलममें रखकर धूम्रपान करनेसे श्वासको फायदा करता है।

एक्सट्राक्ट ष्ट्रामोनियाई	एक ग्रेनका तीसरा हिस्सा.
एक्सट्राक्ट बेलाडोना	एक ग्रेनका तीसरा हिस्सा.
कोनाई	२ ग्रेन.

इस अन्दाजकी १ गोली बनाकर रातको सोते वक्त खानेसे श्वासका कष्ट नहीं होता।

किसी किसीको देखा है कि क्लोरोफार्मके सूंघनेसे श्वासके वास्ते फायदा हुवा है।

क्लोरोडाइन १० से १८ बूंदतक पीनेसेभी श्वासको फायदा पहुंचता है।

उत्तेजक औषधोंमें काफी विना दूध और चीनीके पीनी अथवा गर्म पानीके साथ ब्रांडी ह्वीस्की अथवा जिन इत्यादि थोड़ी थोड़ी पीनी चाहिये।

होमियोपेथिकसे श्वासकी चिकित्सा ।

नींदके समय मूर्च्छा हो, जल्दी २ श्वास चलै और कष्ट हो छातीसे सां सां वा झांका शब्द सुनाई पडै और मुख मैला रहै तो एपीकाक्काना देना चाहिये, इसकी ३ छोटी गोली या एक बडी गोली अथवा १ बूंद अर्क आधी छटांक पानीके साथ जबतक बीमारी अच्छी न हो एक या आधे घंटेके अंतरसे जैसी जरूरत हो काममें लावे, यदि इससे फायदा न हो तो पूर्वोक्त प्रकारसे आर्सनिक देवै । जो श्वास लेनेमें कष्ट और छाती दबीसी जाती हो तो फास्फरस देवे । शर्दी वा और कोई हृदयके रोगोंके साथ दमा हो या परिश्रम करनेसे रोग बढता हो तो पूर्व रीतिसे ब्रायोनिया देवे ।

न्यूमोथोरिक्स अथवा एकोनिया याने स्वरभंग ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

जब प्लोएकी थैलीमें हवा भर जाती है उस वक्त श्वास लेने और बोलनेमें पूरी पूरी तकलीफ होती है, याने स्वरभंग हो जाता है, भूख कम लगने लगती है और यह रोग अतिसामान्य कारणोंसे उत्पन्न होताहै किसी किसीकी जबान बिलकुलही बन्द हो जाती है वहभी इसीमें परिगणित है परंतु जो ईश्वरहीके कोपसे मूक हैं उनका अच्छा होना तो कठिन है यदि गलेमें घाव हो जानेके कारण या कंठनलीके नीचे कोई पीडा होनेसे या माथेमें दर्द होनेसे यह रोग हुवा होगा तो आराम होना मुश्किल है । और होमियोपेथिकमें भी इसके कुछ विशेष लक्षण नहीं होते ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

इस रोगमें ५ से १० बूंदतक टिंचरफेरीपर क्लोराइड या और कोई लोहघटित औषध देनेसे फायदा होता है ।

स्वर देनेवाली नलीके पास कोई फोड़ा वगैरह हो गया हो तो ४० से ८० ग्रीनतक नाईट्रेट ऑफ सिलफर १ औंस पानीके साथ, लोशन बनाकर लगानेसे फायदा होता है।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

कमजोरीसे स्वरभंग हो तो दोनों बखत फास्फरिस देना चाहिये।

खांसी और कांसेके शब्दके समान शब्द हो तो हियार सलफर दोनों बखत देवे। बहुत बोलने या गानेके पीछे यह पीडा हो तो हिमामिलस दिनमें ३ दफे देवे।

डिसपिपसिया याने अजीर्ण बदहजमी।

एलोपेथिकसे लक्षण।

भोजनका पाक ठीक ठीक न होना, कभी पेटमें गडबड या दर्द, कभी जी मचलाना, दस्त साफ न होना, खट्टी डकारोंका आना, पेट फूलना, आँतोंमें वायु भर जाना, कै होनेकी इच्छा होना, अथवा वमन होना, श्वासमें बदबू आना, मुखमें बराबर पानी भरना, माथेमें दर्द होना इत्यादि लक्षण होते हैं।

होमियोपेथिकसे अजीर्णके लक्षण।

वमन, भूख कम लगना, छातीमें जलन, भोजन करनेके बाद पाकस्थलीमें वेदना बाकी सब लक्षण ऊपर कहे हुए होते हैं कारण इसका करडी या गरिष्ठ वस्तु खाना, अति चिकना पदार्थ भोजन करना, अजीर्णमें खाना या विना समयके भोजन करना इत्यादि होते हैं।

एलोपेथिक चिकित्सा।

पेटमें दर्द हो तो गंधकका खट्टा तेजाब १ या २ बूंद पानी या बताशेके साथ देना चाहिये। जी मचलाता हो तो पीपरमेंट देनेसे फायदा होता है और सम्पूर्ण अजीर्णके वास्ते—

दूध	४ औंस
लाइम वाटर	॥ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर दिनमें दो बार देवे । अथवा--

पेप्सिन पोर्साई	२ से ५ ग्रीनतक
मार्फिया	॥ ग्रीन
ग्लिसरीन	गोली बनाने योग्य

इसकी १ गोली बनाकर नित्यही देनी चाहिये । १ पाकाशय कमजोर हो गया हो तो नीचे लिखी दवा देवे ।

पेप्सिन पोर्साई	२ से ५ ग्रीनतक
ष्ट्रिकिन्या	१ ग्रीनका चौबीसवां हिस्सा
ग्लिसरीन	गोली बनानेके लायक

इसकी १ गोली बनाकर दिनमें १ दफे खानेको दे और कै बन्द करनेके वास्ते--

वाईकार्बोनेट ऑफ सोडा	१० ग्रीन
हाइड्रोसेनिक एसिडडिल	२ बूंद
क्रियोजूट	१ बूंद
इनफ्यूजन कलम्बा	१॥ औंस

यह दो मात्रा दवा है । इसमेंसे १--१ मात्रा दवा दो दो घण्टेके अन्तरसे देनी चाहिये । और सब प्रकारके अजीर्णमें देखा गया है कि स्पिरिटकेम्फर ५ बूंदसे १० बूंदतक बताशेके साथ देनेसे आश्चर्ययुक्त दिखाई पडता है । और इस रोगमें दवाओंकी अपेक्षा पथ्यकी विशेष आवश्यकता है जैसे नियमित श्रम करना और विश्राम करना, स्नान करना और तैरना फायदा करता है । घोडेकी सवारी इत्यादि हानिकारक हैं ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

सब प्रकारके अजीर्णमें नक्सवोमिकाकी गोली या उसका मदर्टिंचर १—१ बूंद पानी तो० २॥ के साथ चार चार घंटेके अंतरसे देना चाहिये। यदि मुखसे खट्टा २ पानी निकलता हो और पेट फूल गया हो तो सल्फरकी ३ गोली किंवा १ बूंद मदर्टिंचर आधी छटांक पानीके साथ दो दो घंटेके अंतरमें देना चाहिये। हरा या पीला दस्त होता हो तो कालोसिन्थ विशेष लाभ दिखाता है। मात्रा १ या २ बूंदकी है।

डायरिया अर्थात् अतिसार।

एलोपेथिकसे इसके ४ भेद हैं। ब्लौसडायरिया याने पक्वातिसार जिसमें पतले दस्त हों कुछ गाढा और पीला। दूसरा म्योकसडायरिया जिसमें कुछ गाढा और पतला गांठों सहित मल आवे। तीसरा सेरसडायरिया। इसमें भी बहुत पानीके समान दस्त हों। चौथा संपीथेटिकडायरिया। इसमें भी पतले गाढे नाना रंगके दस्त आते हैं। यह चार भेद हैं इसके एलोपेथिक मतानुसार यह लक्षण होते हैं। जैसे दस्त, वमन, जीभ मैली, श्वासमें बदबू, पेट फूलना और पेटमें दर्द, थोडेहीमें जाडा लगना, कमजोर होना यह लक्षण दिखाई पडते हैं। कारण इसका गर्म देशोंमें अत्यंत गर्म भोजन करना, तीक्ष्ण वस्तु खाना, लंघनके पीछे गर्म वस्तु सेवन करना, आहारादिकका व्यतिक्रम, बालकोंके दांत निकलनेका समय तथा गर्भ और प्रसूतके समय शोक, भय और जुलाबके पीछे भी हो जाता है। अगर इस रोगीकी कुपथ्यमें इच्छा रहे, धीरे धीरे शरीर कमजोर हो, मुख पीला पडजाय, शरीरमें शोथ हो, जीभ और मुखपर सफेदा अथवा मूर्च्छा हो तो उसको असाध्य समझना चाहिये। होमियोपेथिकमें भी डायरिया कहते हैं।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

कुछ दिनतक दस्तोंको जारी रक्खे बंद न करे चिकनाई और गरिष्ठ वस्तु खानेको न दे, पतले दस्त हों तो शीघ्र ही बंद करने चाहिये पानी मिला गंधकका तेजाब १० बूंद, टिंचर ओपियम १० बूंद, दालचीनीका अर्क १ औंस मिलाकर इसी हिसाबसे दिनमें ३ बार देना चाहिये. अथवा—

काइनो	१० ग्रीन
चाक	५ ग्रीन
सोडावाईकार्ब	३ ग्रीन

ऐसी ऐसी दो तीन मात्रा पीनेसे फायदा होता है । अथवा—

ओपियम	१ ग्रीन
कैलोमेल	५ ग्रीन
इपीकाक	३ ग्रीन

ऐसी १ मात्रा दिनमें दो तीन दफे पीनेसे फायदा होता है. अथवा—

पलमरियाई कम्पौन्ड	३ ड्राम
सोडा वाईकार्ब	२ ग्रीन
टिंचर ओथाई	१५ बूंद
पीपरमैन्ट वाटर	१ औंस

इस मात्रासे पिलावे तो बडा फायदा हो । यदि कभी पीला या हरा दस्त होता हो, मलद्वारपर जलन और पेटमें दर्द हो तो नीचेकी दवा दे ।

सोडा	१० ग्रीन
टिंचर ओप्याई	१० बूंद
पीपरमैन्ट वाटर	१ औंस

ऐसेही ३ मात्रा बनाकर पिलावे यदि पेटमें दर्द हो तो तारपीनका तेल मालिश करके गर्म पानीसे भरी हुई बोतल पेटपर फेरै अथवा सरसों किंवा राईका प्लास्टर बनाकर लगावे और नीचे लिखी दवा खानेको दे।

पल्भ इपिकाक कम्पौन्ड	५ ग्रीन
हाइड्राजकमक्रिटा	५ ग्रीन
सोडा	८ ग्रीन

ऐसेही ३ मात्रा बनाकर दिनमें ३ दफे देवे। यदि जुलाबकी आवश्यकता समझे तो काष्ट्रोयल १ औंस और १० बूंद टिंचर ओप्याई देवे परन्तु इस रोगमें पहलेही ऐसी दवा न देवै जिससे दस्त एकदम बन्द हो जाय क्योंकि विना समयके रुका हुवा मल अनेक रोगोंको उत्पन्न करता है।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

यदि शरदीसे अतिसार हुवा हो तो प्रत्येक दस्त होनेके बाद मर्क्यूरियस देवे, खराब चीजके खानेसे हुवा हो तो आर्सनिक देवे, पित्तसे या पेटमें दर्द हो तो कमोमिला देवै यदि ऐसी हालत हो कि रोगी दस्तके वेगको न रोकसके तो मर्क्यूरियस देवै। कमजोरी हो तो आर्सनिक देवै, पीला या फनदार दस्त हो तो र्‍यूम देवै। रातको सबेरेके वक्त दस्त होनेके उपरांत ही सलफर देना चाहिये।

डेसेन्टरी–प्रवाहिका आमातिसार।

एलोपेथिकसे लक्षण।

इसके ३ दर्जे होते हैं, पहिलेमें म्योकसमेंवर परदेमें अर्थात् बडी आंतमें सूजन होती है। जिसके कारण मरोडेके साथ थोडे पतले दस्त

आते हैं । दूसरा खामेडस परदेमें कुछ कुछ जख्म पड जाता है, उस वक्त दस्त आँव और खूनके आते हैं । तीसरे दर्जेमें वह पडदा स्याह और मुर्दार पडजाता है तब दस्त हरे पीले काले नाना रंगके आते हैं । क्षुधाका नाश, अत्यन्त कमजोरी, पेटमें सुई छेदनेके समान पीडा, थोडी थोडी देरमें दस्त जानेकी हाजत, थोडी प्यास, भोजन करनेकी इच्छाका नष्ट होना, पेटमें आफरा, रोगीके शरीरमें बदबू आने लगे, डेमेन्टरीके यह मुख्य लक्षण होते हैं । यदि रोग प्रतिदिन बढताही जावे तो असाध्य समझना चाहिये । यह रोग पहले दर्जेमें सुखसाध्य, दूसरेमें कष्टसाध्य और तीसरे दर्जेमें असाध्य हो जाता है कारण इसका अत्यन्त गर्मी गर्म खुश्क वस्तु खाना कच्चा फल, कच्चा अन्नादि गरिष्ठ भोजन करना है, कभी इसका हेतु मैलेरियाभी होता है उस वक्त यह उपाधि वबाई होती है । होमियोपेथिकमें भी इस रोगको डिसेन्ट्रीही कहते हैं ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

यदि यह बीमारी सामान्य और पेटमें थोडाही मल हो तो अंडीके तेलके साथ टिंचर ओपियाई वा क्लोरोफार्मसे कोष्ठको परिष्कार करे और १५ या २० ग्रीन एपोकाक्काना खानेको देवे । यदि आवश्यकता रही हो तो ५–७ घंटेके पीछे फिर यही दवा देवै यदि इस दवा देनेके पहिले रोगीको कुछ खिलाया न जावे और दवा खाकर रोगीका शरीर कुछ स्वस्थ रहै तो समझना चाहिये कि रोगी बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा ।

रोगीको बंद स्थानमें रखकर कै दूर करनेके वास्ते २० बूंदसे लेकर ३० बून्दतक टिंचर ओपियायी अथवा २० बून्द क्लोरोफार्म देकर एक या आधे घण्टेके उपरांत एपीकाक्काना देवै । जिससे मल अपनी ठीक दशामें आजावेगा और इस दवासे रोगीको खूब पसीना आकर नींद अच्छी आनेलगेगी । यह

सिर्फ १ दिनके वास्ते व्यवस्था दीगई है, पीछे तो ४–५ दिनतक सिर्फ एपीकाक सेवन करना चाहिये। यदि कै होती हो या कै होनेकी इच्छा हो तो सरसों या राईका पलास्तर लगाना चाहिये। प्यास बहुत हो तो बर्फ वा बर्फका पानी देना चाहिये। पेटमें दर्द हो तो तारपीनतेल या क्लोरोफार्म लिनीमेन्ट देवै और गर्मपानी बोतलमें भरकर पेटपर फेरै।

यदि मैलेरियासे यह रोग हो तो पहली दवाइयोंके बीच २ में थोडी २ कुनइन देनी चाहिये। किसी २ विद्वान् डाक्टरोंका मत है कि इस रोगमें १० से २० ग्रीनकी मात्रासे कुनइन जरूरही सेवन करावै।

पहले दर्जेमें कास्टोयल पहिलेही दे जिसमें अयोग्य मल निकल जावै। पीछे १२ रत्ती अफीम देकर एपीकाकाना ५ से १५ बून्द तक २–२ घंटेके अन्तरमें देना चाहिये।

दूसरे दर्जेमें—	एपीकाकाना	॥ ड्राम
	कोनैन	१ ॥ मा.
	ओपियम	१ ॥ रत्ती

इसकी १२ गोली बनाकर दिनमें ३ दफे एक एक गोली देवे।

तीसरे दर्जेमें—	एपीकाकाना	॥ रत्ती
	सोडा	२ रत्ती

इस मात्राकी पुडिया बनाकर दो दो घंटेके अन्तरमें देवे।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

एक घंटेमें ३ दफे एपीकाकाना देवे। इसके पीछे मर्क्यूरियस, करोसिवम् १ घंटेमें ३ दफे देवे जैसे २ रोगीको फायदा होताजावे वैसेही दवा देनेके वक्तमें देरी करता जावे। यदि रोगी कमजोर हो गया हो दस्तमें खून आता हो तो आर्सेनिक देना चाहिये।

क्रानिकडायरिया क्रानिक डिसन्ट्री डायरिया अर्थात् ग्रहणी ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

यह रोग अजीर्ण और अतिसारसे ही पैदा हो जाता है । जब अतिसारकी चिकित्सा उत्तम रीतिपर न की जावै उस वक्त यह रोग पैदा हो जाता है इस रोगवालेको कभी कभी ९-१० दिनके वास्ते दस्त बंद हो जाते हैं । पीछे फिर भी रोग अपने रूपको धारण करलेता है, बहुत दिनतक यह रोग रहनेसे अंतमें ज्वर भी बराबर बना रहने लगता है ।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

इसके आरंभमें जो लक्षण दिखाई पडते हैं वह पुराना होनेपर बदल जाते हैं । प्रायः करके जल वायु और स्थान बदलनेसे यह रोग कम हो जाता है । इस रोगके बहुत बढ जानेसे और भी सैकडों रोग उत्पन्न हो जाते हैं । बल्कि कभी कभी रोगीके मरनेकी संभावना हो जाती है ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

एसिटेट औफ लेट	२ ग्रीन
ओपियम	॥ ग्रीन

इस मात्रासे दिनमें २-३ दफे देवै । अगर रोगीका शरीर दुर्बल और भूख कम हो गई हो तो लाइकरफेरीपरनाइट्रेटिप १९-२० बूंदके हिसाबसे देना चाहिये । अथवा-

डिक्कक्सन सिनकोना	१ औंस
सल्फेट ओफ जिंक	॥ ग्रीन
ओपियम	॥ ग्रीन

ऐसी १ मात्रा बनाकर दिन रातमें ८ दफे देनेसे विशेष फायदा होता है।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

कोई कोई डाक्टर संग्रहणीमें कुछ दिनतक फास्फरिस खिलानेकी संमति देते हैं। रसटक्स अथवा पलसेटिला देनेसे भी फायदा होता है।

कालरा हैजा याने विषूचिका ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

बहुत परिश्रम करना, खराब जगहमें रहना, मैली और खराब चीज खाना, अच्छी तरह निद्रा न आना, यह सब कारण कालरा पैदा होनेके मुख्य हेतु हैं। इसके ४ दर्जे हैं। आक्रमणावस्था १ वर्धमानावस्था २ पतनावस्था ३ और प्रातिक्रियावस्था ४ (पहले आक्रमणावस्थाके लक्षण लिखे जाते हैं) शरीर शिथिल, पेट भारी मालूम पडना, मनमें घबराहट, मुख मलीन और फीका पडना. माथा घूमना, कर्णमें झनझनाहटका शब्द होना, कै और दस्त होना, बुरे रंगका पानीके समान थोडा मल मिला हुवा दस्त होतेही शरीर अत्यंत दुर्बल हो जाता है (दूसरी वर्द्धमानावस्थाके लक्षण) प्रायः देखा गया है कि यह रोग रातहीमें आक्रमण करता है। पतला दस्त होकर पीछे कै होती है। पतला दस्त भी कुछ मल मिला हुवा होता है इसके पीछे बिलकुल पानीके माफिक बहुतसा दस्त आता है। कहीं २ फेनयुक्तभी दस्त लगते हैं। पेटमें कांटा चुभानेके समान पीडा याने कोई काटता है, ऐसी तकलीफ सहन नहीं होती। दस्तोंमें कुछ देर पीछे देखनेसे अन्नके छोटे छोटे टुकडे दिखाई पडते हैं (तीसरी पतनावस्थाके लक्षण) इस अवस्थामें शरीरकी ऐसी

व्यवस्था हो जाती है कि रोगी मरेके समान मालूम पडने लग जाता है। रोगीको उठनेकी सामर्थ्य नहीं रहती बीच १ में कप-डोंको फेंककर ठंढा पानी पीना और ठंढी हवा खानेकी इच्छा बारंबार करता है, कभी कष्टको असह्य समझकर चिल्ला उठता है। श्वास लेने और त्यागनेमें कष्ट विदित होता है, मुख सिकुड-कर फीका पड जाता है। आंखें बैठ जाती हैं। नीचेके पलक नहीं चलते। माथेपर थोडा पसीना दीखता है। कभी २ शरीरमें ही पसीना आ जाता है। मनुष्योंके साथ लापरवाहीकी बात करता है इस रोगसे ग्रसित रोगीका मरणसमयतक ज्ञान नष्ट नहीं होता। इस अवस्थामें कै और दस्त नहीं रहते। सिर्फ ९० से ९६ डिगरीतक गरमी बाकी रहती है (चौथी प्रतिक्रियावस्था) वह कहाती है जिसमें इलाज होता है और रोगीको आराम पहुँ-चता जाता है।

होमियोपेथिकसे कालराके लक्षण ।

मुखकी शोभा बिगड जाना, प्यासका बहुत लगना, जीभ लाल और मैली होना, पेशाब न उतरना आंख लाल होना माथेमें दर्द, निद्रा आनेकी इच्छा, यह लक्षण कालराके होमि-योपेथिकवालोंने निश्चय किये हैं, और मद्यपानकोही विषूचि-काकी उत्पत्ति मानते हैं।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

यद्यपि एलोपेथिकमें इसके जुदे जुदे अंशोंको दूर करनेके वास्ते जुदी जुदी औषधियां लिखी है परंतु आज कलके परीक्षक लोग अर्क कपूरसे बढकर कोई दूसरी दवा नहीं बताते। अर्क कपूरकी १० बूंदसे लेकर २० बून्द तक दो दो या तीन तीन घंटेके अंतरमें बताशेके साथ देना चाहिये। जब देखे कि रोगीको फायदा होता चला जाता है उस वक्त औषधकी मात्रा और समयमेंभी कमती

करता जावे अर्ककपूर देनेके पीछे किसी प्रकारकेभी रोगीको कमसे कम १ घंटे तक पानी पीनेके वास्ते नहीं देना चाहिये। हैजेमें तो जहांतक होसके पानीको न देना ही अच्छा है अगर बहुत जरूरत समझी जाय तो षोडशांश पानी पकाकर देना चाहिये। अगर बार २ कै होजानेके कारण दवा पेटमें न ठहरसके और दर्द हो तो नाभिसे ऊपर राईका पलास्तर लगाना चाहिये। कोई डॉक्टर कै दूर करनेके वास्ते मार्फीयाकी पिचकारी देनेकी सलाह देते हैं, यदि बहुत प्यास हो तो बरफ भी दे सकते हैं। जब अर्क कपूरसे रोगीको फायदा न हो तब नीचे लिखी दवा देनेसे तुर्त ही फायदा होता है और रोगी सो जाता है।

क्लोरोडीन	१० से २० बूंदतक
आयल पीपरमैन्ट	२ बूंद
क्लोराइड औफ एमोनियम	५ से १० ग्रीनतक
सौंफका अर्क	२ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर हर उल्टीके पीछे देना चाहिये जबतक रोगी न सोवे देता रहै सो जानेके पीछे दवा देना बंद कर दे अथवा—

हींग	२ ग्रीन
लाल मिर्च	१ ग्रीन
ओपियम	१ ग्रीन

इस हिसाबसे गोली बनाकर दो दो घंटेके अन्तरसे देनी चाहिये। ऐंठनके वास्ते सोंठ मलना चाहिये। हिचकी हो तो अफीम देवे। कै दस्त अधिक हों तो टिंचर ओपियम और पीपरमैन्ट देवे पेशाब न उतरता हो तो कमरके ऊपर राईका पलास्तर लगावे। दस्त अधिक होते हों तो रोक दे।

कालरासे यथासंभव बचावकी रीति ।

जब ज्यादा गरमीकी शंका हो तब जातविक मलसे बहुत बचै खूब सफाई रक्खे, समूहमें न बैठे, गरिष्ठ और बासी भोजनसे बचै, बासी दूध, रबडी, खोवा, खट्टा दही, दुर्गंधित घृत, बासी मांस खानेसे बचना । कच्चे सडे फल, ककडी, खरबूजा, आडू, कोहला टींडसी नहीं खाना । अपने घरमें गुगल या लोबानकी धूप नित्य ही देना अथवा कपूर और गन्धक जलाना, कपूरको अपने पास हर वक्त रखना । यहांतक कि क्षणमात्र भी अलग न होने देना । ताजा हलका चरपरा स्वादु भोजन करनेसे कालरा होनेका भय थोडा रहता है अथवा साफ कुयेंका साफ ठण्ढा पानी पीना । पोदीना, हींग, मिर्च, पीपरमैन्ट इत्यादि पाचक चीजें नित्य ही खाना बहुत ही उत्तम है ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

जब पहले ही दस्त होव तब केम्फर. जब मुखकी शोभा बिगडचली हो और बहुत कै होती हो तो ३८ क्रम (डाइल्यूसन) का वेरेट्रम एलबम देना चाहिये । यह दवा पंद्रह २ मिनटके अन्तरमें देनेसे फायदा होता है यदि इससे फायदा न हो तो कुप्रम देना चाहिये । बाकी सब लक्षणोंमें कैम्फर देना योग्य है ।

अजीर्णके कारण या शराब पीनेसे कालरा हुवा हो तो नक्स-ओमिका देना चाहिये । शरीर गर्म और पेशाब न होता हो तो केन्थरिस, उक्रमका देना चाहिये । लाल दस्त आते हों तो मर्क्यूरियस करो ३८ क्रमका देना चाहिये । अगर लाल दस्तके साथ आंव न हो तो एपीकाक्काना देना उत्तम जानते हैं ।

गेशट्राइटिस अथवा लासट्रइटास-अम्लपित्त ।

पाकाशयमें दाह, जो कि उत्तेजक वा विषके द्वारा पाकाशय बिगडकर पाकाशयमें अति प्रबल दाह होता है दबानेसे तकलीफ

हूनी मालूम पडती है, प्यास बहुत लगती है, अत्यंत कष्ट देनेवाली के होनेकी इच्छा अथवा पानी पीते ही वमनका हो जाना, नाडीकी गति तेज; हाथ पैर ठंढे, कोष्ठबद्ध और पेट फूलना, पेशाब थोडा लाल रंगका उतरना, कभी कभी हिक्का आना, यह लक्षण दिखाई पडते हैं। इस बीमारीमें दुर्बलता अधिक होनेसे मृत्यु भी होजाती है। यदि रोगी पथ्यपूर्वक बर्ताव करे और उत्तम रूपसे चिकित्सा करावे तो आराम हो सकता है नहीं तो पुराना पडनेसे असाध्य हो जाता है। होमियोपेथिकवाले इसको इन्फ्लामेशन औफ दी वायोलस कहते हैं और एलोपेथिकमतानुसार लक्षण बढ-कर ज्वर उत्पन्न हो जाता है। रोगीका मुख देखनेसे मालूम होता है कि मानो रोगीको बडी तकलीफ हुई है। जरा शरीर छूनेसेही कष्ट विदित होता है। यहांतक कि तकलीफ होनेके कारण रोगी श्वास लेनेसे भी डरता है। किसी प्रकारकी चोट लगनेसे या शराब पीनेसे यह रोग हुवा हो तो उसका आराम होना कठिन है।

यदि किसी प्रकारका जहर पेटमें हो और उसीके कारण यह रोग हुवा तो गर्म पानीके साथ सल्फेट आफ जिंक, सरसोंका चूर्ण अथवा एपीकाक्काना आदि वमनकारक दवा देनी चाहिये। इस रोगकी पहिली हालतमें अंडीका तेल किंवा सल्फेट या कार्बोनेट आफ मेगनेसिया आदि दस्तावर देनी चाहिये तथा—

कार्बोनेट औफ एमोनिया	५ ग्रीन
सोडा बाईकार्ब	५ ग्रीन
हाइड्रोसेनिक एसिड डिल	२ बूंद
टिंचर कार्डिमम	१० बूंद
पानी	१ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर २ या ३ घंटेके अंतरसे देनी चाहिये अथवा–

ओपियम	॥ ग्रीन
गोंदका पानी	१ औंस
हाइड्रोसेनिक एसिड डिल	२ बूंद

इस मुताबिक १ मात्रा बनाकर ३–४ घंटेके अंतरसे देनी चाहिये ।

अगर बीमारी बहुत बढ गई हो तो नाभिस्थलसे २ अंगुल ऊंची जगहपर जोंक लगाना चाहिये यह बहुत जरूरत होनेसे लगाई जाती है नहीं तो पुलटिस ही बांधी जाती है । पथ्यमें दूधके साथ अलालोट, प्यास लगे तो ठंढा पानी, बर्फका टुकडा, सोडावाटर अथवा उसके साथ थोडी २ ब्रांडी और सेम्पेन पीनेको देवे ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

जबतक ज्वर न हो तबतक १–१ घंटेके अंतरसे एकोनाइट और मक्यूरियस देवै । पाकस्थलीकी तकलीफ दूर करनेके वास्ते बोतलमें गर्म पानी भरकर सेंक करे । केवल परियाय क्रमसे ककुलश और नक्सवोमिका देवे ।

के हो तो कार्बोवेजिटेविलिश १५ मिनटके अंतरसे देना चाहिये । सुबह और शामको आर्सेनिक देना चाये । इस बीमारीमें चाह काफी आदिका पीना नुकसान करता है । और होमियोपेथिक चिकित्साके समयमें कार्बोनाट आफ सोडा हानिकारक है ।

हिमारेज अथवा इस्कारवी याने रक्तपित्त ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

यदि नीचेकी द्वारसे खून पडै तो इसको मेलेना कहते हैं । यदि ऊपरके अंगोंसे पडै तो उसको हेमाटेमसेस बोलते हैं । इससे खून

बिगड जाता है, मुखसे दुर्गन्ध आती है, मसूढे फूले और जखमी हो जाते हैं, शरीरपर ऊदे नीले या लाल चकत्ते भी हो जाते हैं। औरभी रोगके अवस्थानुसार अनेक लक्षण दीखते हैं यदि शरीरमें खून बहुत हो तब तो खून निकल जानेके उपरांत रोगी अपनेको स्वस्थ समझता है और खूनकी कमी होनेसे उसके विपरीत फल होता है। हाथ पैर ठंढा, नाडी मन्द पडे व खडे रहनेसे माथा घूमना, दूरकी चीज न दीखना इत्यादि लक्षण होते हैं, कभी कभी आत्मबोधशून्य और नितांत निस्तेज होकर रोगी प्राण त्याग करता है। इसके पृथक् द्वारोंसे रक्तस्राव होनेके कारण पृथक् २ नामोंसे विख्याति हैं। जैसे—

१ हिमाटीवोसिस—यानी खालसे खून पडै।
२ एपिथ्यफिम्स—यानी नकसीर जारी हो।
३ अटरेजिया—कानसे खून गिरै।
४ ष्टमाटोरेजिया—मुख और गलेसे खून गिरै।
५ हिमपटिसिस्—फुसफुसमसे खून गिरै।
६ हिमेटिमिसिस—गुदा या पाकाशयसे खून गिरै।
७ हिमाट्यूरिया—मूत्रद्वारसे खून गिरै।

इसके यह ७ भेद कहे हैं और स्त्रियोंको यह रोग रजोधर्म न होनेसे होता है और मनुष्योंको अति परिश्रम करनेसे होता है।

हिमाटीवोसिसके लक्षण यानी खालसे खून पडै।

त्वचाका रक्तस्राव कभी २ शरीरके सब स्थानोंके ऊपर खून वा खून मिली कोई चीज दिखाई देती है।

२ एपिथ्यफिम्सके लक्षण याने नकसीर।

इसमें दूसरे स्थानोंकी अपेक्षा नाकके भीतरकी झिल्लीसे खून

गिरता है । ज्वरके पहिले वा पीछे जो खून नकसीर द्वारा निकलता है । वह इसी बीमारीके सबबसे होता है ।

३ अटरेजिया कानसे खून निकलनेके लक्षण ।

किसी चोटके कारण कानकी नली बिगडकर उससे खून निकल पडता है या कानमें फोडा होनेसे यह रोग हो जाता है । वा स्त्रियोंका रजोधर्म बंद होनेसे कानोंके रास्तेभी खून पडने लग जाताहै ।

४ हमाटोरोजिका मुख गलेमे खून पडनेके लक्षण ।

दरजी या लिखाईका काम करनेवालेको हमेशा नीचा माथा रखनेके कारण पीठकी रीढ टेढी होकर फेफडा बिगड जानेसे मुखके रास्ते खून आने लगता है । खून निकलनेसे पहले छातीमें दर्द, छाती भारी, छातीमें जलन, मुख लाल, थोडी खांसी इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं ।

५ हिमपटिसिस् ।

फुसफुसके द्वारा कभी ऊपरके अंगोंसे कभी नीचेके द्वारोंसे खून पडने लग जाता है ।

६ हिमेटिमिसिस ।

गुदासे खूनका पडना ही इसके मुख्य लक्षण होते हैं यह खून पाकाशयसे आता है ।

७ हिमाट्यूरिया ।

मुत्रस्थानसे रुधिर पडना कब होता है कि जब रक्तविकारसे पेशाबकी पीडा हो तब उसकी पहिली दशामें पेशाबके साथ खून आने लगता है मूत्रमें जलन, मूत्राशयमें पथरी, कमरमें दर्द, कभी कभी वातज्वर, निमोनिया और टाइफस फीवर इत्यादि भी हो जाते हैं ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

सम्पूर्ण रक्त पित्तमें नीचे लिखी दवा देना चाहिये—

गेलिक एसिड	१० ग्रेन
सलफ्यूरिक एसिड	१० बूंद
टिंचर सिनेमन	१ ड्राम
पानी	१ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर रोगीको अवस्थानुसार देवे। लोहेकी दवाईमें टिंचर फेरीम्यूरियेटिकम हमेशा काममें लाना चाहिये। भीतरी रक्तस्रावमें कोई २ डाक्टर एपीकाकाना बहुत फायदेमन्द बताते हैं। शरीरसे खून गिरनेकी हालतमें बलकारक दवा देनी चाहिये।

नाकसे खुन गिरे या बहुत नकसीर जोरकी दिखाई पडे तो टिंचर फेरीपर क्लोराइड, टिंचरफेरी म्यूरीपेटिस और फिटकडीके पानीसे पिचकारी लगानी चाहिये और जुलाब देना चाहिये।

फुसफुससे खून गिरता हो तो ठण्ढा पानी पीनेके बाद १० ग्रेनके हिसाबसे गेलिक एसिड २—३ घंटेके अंतरसे सेवन कराना चाहिये। यदि रोगी दुर्बल हो तो ५ से १० ग्रेनतक एमोन्यूसलफेट औफ आयरन देना चाहिये। ठण्ढा पानी और बर्फभी दवामें मिलाना चाहिये।

खूनकी उल्टी होती हो तो रोगीको कुछ कालतक स्थिर भाव पूर्वक सुलाकर खानेका निषेध करदे। ठंढा पानी बर्फ और गेलिक एसिड देना चाहिये।

मूत्रमार्गसे रुधिर गिरे तो जबतक कारण निश्चय न किया जावे औषधि देना भूल है, कैन्सर याने पथरीके कारण यह रोग हो तो संकोचक औषधी देना चाहिये जैसे टिंचर फेरीपर क्लोराइड गेलीक एसिड, सलफेरिक एसिड देवे, यदि मूत्राशयसे ही खून आता हो तो फिटकडी या टानिक एसिडकी पिचकारी देवे अथवा-

गेलिक एसिड १२ ग्रीन
पल्वएपिकाक कम ओपिआई ६ ग्रीन
ऐसी १ मात्रा २ घंटेके अंतरसे देनी चाहिये ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

रोगीको स्थिरभावपूर्वक रखकर ठंढी चीज खानेको देवे । बर्फका प्रयोग अधिक रक्खे और परियाय क्रमसे हेमामिलस एपीकाकाना, एक वा आध घंटेके अंतरसे देवे । इसके पीछे दिनमें ३ दफे फास्फरिक एसिड देना चाहिये ।

नाकसे खून गिरै तो फिटकडीके चूर्णका नस्य लेनेसे खून बंद हो जाता है । हेमोमिलससे फायदा न हो तो आर्निका देवे । प्रायः सब तरहके रक्तस्रावमें हेमोमिलसही उत्तम औषधि है ।

कोलिक या कालक अर्थात शूल ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

शूलरोगका कारण आंतोंमें अधिक पित्तका पडना ही है । इस रोगको साधारणतः विलियसकोलिक याने पित्तका शूल कहते हैं । अगर खानेकी चीजोंके न पकनेसे आँतोंमें पवन भरकर आंतोंको बिगाडदे और शूलकी विषम वेदनाको उत्पन्न करै अथवा उत्तेजक पदार्थ, खट्टा फल, खट्टी शराब पीनेसे जो शूल पैदा होता है उसको एन्टारालजिया कहते हैं । अगर आंतोंका १ अंश जिसमें कडा मल फलादिकोंके बीज और कीडे आदि इकट्ठे होकर शूलरोगको उत्पन्न करते हैं उसको इन्टाष्टाइनल आफष्टक बोलते हैं अर्थात् अंत्रावरोध कहते हैं परन्तु यह रोग चाहे जिस कारणसे क्यों न हो परन्तु आंतोंमें खराबी पैदा होनेहीसे शूलकी भारी व्यथा होकर कैकी इच्छा या कै होना इत्यादि लक्षण दिखाई पडते हैं ।

शूलके लक्षण।

अकस्मात आंतों और पेटमें दर्द हो जैसे कोई तीर मारता है। यह रोग प्रायः नाभिके नीचेसे उठकर और स्थानोंमें फैल जाता है जिसको दबानेसे कुछ फायदा मालूम पडता है। तकलीफके वखत कै होती है, अधिक यातनामें नाडी दुर्बल हो जाती है। पेटमें गांठ पड जाती है और अपानवायु निकल जानेके पीछे रोगीको कुछ आराम मालूम पडता है। दर्द ऐसा उठताहै मानो कोई चबाये डालता है,पित्त मिश्रित वमन, कोष्ठ बद्ध या थोडासा मल उतरना, अन्त्रावरोधशूल हो तो पेटमें गड २ शब्द होता है कभी २ वमनके साथ विष्ठाभी निकल आती है यह लक्षण होते हैं। आन्टराइटिसमें आंतोंका दाह, कंप, त्वचाका गर्म होना, प्यास, नाडी तेज, अतिशय यंत्रणा देनेवाली कै, प्रलाप, वमनमें दुर्गंधि, कभी कभी मल मिली हुई वमन भी होती है और स्त्रियोंको यह रोग मासिकधर्मकी रुकावटके कारण भी हो जाता है।

होमियोपेथिकसे लक्षण।

होमियोपेथिकवाले इसको कोलिकपेन बोलते हैं, स्त्रियोंको यह रोग मासिक धर्मकी रुकावटसे हो जाता है और पुरुषोंको जो कारण एलापेथिकमें कहे हैं वेही कारण होमियोपेथिकसे होते हैं। यदि वायु उदरमें उत्पन्न होकर शूलको उत्पन्न करे उसको होमियोपेथिकवाले लेडकालिक बोलते हैं। यह रोग तस्वीर खींचनेवाले, रंगसाज, कंपोजीटिरी आदिके करनेवालोंकोही विशेष करके दिखाई पडता है।

एलोपेथिकसे कालिकपेन चिकित्सा।

उस रोगकी चिकित्सा जुदे जुदे कारणोंको जानकर जुदी २ रीतिसे करनी चाहिये। पीडाकी सामान्य अवस्थामें रोगीकी तकलीफ दूर करनेके वास्ते–

टिंचर ब्यालेरियन कम्पौन्ड	॥ ड्राम
स्प्रिट क्लोरोफार्म	१८ बूंद
मार्फिया हाइड्रो क्लरिक	॥ ग्रीन
एकोवा एनिसाई	१ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर दिनमें दो बार देनी चाहिये अगर जरूरत हो तो इसके साथ सोडा और कार्बोनेट आफ मेंगनेशियाभी मिलाया जा सक्ता है ।

एन्टारालजिया हो तो खोपियम, हाइयोसामस क्लोरो, डाइन क्लोरिकईथर, कोनायम, कैम्फर, एमोनिया आदि औषधोंके देनेसे फायदा होता है । इन सब दवाइयोंके साथ फोमेन्टेशन याने गर्म पानी भरकर सकना और तारपीनके तेलका ष्टूप याने मलना अथवा तेज लिनीमेन्ट मलनेसे फायदा होता है और पीठकी रीढपर बिलाडोनाकी मालिश करना ददको उसी वक्त कम कर देता है । जब तकलीफ कम हो जावे इस वक्त काष्ट्रोयल पिलाकर जुलाब देवे । एन्टाराइटिस याने आंतोंका दाह हो तो इसकी अफीमही उत्तम दवा है और पेटपर हमेशा पुलटिस और फोमेन्टेशन अर्थात् बोतलमें गर्म पानी भरकर सेकना चाहिये । जब दर्द कम हो जावे तब काष्ट्रोयलका हलका जुलाब देवे । यदि रोगी निर्बल हो तो बलकारक औषधी देना योग्य है ।

इंटेष्टाइनल ओफ इनट्राक्सन याने अंत्रावरोध हो तो पथ्यकी तरफ विशेष दृष्टि देनी चाहिये और दवाइयोंमें अफीम खिलाना, फोमेन्टेशन याने गर्म पानी बोतलमें भरकर सेकना, पुलटिस बांधना, तारपीनका तेल मलना इत्यादि उपयोगी होते हैं ।

होमियोपेथिकसे कालकपेन याने शूलकी चिकित्सा ।

रोगीको यदि अधिक कष्ट हो तो शय्यापर सुलाकर गर्म जलका फोमेन्टेशन करावे । इससे तकलीफ कम हो जावेगी । पीछे फी ५

या १० मिनिटके अंतरसे कालोसिंथ देवे यदि इससे फायदा न हो तो इसी तरह नक्सवोमिका देवे। कभी कभी पेटमें कीडे होनेके कारण यह पीडा होती है ऐसी अवस्थाके लिये आध घंटेके अंतरसे सिना अथवा कैमोमिला देनेसे फायदा होता है और पाकस्थलीके ऊपर कुछ कपडा बांध देनेसे भी दर्द कम हो जाता है। परंतु यह क्षणिक सुख समझना चाहिये।

अगर लेडकालिक हो तो फी ३ घंटेके अंतरमें ओपियम अथवा सल्फ्यूरिकएसिड देनेसे बडा फायदा होता दिखाई पडता है।

इलसर ऑफ दी ष्टीमक याने परिणामशूल।

इस बीमारीमें भोजन करनेके पीछे मेदेमें दर्द होताहै। ज्यों ज्यों भोजनका पाक होता जावे दर्द भी कमती पडता जाता है प्रायः करके यह शूल मेदेकी कमजोरीसे होता है। इस रोगमें मेदेकी ताकत देनेवाली दवा और पतला हलका पथ्य देवे।

स्प्लीन अर्थात् प्लीह।

एलोपेथिकसे लक्षण।

यह एक प्रकारकी रंग अर्थात् आंत है जो लम्बी कोमल, स्थितिस्थापक और धूमरे रंगकी होती है इसका वजन लगफग ८ औंसके होता है इसकी लम्बाई ५ इंचसे और चौडाई ३ इंचसे कुछ ज्यादा होती है इसी प्लीहासे सम्पूर्ण जीवधारियोंके खूनके बिंदु बनाकर शरीरकी सहायता करते हैं यह प्लीहा सबहीके पेटमें होती है परंतु इसमें रुधिरका अधिक होजाना या इसका बढजाना रोग समझा जाता है। कभी ऊपरको बढती है कभी नीचेको कभी अगाडीको दिखलाई पडने लगती है जब इसमें रुधिर विशेष हो जाता है उसे बहुत भारी तकलीफ होती है अगर ज्वरके साथ प्लीहा हो तो तकलीफ नहीं मालूम पडती। किंतु प्लीहाके स्थानमें

बोझसा मालूम पडता है जब यह रोग बहुत दिनोंका हो जाता है तब पाकस्थलीकी क्रियाको बिगडकर मंदाग्नि इत्यादि रोग उत्पन्न करके शरीरको दुर्बल और रक्तहीन कर देता है। प्लीहा-वालेकी विष्टा काली और मूत्र मैल रंगका होता है। कारण इसके शरदीके बुखारमें ठंढा पानी इत्यादिका पीना या अधिक कफ-कारक आहार विहार करना इत्यादि होते हैं। होमियोपेथिकवाले कहते हैं कि यह आंत पाकस्थलीके १ तरफमें है और सूत्रके समान पदार्थोंसे बनाई गई है और पाकक्रियाके वास्ते यह रक्तको बनाती है। अधिक दिनोंतक ज्वरके रहनेसे यह उत्पन्न हो जाती है। इसके लक्षण प्रायः करके ज्वर, कोष्ठबद्ध, अरुचि, मंदाग्नि, पानी मुखमें भरना इत्यादि दीखते हैं।

एलोपेथिकसे प्लीहाचिकित्सा सम्पूर्ण प्लीहरोगियोंके वास्ते ।

कुनइन	४८ ग्रीन
फेरीसलफ	३६ ग्रीन
एप्सन साल्ट	४ औंस
सलफ्यूरिक एसिड डिल	१ ड्राम
एडिल कार्बोलिक	॥ ड्राम
साफ पानी	२४ औंस

कुनइनको सलफ्यूरिक एसिडमें घोटकर सब चीज कपडछान करके मिलादे यह दवा १२ दिनके वास्ते होगी १ दफेमें १॥। तो-लेके हिसाबसे दिनमें ३ दफे पीनी चाहिये और तिल्लीके ऊपर टिंचर आयोडीन लगाना चाहिये। कोई डाक्टर कहते हैं कि साल्ट आयरनका यथोचित सेवन और हरी तरकारी कुछ अधिक खानी चाहिये।

होमियोपेथिक चिकित्सा।

आर्सनिक, केप्सिकम, केमोमिला, चायना, मिजिरियम, नक्स ओमिका इसकी प्रधान औषध जाननी चाहिये। अगर प्लीहामें जलन हो तो सल्फर देना चाहिये। कोष्ठबद्ध दूर करनेके वास्ते ब्रायोनिया, केलकेरिया, नक्सओमिका देनी चाहिये।

हेपेटाइटिस याने लीवर अर्थात् यकृत।

एलोपेथिक लक्षण।

मनुष्यके शरीरमें लीवरही प्रधान आँत है। इससे पित्तरस निकलकर परिपाक क्रिया और रक्तकी पोषण क्रियाको करता है। यकृतका घेरा लगभग १२ इंचका और अगाडी पिछाडीका व्यास लगभग ९ इंचका होता है, पूरी जवानीमें मनुष्यका यकृत १ से २ सेरतक वजनमें हो जाता है। अनेक कारणोंसे यकृतकी क्रिया बिगडकर उसके बढनेसे मृत्युतकका हेतु होता है। यकृतकी पीडा अनेक प्रकारकी होती है जैसे यकृतमें दर्द होना १, यकृतमें खूनका बढजाना २, यकृतमें जलन ३, यकृतका फट जाना ४ यह ४ भेद होते हैं जिसमें यकृतमें दर्द हो तो ऐसी वेदनामें मनकी कमजोरी होजाती है। कभी कभी दर्द और कैभी होती है और जब यकृतमें खून बढता है, जिसका हेतु स्वाभाविक नियमसे अधिक भोजन करना, बहुत मीठा खाना अथवा शराब पीनेसे ऐसी हालत हो जाती है, यकृतमें सदैव दाह और वेदना प्रतीत हो, दबानेसे दर्द मालूम पडे। कभी यह वेदना कंधेपर अधिक होती है इससे २–३ दिन बाद कमल वायु उत्पन्न होकर वमन और भूखकी कमीको उत्पन्न करता है। अगर बकृतमें जलन हो तो वह भी अनेक प्रकारकी होती है। जैसे पेरिहियाटाइटिस याने यकृद्वेष्टप्रदाह, डिफियून्डपापनफाइमेटस याने यकृतपदार्थका

विस्तृत प्रदाह तथा यकृत पदार्थका परिमित प्रदाह, स्फोटक प्रदाह सिरमिस, याने पुराना प्रदाह इतने भेद हैं जिसमेंसे यकृद्वेष्ट प्रदाहमें कभी २ दाह न होकर उसकी झिल्लीमें दर्द होता है दबाने और हिलनेसे तथा लंबीश्वास लेनेसे थोडा दर्द होता है और विस्तृत प्रदाहमें मनमें घबडाहट, टाइफस ज्वर, मलेरियाज्वरका प्रकोप दिखाई पडता है और यकृतका स्फोट भी २ प्रकारका है पहिला गर्म देशका दूसरा पाईमियासे उत्पन्न हुवा । गर्मदेशका जिसे उष्णदेशीय कहते हैं उसमें पहिले रक्ताधिक्यके लक्षण दिखाई पडते हैं पीछे कफके साथ ज्वरका होना वह ज्वर भी अल्प विराम होता है तथा यकृत भारी और तकलीफ देनेवाला होता है । दाहिने कंधेपर दर्द और शरीर पीला पड जाता है जब यकृतमें पीब पड जाता है उस वक्त शरीर दुर्बल और हकटिक फीवरभी हो जाता है । किंतु पाइमियांके ज्वर समान इसमें बहुत कंप या दांतमें पसीना नहीं होता । कहीं २ इस रोगमें रोगीको प्राण त्याग करते भी देखा गया है और यकृतकी क्रानिकएट्राफीकी तरफ विना ध्यान दिये धीरे धीरे यह रोग बढता जाता है पेट फूलना कोष्ठबद्ध इत्यादि होकर देहकी क्षय और इसीसे मृत्यु हो जाती है ।

होमियोपेथिकसे यकृत् अर्थात् लीवरके लक्षण ।

यकृत अर्थात् लीवर मनुष्यके शरीरमें यह आंत सबसे बडीही नहीं प्रत्युत इससे पित्तरस निकलकर खाई हुई वस्तुका परिपाक और रक्त संचालन क्रिया होती है और दूसरे २ दूषित पदार्थोंसे शारीरिक क्रियाको बचाये रहता है । इस आंतकी क्रिया सहजहीमें बिगडकर विकार उत्पन्न करती है । कारण ठीक भोजन करनेमें असावधानी, ठीक समयमें भोजन न करना अधिक

भोजन करना, ठण्ढ सहना इत्यादि होते हैं इसके विशेष लक्षण वेही हैं जो एलोपेथिकमें कहे गये हैं।

एलोपेथिकसे लीवर अर्थात् यकृत चिकित्सा।

म्यालेरियाके कारण यकृत हो तो ऐसी हालतमें कुनइन देनी चाहिये। हाईड्रोक्लोरेट औफ एमोनिया इसकी एक प्रधान औषधी है इसको चार २ घंटेके अंतरसे आधा ड्राम दवा सेवन करावे तो अवश्य ही फायदा होगा जब देखे कि यकृतमें रक्त अधिक है तो खून निकलवाना चाहिये। नहीं तो राईका पलास्टर और पुल-टिस बांधनेसे फायदा दिखाई पडता है और कोष्ठबद्ध हो तो—

सोडा	२० ग्रीन
टारटरिक एसिड	३० ग्रीन
सोडिपुटासिटाई	३० ग्रीन

ऐसी १ मात्रा पानीमें मिलाकर झाग उठनेके समय रोगीको पिलादे इसका नाम सिडलिस पाउन्डर है।

अगर पेटमें और कोई विकार हो तो उसको एकदम बंद न करदे पथ्यमें गर्म पानीका स्नान थोडा दूध और चीनी खाना और किसी प्रकारकी शराब, तेज मसाला, मांस और देरमें पचने वाली चीजें खानेको न दे यदि पेटमें कुछ गडबड दिखाई पडे तो के लानेवाली दवा देवे, जब देखे कि रोगी मैलेरियासे आक्रांत है और मैलेरियाने प्रधानरूपसे अपना अधिकार जमा लिया है, तब उस वक्त—

एक्सट्राक्ट टाराक्सिकम्	३० ग्रीन
एक्सट्राक्स जन्जन	२० ग्रीन
नाइट्रो म्यूरियेटिक एसिड	२० बून्द
कुईनि सल्फ	१० ग्रीन

इसकी चार मात्रा बनाकर दिनमें दो बार देवे । चाहे कोष्ठबद्ध हो या न हो किन्तु रोगकी पहिली अवस्थामें नीचे लिखी हुई विरेचक औषधी देनी चाहिये--

सबक्लोराइड औफ मर्करी	१ औंस
सलफ्यूरेटेड मर्करी	१ औंस
गोआकमरेजिन पाउन्डर	२ औंस
कास्ट्रायल	१ औंस

इन सब दवाइयोंकी बडी मटरसे कुछ बडी गोली बनावे और रोगीकी दशा देखकर खिलावे इसको ब्लूपिल कहते हैं । यदि यकृत्‌का स्फोटक हो तो–

कीनिसल्फ	३० ग्रीन
नाइट्रोम्यूरिपेटिक एसिड डिल	१ ड्राम
डिकक्सन सिनकोना	६ औंस

यह ६ मात्रा दवा हैं दिनमें ३–४ मर्तबे पिलाया करे । यदि यकृत स्फोट होनेके कारण दर्द, कास और नींद न आती हो तो उसके दूर करने वास्ते ।

मारफिया	१ ग्रीन
हींग	१६ ग्रीन
कैम्फर	१० ग्रीन

इसकी ६ गोली बनाकर रातको १गोली सोते वक्त खिला दे ।

होमियोपेथिकसे लीवरकी चिकित्सा ।

दिनमें ३ दफे नक्सवोमिका व्यवहार करना चाहिये । यदि इससे फायदा न दिखाई पडे तो मर्क्यूरियस देवे उसके पीछे पडो फिलम देना चाहिये पथ्यमें हलकी और पुष्टिकारक चीजें देवे चाह काफी शराब इत्यादिबिलकुल न दे । अथवा–

अडूसा	१ तोला
चित्रककी छाल	१ तोला
अपामार्ग	१ तोला
कुम्हडेका डंठल	१ तोला
सहँजनेकी जड	१ तोला
सोंठ	१ तोला
बेत	१ तोला

इन सब चीजोंकी भस्म करके हींग भुना १॥ तोला, ल्हसन १॥ तोला मिलाकर बटी मटरके बराबर बनावे दोनों वक्त खानेको दे।

कान्स्टपीशन याने विष्टब्ध अर्थात् कब्जी।

एलोपेथिकसे लक्षण।

दस्तका नहीं लगना, पेटका भारी रहना, पेट गुम होना भूखका ठीक ठीक न लगना इत्यादि लक्षण दिखाई पडते हैं, कारण किसी आंतकी स्वस्थता, बनावट या काममें फरक आजानेसे या अति गरिष्ठ खाने या दुष्ट मलकी गांठि पड जाने अथवा शरदी लगनसे होता है।

एलोपेथिक चिकित्सा।

कम्पौन्ड रुबर्ब पिलके देनेसे बहुत फायदा होता है, यदि बहुत दिनका कब्ज हो तो—

एलवेका सत्व	॥ रत्ती
हीराकसीस	१ रत्ती

इस हिसाबसे गोलियां बनाकर दिनमें २ दफे देवे परंतु भोजनके पीछे देना चाहिये जैसे २ आराम होता जाय घटाते जावे और होमियोपेथिकवाले गदरटिंचर देना बहुत श्रेष्ठ बताते हैं।

पेरी टोनाइटिस याने मलरोधक उदावर्त्त बद्ध पडना ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

पहिले कुछ सरदी लगकर पेटमें दर्द होता है । और थोडीही देरमें सारे पेटमें फैलजाता है । बहुत जोरका दर्द होता है शरीर गर्म, दस्तमें कब्ज, मूत्र कम और लाल रंगका उतरता है । व्याधिके बढनेपर बेहोशी और शरीर ठण्ढा पड जाता है । आठ पहरके पीछे यह व्याधि भयंकर रूप दिखाने लगती है कारण भोजनके अजीर्णमें और भी गरिष्ठ अयोग्य भोजन करना, सदैव कब्जी या सरदी लगना इत्यादि होते हैं ।

एलोपेथिक चिकित्सा ।

इस रोगमें तेज दस्तावर दवा जैसे कैलोमेल इत्यादि देनी चाहिये पेट साफ होनेपर हाजमा ठीक करने और मलको इकट्ठा न होने देनेवाली दवा देनी चाहिये ।

ट्वोवरक्योंलरपरीटोनाइटेस याने उदररोग ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इस बीमारीमें पेट बढता २ बहुत चढ जाता है कभी कब्ज होती है कभी दस्त आने लगते हैं और पेट खिचा तना मालूम पडता है और पेटमें दर्द होता है, कै भी होने लगती है, दबानेपर कभी २ गोलेसे मालूम पडते हैं कारण शरदी कमजोरी मेहनत नहीं करना इत्यादि ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

पेटपर टिंचर आयोडीन लगाना चाहिये और मुरक्कबात आइडनेट इत्यादिक सेवन कराना चाहिये तथा प्लीहादिककी दवा देनेसे फायदा होता है इस वास्ते क्षारादिक उत्तम दवा है ।

आसाइटिस याने जलोदर ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इस बीमारीके कारण पेटमें पानी भर जाता है हाथ पैर और मुखपर शोथ, श्वास लेनेमें कुछ तकलीफ और प्यास अधिक हो जाती है अगर किसी अंतडी या नस अथवा और किसी जगह पानी भर जावे तो उसेड्रायसी बोलते हैं। कारण पानी सुखानेवाली रगोंका निर्बल पड जाना, उन्होंकी हरकतमें फरक पडना इत्यादि ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

पेटका पानी निकालकर ऐसा करना चाहिये जिसमें फिर न बढे । जिसके वास्ते गर्म खुश्क दवा अथवा मुरक्कबात फौलाद इत्यादि देना चाहिये ।

वर्मस अर्थात् कृमि ।

-एलोपेथिकसे लक्षण ।

डाक्टरी मतानुसार मनुष्योंके भीतर ७ प्रकारके कीडे पाये जाते हैं जिसमेंसे ४ तो पेटमें रहनेवाले और तीन प्रकारके ठोस कीडे होते हैं। बहुधा इन्हीं तीनोंमेंसे दुःखदाई हुवा करते हैं पहिला लाजंरा बन्दवर्मस याने केचवा, यह ५ से १४ इंचतक लंबे हो जाते हैं। रंग इन्होंका कुछ कुछ पीला होता है। इसके हो जाने पर प्यासकी अधिकता, नींदका कमती आना, चेहरा पीला पडना, पेट बढना, भूख कमती लगना, पेटमें दर्द और दस्तोंमें आंव आती है। दूसरा—स्मालथेड वर्मस याने चुनमने, यह सूतसे पतले और आध अंगुल लंबे होते हैं। यद्यपि बहुधा यह बुरे नहीं होते परंतु कभी कभी अधिक होनेसे बवासीर, गुदभ्रंश, मृगी इत्यादि दारुण रोगोंको पैदा कर देते हैं। तीसरा टीयवर्मस अर्थात् कदूदाने, यह अलग २ होते हैं परंतु सब आपसमें मिल

नेके कारण एक लंबासा जन्तु गज लंबातक हो जाता है । भूख कम, शरीर ह्रस्व, जठराग्निका बिगडना इत्यादि इसके मुख्य लक्षण होते हैं । कारण इसका अति मीठा, सडा और भोजन करना इत्यादि होते हैं ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

कैमोमिला दहीमें मिलाकर देना सब कीडोंके वास्ते उत्तम दवा है अथवा कैमोमिला १ ड्राम, म्योसलिज २ ड्राम, शीरा ३ ड्राम पानी ३ ड्राम, सवेरे पिलावे यह प्रायः करके कदू दानोंको हितकारी है तारपीनका तेलभी देसकते हैं । परंतु शैन्ट चून ५ ग्रीनसे १० ग्रीनतक मीठेके साथ देना सर्व कीडोंको मारकर निकालनेके वास्ते परमौषधि जानना ।

मूत्ररोग ।

एलोपेथिकमें मूत्रयंत्रका कंजेन्शन किसी तरहका ज्वर वा फोडेसे उत्पन्न हुवा ज्वर ठंढ या तारपीन तेल सोरा, क्यूवेव, कोपेवा आदि औषधियोंको अधिक खानेसे या हृत्पिंड इत्यादिकी पीडासे रक्त संचालनमें बाधा पडनेसे यह रोग उत्पन्न होता है इसके कई भेद हैं जैसे ।

निकटाइटिस याने मूत्रदाह या मूत्राघात ।

यह रोग घ्रमाधातुवाले लोगोंको स्पष्ट कारणके विनाही देखा जाता है । गीलेमें रहना, अनेक प्रकारके यंत्रसम्बन्धी अपकार करना, थोडा खानेके साथ बहुत शराब पीना इत्यादि कारणोंसे यह रोग होता है । कमरमें दर्द और शूल चलना, ऊरुदेशमें स्पर्श शक्तिका न होना, अंडकोशोंका खिचना, कंप, ज्वर, कै या कै होनेकी इच्छा, प्यास, नाडी तेज और जल्दी चलै, पेट फूलना इत्यादि लक्षण होते हैं दूसरा डाइयूरिसिस—मूत्राधिक्य प्रमेहको कहते हैं इसमें नित्य ही पाण्डुवर्ण अधिकमूत्र निकलता है शर्करा

पथरीका तो नाममात्र भी नहीं रहता बहुत प्यास, मूत्रका अधिक होना इस रोगके मुख्य लक्षण होते हैं। तीसरा काइलसयूराइन अर्थात् शर्करा याने मूत्राशयके मेद पदार्थका छोटा २ हिस्सा वह दूधके समान सफेद होकर निकलता है उसमें दूधके समान सफेद पेशाब, कभी २ लाली युक्त अगर अधिक बढ जावे तो कमजोरी, शरीरकी शीर्णता, कमरमें दर्द इत्यादि लक्षण दीखते हैं। चौथा मूत्रपिंडका केन्सर याने रक्तप्रमेह यह पीडा बहुत थोडे कारणोंसे उत्पन्न होती है जिसमें मूत्रके साथ रुधिरका आना सदैव कै होनेकी इच्छा और मूत्रकी परीक्षा करनेसे मूत्रमें रुधिरके कण दिखाई पडते हैं। पांचवाँ कलक्यूल सडायथिसिस अर्थात् पथरी शरीरके अनेक कारणोंसे पेशाबके साथ कोई कडी चीज देखी जाती है। वह कडी चीज कुछ दिनोंमें मिलकर पथरी हो जाती है। छटा रिनालकसक्यूब्राइ अर्थात् मूत्रपिंडमें कांकरी पेशाबकी गांठमें जो पत्थर देखे जाते हैं वह सब अक्सर यूरिकएसिड और अग्जेलेट औफ लाइमसे बनते हैं उसके छोटे २ भाग मिलकर बडे हो जाते हैं अथवा इकट्ठा हुवा खून काइब्रीन अथवा और किसी पदार्थके चारों ओर लिपटकर यह रोग उत्पन्न होता है इसके द्वारा कमरमें दर्द अधिक होना, मूत्रपिंडमें सुई चुभोनेकेसी पीडा, बीचमें कै होनेकी इच्छा, मूत्रके साथ खून या काइब्रीन मिला हुआ देखा जाता है, क्षण २ में पेशाब होनेकी इच्छा मूत्रपिंडमें जलन, शरीरमें ज्वर और कभी २ पेशाबमें पीबभी निकलती है, जब मूत्रपिंडमें कंकड इकट्ठे हो जाते हैं तो कुछ दिनोंके उपरांत पेशाबके रास्तेभी बाहर निकलने लगते हैं। यह कंकड अगर छोटे और साफ हों तो निकलनेके वखत रोगीको विशेष कष्ट नहीं होता, यदि बडे खरखरे और आडे तिरछे या तिकोने

हों तो पेशाबकी नलीमें अटककर मूत्रको रोक लेते हैं जिससे मूत्र न निकलनेके कारण मूत्र अपने स्थानमें अधिक इकट्ठा होकर मूत्रस्थानको खराब कर देता है जिस करके रोगीको अनेक प्रकारके उपद्रव होकर अंतमें प्राण त्याग करना पडता है । सातवां मूत्रस्थानका स्पाजम अर्थात् आक्षेप जैसे शरीरके और स्थानोंमें आक्षेप होता है वैसेही मूत्राशयमेंभी होता है । आठवां मूत्राशयका पेरालिसिस याने पक्षाघात, मूत्राशयकी कोई क्रिया बिगडकर स्नायुसंबंधी पीडासे दुर्बलता होकर मूत्रयंत्र निकम्मा हो जाता है पीछे उससे कोई काम नहीं हो सकता । नौवां लिथिक एसिड डायथिसिस अथवा इस्परमीटोरिया याने वीर्यप्रमेह इस रोगमें धातुका स्वाभाविक व्यतिक्रम हो जाता है, लिंगसे रात दिनमें कईबार थोडीहीसी रगड लगानेसे या मूत्रके साथ मूत्रके पहले पीछे धातु निकल पडती है । इसमें शरीर दुर्बल और अजीर्णके लक्षण भी दिखाई पडते हैं कारण इसका अति विषय करना, हस्तक्रिया, हरवक्त बुरे विचार करना, ऊंधा सोना, कफकारक पतली वस्तु अधिक खाना इत्यादि । इसका दूसरा भेद आगजेलिकएसिड डायाथिसिस होता है । शरीर और मनसे बहुत परिश्रम करना, अतिमैथुन करना, ठीक समयमें आहार न करना, पीठकी रीढ याने पीठपर जो १ हड्डी होती है उसमें किसी तरहकी चोट लगना इत्यादि कारणोंसे यह पैदा होता है । रोगी दुर्बल, निस्तेज, चेहरा फीका, शरीरमें फोडे, मिहनतमें थकना, स्वभावमें रूक्षता, रोगकी चिंता, रोगके निवृत्ति होनेकी आशाका नाश, पेट फूलना, सदैवाजीर्ण आहारके उपरांत कलेजा कांपना, कमरमें दर्द, मैथुनशक्तिकी इच्छाका कम होना, कभी कभी क्षयकासके लक्षण भी दिखाई पडना, हमेशा पेशाब करनेकी इच्छा, पेशाब गर्म २ उतरना तथा पेशाबमें कष्ट होना इत्यादि लक्षण होते हैं, इसका तीसरा

भेद फासेफेटिकएसिड डायाथिसिस होता है कमजोरी इसका प्रधान लक्षण और कारण है इस रोगमें सिफ कमरमें दर्द हुवा करता है। दशवां मूत्रपिण्डका व्यवाकेंल याने सोजाक इस रोगमें मूत्रपिंडमें अतिशय पीडा होती है हमेशा थोडा २ मूत्र निकलता है, शरीर कमजोर हो जाता है, हेक्टिकफीवर भी कुछ दिन हो जाता है, कुछ दिन पीछे फुसफुस या और किसी आंतमें पीडाका प्रकाश होता है, मूत्रका कम निकलना, कभी २ मूत्रद्वारसे पीब और खूनभी निकलता है। इसका दूसरा भेद पेरासाइटिक कहाता है। कभी मूत्रपिंडमें शूलका चलना होकर शूल बढ जाता है। मूत्रपिण्डमें अतिशय वेदना, कभी ऐसा मालूम होता है मानो मूत्रपिण्डके भीतर कोई फोडा होकर फूट गया। हमेशा पेशाब करनेकी इच्छा परंतु पेशाब करनेमें असमर्थता, पीछेसे मूत्रके साथ पीब और खून आने लगता है, इसके यह १० दश भेद डाक्टरी मतानुसार होते हैं।

होमियोपेथिकसे वीर्यप्रमेहके लक्षण।

दिन या रातमें सोते समय वीर्य निकल जावे यह कभी तो स्वप्नमें कल्पित स्त्रीसंसर्गसे और कभी विना कामनाके भी हो जाता है इस रोगीका शरीर और मन निर्बल हो जाता है। इस रोगमें मनुष्य कभी प्राणतक दे बैठते हैं, यह रोग हस्तमैथुन करने वा मनमें दिनरात स्त्रियोंकी चिंता करनेसे उत्पन्न होताहै।

होमियोपेथिकसे सोजाकके लक्षण।

स्त्रीसंसर्गके समयमें स्त्रीके मूत्रयंत्रसे या मनुष्यके मूत्रयंत्रसे एक प्रकारका विष उत्पन्न होकर इस रोगको उत्पन्न करता है। और स्त्रियोंके उत्पादनयंत्रके सदैव गीला रहनेसे भी इस रोगकी उत्पत्ति होती है। समुद्रके जलमें स्नान, अधिक परिश्रम, बहुत नशा खाना इस रोगकी उत्पत्ति होनेका कारण होता है, मूत्रयंत्रमें तक-

लीफ, संकोच बढाव, सदैवही मूत्र त्याग करनेकी इच्छा, पेशाब करनेके वक्त बहुत दर्द, कभी जलन, कभी तकलीफ होनेके कारण मूत्रस्थानका मुख बिलकुल बंद हो जानेसे मूत्रका आना बिलकुल बंद हो जाता है। विना कारणही कामोद्दीपन अधिक होनेके कारण अधिक दर्दका होना और मूत्राशयमें पीबके जम जानेसे ऊपरकी खाल चढ उतर नहीं सकती, पेटका फूलना, अंड-कोशोंका बढना उसीके साथ ज्वर और कैका होना अगर पीब निकलनेसे बंद हो गई हो या बहुत निकलने लगे जिसके कारण किसी नाडीकी गांठ वायुसे आक्रांत होकर भयावनी पीडाको उत्पन्न करती है और बाह्य प्रमेहका लक्षण कोई होमियोपेथिक डाक्टर कहते हैं कि मूत्रनलके ऊपरले भागमें छोटे २ फोडे होजाते हैं और उनसे पीब निकलता है उन्हींसे जलन और दर्द होता है कुछ दिनमें लाल हो जानेके कारण जलन होने लगती है। कभी ऐसा होता है कि रोगी मूत्रके वेगको धारण नहीं कर सकता। रोगीकी विना इच्छाके भी मूत्र निकल जाया करता है यह लक्षण होते हैं।

एलोपेथिकसे मूत्रयत्र और उसकी पीडाकी चिकित्सा।

रोगीको शयन कराकर गर्म पानी भरी हुई बोतलके द्वारा पेडूपर सेंक करे और गर्म पानीमें कमरतक रोगीको डुबावे बाफसे सेंके और पसीना लानेवाली दवा दे तथा जरूरतके माफिक जुलाब भी दिया जा सकता है।

जलन बन्द करनेके वास्ते डोवर्सपाउन्डर और अफीम देकर रोगीकी जलनको बन्द करे—

अगर देखे कि रोगी निर्बल है और गांठमें पीब पड गया है तो दूध अंडा सोरवासे रोगीकी बल इच्छा करता हुवा नीचे लीखी दवा देनी चाहिये।

टिंचर फेरीपर क्लोराईड	१॥ ड्राम
फास्फेट औफ जिंक	६ ग्रीन
टिंचर कलम्बा	८॥ ड्राम
ग्लीसरीन	४ ड्राम
पानी	३॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर एक दिनमें २ खुराक ३ दफे देनी चाहिये अथवा नीचे लिखी दूसरी दवा देवे—

टिंचर फेरीपर क्लोराइड	१॥ ड्राम
डाइल्यूट एसिड हाइड्रो क्लोरिक	१॥ ड्राम
टिंचर हाइयो सामस	२॥ ड्राम
इनफ्यूजन केयासिया	७॥ ड्राम

इसकी ६ खुराक बनाकर १ दिनमें तीन खुराक देवे। यदि पेशाबमें पानीका अंश अधिक हो तो—

टिंचर फेरिम्यूरियेटिस	१० बून्द
पानी	१ औंस

ऐसी १ मात्रा बनाकर दिनमें ३ दफे देवे अथवा एमोन्यूसलफेट औफ आयरन १६ से १० ग्रीनतक दिनमें ३ या ४ बार देना चाहिये।

यदि इन्द्रियके ऊपरकी खाल खराब होकर उतरती चढती नहीं हो तो गर्म पानीकी भाप देनी और धोना स्नान करना चाहिये।

यदि पेशाबके साथ कोई कडी चीज निकले जिसके कारण रोगी कमजोर हो गया हो तो नीचे लिखी दवा देवे—

एसिड फास्फरिस डाइल्यूट	१० बून्द
टिंचर सिनकोना	॥ ड्राम

टिंचर न्यूसिसवमिसि	५ बून्द
एकोवा मेन्थपियारेटा	१ औंस

इसकी १ खुराक बनाकर ऐसीही ३ खुराक दिनमें पिलावे और काडलिवर आयल और अफीम भी इस रोगमें जरूरतके माफिक दे सकते हैं । कोई २ डाक्टर इस रोगमें टानिकएसिड, औक्साइड आफ जिंक, आयोडाइड आफ पुटासियम, केम्फर, नाइट्रेट आफ पुटास आदि देते हैं, और ठीक पथ्य देकर रोगीके जीवनकी रक्षा करनी चाहिये तथा रोगीको बिलाडोना, मारफिया इत्यादि देकर रोगीका कष्ट कम करदेना चाहिये अथवा—

एमोनिया कार्बोनेटिस	३० ग्रीन
टिंचर लवनूड्यूलाकम्पजिटा	॥ औंस
इनफ्यूजनसिनकोना	७॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर ६ घण्टेके अन्तरसे देना चाहिये । घाव सुखानेके वास्ते नीचे लिखी दवा दे—

पुटासि ब्रोमाइडि	३० ग्रीन
मैग्नेसि कार्बोनेट	५० ग्रीन
पल्वेरिस गोयाईसि	४० ग्रीन

इसकी ६ पुडिया बनाकर १ दिनमें ही खिलादे ।

खून बन्द करनेके वास्ते ।

गैलिक एसिड	१२ ग्रीन
पल्व एपिकाक कम्पौन्ड ओपिआई	५ ग्रीन

ऐसी १ पुडिया ९ या १२ घंटेके अन्तरमें देना चाहिये और लघु भोजन करावे, शराब पीनेको न दे । यदि बहुतही आवश्यकता हो तो थोडी ब्राण्डी पानीके साथ मिलाकर देसकते हैं । मीठा बिलकुल देना ठीक नहीं । नाइट्रो म्यूरियेटिक एसिड

देनेसे विशेष फायदा दिखाई पडता है। जिंकभी फायदा करता है। किसी प्रकारकी खटाई नहीं खानी चाहिये। जब पथरी नीचे बैठ जावे उस वक्त गर्म पानीका सेंक उपकारी होता है।

जब रोगीको इतना कष्ट हो कि रोगी उसे सह न सकता हो तो क्लोरोफार्म सुंघानेसे फायदा होता है। कहीं कहीं बिलाडोना दिया जाता है। कोई कोई डाक्टर अफीम मारफिया देकर नींदका उपाय बताते हैं। इसमें सब दवाइयां सेवन करनेके बाद दूध और पानी मिलाकर पीवे अगर पथरी बडी होनेके कारण मूत्रद्वारसे न निकल सकती हो तो चीरकर निकालनेकी जरूरत पडती है परन्तु जिसको चीर फाडका अभ्यास न हो उसको इस कामके लिये साहस नहीं करना चाहिये। गर्म चीज खानेसे परहेज रखना उचित है।

मूत्रमें क्षार या अम्ल अधिक हो तो नाइट्रोम्यूरियेटिक एसिड, टिंचर बिलाडोनाकी १खुराक रोगीकी अवस्थानुसार देनी चाहिये।

स्त्रियोंको रजोधर्मके साथ यह रोग हो तो टिंचर केन्थराइडिस, टिंचर फेरिम्यूरियेटिस पानीके साथ मिलाकर दिनमें ३ दफे देना चाहिये। जननेन्द्रियमें औक्साइड औफ जिंक और बिलाडोनाकी पिचकारी देनेसे फायदा होता है।

कभी बालकोंको इच्छाके विना पेशाब होता हो तो बिलाडोना देवे, सबेरेही स्नान करावे और काडलिवर आयल पिलानेसे फायदा होता है।

जहां पथरीका प्रकोप हो अथवा और प्रकारकी औपसर्गिक पीडाके कारण मूत्र बंद हो गया हो तो सलाई डालकर पेशाब कराना चाहिये, परन्तु ऐसा न होने पावे कि रोगीका पेशाब बाहर निकल आवे नहीं तो रोगीके मरनेकी संभावना होती है। सलाई करनेमेंभी अभ्यासकी विशेष आवश्यकता है।

वीर्यप्रमेह हो तो नीचे लिखी दवा देवे ।

कारबोनेट औफ आयरन ५ ग्रीनके उनमान मलाई और शहतके साथ नित्य खानेसे बहुत फायदा होता है । खटाई और स्त्रीसंग इत्यादिसे बचना उचित है ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

रोगके आरंभमें एकोनाइट, जेलसिनम देवे । जब पीब निकले उस वक्त केनोबिस, सेटाइवा देवे । पीब लाली लिये हो तो भ्रिटसेलिनम देवे । यदि तकलीफ न हो और पीब पीला निकलता हो तो मर्क्यूरियस देवे । सादे रंगकी पीब निकले तो सल्फर देवे । कडा और दहीके समान पीब निकले तो पलसेटिला देवे मूत्र त्यागनेमें कष्ट हो तो केन्थराइडिस देवे । पेशाबके साथ खून निकले तो केन्थराइडिस और पलसेटिला देवे । मूत्रयंत्र नीचेको झुक गया हो तो एकोनाइट, कैम्फर, मर्क्यूरियस, परसेटिला देवे । मूत्रनलीके नीचेकी गांठ फूल गई हो तो मर्क्यूरियस, परसेटिला देवे । मूत्रद्वारमें जलन हो तो नाइट्रिकएसिड, सिनेबेरिसएसिड, फास्फारिक देवे । यदि इसी रोगके कारण बद उठ खडी हो तो मर्क्यूरियस, सिनेबेरिस देवे और गांठपर टिंचर आयोडीन १ दिनमें कईबार लगावे । अंडकोशमें तकलीफ हो तो क्लिमेटीस, नाइट्रिकएसिड देवे । मूत्रनलीके ऊपरले भाग तथा उसके ऊपरकी खालसे पीब निकले और कामोदीपन हो तथा खाज चलै, सूजन हो तो मर्क्यूरियस देना चाहिये । अगर भोजन करनेके उपरांत कच्चे नारियलका पानी पिलाया जावे तो बहुत फायदा होता है । वीर्य निकलनेके रोगमें पीब रोकनेवाली दवा दे सकते हैं । यह पीबभी १ तरह वीर्यकाही अंग होता है, इंद्रियमें घाव भीतरकी तरफ हो तो जिंक ४ ग्रीनको २ औंस पानीमें हल करके पिच-

कारी देना चाहिये। अंडकोश फूल गये हों तो जोंक लगाना कहे तथा सर्व प्रकारके सोजाकमें जोंक लगाना अव्यर्थ महौषधि है।

सिफिलिस याने उपदंश–आतशक।

एलोपेथिकसे उपदंशके लक्षण।

यह रोग प्रायः करके दूषित स्त्रीपुरुषके संसर्गद्वारा विषयके समयमें किसी न किसी स्थानसे एक प्रकारका विष शरीरमें प्रवेश कर जाता है उसीसे यह रोग उत्पन्न होता है यह विष जब शरीरमें प्रवेश करता है उस वक्त फोडे होनेसे पहिले भीतरही भीतर अपना दखल जमाता है। कभी २ शीघ्रही प्रकाशित होकर दिखाई पडने लगता है। मूत्रेन्द्रियके ऊपर छोटी छोटी फुनसी होकर कुछ समय उपरांत उसके फूटनेपर एक बडा घाव हो जाता है। उसमेंसे पानीके माफिक या गाढा पीब निकलने लगता है। जब दश या पंद्रह दिनतक यही हालत बनी रहती है उस वक्त रोगीको कई तरहके उपद्रव प्रतीत होने लगते हैं। बीच २ में ज्वर, भूखका कम लगना, कै होनेकी इच्छा, माथेमें दर्द, यह सर्व उपद्रव रातको बढते हैं और प्रातःकालमें कुछ स्थिरता प्राप्त होती है। कहीं कहीं देखा गया कि खालके ऊपर खुजली चलती है और शरीर लाल होकर गोल २ चकत्ते बन जाते हैं, डेढ दो मासके उपरांत यह रोग आंखके पलकोंपरभी हो जाता है। नख काले और टेढे पड जाते हैं किसी २ रोगीकी आंख, माथा और डाढीके बाल गिरने लग जाते हैं, गलेकी गांठें फूल जाती हैं, कभी २ दो तीन महीनेके उपरांत जीभ, होठ और हाथ पैरोंमें अकस्मात् फोडे हो जाते हैं मुख गला और त्वचापर अनेक प्रकारके विकार दिखाई पडते हैं। यदि शरीरमें कोई फोडा हो गया हो तो विषके कारण अच्छा नहीं होने पाता। और इस रोगमें

इन्द्रीपर तो थोडा बहुत जखम होताही है। कभी २ सारे शरीरमेंभी चकत्ते पड जाते हैं। कभी शरीर काला पडकर भीतरमें दाह रहने लगती है। यह एक रोग है परन्तु इसके द्वारा कई रोग पैदा हो जाते हैं। जैसे गांठिया, वातव्याधि, नाकका बैठना, तालू फूटना इत्यादि। कभी २ इसके कारण धातु बिगडकर अत्यंत निर्बलता और नपुंसकता हो जाती है। यह रोग ऐसा है कि एक दफे हुए पीछे उमरभर पीछा नहीं छोडता बल्कि मा बापसे बेटे बेटियों तथा पोते पोतियों तक होता है। होमियोपेथिकसे सिफलिसके लक्षण। इन्द्रियमें किसी प्रकारका घाव होनेसे इसको सिफलिस बोलते हैं। गुपचुप आराम होनेकी आशासे मूर्खोंका इलाज करानेके कारण बिगड जाते हैं और रुधिर खराब हो जानेके कारण जीनेकी आशा छोड बैठते हैं।

एलोपेथिकसे उपदंश चिकित्सा।

इसमें कई डाक्टर तो पारा देनेकी सम्मति देते हैं, कई डाक्टर पारा न देकर दूसरी दवाओंसे आराम करना चाहते हैं, परंतु निःसंदेह इस रोगमें पारेकी अपेक्षा कोई दवा उपकारी नहीं, न इसके समान शीघ्रफल दिखानेवाली कोई दवा है। अत एव उचित रीतिसे पारा व्यवहार करनेसे कोई क्षति नहीं होती।

आरंभ होतेही केलोमेल देकर करडा जुलाब दे और घावोंपर नाइट्रक ऑफ सिलभर लगावे और मर्क्यूरियस या सोलो विलस देना योग्य है। यदि हड्डियोंमें दर्द हो तो केलीहाई देना बहुत फायदेमंद बताते हैं। घाव दूर करनेके वास्ते—

हाईड्रार्ज कमक्रिटा	६ ग्रीन
पल्वरिसइपिकाक कम् उपियाई	६ ग्रीन

ऐसी १ मात्राको आठ घंटेके अंतरमें देना चाहिये अथवा—

पिल्यूलाकेलोमेनस कंपजिटा	५ ग्रीन
एक्सट्राक्ट उपिआई	॥ ग्रीन

इसकी १ गोली बनाकर दोनों वक्त खानी चाहिये इसका नाम कम्पौन्ड कैलोमेलपिल है। घाव दूर करनेके वास्ते–

ग्लिसरिन	॥ ग्रीन
पोटासआयोडाइड	२ से १२ ग्रीनतक
टिंचरएकोनाइट	२२ बूंदतक
वाइनमइपिकाक	१॥ ड्राम
सक्सीटेरक्सी	५॥ ड्राम
डिकक्सनसारसा कंपजिटा	७॥ औंस

यह छः खुराक दवा हुई एक दिनमें ३ खुराक पीनी चाहिये। अथवा खानेसे पहले किसी खुशबूदार चीजके साथ २ से १० ग्रीनतककी मात्रासे आयोडाइडपोटास पीनेसे विशेष फायदा होता है। परंतु इस पुटासको बहुत दिन सेवन करनेसे कै, खांसी, आंतोंका उत्तेजन, ज्वर इत्यादि उपद्रव हो उठते हैं। इसलिये जब यह उपद्रव दीख पडैं उस वक्त पीना बंद करदे। शरीरमें चकत्ते पड गये हों तो–

हाइड्राजिराई ब्रोमाइड	॥ ग्रीन
एक्सट्राक्टी सारसालिकूवीड	॥ ड्राम
डिकोक्सन सारसा कम्पजिटा	१॥ औंस

यह दवा दिनमें ३ दफे पीनी चाहिये।

इस रोगमें जो घाव हो जाते हैं उनको धोनेके वास्ते अनेक प्रकारके लोशन बने हैं परंतु नीचे लिखा लोशन सबसे उत्तम देखा गया है इसके द्वारा घाव धोना अथवा पट्टी चढाना घावको शीघ्रही आराम कर देता है।

लाइम वाटर	१ औंस
कैलोमेल	८ ग्रीन

इस हिसाबसे मिलानेपर जब काला हो जावै उस वक्त कपडा भिगोकर घावोंपर धरै अथवा जब घाव लाल हो जावै उस वक्त आयडोफार्म बुरकाना बहुत जल्दी घावोंको सुखा देता है अथवा नीचे लिखा हुवा मरहम घावोंको सुखानेको सर्वोपरि है—

सुपारीकी भस्म	॥ ड्राम
पीली कौडीकी भस्म	१॥ ड्राम
कत्था सफेद	२ ड्राम
आयोडोफारम	॥ ड्राम
कैलोमेल	१ ड्राम
घृत १०१ बार पानीसे धोया हुवा	१ औंस

इन्होंको मिलाकर घावोंपर लगावे और इसी दवाको घृत मिलाये विना सूखीही उसके ऊपर दवा देवे तो गिने दिनोंमेंही घाव सूखतेही दीखेंगे।

होमियोपेथिकसे सिफलिस चिकित्सा ।

पीबसहित बडे घाव होनेके कारण बिछौनेमें दाग पडते हों तो मार्कफरस या मर्क्यूरियस देनेसे फायदा होता है जब पारा देनेसे फायदा न हो तो सिनावारिस देवै । जिन घावोंका किनारा ऊंचा हो खून पडनेकी सम्भावना हो तो ऐसे स्थानमें नाइट्रिकएसिड देनी चाहिये। शरीरमें चकत्त पड गये हों तो एकोनाइट देना चाहिये । जब छोटे २ घावोंसे पीब निकलै और बढताही जावै तब अर्जेन्ट नाइट देना चाहिये। घावोंके किनारे कच्चे मांसके समान हों तो मर्क्यूरियस देना चाहिये।

इम्पोटन्सी-ध्वजभग याने नपुंसकता ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

मानसिक चिंता, अनुचित रूपसे इन्द्रियों चलाना, रोजगार छूटना, मानसिक पीडा, शोक, द्वेष, प्रबल रिपुओंकी अधीनता, किसीके ऊपर अतिशय आशक होना इत्यादि नपुंसक होनेके मुख्य हेतु हैं। इन कारणोंसे उत्पन्न हुए ध्वजभंगके दूर होनेकी आशा की जा सकती है। मनुष्यकी मैथुन शक्तिका कम होना, इच्छा करनेपरभी इन्द्रियका उद्दीपन न होना, या कुछ होकर तत्काल शिथिल हो जाना इत्यादि लक्षण होते हैं।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

वीर्यको बहुत खर्च करनेसे, भय, शोक, मनकी चंचलता कडवा, तीखा, मादक चीजोंके अत्यंत खानेसे यह रोग कामोद्रेक होनेपरभी वीर्यपतन वा जननेन्द्रियमें उत्तेजना नहीं रहती। मूत्रेन्द्रियमें उत्थानशक्तिभी नहीं रहती, किसी काममें मन नहीं लगता और रोगीके शरीरका पुरुषार्थभी कमती हो जाता है।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

यदि ज्वरादिक किसी व्याधिके कारण नपुंसक हो गया हो तो बलकारक औषधी देनेसे दूर हो सकती है जैसे नक्सओमिका, केन्थराइडिस, इण्डियनहेम्प, हाइयोफास्फेट आफ लाइम इत्यादि पुष्टिकारक दवा देवे।

माथेके पिछले भागमें चोट लगना या और किसी भारी कारणसे यह रोग हुआ हो तो आराम होना मुश्किल है।

बहुत तमाखू पीनेसे, परिपाकशक्ति न्यून होकर वा अनियमित इन्द्रिय सेवा करनेसे वा मूत्रेन्द्रियमें अनेक प्रकारके रोग होनेसे यह रोग हुवा हो तो—

इष्टिकिनिया ॥ रत्ती
दूधमें भीगा छुहारा १ नग

मोठके बराबर गोली बनावे दोनों वक्त १-१ गोली दूधके साथ दिया करै तो फायदा हो जावैगा अथवा-

कौनैन ॥ ड्राम
टिंचर इस्टील २॥ औंस
इष्टिकिनिया । रत्ती
पानी १६ औंस

मिलाकर नित्य १ औंस दिनमें ३ दफे पीना चाहिये अथवा-

एक्सट्राक्ट जनसन ३९ ग्रीन
एक्सट्राक्ट नक्सवोमिका ३ से ९ ग्रीनतक
कुइंन सल्फटिस १८ ग्रीन

इसकी १२ गोली बनाकर सुबह और शामको एक एक गोली खानेसे वीर्य गाढा होकर पुरुषत्व प्राप्त होता है । अथवा-

फेरियेटि एमोनि नाइट्रिस २० ग्रीन
लाइकर ष्टिकिनिया १ डामका तिहाई
इनफ्यूजन कैशिया ४ औंस

इसकी ४ खुराक बनाकर दिनमें २ बार पीनेको देवे अथवा-

सिरप फेरि आयोडाइड २० बूंद
काडलिभर आयल २ डाम
इनफ्यूजन कलम्बा १ औंस

ऐसी १ खुराक दिनमें २ दफे पीनी चाहिये अथवा फास्फरिक एसिडको ५ बूंदके हिसाबसे दूध या मलाईके साथ एक दिनमें ३ दफे पीनेसे फायदा होता है। नपुंसक और वीर्य प्रमेहके वास्ते फास्फरसपिल उत्तम दवा है जो कई रीतिसे बनाई जाती है ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

धारणशक्तिकी कमी हो तो सल्फर देनेसे वीर्य बहुत देरतक रुकने लगेगा और किसी प्रकारकी नपुंसकता हो तो फास्फरस, नक्सओमिका, चायना देवे।

अंडवृद्धि।

एलोपेथिकसे लक्षण।

अंडकोष वातरोगाक्रांत होकर नीचेको या पीछेकी "तरफ" बढ़-जाते हैं, इनका बोझ लगभग १० से १२ औंसतक हो जाता है।

होमियोपेथिकसे लक्षण।

यद्यपि इस रोगकी उत्पत्तिके अनेक कारण हैं तथापि इसका मुख्य हेतु निकम्मा बैठा रहना और अधिक घी दूध खाना ही होता है इस रोगमें कभी २ ज्वर भी हो जाता है।

एलोपेथिकसे अंडवृद्धिकी चिकित्सा।

पहले अंडकोशोंके ऊपर टिंचर आयोडीन लगाना चाहिये। यदि इससे फायदा न हो तो नीचे लिखी रीति करै।

टिंचर आयोडीन और पानी दोनोंको मिलाकर उनको अंड-कोशोंपर डालै अथवा—

हाइड्रार्जिराई आयोडाइड रुब्रि	८ ग्रीन
आंगयेन्टी सिम्पलाईनिस	१ औंस

अच्छी तरह मिलाकर अंडकोशोंपर मालिस करै इसका नाम रेड आयोडाइड आयन्टमेन्ट है यदि इससे भी फायदा न हो तो अंडकोशोंको छेदकर पानी निकालदेना चाहिये।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

अंडकोशोंकी बढवार बंद करनेके वास्ते मर्क्यूरियस और दर्द दूर करनेके लिये आर्सनिक देना चाहिये।

इस्काराफ्यूला अर्थात् ग्रन्थि ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

त्वचाके भीतर एक तरहका मादा पैदा होकर अनेक ठौर गांठेंसी बंधकर फूल जाती हैं और पककर फूटती भी हैं । प्रायः करके यह रोग जुखाम और उपदंशके कारणोंसे हुवा करता है । तथा मा बापके वीर्यदोषसे भी होता है ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

अलसीका पुलटिस बांधना गांठको नर्म करके बैठा देती है अगर बैठने लायक नहीं होगी तो पकाकर फोड देती है तथा मवादको शुद्ध करके घावको भी भर लाती है यह एक पुलटिसके बांधनेसेही सब काम हो जाते हैं अथवा मुरक्क बात फौलाद जैसे कार्बोंट औफ आयरन, टिंचरस्टील देना भी उत्तम है । और जुलाब देना भी उचित है ।

हिमरेडस या हिमारोइड अर्थात् अर्श ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

बहुत घोडेपर चढना अथवा दस्त लानेवाली दवा बार २ खाना, मूत्र और जननेन्द्रियकी पीडासे यह रोग पैदा होता है । गुदाके नीचे खूनको लेजानेवाली नाडीमें किसी प्रकारका व्यतिक्रम हो जानेको अर्श कहते हैं यह २ प्रकारका होता है । एक इन्टरन्याल अर्थात् भीतरका, गुह्यके भीतर हो तो उसे भीतरका बोलते हैं ।

दूसरा एक्स्टारन्याल याने बाहरका, जो नीचे बाहरके तरफ हो उसे बाहर बोलते हैं । यदि सुर्ख रंगके मस्से होकर खून पडे तो उसे खूनी बोलते हैं, यदि पीडा, खाज, सूजन अधिक हो तो

उसे बादी बोलते हैं और दस्तकी कबजी तो इसका प्रधान लक्षण होताही है।

होमियोपेथिकसे लक्षण।

अनेक मनुष्योंका विश्वास है कि कोष्ठबद्ध होने वा निकम्मा बैठा रहनेसे यह रोग होता है। इस रोगमें गुदाके ऊपर अथवा भीतर मस्से हो जाते हैं। उनमेंसे कभी खून निकलता है इस रक्त-स्रावके लिये कोई ठीक समय निर्धारित नहीं है। चाहे जब पडने लगता है।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

अगर रोगी दुर्बल हो गया हो तथा खून ले जानेवाली नाडी शिथिल हो तो बलकारक औषधी हलकी तथा पुष्ट करनेवाली चीज खवावे और हलका जुलाब दे, भारी जुलाब देनेकी कुछ आवश्यकता नहीं जैसे–

वाईटार्ट्रट आफ पुटास	३० ग्रीन
प्रेसिपिटेटेडसलफर	३० ग्रीन
कन्फेक्सन औफ सेना	६० ग्रीन
सिरप	॥ औंस

इसकी १ मात्रा बनाकर एक दिनके अन्तरसे रातको खिलानी चाहिये। बुढापे या जवानीके कारण अर्श हो तो–

कन्फेक्सन औफ क्यूवेब	७० ग्रीन
कन्फेक्सन औफ सेना	७० ग्रीन

इसकी १ खुराक बनाकर पिलावे। दस्त होनेके पीछे गर्म जल द्वारा गुदाको धोनेसे फायदा होता है, भीतर मस्से हों तो–

सलफेट औफ आयरन	१ ग्रीन
साफ पानी	१ औं

इन्होंको खूब मिलाकर गुदामें पिचकारी देवे, अगर बाहर मस्से हों तो कार्बोलिक लोशन लगाना अथवा हैमोमिलिशलेशनसे धोना चाहिये ।

मस्सोंमें यदि जलन हो तो गर्म पानीसे धोना, पुलटिस वा पोस्तके डोडोंका सेंक करना अगर उचित समझे तो जोंकभी लगाई जा सकती है अथवा जिन औषधोंसे घाव हो जाता है जैसे नाइट्रिक एसिड इत्यादिके द्वारा जला देवे यह भीतरके मस्सोंके वास्ते उपकारी है और बाहरके मस्सोंको छुरीसे काटदे परंतु बहुतसे लोग काटना नहीं चाहते कारण कि काटकर उनका खून बंद करना सहज नहीं होता जो शस्त्रविद्यामें निपुण न हो उसको काटनेका साहस नहीं करना चाहिये बाहरके मस्सोंकी चिकित्सा करनेसे पहले—

कनफेक्सनिकसेना	१ औंस
पुटासि टार्टासिस	१ औंस
साक्सिटा राक्ससि	१ औंस

इस दवाको ३ ड्राम देकर कोठा साफ करलेना चाहिये पीछे दवा देना योग्य है ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

साधारण अर्शमें प्रतिदिन सबेरे नक्सवोमिका और रात्रिमें सलफर देवे, खून बंद करनेके वास्ते रातमें हेमामिलस, सबेरे नक्सवोमिका देवे । मस्सा लाल और फूला हो, दर्द और खून जारी हो तो एकोनाइट देवे । अत्यंत दर्द हो तो आर्सनिक देवे परंतु संपूर्ण अर्शोंमें पहले काष्ट्रायलसे कोष्ठको शुद्ध करके हेमामिलिस लोशनसे मस्सोंको धोवे पीछे दवाका प्रयोग करे तो बहुत जल्दी फायदा होता है ।

लेप्रा अर्थात् कुष्ठ।

एलोपेथिकसे लक्षण।

यह रोग संक्रामक है अर्थात् एकसे दूसरेको लग जाता है। इसके कई भेद हैं लेप्रा अर्थात् गलितकुष्ठ १, इस्केविस २, एकेरसफलिक्यूलोर्म ३, थिराएसिमवालाउस ४, ट्रिकिनास्पा-ईरोलिस ५, टिनियासार्सिनेटा अर्थात् दाद ६, ल्यूकोडारमा अर्थात् श्वेत कुष्ठ ७, इस्केवेज याने गीली खाज ८, प्रोराइगो याने रूखी खाज ९, ये ९ भेद होते हैं।

१ लेप्रा अर्थात् गलितकुष्ठके लक्षण।

पहले छोटे बडे लाल रंगके शरीरपर चकत्त पड जाते हैं। साधारणतः यह चकत्ते संधि अर्थात् जोडोंमें देखे जाते हैं। कोहनी घोटू अथवा इन्होंके समीपके स्थानोंमें देखे जाते हैं और धीरे २ सब शरीरमें फैल जाते हैं। पीछे इन चकत्तोंसे सफेद या लाल पानी निकलने लगता है, उसमें बदबूभी आती है। इसके सिवाय घावोंमें दर्द होनेके कारण रोगी व्याकुल हो जाता है। ऐसे रोगीके आराम होनेकी आशा छोड देनी चाहिये। एक दूसराभी इसी जातका होता है जिसमें सफेद दाग होकर खुजली उठती है पीछे उन्होंमेंसे पीब बहने लगती है।

२ इस्केविसके लक्षण।

हाथकी अंगुलियोंके भीतर संधिस्थान और मुँहके सिवाय सब शरीरमें फोडे हो जाते हैं। परन्तु फोडे होनेसे दो तीन दिन पहिले शरीरमें खुजली आना प्रारंभ होता है उसके बाद लाल या धूमरे रंगके फोडे देखे जाते हैं।

३ एकेरसफलिक्यूलोर्मके लक्षण ।

पसीनेसे इस कुष्ठकी उत्पत्ति होती है, इस करके कुछ रोगीको बडा भारी कष्ट नहीं होता, कभी छोटे और कडे फोडे दिखलाई पडते हैं ।

४ थिरायासिमवालाउसके लक्षण ।

देह खुली रहनेसे, चर्म रोगसे खाल बिगडकर यह रोग होता है इसमें सब शरीरके बाल गिर पडते हैं ।

५ ट्रिकिंनास्पाईरोलिसके लक्षण ।

इस रोगमें शरीरके भीतर एक प्रकारका कीडा पैदा हो जाता है जिस कीडेके कारण नींद नहीं आती भूख कम लगती है और इसमें प्रायः करके निमोनिया ज्वर होता है । कभी कभी टाइफस फीवरके लक्षण दिखाई पडते हैं, जिस करके रोगीके प्राण नष्ट हो जाते हैं ।

६ लिनियासार्सिनेटा अर्थात् दादके लक्षण ।

खालके ऊपर चकत्ते दीखते हैं उनमेंसे खाज आया करती है इसे रिंगवर्म भी कहते हैं ।

७ ल्यूकोडारमा अर्थात् श्वेतकुष्ठके लक्षण ।

खालमें और कोई विकार न उत्पन्न होकर केवल सफेदी आजाती है, खालकी कमजोरी इस रोगका मुख्य कारण है। पहले यह राग प्रायः करके हाथ पैरोंमें देखा जाता है। स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंको यह रोग अधिक होता है। खूनमें कफका भाग त्वचाके समीप अधिक होना ही इसका मुख्य कारण है ।

८ इस्केवेज अर्थात् गीली खाजके लक्षण ।

इसमें पहले खुजली होकर महीन महीन सफेद फुनसी निकल आती हैं उनके फूटनेपर पानी निकलता है और हाथ तथा कूलों-

पर प्रायः करके होती है। कारण रुधिरविकार या खुजलीवालेका स्पर्श।

१ प्राराइगो याने सूखी खाजके लक्षण।

इस रोगद्वारा सारे शरीरमें सूखी खाज चला करती है कभी खाज आकर शरीर लाल हो जाता है। कभी भूसीसी उडने लगती है, कारण बदनमें खुश्की, रुधिरमें क्षारका भाग विशेष हो जाना इत्यादि कारण होते हैं। इस रोगमें होमियोपेथिक मतानुसारभी येही लक्षण होते हैं कुछभी भेद नहीं है।

एलोपेथिकसे कुष्ठरोगकी चिकित्सा।

पहले शरीरको गरम पानीसे वा साबुनसे धोकर साफ रक्खे पीछे—

डिककसन एलोज कम्पौंड	४ औंस
इनफ्यूजन जेंजन कम्पौन्ड	४ औंस
लाइकर पुटास	१॥ ड्राम

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें २ दफे देवै अथवा—

पेप्सिन पोर्शि	३२ग्रीन
एक्सट्राक्ट एलोज वावडोंन्सस	८ ग्रीन
लिसरिन	गोली बनानेके लायक

इसकी ८ गोली बनाकर नित्यही भोजनके समय १ गोली खावै या—

लाइकर आर्सनिकेलिस	३० बूंद
टिंचर केन्थराईडिस	॥ ड्राम
टिंचर ओरेन्साई	४॥ ड्राम
पुटास आयोडाइड	१८ से ३० ग्रीनतक
इनफ्यूजन ओरेंसाइ	५॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर भोजनके पीछेही दिनमें २ खुराक पिलानी चाहिये अगर कच्छू होवै तो जिसमें फोडे हो जाते हैं उसे गर्म पानीसे धोकर उनपर गन्धकका मरहम लगावे अगर १ ड्राम कार्बोनेट आफ पुटास मिलाले तो बहुत जल्दी आराम होगा।

दद्रु होवे तो नीचे लिखी दवा काममें लावे ।

गन्धकका मरहम	१ ड्राम
क्रियोसोट	१ ड्राम
कैलोमेल	१ ड्राम

एक साथ मिलाकर दादोंपर रगडे अथवा—

गन्धकका चूर्ण	४ ड्राम
सुहागा	॥ ड्राम
हाइड्रो क्लोरेट औफ एमोनिया	१ ड्राम
तारपीनतेल	१ ड्राम
चरबी	२ औंस

अच्छी तरह मिलाकर मालिश करै ।

श्वेतकुष्ठचिकित्सा ।

और औषधोंमें लोह मिली औषधके साथ आर्सनिक, बाईक्लोइड आफ मर्करी लोशन, टिंचर आयोडीन, गन्धकका मरहम काममें लाना चाहिये अथवा पहले सफेद दागोंपर बिलस्टर लगाकर पीछे संखिया ५ मासे मोम तेल घृत ५ मासे इन्होंका मरहम बनाकर लगावे ।

गीली खाजकी चिकित्सा ।

गन्धकका तेजाब १ भाग, जैतूनका तेल १० भाग मिलाकर लगावो अथवा लोहबान ४ मासे कोईभी स्पिरिटमें हल करके

गन्धकका मरहम आधी छटांक, मक्खन २॥ तोले मिलाकर लगाना चाहिये।

सूखी खाजकी चिकित्सा।

नींबूके रसमें तेल मिलाकर मलना अथवा ख खसका तेल मलनेसे सूखी खाज दूर हो जाती है।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा।

एक सप्ताह तक सुबह और शामको आर्सेनिक देवे। बीमारी बहुत हो तो हाईड्रासटिस देवे। पैरोंमें फोडे हों तो हिमामिलिस देवे। सवेरे और रातको सिलिशिया प्रयोग करे। शरीरमें चकत्ते हों तो सलफर देवे। दाद हो तो रातको सिपिया, सवेरे आर्सेनिक देवे। दादपर सिपिया ओयन्टमेन्ट लगावे। कीडे हों तो उन्हें पुलटिससे पकाकर फोडकर पीब निकाल दे। इसके सिवाय आर्निका देवे। बहुत दर्द हो तो एकोनाइट देवे। फोडे बिलकुल दूर करनेको सलफर देवे। अगर घावोंसे खून निकलता हो तो ठण्ढे पानी या बरफसे धोकर आर्निकालोशन देवे। जहर खानेसे कोढके फोडे हों तो विलाडोना मर्क्यूरियस देवे। जाडा लगै तो हियार देवे।

ड्रप्सि याने शोथ।

एलोपेथिकसे लक्षण।

स्वस्थ शरीरसे एक प्रकारका जलीय पदार्थ निरंतर निकल कर सूखने न पावे। किसी कारणसे यह जलीय पदार्थ अधिक होकर या उसकी शोषण शक्ति कम होकर सूजनको उत्पन्न करता है, शोथयुक्त स्थान फूलकर साफ हो जाता है। होमियोपेथिकसे भी शोथके यही लक्षण पाये जाते हैं।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

पहले कोष्ठ परिष्कार करना आवश्यक है जिसके वास्ते नीचे लिखी दवा पीवे-

मैग्नेसिया सल्फेटिक	१२० ग्रीन
मेना	६० ग्रीन
टिंचर जेलप	१॥ ड्राम
एकोना कार्वी	१॥ औंस

इसको पिलाकर तीन घंटेके बाद-

केलोमेलनस	५ ग्रीन
पालवेरिस जेलप	१५ ग्रीन

एक साथ मिलाकर पिलादे पेशाब ठीक लानेके वास्ते-

टिंचर सिलि	१॥ ड्राम
टिंचर कैम्फर कम् उपियाई	४ ड्राम
लिकारिस एमोनिया एसिटेटिस	४ ड्राम
डिक्कक्सन स्कोपारियाई	८ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें ३ दफे सेवन करावे ।

प्रायः सब प्रकारके शोथमें टिंचर आयोडीन व्यवहारमें आता है । शोथकी यह अव्यर्थ महौषधि है । उपदंशके कारण भी शरीरमें शोथ या गिलटी उत्पन्न हो गई हो तो इससे उत्तम दूसरी औषधि नहीं है । होमियोपेथिकके मतसे प्रायः सल्फर देनेसे फायदा होता है और टिंचर आयोडीन भी लगाते हैं ।

एपोप्लेक्सी अर्थात् संन्यास-मूर्च्छा ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इस रोगमें अकस्मात् बेहोश नहीं हो जाता, स्पर्शका अनुभव और इच्छा शक्ति नहीं रहती, इस रोगमें आक्रांत होनेसे पहिले रोगीके

माथेमें दर्द, माथा घूमना, माथा भारी रहना, स्मरणशक्तिका न होना, मानसिक क्रियाका गोल योग, बात कहनेमें असमर्थ, मुख लाल, कानमें कुछ २ शब्द इत्यादि लक्षण देखे जाते हैं । इसके ४ भेद औरभी हैं । पहिला केटेलेशी याने मूर्च्छा इसमें मनुष्य अचानक बेहोश होकर जा पडता है अगर होता हो तो जिस तरह शरीर पडा हो उसी तरह पडा रहना और मूर्च्छा समयमें रोगीको ज्ञान नहीं रहता, मीठा मीठा श्वास लेता है, फुसकार मारता है, भीतरका श्वास लेनेमें कष्ट मुख फूला, हाथ पैर क्रियारहित, किसी २का आधा शरीर निश्चल और आधा चलायमान होता है, नाडी कठिन और वेगवती, कभी स्वाभाविक अपेक्षा थोडी बहुत हो जाती है रोगी बात कहनेमें असमर्थ होकर भी संकेतसे आशयको प्रकाशित करता है । दूसरा--कनकसन आफ ब्रेन अर्थात् मस्तिष्क विकंप । गरमीके दिनोंमें सूर्यके सन्मुख माथा खुला रखनेसे यह रोग उत्पन्न होता है तब रोगी अकस्मात् गिर पडता है खाल गर्म, माथा घूमना, नेत्र लाल, कमजोरी, कै होनेकी इच्छा, बारंबार मूत्रत्यागेच्छा, कभी कभी हँस उठता है या कभी खडा होकर मानो किसीके साथ बात करता है, श्वास जल्दी २ चलने लगता है, नाडी शीघ्रगामिनी हो जाती है, इस रोगमें शरीरकी गरमी ११२ डिगरीतक हो जाती है । तीसरा--कन्वेलसन् या अक्षेप । इसके आक्रमणसमयमें शरीर कडा और अचल हो जाता है, होठ टेढे, माथेकी खाल सिकुडी, मुखका रंग पहले लाल फिर नीला, श्वास विषम, नाडी जल्द गामिनी, विना इच्छाके मल मूत्र त्यागना दो एक मिनटके बाद शांति होकर रोगका फिर आक्रमण होता है या शांतिही रहती है । जब रोग संघातिक हो जाता है तब मृत्यु हो जाती है । कभी कभी दिनमें ५--६ दफेतक आक्रमण होता है और २ घंटेतक ठहरता है । लडकपनके फोडे, झिल्लीमें

जलन, निमोनिया आदि रोगोंसे यह रोग होता है। चौथा हिष्टि-रिया--यह रोग आंतोंके गोल योगसे होता है, गलेके भीतर मानो कोई गोलीसी चीज अटकीसी मालूम देती है, स्नायु धातुवाली स्त्रियोंको यह पीडा जवानीमें अकसर देखी गई है। आक्रमण-समयमें रोगी प्रयः संपूर्ण रूपसे ज्ञानशून्य होते नहीं देखे गये मूर्च्छित होकर जमीनपर गिरनेके वक्त अपनेको चोट लगनेसे बचनेकी चेष्टा करता है, मुख बिगड जाता है, आंखोंके तारे बिगड जाते हैं, बहुत जांचनेसे मालूम पडता है कि मानो रोगी किसी चीजको देख रहा है। इस रोगसे मुखमें झाग नहीं निकलते, यह २ भेद मूर्च्छाके और होते हैं।

होमियोपेथिकसे एपोप्लेक्सी अर्थात् मूर्च्छाके लक्षण।

रोगी अकस्मात् अचेत और आत्मज्ञानशून्य तथा स्फुरणक्रि-यासे रहित हो जाता है, नाडीकी गति मंद श्वास सघन और मुखकी विकृति हो जाती है, इनही लक्षणोंको मुख्य माना गया है। हिष्टिरियाके लक्षण इस प्रकार बताते हैं कि इस रोगमें रोगी बात समझ सकता है परंतु कहनेकी सामर्थ्य नहीं रहती आंखोंके पलक कांपते हैं।

एलोपेथिकसे मूर्च्छाकी चिकित्सा।

यह रोग २ प्रकारसे आराम हो सकता है एक वह जिन कार्योंके करनेसे रोग बढता है उनका न रना। दूसरा यह कि जब रोगका आक्रमण हो उसी समय चिकित्सा करे अर्थात् ठंढे पनी या केवडेका छींटा देना, सुगंध सुघाना माथेपर कपूर और चंदन लगाना चाहिये और बहुत परिश्रम करना बहुत स्त्रीसंग, बहुत शराब पीना, मनकी चंचलता, शरदी गरमीका सेवन, मल मूत्रादिकोंके वेगको रोकना, गर्म जलसे स्नान, माथा नीचा करके

चिन्ता करना इन सब बातोंको त्याग करना चाहिये। येही सब बातें रोगीको परिमित रीतिसे काममें लानी चाहिये।

माथेमें दर्द, माथा घूमना, माथेकी नस फडकना इत्यादि हो तो बीच २ में एकाध जुलाब देना चाहिये।

यदि नाडी पुष्टि और ग्रीवाकी नस फूली हुई और फडकती हो मुखमें शोथ और लाल होकर रोगी बेहोश होगया हो तो ग्रीवाके पीछे बिलष्टर लगाना और पुष्टिकारक चीजें खानेको देना चाहिये, यदि ऐसी अवस्थामें उसके मरनेकी आशंका हो तो कितने ही डाक्टरोंका मत है कि थोडासा खून निकलवा दे अर्थात् फस्त खुलवा देनेसे फायदा हो सकता है परंतु जिस अवस्थामें रोगीकी नाडी दुर्बल हो तो कदापि फस्त खोलनेका अवलम्बन न करना चाहिये।

सब प्रकारके मूर्च्छा रोगीको ठंढे और हवादार मकानमें रखकर उसका मस्तक सदैव ऊपरको रखता चाहिये। ब कि बरफसे माथा ठण्ढा रखनेकी चेष्टा करता रहै। इस रोगमें जितना उत्तम जुलाब दिया जावेगा उतना ही रोगीको विशेष लाभ होगा अर्थात—

मेग्नेशिसलफ	२ ड्राम
मेना	१ ड्राम
टिंचरजेयेफा	२ ड्राम
एकोवा मेन्थपियः	१॥ ड्राम

इसकी १ खुराक बनाकर सबेरे ही पिलादे अगर इस दवाको न खा सके तो चीनीके साथ २ या ३ बूंद ओयल क्रोटन देवै और नीचे लिखी दवाकी पिचकारी लगावे।

ओयल क्रोटन	६ बूंद
ओयल रिनिस	१ औंस

ओयल टिरिविंथ	२ ड्राम
डिककसन होर्डियाई	८ औंस

इसकी पिचकारी माथे या ग्रीवापर रोगके आक्रमणसमयमें देना चाहिये ।

रोगीकी बेहोशी याने अचेतन अवस्थामें किसी प्रकार देहका उत्तेजन या उत्तेजक औषध न देवे । दूध आदि पुष्टिकारक औषधि देनी चाहिये । मद्य पीना और स्त्रीसंसर्ग न होनाही अच्छा है ।

शरदी गरमीके प्रतिकारको दूर करनेके वास्ते १० से २० डिगरीतकके ठंढे मकानमें रोगीको रक्खे । माथा मुँडवाकर ग्रीवा और मस्तकपर ठंढे पानीके छींटे इत्यादि शीतल प्रयोग करै । रोगीको गीले कपडेद्वारा लपटनेमेंभी क्षति नहीं है । ठंढा पानी और शर्बत पिलावै । आयल क्रोटन पिलाकर या पिचकारी देकर रोगीको दस्त कराने चाहिये । जिसमें कोठा साफ हो जावे अथवा काष्ट्रोयलकी पिचकारी देकर तारपिनतेल देवे । होशमें न आवे तो लाइकर लिटिका विलष्टर देवे ।

कनवलसन होवे तो रोगीको क्लोरोफार्म सुंघावे परंतु इस दवा को सावधानीसे सुँघाना चाहिये ।

खूनकी गरमीको दूर करनेके वास्ते शरीरपर बरफ फेरै, माथे पर ठंढा पानी डाले, यदि नाडी ठंढी हो तो शीत प्रयोग करना उचित नहीं । यदि इस प्रकार रोगी आराम होकर फिरभी रोगसे आक्रमित हो तो शीतल देशमें रहना और पुटासआयोडाइड काममें लाना चाहिये ।

कोरिया हो तो पुष्टि करनाही उत्तम इलाज है । पूरे जवान आदमीको ऐसी पीडा होनेसे पाकक्रिया और मूत्र मलादिकके प्रति दृष्टि रखनी चाहिये और—

सोडीहाई फास्फेटी	४ ग्रीन
इनफ्यूजन चिरायता	११। औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें २ दफे देनेसे कोरवा दूर हो जाता है और खाली काडलिवरओयल देनेसेभी वह रोग शांत होता है। नदीके जलमें स्नान और साफ हवा खानाभी उत्तम है, हिष्टिरिया होवै तो आक्रमणसमयके कपडे उतार डालै और रोगीको ठंढी हवामें ले जावे तथा एमोनिया सुंघावे, ज्ञान नष्ट हुवा हो तो मुख और मस्तकपर ठण्ढे पानीका छींटा दे अथवा–

मिक्श्चर फेरी कम्पौन्ड	४ औंस
डिकोक्सन एलोज कम्पौंड	४ औंस
जिन्सि सल्फेटिस	१२ ग्रीन

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें २ दफे देवे अथवा–

पुटाइसि ब्रोमाइड	६० से ९० ग्रीनतक
पुटासि आयोडाइड	१२ ग्रीन
पुटासि वाई कार्बोनेटिस	४० ग्रीन
टिंचर ओरेन्साई	७॥ औंस
पानी	७॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर खाली पेटमें सबेरे और रातको देवे तथा कुनइन और काडलिवर ओयलभी दे सकते हैं।

होमियोपेथिकसे एपोप्लेक्सी याने संन्यास मूर्छाकी चिकित्सा।

मुख लाल हो गया हो तो फी आधा घंटे या १५ मिनिटके अन्तरमें बिलाडोना देवे। दवा न खासके तो छोटी गोली जीभके नीचे रख दे, मुख मलीन हो तो ऊपर लिखी रीतिसे ओपियम देवे। घबडाहट हो तो नक्सओमिका देवे।

हिष्ट्रियामें—आंखोंके पलक कांपते हों तो पीडाके समय कपडे उतारकर आंख और मुखमें पानीके छींटे देवे । अथवा दिनमें २ दफे इग्रेसिया देवे । इसके १ सप्ताह उपरांत जल सिमिनम देवे ।

एपिलेप्सी अर्थात् अपस्मार–मृगी ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इसमें स्पर्शशक्तिका अभाव, आत्मज्ञानशून्यता, शरीरका ऐंठना, आंख, मस्तक, हाथ और शरीर मानो कोई मोडे डालता है और रोनेके शब्दके समान श्वास कष्ट और श्वासका रुकना, कभी २ श्वास बिलकुल बंद हो जाता है । दांतोंका घिसना, जीभ काटना, विना इच्छाके मल, मूत्र और शुक्र त्यागना, आंखें घूमना, जल्दी २ श्वास लेना, मुखसे झाग निकलना, मुख और शरीरका मलीन होना, नाडी स्वाभाविक, पसीना आना इत्यादि लक्षण कुछ सेकन्डसे १० मिनटतक रहते हैं । इसके दूर होनेपर रोगी दुर्बल होकर आलस्य भरा हुवा सोनेकी इच्छा करता है, इस नींदसे रोगी जल्दी नहीं उठता । यह रोग माता पिताके किसी रोगमें ग्रस्त होनेसे, बहुत शराब पीनेसे, बहुत स्त्रीसंसग करनेसे, हस्त-क्रिया करनेसे, किसी प्रकारका विष खानेसे, दीमागमें खून जमा होकर दौरा करने लगता है ।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

बेहोशी, मुखसे झाग निकलना, प्रायः यह रोग रात्रिके समय आक्रमण करता है ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

रोगीको अकेला न रहने दे । जब रोग आक्रमण करे उस वक्त सावधानी रक्खे कि रोगी अज्ञानवश अपने किसी अंगमें चोट न लगाले, हवादार मकानमें रक्खे, रोगी प्रायः जीभ काटता है इस

लिये दांतोंके नीचे कपडेकी पोटली या काठका टुकडा अथवा रबड मुखमें देदेवै।

मुखमें खून भर आवै तो ठंढा पानी डालै।

आक्रमणसमयमें यदि बिजलीका यंत्र लगाया जावै तो बहुत थोडे समयमें यह उतर जाती है।

आक्रमणसमयके बीचमें यदि स्त्रियोंको मृगी हो तो उसके रजोधर्मकी तरफ दृष्टि रक्खे कि न्यून है या अधिक उसे ठीक करै कम्पौन्डकालोसिन्थपिल खावै, जुलाबके पीछे कोठा साफ होनेपर बलकारक औषध खावै। इस रोगमें डाक्टर टॉनर नीचे लिखी दवा उपकारी बताते हैं।

सोडीहाइयो फसफाइटी	८० से २४० ग्रेनतक
स्पिरिटास ईथरिस	४ ड्राम
टिंचर सिनकोनाफ्लेवा	१॥ औंस

एक बडे ग्लास भर पानीमें डालकर एक चमचाभर दिनमें ३दफे पीवै (डाक्टरीमतानुसार चमचा कहनेसे वह समझा जाताहै जिससे अंग्रेज लोग चाह पीते हैं) और डाक्टर ग्रानैसिफआर्ड नीचे लिखी दवा काममें लाते हैं।

पुटास योडाइड	१ ड्राम
पुटास ब्रोमाइड	१ औंस
पुटासि बाईकार्ब	४० ग्रीन
एमोनि ब्रोमाईडाई	२॥ ड्राम
इनफ्यूजनकलम्बा	६ औंस

एक छोटा चमचा दवाका थोडे पानीके साथ सबेरेही नाहर मुख दिनमें ३ दफे देवे परंतु रातको सोनेसे पहिले २ चमचा दवा देवे।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

मृगीमें सात रोजतक सोते समय विलाडोना देवे । पीछे सात रोजतक ओपियम देवे । पीछे दिनमें दो दफे हाईड्रास्टीस देवे ।

एकसटासी-हर्षोन्मत्तता ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

किसी विषयमें मनका संयोग और मनकी चंचलतासे स्पर्शानुभव और इच्छासम्बन्धी शक्तिका अभाव, आत्मज्ञानशून्यता इत्यादि लक्षण दीख पडते हैं, किसी २ का शरीर मुरदेके समान हो जाता है कुछ भी चतन्य नहीं रहता ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

रोगीको डर दिखाना, ताड़ना देना आवश्यक है, इस रोगके दो मनुष्यको एक जगह नहीं रहने देना चाहिये ।

इनसान्टी अर्थात् उन्माद ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

इसके ४ भेद हैं पहिला एड्यूसी १, दूसरा डेमनशिया २, तीसरा मेलनकोलिया ३, चौथा मेनिया ४ यह ४ भेद होते हैं । तथा पहिला एड्यूसीका लक्षण, इस बीमारका जन्मसेही शिर छोटा होता है जिस करके अकल कम होती है । दूसरा डेमनसियाके लक्षण, इसमें होश हवास और धारणशक्ति कम होती है, प्रायः कभी कभी बेहोश भी हो जाता है । यह बीमारी नाजुक बच्चों और स्त्रियोंको प्रायः होती है, कारण इसके दिमागमें चोट लगना, दीमागकी कमजोरी, क्षीणता, मगजमें खूनका कम होना, अतिनशा करना इत्यादि होता है । तीसरा मेलिनकोलियाके लक्षण । इस रोगसे रोगी कम हिम्मत हो जाता है, अकेले फिरना पडा रहना चाहताहै, मनमें अनेक संकल्प विकल्प वृथाही उठते रहते हैं,

जीना बुरा लगने लगता है, ठीक २ विचार नहीं रहता कारण इसका शोच, फिकर, धन, पुत्र, स्त्री आदिका नाश होना है। चौथा मेनियाके लक्षण यह पूरी बेहोशी है, जिसको बावलापन कहते हैं परन्तु इसका दौरा हुआ करता है, कभी घट बढभी जाता है येही ४ भेद होते हैं।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

दीमागमें खून कम हो तो पुष्टिकारक और रुधिर बढानेवाली दवा देवे, मेलनकोलिया हो तो तसल्ली अर्थात धैर्य्य देवे, उससे उल्टी सीधी हँसी करके विशेष पागल न बनावे। बल्कि रंजको दूर करै। मेनिया हो तो बल घटानेवाली क्रिया करै, जिससे मूर्द्धाका अशुद्ध रुधिर घट जावे और शुद्ध रुधिर पैदा हो। यह चारों बीमारियां मूर्द्धा अर्थात् दीमागसेही सम्बन्ध रखती हैं। प्रायः दीमागकी कमजोरी आदिसे होती है, इसमेंदिलका भी सम्बन्ध है।

डिलेरियम टिमेन्स अर्थात् सिड।

एलोपेथिकसे लक्षण।

इस बीमारीमें आदमी बहकी हुई बातें करता है। बहुत जल्दी जल्दी बोलता है, मिथ्या सूरतें ध्यानमें आने लगती हैं और यह उनसे यद्वातद्वा बातें करता है, कभी डरता और कभी लडता है।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

इसका यत्न ऐसा करना चाहिये जिससे निद्रा अधिक आवे अथवा क्लोरोफार्म या ओपियम उन्मानसे देना चाहिये।

पलपेटीशन अर्थात् खफगान पागलपना।

एलोपेथिकसे लक्षण।

इसमें दिल बहुतही धडकता है। जैसे दिल अपनीजगहसे हटे याने उखड गया हो; जिस करके उसकी बुद्धि ठिकाने नहीं रहती,

कारण दिलकी कमजोरी, नजाकत, रंज, बारबार जुलाब लेना और जुलाबका बिगड जाना इत्यादि होते हैं।

एलोपेथिकमें चिकित्सा ।

दिलको ताकत पहुँचाना, मुकब्बियात देना ज्यादा सुवाना इत्यादि करना चाहिये ।

वातरोग ।

एलोपेथिकमें लक्षण ।

वातरोग उत्पन्न होनेके सात कारण होते हैं। १ पीडा प्रकाशित होनेके पहिले कमजोरी होती है, रोगी सबल होनेपरभी उसकी भीतरी स्थिति अबल हो जाती है, २ पीडाकी सब दशाओंमें दर्द कभी २ बराबर कभी विरामसेभी होता है, ३ मैलेरिया पीडित मनुष्यको प्रायःमाथेमें दर्द होता है, कभी २ आधाशीशी यहभी इसी रोगके अन्तर्गत है, ४ यौवन अवस्थामें २५ या २६ वर्षकी अवस्थामें यह रोग प्रायः देखा गया है, ५ बुढापेमें धनियोंको आलस्यसे, मध्य वृत्तियोंको धन चिन्तासे और दरिद्रोंको अन्नकष्टसेभी वात रोग हो सकता है, ६ खूनकी कमीभी रोगकी उत्पत्तिमें प्रधान हेतु है, ७ सबसे मुख्य कारण इस रोगका आतशक याने उपदंश और सोजाकमें प्रायः ठंढी हवा इत्यादि खानेसे गांठिया दर्द वगैरह वातरोग हो जाते हैं । इसके सामान्य लक्षण इस प्रकार जानने चाहिये—संधिमें पीडा, किसी अंगमें शोथ, नीचेके अंगमें दर्द, ऊपरका शरीर कभी स्वस्थ रहे कभी दुःखी और नीचेका निरोग रहताहै, कभी एकही जगहपर दर्द होता है, वह धीरे२और स्थानोंमेंभी फैलता जाता है, गला गाल इत्यादिमें दर्द वात व्याधिके लक्षण प्रकाशित होते हैं और वातव्याधिके कई भेद निश्चित किये गये हैं। १ रोमाटेजम याने गांठिया ।

इसमें पहले शरीर अकडा हुवा दीखता है, हाथ पाँवमें कुछ २ दर्द होता है पीछे कई या सब जोडोंमें शोथ और दर्द हो जाता है, अक्सर कबजीयत रहती है यह रोग कभी कम कभी अधिक होता है, प्रायः इसका दौरा देखा गया है, इसका कारण मेहमें भीगना सरदी लगना, अति ठंढी वस्तु खाना, फिरंग होना इत्यादि होते हैं। २ पेराप्लीजिया अर्थात् ऊरुस्तंभ इसमें कमरसे नीचे दोनों पांव निकम्मे हो जाते हैं। ३ साइटीका अर्थात् रींगन यह झनझनाहटका दर्द चूँतडोंसे टकनेतक हो सकता है। हेतु इसका सरदी कब्जी आतशकका अंश इत्यादि होते हैं। ४ पेरा लेसिस अर्थात् सुन्नबहरी, इस रोगमें किसी अंगको स्पर्शका ज्ञान नहीं रहता और हलने आदिकी शक्ति नहीं रहती यूंकायूं रह जाता है। ५ हेमोप्लोजिया अर्थात अर्द्धांग पक्षाघात इसमें १ अंग मारे जानेके कारण स्पर्शका ज्ञान नहीं रहता। ६ फेशियलपरोलेसिस—अर्दित लकवा इसमें चेहरेका १ रुख या दोनों रुख मारे जाते हैं। ठोढी, जाबडा, आंख या कनपटी टेढी पड जाती है। ७ कोरिया अर्थात कंप इस रोगमें हाथ पैर शिर या और कोई अंग कांपने लगता है कारण इसके कमजोरी, बचपन, बुढापा, अधिक खून या धातु निकलना, कबजियत इत्यादि हैं। ८ टेरनस अर्थात् धनुर्वायु। इस रोगकी आदिमें हाथ पाँवकी नसैं खिचने लग जाती हैं, जाबडे सुकड जाते हैं, गुदा और पीठमें दर्द होता है, कोई चीज तिगली नहीं जाती। रोगकी वृद्धि होनेपर कमर अगाडी या पिछाडीको कमानकी तरह झुक जाती है कारण क्षीणता, सरदी, सर्द हवा खाना, कुचलादि वृक्षीय विषका सेवन इत्यादि होते हैं। ९ मस्क्योलरोमाटेजम सर्दीका दर्द। यह भी १ प्रकारकी वायु होती है। इसकेभी कई भेद हैं। जब पसलियोंमें होता है तो उसे

प्लोरोडीनिया कहते हैं। जब कमरमें होता है तो लेंगो बोलते हैं इसके सिवाय गर्दन, छाती या और अंगोंमें भी हो जाता है। कभी २ इसके साथ बुखार और सरदी भी होती है कारण इसका निर्बलता, बदहजमी, ठंढी प्रकृति, सर्दी लगना, मेहमें भीगना, ठंढी हवा, ठंढी वस्तु खाना, अति परिश्रम करना इत्यादि होते हैं। अलावा इसके और भी कई प्रकारके वातरोग हुवा करते हैं, जैसे १० स्पाईनलमिनन जाईटिस। ११ माईलाइटिस। १२ स्पाईनलकंजेशन। १३ स्पाईनलहिमरोज। १४ स्पाइनलइरिटेशन। १५ हाइडोरेक्सि। १६ कैंकन। १७ जेनरेलपेरालिसिस। १८ हेमाप्लिजिया। १९ वेष्टिपलसी। २० न्यूगइटिस। २१ न्यूरोमा। २२ न्यूरेलजिया इत्यादिके अलावा भी बहुतसे भेद हैं। परन्तु चिकित्सा सामान्य होनेसे कारण विशेष ग्रंथ बढाना ठीक नहीं समझा। होमियोपेथिकवाले सामान्य वायुमें शरीरकी संधियोंका फूलना और दर्द होना, यह लक्षण बताते हैं परन्तु पक्षाघातमें ज्ञान नष्ट होना, चलन शक्ति हीन हो जाना, नाडीकी गति मन्द होना इत्यादि लक्षण बताते हैं। यह रोग कहीं चोट लगने या कोई पीडा होने अथवा भीतरी किसी बीमारीसे होता है।

एलोपेथिकसे सामान्यवायुचिकित्सा।

वातरोगमें विलस्तरा देना और पोटास आयोडाइड देनेसे रोगकी शांति होती है। दर्द दूर करने वास्ते अफीम देनी चाहिये। पेशाब बंद हो तो सलाईसे पेशाब करावे और नीचे लिखी दवा देवे—

मग्नेसिया सल्फेट	१२० ग्रीन
मेना	६० ग्रीन
टिंचर जेलप	१॥ ड्राम
एक्वोवा कारुमी	१॥ ड्राम

यह एक मात्रा दवा हुई इसको पिलादे अथवा—

कालोमेलेनस	२ ग्रीन
एक्सट्रेक्ट जेलप	८ ग्रीन

इसकी २ गोली बनाकर रातको देवे अथवा—

हाईड्राजीराई करोसिडिस ब्लिमेटी	१ ग्रीन
एमोनिहाइड्रोक्लोराटिसि	६ ग्रीन
एक्सट्राक्ट सारसा लिकवीड	११॥ औंस
डिकक्सन सारसा कम्पोन्ड	१॥ औंस

इस दवाको २ चमचेभर दिनमें दो दफे पीवे और विलाडोनाका पलास्तर लगावे।

हाथपैरोंमें जलन हो तो खानेकोभी बिलाडोना देवे। मैलेरियासे यह रोग हो तो कुनइन देवे, इसके अलावा पुष्टिकारक चीजें खानेको देवे।

चीस मारती हो तो काडलिवर ओयल और आयोडाइड औफ पुटासियम देवे।

गांठिया हो तो कारबोट औफ पोटासमें कपडा भिगोकर जोडोंपर लगावे अथवा इष्टिकिनिया १ रत्ती दिनमें ४० खिलादे।

ऊरुस्तंभ हो तो इसमें पेरालेसिसका तेल मलना और ऐसी दवा देना जिससे उष्णता बढे।

रींगनमें कबज हो तो मुलय्यन दस्तावर दवा देकर पलास्तर लगावे और इष्टिकिनिया १ ग्रीनको २८ दिनमें देवे। शून्यता हो तो गंधकका चोवा १ ड्राम, तारपीनका तेल १ औंस मिलाकर कई वार मलै अथवा तार बिजली लगाकर गरमी पहुँचावै।

अर्द्धांग या लकवा हो अथवा धनुषवायु हो तो ऊपर पेरालसिसका तेल मलै और विशेष करके जिधरका रुख मारा गया हो उस कानमें गर्म भाफ पहुँचानी चाहिये। जो घाव हो तो उसका

यत्न करै । धनुषवायुके वास्ते तार बिजली लगाना उत्तम है परन्तु यह रोग कभी कभी कैसीही चिकित्सा करो अच्छा नहीं होता । ओपियम, क्लोरोफार्म, गांजा, बिलाडोना, कुनइन, मद्य आदिसे इसकी चिकित्सा करै । डाक्टर फेब्रर कहते हैं कि—

क्लोरोफार्म	१० बूंद
टिंचर केनाबिस इंडिका	२० बूंद
मूसिलेज	१ औंस

इसकी १ मात्रा बनाकर दो तीन घंटेके अन्तरसे पिलावे इसके खानेके समय अफीमकी गोली बनाकर उसका धुवां पीनेसे रोगको फायदा होता है । पीठके बांसपर बिलाडोना प्लाष्टर लगावे, एक्सट्राक्ट बिलाडोना, आधे ग्रीनसे २ ग्रीनतक ४—६ घंटेके अंतरमें सेवन करावे और बहुतसे मनुष्य रोगीको क्लोरोफार्म सुंघाकर बेहोश करनेकीभी संमति देते हैं । परंतु क्लोरोफार्मकी क्रिया निवृत्ति होतेही रोगके लक्षण पूर्ववत् हो जाते हैं ।

यदि रोगी कमजोर और श्वासमें कष्ट हो तो क्लोरोफार्म देना कभी उचित नहीं है । कोई डाक्टर ४—६ घंटेके अन्तरसे ४—६ ग्रीनतक कुनइन देनेसे उपकार बताते हैं । और डाक्टर स्टेनर नीचे लिखी दवा देनेकी अनुमति देते हैं—

सोली सलफेटिस	३० से ६० ग्रीन तक
इनफ्यूजन केशिया	१॥ औंस

इसकी १ खुराक बनाकर दिनमें ६ खुराक देवे । इस प्रयोगमें पीठके बांसपर बरफ लगानेसे फायदा होता है । इस औषधको देनेके समय अफीम नहीं देनी चाहिये ।

कोष्ठबद्ध हो तो स्केमेनि वा काष्ट्रोयलका जुलाब देना चाहिये । माथेमें खूनकी कमी हो तो नीचे लिखी दवा देवे—

स्पिरिटास वाई निगोलिसाई	११॥ औंस
इनफ्यूजन सिनकोना फलेमा	७॥ औंस
स्पिरिटास ईथरिस	२॥ औंस

इसको उचित मात्रासे पिलाया करे ।

माथेमें खून जमगया हो तो जुलाब देवे और बिलस्टर लगावे था आयोडाइड औफ पुटासियम देवे ।

नींद कम आती हो तो अफीमके बदलेमें इयोसामस देवे अथवा चे लिखी दवा देवे—

एक्सट्राक्ट कोनाई	३ ग्रीन
एक्साट्राक्ट हाइयो सामस	३ ग्रीन
पिल्यूला रियाई	३ ग्रीन

इसकी दो गोली बनाकर सोनेके पहले खानेको देव अथवा—

एक्सट्राक्ट केनाबिस इंडिका चौथाई ग्रीनसे १ ग्रीततक ।

एक्सट्राक्ट हाइयोसामस	४ ग्रीन

इसकी एक गोली बनाकर २४ या १२ घंटेके अंतरमें देवे ।

पुरानी बीमारी हो तो कोई तेज लिनीमेन्ट देनी चाहिये । थवा—

स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक	४ ड्राम
स्पिरिटासरोजमेरिनी	४ ड्राम
ग्लिसरीन	४ ड्राम
टिंचर केन्थराईडिस	२॥ ड्राम
एकोवारोज	७॥ औंस

इसको माथेके बाल बनवाकर काममें लावे ।

यदि उपदंशके कारण वातरोग हो गया हो तो पारा देकर ाराम करना चाहिये और बिजलीकी ब्याटरी लगावे । यदि खारसे लकवा हो गया तो—

टिंचर कुनइन कंपौंड	४ ड्राम
लाइकरिस आर्सेनिकेलिस	१७॥ बूंद
फेरियेट एमोनियासाईटार्टिस	३० ग्रीन
एकोवा औरेन्साई	७॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर दिन रातमें ३ खुराक देवे । रोगीको उपदंश भी हो तो दिनमें २--३ दफे ५ ग्रीनके हिसाबसे आयोडाइड औफ पुटासिअम भोजनके पहले देवे ।

यदि कंपमें कब्ज हो तो कार्ष्टोयलका जुलाब देकर कमजोरी दूर करनेके वास्ते कार्बोट औफ पुटास आयरन देवे । सरदीका दर्द पसली इत्यादिमें हो तो कार्बोट औफ पुटास काचलीके साथ मिलाकर मालिश करना चाहिये । तार बिजली लगाना चाहिये, ओपियम प्लाष्टर या मास्टर्ड प्लाष्टर लगाना चाहिये ।

होमियोपेथिकसे वातव्याधिचिकित्सा ।

मुख लाल हो गया हो तो बिलाडोना देवे । मुख मलीन हो तो ओपियम देवे । आक्रमणके स्थानमें दर्द हो तो नक्सओमिका देवे । कन्धोंपर सरसोंका प्लाष्टर लगावे अथवा दिनमें ३ दफे ब्रायोनिया और रातको मक्यूरियस देवे । रातमें बीमारी बढै तो सिफ्दूगा दिनमें २ दफे देवे । सोते वक्त जेलसिमिनम देवे । नींद न आती हो तो सोनेसे २ घंटे पहले देना चाहिये । खंजत्व दूर करनेके लिये दिनमें ३ बार नक्सओमिका देवे । दर्दकी जगहमें फलालैन बँधा रक्खे । अजीर्ण हो तो दिनमें नक्सओमिका और रातको रस देवे । डाक्टरीमें आमवातको गाउट बोलते हैं उसीके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये ।

एलोपेशिया अर्थात् गंज ।

यह रोग एक तरहके कीडोंसे पैदा होता है इसके होनेसे शिरके बाल गिर पडते हैं धीरे धीरे शिर साफ और चिकना

होकर स्वाभाविक खालके समान हो जाता है। दूसरा केशदद्रुभी इसका भेद है। जिसमें केशोंकी जडमें छोटे २ दाग होकर वहांकी खाल उडा करती है। रोग बढनेसे छोटे २ फोडे भी देखे जाते हैं।

एलोपेथिकसे गंजकी चिकित्सा।

लाइकर एमोनिया	१ ड्राम
सलपाई तेल	२ ड्राम
स्पिरिट रोजमेरेनि	४ ड्राम
गुलाब जल	४ औंस

इन सबको मिलाकर लिनीमेन्ट बनाले इसको लगानेसे गंजके शिरमें बाल पैदा हो जाते हैं। अथवा—

स्पिरिट एरोमेटिकएमानिया	४ ड्राम
स्पिरिट रोजमरि	४ ड्राम
ग्लिसरीन	४ ड्राम
टिंचर केन्थराईडिस	२॥ से ५ ड्रामतक

सबको अच्छी तरह मिलाकर माथेपर लगावे।

केशदद्रु हो तो बाईक्लोराइड ओफ मर्करी ६ ग्रीन पानी २ औंस अच्छी रह मिलाकर लगावे।

दंतरोग।

एलोपेथिकसे दंतरोगके लक्षण।

इसके ५ भेद हैं १ ग्यांग्रीन, २ पल्प, ३ कैंकेर, ४ निक्रोसिस, ५ म्यूरलजिया यह ५ भेद होते हैं। पहिला ग्यांग्रीनके लक्षण। अजीर्ण आदि रोग पारा खाने और स्त्रियोंकी गर्भवस्थामें दांतोंकी मांडी शिथिल होकर दंतरोग उत्पन्न होता है १, दूसरा पल्प ढका न रहनेसे वा ठंढा वा गरम रहनेसे यह प्रदाह होता है २, तीसरा कांकेर निक्रोसिस अर्थात् दांत टूटते समय उसकी जड रह जाय तो

इसमें जलन और काट याने दर्द और फोडे हो जाते हैं ३, चौथा न्यूरेलजिया दंतरोग वह कहाता है जो बहुत दिन निरंतर बीमारी रहनेसे होता है ४, पांचवां नक्रोसिस इसकाभी वही कारण है ५।

होमियोपेथिकसे दंतरोगके लक्षण ।

यह बीमारी ठंढसे होती है। टूटे वा गिरे दांतकी जडसेभी यह बीमारी होती है। गर्भावस्थामें यह पीडा स्त्रियोंको विशेष करके देखी जाती है।

एलोपेथिकसे दंतरोगकी चिकित्सा

घावोंको अच्छी तरहसे धोकर सडा मांस न रहे ऐसी रीति करनी चाहिये। पिचकारीसे साफ करके खून निकलना बन्द करनेके लिये परक्लोराइड औफ आयरन और टानिकएसिडका सोल्यूशन बनाकर पिचकारी दे।

पस होतो बाईकार्बोनेट औफ सोडाको पानीमें मिलाकर उसकी पिचकारीसे साफ करे, उसके साथ क्लोरोफर्म आयल क्लोब्ज- टिंचर एकोनाइट, केजूपट ओयल, तारपीन तैल कैम्फर टानिक एसिड, किम्वा ईथरमें भिगोकर क्षतस्थानमें रक्खे परंतु यह चीजें ऐसी सावधानीसे लगावे कि पेटमें जानेसे प्राण नाश होनेका डर है।

कांकेरनिक्रोसिससे दर्द हो तो दांतका शेष भाग उखाड देना चाहिये। न्यूरेल जियामें आयोडाइड औफ पुटासियमसे फायदा होता है।

होमियोपेथिकसे दंतरोग चिकित्सा ।

दाँतोंमें दर्द हो तो बिलाडोना और मर्क्यूरियस २ घंटेके अंतरमें देवै। अगर किसी खास समयमें इस पीडाका प्रकोप हो तो फी २ घंटेके अंतरमें जलसीमिनम् और आर्सनिक देवै, सम्पूर्ण

दांतोंके दर्दपर काष्टिकलोशन लगानेसे पानी टपककर दर्द बंद हो जाता है।

बालकोंके दांतोंमें दर्द हो तो आधे घंटेके अंतरमें एक मात्रा कैमोमिला देवे।

दांतोंकी जडमें घाव हो रोगी दुर्बल होगया हो तो फास्फारिस देना चाहिये।

स्टोमेटाइटस् अर्थात् मुखपाक।

यह रोग प्रायः बालकोंको हुवा करता है मुख और जीभ लाल होजाती है, गर्म और खुश्की होती है, कभी लार बहती है, होठ और जीभपर नन्हे २ दाने पड जाते हैं, कभी बुखार भी हो जाता है, कारण आमाशय और आंतोंका विकार और गरमी होती है।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

खुश्की हो तो बिहीदाना ईसबगोलकी पोटलीको भिगोकर फेरना चाहिये। यदि लाल हो तो कत्था शीतल मिर्च डालना चाहिये, यदि छाले पडगये हों तो तूतियेको भूनकर लगानेसे शीघ्र ही आराम होता है।

एपथल्मिया याने नेत्ररोग।

एलोपेथिकसे लक्षण।

आंखोंमें अतिशय गरमी पहुंचनेसे नेत्रोंमें लाली आ जाती है। आंख करकराती हैं, सूर्य आदिकी ओर देखा नहीं जाता, सिवा हरेके और कोई रंग देखना रोगी बरदास्त नहीं कर सकता।

होमियोपेथिकसे नेत्ररोग लक्षण।

ठंढसे यह प्रदाह होता है। यही इसका मुख्य कारण है।

एलोपेथिकसे नेत्ररोगकी चिकित्सा ।

साधारण रीतिसे रोगीकी स्वस्थतापर ध्यान रक्खे और बलकारक औषधें खानेको देवे जैसे आर्सनिक टिंचरष्टील, काडलिभर आयल देवे । और आंखोंपर मैल न जमनेदे, हमेशा सफाई काममें लावै, जो मरहम लगानी हो उसको पानीमें मिलाकर बडी सावधानीसे लगानी चाहिये । और बहुत हल्की मरहम जिसमें तेजी न हो ऐसी लगानी चाहिये जैसे नाइट्रेट औफ मर्करा, रेडओक्साइड औफ मर्करी अथवा रेडओक्साइड औफ जिंकको पानीमें मिलाकर काममें लानी चाहिये अथवा—

हाइड्रार्जिराइ बूब्रि	८ ग्रीन
आयून्टिसिम्पिनाई	१ औंस

दोनोंको अच्छी तरह मिलानेसे रेड ओक्साइडँ औफ मर्करी ओयन्टमेन्ट बन जाता है इसको डालनेसे बडा फायदा होता है ।

कभी २ आंखोंसे पानी गिरै और आंखैं लाल हों तो बिलाडोना ऊपर लगानेसे फायदा होता है ।

होमियोपेथिकसे नेत्ररोग चिकित्सा ।

गर्म पानीसे आंखोंको साफ करके चायका ठंढा पानी आंखमें लगावै । पीछे दो दो घंटेके अन्तरमें बिलाडोना और मर्क्यूरियस देवे, तथा आंखोंपर हरा कपडा बँधा रहने दे, यदि रोग भारी हो तो रोगीको अँधेरे मकानमें रक्खै, जो आंखें बहुत लाल हों तो एक पाइन्ट याने १० छटाँक पानीमें वेलिसटिंचर मिलाकर आँखें धोवै, इसके पीछे दो घंटेके अन्तरमें एकोनाइट काममें लावै ष्टाई याने फूली वा छड हो तो सबेरे और शामको ६ खुराक हियार देवै । उसके १ सप्ताह उपरांत पलसेटिला देवै

एक्टेरिस याने पीलिया।

एलोपेथिकसे लक्षण।

ऐसा रोगी सुस्त हो जाता है, जी मचलाता है, भूख कम, मुख कडवा, पेट भारी, नेत्र पीले, कभी दस्त, कभी कब्ज होता है। रोगके बढ जानेपर मल, मूत्र, पसीना, थूक, नख, चेहरा पीला हो जाता है। बल्कि सब कुछ पीला ही दीखने लगता है। कभी दाहिनी पसलीमें दर्द होने लगता है। कारण जब पित्त गरमी पाकर खूनकी पतली रगोंमें चला जावे या जिगरमें पित्त बढकर रुक जाय अथवा ज्वर बहुत आवे या गर्म चीजोंका बहुत खाना इत्यादि कारण होते हैं।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

इसमें कार्बोट औफ आयरनका सेवन करना, पेटमें कठिनता हो तो जुलाब देना चाहिये।

उटाइटिस अर्थात् कर्णरोग।

एलोपेथिकसे लक्षण।

खराब खून और वादीसे कानमें चीस मारे, माथेके एक तरफ दर्द हो पीब या और किसी प्रकारके पानीद्वारा यह रोग उत्पन्न होता है। इस रोगके अधिक बढ जानेसे आदमी बहरा हो जाता है। कभी २ कानमें फुनसी हो जानेसेभी यह रोग हो जाता है। बालकोंको दांत निकलनेके समय भी यह रोग देखा गया है।

होमियोपेथिकसे लक्षण।

कानमें मैल जमजानेसे ऐसा मालूम होता है मानों कानमें कोई चीज जमी हुई। या ऐसा हो जाता है कि रोगी कुछभी नहीं सुन सकता। ठंढी हवा लगनेसे या और किसी तरह ठंढके लगनेसे कानमें कटकट चटचट शब्द होने लगता है।

एलोपेथिकसे कर्णरोग चिकित्सा ।

इसमें साधारणतः इस बातके ऊपर ध्यान रखना आवश्यक है कि रोगीका शरीर कमजोर न हो जावे । दूध इत्यादि पुष्टिकारक खाद्य और कुनइन काडलिवर ओयल आदि पुष्टिकारक औषधि खानेके वास्ते देवे । दर्दकी जगह सेच पुल्टिस और पिचकारीसे कान साफ करके ग्लिसरीन वा ओलिमओयल इत्यादि कानमें डाले साबुन डाले हुये गरम पानीकी पिचकारीसे कान साफ करै और नीचे लिखा आयोडाइड पुटासियम मिक्श्चर डाले ।

पुटास आयोडाइड	४० ग्रीन
टिंचर टियाई	॥ औंस
एक्सट्राक्ट सारसालिक्वीड	१॥ औंस

इसको १ ग्लास पानीमें चाहका छोटा चमचा भर दवा मिलाकर दिनमें ३ बार पीनेको देवे ।

होमियोपेथिकसे कर्णरोगचिकित्सा ।

ठंढसे कानमें जलन हो तो एकोनाइट देवे, मुँहकी गरमी और माथेके दर्दके कारण कानमें दर्द हुवा हो तो फी १ घंटेके अंतरसे बिलाडोना देवे, कानमें मैल होनेके कारण दर्द हुवा हो तो ग्लिसरीन डाले, गलेके दर्दसे यह रोग हो तो रातको बिलाडोना और सबेरे मर्क्यूरियस देवे, शीतलाके कारण हुवा हो वा खून और पीब निकलता हो तो रातमें आर्सनिक दिनमें कलकेरिया देना चाहिये, परंतु दिनमें २ दफे गर्म पानीकी पिचकारीसे कानको साफ करता रहे ।

पेरोटायस कनफेड–कर्णमूल ।

एलोपेथिकसे लक्षण ।

जाबडेके पास कानके पीछे नीचेकी तरफ शोथ और गांठ हो

जाती है, कभी २ बुखार भी हो जाता है, प्रायः यह चढती हुई उमरके बालकोंको होती है।

एलोपैथिकसे चिकित्सा।

टिंचर आयोडीन अथवा काष्टिकलोशन लगानेसे फायदा होता है।

इनफलोइनजा—प्रतिश्याय जुखाम।

एलोपेथिकसे लक्षण।

नाकसे रतूबत बहती रहे, कभी बन्द भी हो जाय, शरीर भारी रहे, कभी मध्यम ज्वर भी हो जाय, कारण रतूबत बढना, नीचेके मकानमें रहना, सीढ, कमजोरी, एक खास तरहकी वायु।

एलोपेथिकसे चिकित्सा।

नमकीन चाह पीना और गर्म कपडा ओढकर सोना, ठण्ढी हवासे बचना चाहिये।

स्त्रीरोगचिकित्सा।

एलोपेथिकसे लक्षण।

इस रोगके कई भेद हैं जैसे पहिला—पुराइटास अर्थात् योनिखाज, स्त्रियोंकी जननेंद्रियमें जो खाज होती है उसे योनिखाज बोलते हैं जिसमें आक्रांतस्थानमें बहुत खुजली चले, सुईसी चुभे, गर्मी मालूम पडे, अत्यंत खुजलीके कारण ठंढे पानीको काममें लावे, निद्राका नाश, भूख कम लगना और निर्बलता येही इसके मुख्य लक्षण हैं १, दूसरा—शैशव याने सोम, लडकपनमें योनिकपाटकी श्लेष्माकी गांठसे पानीसा निकलनेसे यह रोग होता है। इसमें खुजली, बेकली, योनिमें दर्द, बदबू योनिमें घाव और कमजोरी होकर ज्वर हो जाना इसके मुख्य लक्षण होते हैं २, तीसरा-

ल्यूकोरिया अर्थात्-इसमें सफेद पानी निकलता है, पीठमें दर्द होता है ३, चौथा-एक्यूटवेजेनाईटिस अर्थात् प्रदर इसमें योनिका खुजाना, मूत्राशयमें उत्तेजना और गरमी मालूम होती हैं, ऐसी दशामें परीक्षा करनेसे देखा गया है कि योनि गर्म और फूली हुई दिखाई पडती है । कभी लाल भी देखी गई है पीछे कुछ दिनों बाद पीब निकलने लगता है, जितना पीब ज्यादः निकलता है तकलीफ भी उतनी ही ज्यादः होती है ४, पांचवीं योनिमें पथरी जैसे मनुष्योंको पथरीरोग होता है उसी प्रकारसे स्त्रियोंको भी हो जाता है, लक्षणभी उसी के समान दिखाई पडते हैं ५, छठा एमेनोरिया अर्थात् रजस्वला धर्म यह तीन प्रकारका होता है, एक वह जिसमें खून निकलता ही नहीं, इसके कारण इस प्रकार निश्चय किये गये हैं बहुत चिन्ता करना, चोट लगना, ज्वर, या और कोई बडी व्याधिका होना, ठंढ लगना, गीला रहना, क्षयकासके होनेसे भी खूनके निकलनेमें अनेक प्रकारका गोलयोग हो जाता है । विना किसी प्रकाशित हेतुके भी रजोधर्ममें कुछ विकार देखा जाता है, बहुत दिनोंतक स्वामी सहवास न करके उपरांत स्वामीके सहवास करनेसे २-३ महीनेतक रजस्राव बंद होता देखा गया है । दूसरा जिसमें खून कम या ज्यादा निकले, अधिक रजस्रावका कारण यह है कि जिस स्त्रीके संतान बहुत होती हों अथवा संतानको बहुत दिनोंतक दूध पिलाती रहै तो रुधिर अधिक निकलता है । इस बीमारीमें कमजोरी, आलस्य, थकावट, कमर और पेडूमें दर्द, मुख फीका यह लक्षण देखे जाते हैं । तीसरा डिसमेनेरिया अर्थात् रजःकष्ट । इस रोगमें निर्धारित ऋतुकालके ३-४ दिन पहिले पीठके बांसमें दर्द यही लक्षण दिखाई पडते हैं ।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

ऋतु न होनेके कारण अथवा गर्भ होनेके कारण ऋतु बन्द

होना स्वाभाविक है। तथापि बहुत रजस्राव होनेसे नये पुराने रोगोंसे अथवा अधिक पतिसंग करनेसे, ऋतुसमयमें गीले कपडे पहरनेसे, बरफ खानेसे या और किसी प्रकारका शीतोपचार करनेसे तथा किसी विशेष चिंतामें लगे रहनेसे ऋतु बंद हो जाताहै। कभी २ अनियमित रजोधर्म अर्थात् २—३ मासतक ठीक समयमें ऋतु होकर फिर दो एक दिनका गोलमाल हो जाता है इसका कारण कमजोरी आलस्य है। और ऋतुशूलमें थोडी या बहुत रजस्राव होकर रजोधर्ममें कष्ट होता है, माथेमें दर्द, गालोंपर लाली हृदय कांपना, पेट भारी यह लक्षण दिखाई पडते हैं। यह दर्द ऋतुके चार पांच दिन पहिले होता है और ऋतु आरंभ होनेके बाद बन्द हो जाता है। कोष्ठबद्ध होना ही इसका कारण है, कृत्रिम ऋतु उसको कहते हैं, कभीकभी ऋतु बन्द होना वा थोडा होना, लारके साथ खून निकलना वा खूनकी कै होना, जननेन्द्रियमें सफेद पानी निकलना; बदलेमें प्रति मास कोई दूसरा पदार्थ निकले इसीसे इसको कृत्रिम याने बनावटी ऋतु कहते हैं। और श्वेत प्रदर, ठण्ढा, खूनकी अधिकता और स्वास्थ्यभंग होनेसे विना सफाईके स्त्रियोंको यह रोग हो जाता है। इस रोगमें स्त्रियोंकी योनिद्वारा सफेद, पीला, हारा या पानीके समान निकलता है, उसमें दुर्गंधि भी आती है और गर्भावस्थाकी पीडा अर्थात् स्त्रीको गर्भ रहनेसे शय्या परित्याग करतेही शरीर आलस्यपूर्ण हो जाता है। सोनेमें कुछभी तकलीफ नहीं होती, परंतु सोके उठतेही कै होनेकी इच्छा होती है। और घरसे बाहर निकलते ही कै हो जाती है। भोजनमें अरुचि और खाये हुए पदार्थकी उसी समय कै हो जाना गर्भ रहनेके मुख्य लक्षण होते हैं। और स्त्रीके वन्ध्या होनेका कारण यह होता है कि किसी २ स्त्रीकी जननेन्द्रिय और विषकोषकी गठन-

प्रणाली ठीक नहीं होती परन्तु ऐसा बहुत कम होता है । दूसरा जरायुकोप, फोडे या मांसके बढ जानेसे अथवा ऊंची नीची जगहके बैठनेसे या बहुत पुरुषसंग करनेसे, अधिक दिन श्वेत प्रदर रहनेसे अथवा किसी भारी रोगके बहुत कमजोर होनेसे अथवा हृष्ट पुष्ट बलवान् होनेसे स्त्रियोंका वंध्या होना सम्भव है । और गर्भपात होनेके समय किसी कामके करनेमें जी न लगना, शरीर तेजहीन, पीठके नीचेके भागमें दर्द और कमजोरी और धीरे धीरे उनमानसे अधिक खून पडै । कमरमें कतरनेके समान कष्ट हो, कभी कभी वह कम ज्यादः भी हो जावे । पीछे पानीसा निकलकर गर्भ पात हो जाता है कारण इसका कहीं ऊंचे स्थानसे गिरना, चोट लगना, पैरका ऊंचा नीचा पडना, भारी चीज उठाना, गरिष्ठ भोजन, जुलाब लेना, मनकी अकुलाहट, शरीरकी कमजोरी अथवा बहुत श्वेतप्रदर भी गर्भपातका कारण होता है ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

पुराइटिस याने योनिखाज हो तो थोडी मात्रामें कुनइन देनेसे फायदा होता है अथवा नीचे लिखी दवासे खूब फायदा होता है—

कीन सल्फ	१ ग्रीन
एक्सट्राक्ट बिलाडोना	१ ग्रीनका तिहाई
एक्सट्राक्ट ओपिआई	॥ ग्रीन
एक्सट्राक्ट हायेसायेमाई	२ ग्रीन

इसकी १ गोली बनाकर दोनों वक्त देवे अथवा—

एसिड हाइड्रोसीनका डिल	२ ड्राम
प्लाम्बाई एसिलेस	१ ड्राम
स्प्रिट रेक्टीफिटोई	१ औंस
एकोवा	८ औंस

इन सबका लोशन बनाकर जननेन्द्रियको धोनेसे रोगीको फायदा होता है।

योनिकपाटपर जलन हो तो हाइड्रोक्लोरिक एसिड अथवा विचारकर और कोई संकोचक दवा देनी चाहिये तथा बल पुष्टिकर्ता दवा देवे।

शैशव याने सोम हो तो फिटकडीका लोशन लगानेसे फायदा होता है और हलका जुलाब देनाभी बहुत जरूरी है।

दर्द हो तो संकोचक औषधका लोशन बनाकर काममें लावे पुष्टिकारक औषधि खानेको देवे इस रोगमें दूध देनेसे भी फायदा देख पडता है।

मूत्राशयमें पथरी हो तो वह शस्त्रचिकित्सासेही अच्छी हो सकती है।

एक्यूटवेजानाईटिस अर्थात् प्रदर हो तो पहले रोगीको कमर-तक गर्म पानीमें डुबावे और गर्म पानीकी ही योनिमें पिचकारी दे, कोठा साफ करनेके लिये काष्ट्रोयल देवे। पथ्यमें लघुपाकी पुष्टिकर चीजें देवे अथवा–

प्लाम्बिआयोडाईडाई	८० ग्रीन
एक्सट्राक्ट बिलाडोना	२४ से ४० ग्रीनतक
ब्यूटिरियाईके कोया	१ औंस
ओलिआईओलिम	१॥ ड्राम

इनमेंसे जो चीजें कडी हैं उनको अग्निमें तपाकर गरम करनेसे सब चीज आपसमें अच्छी तरह मिलकर एकजीव हो जायँगी पीछे छोटी अंगुलीके बराबर मोटा और १ इंच लम्बा कपडेका फलीता बना उसपर दवा डालकर पानीसे तर करले, उनमेंसे १ फलीता रातको सोते वक्त योनिमें रखकर सोनेसे प्रदररोगको

फायदा होता है, सब दवा आम फलीतोंके लिये काफी है। अगर पीब हो गया हो तो—

एमोनिया कार्बोनेटिस	३० ग्रीन
टिंचर एकोनाइट	४० बूंद
टिंचर सिनकोना कंपौन्ड	५॥ ड्राम
एकोवा मेन्थपिपरेटा	७॥ ड्राम

सबकी ६ खुराक बनाकर दिनमें ३ खुराक पिलानी चाहिये। ल्यूकोरिया याने श्वेतप्रदर हो तो ठंढे और खारी पानीमें कमर-तक डुबा रखना चाहिये और—

जिन्सी सलफेटिस	१ औंस
एल्यूमिनिस एक्सिकेटा	५ औंस

एक साथ मिलाकर एक छोटे चमचेभर दवा २० औंस पानीमें मिलाकर योनिमें जस्त या पीतलकी पिचकारी लगावे, कांचकी पिचकारी नहीं लगावे और आगे लिखी दवा खानेको देवे—

कुनईन सलफटिस	१२ ग्रीन
फेरी रेडाक्टाई	३० ग्रीन
एक्सट्राक्ट एमोनिटाई	१२ ग्रीन
ग्लिसरिन	गोली बनानेके लायक

इसकी १२ गोली बनाकर दुपहर और रातको भोजनके १ घंटे बाद देनी चाहिये।

पीठके बांसमें दर्द हो तो बिलाडोनाका पलास्तर लगाना चाहिये। पथ्यमें थोडे पानीमें मिलाकर ब्राण्डी, पोर्ट और हलकी पुष्टिकारक चीजें खानी चाहिये। सबसे उत्तम इलाज आबहवा बदलना है।

एमोनिया अर्थात् रजस्वला धर्म्म लीवरमें बहुत खून हो तो—

एसिडाईनाईटिसाईडिल	१॥ ड्राम
स्प्रिटासईथरिसनाईट्रोसी	१॥ ड्राम
साक्सिटेराक्सिसाई	१॥ औंस
टिंचरसेना	४ औंस
इनफ्यूजन जन्सियन कम्पोन्ड	७॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें २-३ दफे देनी चाहिये।

कोष्ठबद्ध हो तो—

एक्सट्राक्ट आर्गट लिक्वीडाई	२ ड्राम
टिंचर सापेन्टरी	६ ड्राम
डिकक्सन एलो कम्पौन्ड	६ औंस

प्रतिदिन प्रातःकाल १ औंस पीनी चाहिये।

डिसमेनोरिया अर्थात् रजःकष्टमें बहुत दर्द हो तो—

टिंचरकेवा विसईडिका	२० बूंद
स्पिरिट जूनीपर	३० बूंद
स्पिरिट ईथर	३० बूंद
टिंचर एकोनाइट	१० बूंद
म्यूसलेज	१॥ औंस

यह १ खुराक है जैसी ज्यादः कम बीमारी हो वैसी ही मात्रा पिलावे। खून अधिक पडता हो तो—

एसिडाई गोलसाई	१५ से २५ ग्रीनतक
एसिडाई सलफूरिसाई	१॥ से २ बूंदतक
टिंचर सिनेमोनाई	१॥ ड्राम
साफ पानी	१॥ औंस

यह १ खुराक है जबतक खून बंद न हो फी ४ घंटेपर पिलाता रहे।

ऋतुसमयमें साधारण स्वस्थताकी उन्नतिके वास्ते ।

एसिड फास्फरिक डिल	१॥ ड्राम
टिंचर एकोनाइट	॥ ड्राम
टिंचर सिनकोना कम्पौन्ड	४ ड्राम
इनफ्यूजन औरेन्साई	७॥ औंस

इसकी ६ खुराक बनाकर दिनमें ३ दफे पिलाना चाहिये ।

होमियोपेथिकसे चिकित्सा ।

पेशाबके समय दर्द जलन हो तो एकोनाइट देवे । जलनके साथ पीब बदबूदार निकले या रोगकी जगह लाल पड गई हो तो आर्सनिक देवे । योनिसे सफेद पानी पडे और सुईसी चुभे, तलपेटमें दर्द हो तो बिलाडोना देवे ।

ऋतु बन्द हो गया हो तो रोगीको गर्म पानीसे स्नान कराके एकोनाइट देवे । और पलसेटिला, डाल्कामारा, सिमिसिफ्यूगा भी दिये जा सकते हैं । अगर ऋतु डरसे बंद हो गया हो तो एकोनाइट ओपियमवेरेट्रम देवे । उत्तेजनासे ऋतु बंद हो गया हो तो कैमोमिला शोकसे बंद हुवा हो तो इग्नेशिया । आनन्दसे बन्द हो तो कफिया देवे । ऋतु बन्द होनेके कारण माथेमें दर्द हो तो एकोनाइट देवे । बाईं तरफ पीडा हो तो सिमिसिफ्यूगा देवे । कोमलस्वभाववाली स्त्रीके तलपेटमें दर्द हो गया हो तो पलसेटिला देवे । जननेन्द्रियका उत्ताप और आंखोंमें दर्द हो गया हो तो बिलाडोना देवे । माथा घूमता हो और नाकसे खून गिरता हो अथवा कोष्ठबद्ध और पसलीमें, वक्षस्थलमें दर्द हो तो ब्रायोनिया देवे । माथा भारी और घूमे, नींद न आवै, दस्त साफ न हो और पेशाब बन्द हो तो ओपियम देवे ।

यदि नियमपूर्वक दस्त न होता हो तो चायना देवे अथवा पहिले दिन पलसेटिका देकर दो तीन दिनतक चायना देवे जब-

तक रोगको फायदा न पहुँचे तबतक दोनों दवा उलट पुलट कर खिलाता रहे ऋतुशूल हो तो कैमोमिला देवे ।

श्वेतप्रदर या गर्भावस्थामें सफेद कफसा निकले और उसीसे खुजली होनेके कारण ऋतु बन्द हो गया हो तो पलसेटिला देवे ।

हरा पीला बदबूदार पानी निकले और ऋतुसमयमें दर्द हो, थोडा खून निकले, कोष्ठबद्ध हो तो सिपिया देना चाहिये ।

यदि वंध्या हो तो इसकी चिकित्सा कारण देखकर करनी चाहिये । यदि ईश्वरीय यन्त्रोंके निर्माणमेंही त्रुटि रही हो तो औषधिसे लाभ नहीं होगा और किसी कारणसे हो तो सिपिया, वेवाइट कार्बोनेट कोपियन, प्लटिना, फेरम, फास्फरिस देवे ।

गर्भपातमें सेवाइना देना चाहिये ।

बहुत खून गिरे तो एकोनाइट देवे ।

गौण ऋतुमें तलपेटके नीचे दर्द, कभी हँसे, कभी रोवे तो सी दशामें पलसेटिला देवे

शिशुरोग चिकित्सा

एलोपेथिकसे होपिंकाफ लक्षण

इस रोगमें सरदीके साथ खांसी होती है । पहिले थोडा थोडा ज्वर, खांसी, नाकसे पानी गिरना, कै होनेसे पसीना निकलना, फेन होना, आलस, बेकली, बहुत देरतक छातीमें अवाज, खासते २ मुख लाल हो जावे, आँखें निकल आवें, मृत्युके लक्षण दिखाई पडें, नाकसे खून पडे, विना इच्छाकेही मल मूत्र निकले, पेटमें कीडे पड जानेसे, पेट फूल जानेसे, अजीर्ण होनेसे बालकोंको कन्वेन्सन हो जाता है । इसके आक्रमणकालमें शरीर कडा और अचल हो जाता है । मुखकी पेशी सिकुड जाती है । मस्तक और मुखकी खाल लाल हो जाती है, आंख सफेद, श्वास कभी धीरे कभी

जल्दी और कष्टदायक होता है । हाथकी मुट्ठी बन्ध जावे, अंगुली हथेलीमें बंध जावे, बालक डरेके समान रोवे, बहुत पसीना आवे, यहांतक कि बीमारी बढनेसे बालक मूर्च्छित होकर मर भी जाता है।

होमियोपेथिकसे लक्षण ।

बालकोंको प्रायः एक रोग ऐसा देखा गया है । नाक बंद होकर श्वास लेनेमें, दूध पीनेसे भी कष्ट होता है । खानेके समय छातीमेंसे एक तरहका शब्द होता है । बालकोंका कोष्ठबद्ध प्रायः माता पिताके रोगसे होता है, जिनको शिरदर्दकी बीमारी है उनके बालकोंको कोष्ठबद्ध होता है, पिता माताको कोई बीमारी हो तो बालकको मूर्च्छाभी आती है । विशेषतः यह मूर्च्छा दातोंके उठनेके समय होती है वा किसी कीडे आदिके काटनेसे । प्रायः बलशाली बालकोंको भी यह रोग देखा गया है कि हाथ पैर टेढे होना, खींचना, आंखोंके तारे पलट जाना, परन्तु यह रोग क्षणक्षयी है ।

एलोपेथिकसे चिकित्सा ।

होपिंकाफ होवे तो सामान्यतः बालकको गर्म कपडेसे ढका रखना चाहिये । हलकी चीजें खानेको दे, घरके किवाड बन्द रक्खे और बिलाडोनाकी सोपलिनीमेन्टसे पीठके बांसको रगडना उपकारी होता है । पीडा कठिन हो तो वमनकारक दवा देकर आगे लिखी दवा देवे ।

टिंचर कार्डिमम कम्पोन्ड	२॥ ड्राम
एसिडाई नाईट्रिसाई डिल	११॥ ड्राम
सीरप	३॥ औंस
पानी	॥ औंस

सब मिलाकर एक छोटे चमचेभर दिनमें दो घंटेके अंतरसे पिलावे अथवा—

सल्फेट औफ जिंक	८ ग्रीन
एक्सट्राक्ट बिलाडोना	२ ग्रीन
पानी	८ औंस

इस दवाको फी ४ घंटेके बाद ४ ड्राम पिलावै।

कन्वेन्सन हो तो बालककी पीडाका कारण जानकर चिकित्सा करनी चाहिये। थोडी देर पीडा रहती हो तो ठंढे पानीको माथेपर डालना और कपडे उतार देना चाहिये। यदि पीडा कुछ समयतक ठहरती हो तो माथेपर ठंढा पानी और शरीरको गर्म पानी लगाना चाहिये। आहारके उपरांत आक्रमण हो तो जीभके ऊपर एक बूंद आयल क्रोटन लगादे।

दंत निकलनेके कारण पीडा हो तो उनकी जडोंको सावधानीसे चीरदे।

नींद न आनेके कारण यह रोग हो तो तीन महीनेके बालकको चौथाई ग्रीन और १ वर्षके बालकको आधी ग्रीन डोवार्सपाउन्डर देनेसे बहुत फायदा होता है।

कीडेके कारण यह रोग हुवा हो तो—

केम्फर	६ ग्रीन
एक्सट्राक्टबिलाडोना	१ ग्रीनका तिहाई
एकसट्राक्ट कनाई	४ ग्रीन
स्पिरिट रेक्टीफाइड	गोली बनानेके लायक

इसकी ४ गोली बनाकर रातको सोते वक्त १ देनी चाहिये।

होमियोपैथिकसे चिकित्सा।

अगर चमडी गर्म हो और ज्वर मालूम पडे तो एकोनाइट फी तीन घंटेमें देवे।

अजीर्णके कारण बालक चिस्कार मारे, सफेद दस्त होते हों तो कैमोमिला देवे।

कोष्ठबद्ध और पेटकी बीमारीमें पलसेटिला देवे ।

केवल कोष्ठबद्ध हो तो उपियम, ब्रायोनिया, मक्यूरियस, नक्स-वोमिका, सल्फर पर्याय क्रमसे देवे ।

मूर्च्छा हो तो एकोनाइट, बिलाडोना देवे ।

चोटलगी हो तो आर्निका, सिक्यूटा वा बिलाडोना देवे ।

अम्लरोगसे मूर्च्छा हो तो नक्सवोमिका देवे ।

अब पेजिन्ट दवायें लिखी जाती हैं ।

अर्ककपूर बनानेकी विधि ।

रेक्टीफाइड इस्प्रिट	२४ औंस
केम्फर	४ औंस

दोनोंको बोतलमें बंद करके धरदे जब देखे कि कपूर बिलकुल गल गया तब २ से १० बूंदतक मात्रा देवे ।

आयल केम्फर बनानेकी विधि ।

केम्फर पिसाहुवा	१ औंस
अजवायनका फूल	१ ड्राम

कपूरको शीशीमें डालकर अजवायन फूलके टुकडे डाल देनेसे स्वयं आपही गलकर तेलके समान हो जाता है, और अजीर्ण इत्यादिक अर्क कपूरकी अपेक्षा उत्तम होता है ।

क्लोरोडीन बनानेकी विधि ।

टिंचर केपसिस आई	१४ बूंद
आयल पीपरमेन्ट	१४ बूंद
म्यूरिट औफ मार्फिया	१॥ ग्रीन
ब्रान्ट सूगर	२ ड्राम
क्लोरोफार्म	२ ड्राम
एसिड हाईड्रिसनिव डिल	१० बूंद
डिस्टल वाटर	१ औंस

इन सब चीजोंको एक साथ मिलानेसे क्लोरोडीन तयार हो जाती है। मात्रा इसकी ५ से २० बूंदतक होती है।

यकृत्पर सिडलिसपाउन्डर बनानेकी विधि।

सोडा	२० ग्रीन
टारटरिक एसिड	३० ग्रीन
सोडीय टाइसाई	३० ग्रीन

इन्होंको पानीमें मिलानेसे झाग उठने लगता है उसी वक्त पिलादे तो यकृत्पीडा और कोष्ठबद्ध दूर हो।

रेचनकर्ता ब्लूपिलके बनानेकी विधि।

सबक्लोराइड औफ मर्करी	१ औंस
सलफ्यूरेटेड मर्करी	१ औंस
गोयाकमरेजिन पाउन्डर	२ औंस
काष्ट्रायल	१ औंस

इसकी मटरसे कुछ बडी गोली बनावे इसको रातको खाकर सोनेसे सबेरेही साफ दस्त आता है।

उपदंशपर कम्पौन्ड कैलोमेलपिलकी विधि।

पिल्यूला कैलोमेनस कम्पजिटा	५ ग्रीन
एक्सट्राक्ट उपिआई	॥ ग्रीन

यह १ गोलीकी दवा है इससे उपदंश दूर होता है।

वाजीकरण।

फास्फोरिस पिल कम्पौन्डकी विधि।

कोनेन सिलफूरट	॥ ग्रीन
इष्टिकिनिया	१ ग्रीनका पचीसवां हिस्सा
फौलादकी रूह	१ ग्रीन
फास्फोरिस	१ ग्रीनका पचीसवां हिस्सा

इसमें फी गोली इस हिसाबसे दवा पड़ती है यह दवा पतली, दुबली, सुस्त मिजाज और कमजोर औरत मर्दको मोटा ताजा बनानेके वास्ते अकसीर है। चन्द रोज खानेसे बहुत खून पैदा हो जाता है। मांस बढता है, हड्डी मजबूत होती है। भूख बढती है। पेटकी पुरानी गिरानीको दूर करके मेदेमें ताकत पैदा करती है। पतली धातुको दहीके माफिक जमा देती है। नजला, जुखाम, खांसी, दर्द सीना, जोडोंका दर्द और गांठियेसे मनुष्यको बचाती है। पुरानी हरारत और जमे हुए कफको साफ करके कमजोर और बूढे मनुष्यको जोश जवानी पैदा कर देती है।

नपुंसककी दवा ।

इष्टिकिनिया ॥ रत्ती दूधमें भीगा छुहारा नग १ इन्होंकी मोठके प्रमाण वटी बनाकर दूधके साथ दोनों वक्त खानेसे पुरुषार्थ बढता है अथवा—

कोनैन	२ मासे
टिंचर ष्ट्रील	१। छटांक
इष्टिकिनियां पानी ४० तोले	चौथाई रत्ती

सबको मिलाकर दिनमें ३ दफे आधी छटांककी मात्रासे पीवे तो पुरुषार्थ बढेगा ।

इति डॉक्टरीचिकित्सार्णव समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,
" श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
खेतवाड़ी—बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,
कल्याण बम्बई.